



...तुलसीदास जगति विचलता ॥  
उदयगतततकालज्जारे ॥ रामचरणबदनकरे  
सबईसनकेईसा ॥ जगपालकतुमजगतगुरजग  
जीवनजगदीस ॥ १ ॥ आनंदघनसुषरासिचितानंद  
कहीऐलामे ॥ ॥ अरुलंबनिरयेयज्ञकलिहरि ॥  
...नादिक...  
...जन्ममांश्रुनशतिद्व  
॥ रामचरणबदनकरेअलहेअषमतनूर ॥ सुष  
मिश्रलषालीनहीरव्यासकलनरपूर ॥ ३ ॥ नमो  
नमोपरबहुनमोनहकेबलराया ॥ नमोअजग  
...क...ग...या ॥ नमोअहप...

मही कोई कर मन काया ॥ नमो न्नापय न्नापय नही  
द्वेषारन पाया ॥ सिवसन कादिक से सलूर टत न पावे  
॥ रामचरण बंदन करे नमो निरंजण कंत ॥ ३ ॥  
क्रियाराम कलि न्नावत रेजीवन प्रमदरस ॥  
महे जनकराक्षस मिजांति लिपति होवे क ह न ही  
जत बे कट्टय ही सब सत न मांही परभारथ परवी  
मिषी पा परमानं हरिगाथा न्नामरी करं प्रके प्रीए  
॥ रामचरण बंदन करे माया प्रजि न्नालिपतरहे ॥  
प्राराम कलि न्नावत रेजीवन प्रमदरस एिलहे ॥ २ ॥  
तीतराम गुरदेवजी फुनिति हं काल के संत ॥ जिन

रामचरणकी॥बंदनबारान्त॥१॥ग्रंथ॥३॥हा॥सत  
गुरपरमनिधानपद॥हृदसंबेहृदजोश॥रामचरणबंदन  
करै॥ब्रह्मरूपनितिसोश॥ब्रह्मरूपगुरसंतसं॥प्रग  
जनकिरपाल॥रामचरणबंदनकरै॥संतगुरपरमद  
याल॥२॥बंदनकरिबीनतीकरूं॥सुएपरमगुरआप  
रामचरणकीअरजएहा॥जोचैहरणसंताप॥३॥फूल  
ए॥भवजंजनकंगुरआपसहीदिनरूपप्रकासकरा  
इहैजी॥जथाहोइसोचीजनिजरआवेमघबाहिनत्रमनु  
दाइहैजी॥गुरबाइकलाइकसाहिप्यारेनिजधामसोराम  
मिलाइहैजी॥जनरामचरणहोवैसिधिकारिजसोगुरसा  
षिवताइहैजी॥४॥कवत॥परमपरासुसाषिकाजसि  
धिगुरमुषिगावे॥गुरबिनिकाजनहोइजोइतिरलोकी॥  
आवे॥वेदपुरांसनकुरांससासतरनौबाकरणा॥सिधि

साधिक जोगे सक है जो गुरु संगि तिरण ॥ तिरिसा इर  
संसार कूप रसै राम अनूप ॥ राम चरण बंदन करै सत  
गुरु ग्यान सख्य ॥ प ग रू ग्यान के रूप अनूप मधुर म  
देवा वना सति अ सति नि नि जे द ब्र ह्म वा इ क सु षि गं  
न परै यति त को ई प्र इ ता स के पा प ज हरि है ॥ मा हा मंत्र  
जो राम नाम ब क सी स ज क रि है ॥ जे से दी न द्या ल गुरु उ  
र मी ब सी स दी व राम चरण सरण ॥ स द जे मे री र ष्या की  
ब ॥ इ ता को र ष्या क रि गुरु दे व है ॥ दे व सा चौ जा प  
त म ब र ण सु प्र स्वां ति कर ॥ मि ट स क ल सं ता प ॥  
॥ ता प मि टा व न ग रू स्वां ति कर ॥ आ प स  
दा इ ॥ आं न द कार उ दार सा र सं म ता सु प्र वा इ  
उ प्र उ द र ता त रि गुरु इ क व स व ता ॥ इ प्र  
अ ज न मै ली न ती न म् ॥ अ न ही आ व दे न म

गौरत्र ध्यातमीसत गुरजीसंहीवणै॥ रामचरणपीरं  
रसबोहोस्यजनणीनांजणै॥ ७॥ फेरुल्या॥ जननीक  
नांजणैजोपीधैरंमरसाणि॥  
धकीवाणि॥ रमिदेजीवकीवाणि॥ हांतिं  
वजावै॥ निरविषनिरमलन्यप्रणय्यजगीपदेसमावै॥  
गुरवाइकमेकहीहीएअकअनेकरिछाणि॥  
कबहुनाजणैजोपीधैरंमरसाणि॥ १॥ ७॥ प॥ ॥ ॥ ॥  
॥ रामरसाइणिपावौसतगुरनेदवतावौदुगदौ॥  
आपपरमगुरपरचैपूरा॥ मोहिजरो॥ सोपाको॥ आप  
अगमकीअणचैबोत्तो॥ षोत्तोहमरासासांनिरसंसे॥  
निरमत्तरसपावौ॥ ज्युकोइकरैनवांसा॥ तिरत्तोकीत  
इतीककरों॥ सति॥ दृढोवेदपुरांनां॥ ग्यांनकलापर  
कासकरनकं॥ सतगुरसमिन्हीअंनां॥



आपचिरतैनिधानमधिकरिहैनुपाइयांहांकीयांफ  
वरधपाशमांनिरसांइणिकरैक्रमजिगहोमने  
पावेसरंमकहैहमनुरधलोकजांहिवांहांअम  
षसोअपांहि। ऐमांनिरसांइणिकरैलोग। सोहूनां  
तातैजरसांइणिकरैह। मतिकरैसिषवास्तसनेह  
अबजोमिलोककीसुणरीति। जिहीकरैजगतअबि  
लाषपीति। उजिमांनिरसांइणिकरैवेद। व्याकरतन  
सासतरअोरनेद। जितेग्रंथविद्यापुराणांकरैअ  
लोकनअकलिवान। मांनिअपनयोकुलाचारक  
रसांइणिकरैहसार। एणषेतरसांइणिकरैत्रीलोग। बडस  
रसांइणिकरैजजोग। सुडरसांइणिकरैषिकीनाक  
कमाइकेप्रवीन। ११॥ ३॥ ब्रह्मचिरजग्रहवांन  
पुष्टसंन्यासकहैक्रमनासांअपक्रमरसांइणिकरैमांनि



इतिनांकह। लोकएरसांइएदेव मेरेचाहिरस  
एकी कोलापुनजीभव १४

सुरोणसंइएनेदभेदसारीमिटिजावे पीवेप्र  
तिउपाइन्नापसुलनपुरजीपावे। बीतेकामविक  
रजहर विधीन्यादिकसारा इन्द्रतरांमरसांएिए  
वेजनएकेकारा एरसांएिसवकेसिरेजांएसिठ  
आनप रामचरणदाबिनिजितीमनरंजएवि  
अकर ए औररसांइएिसवमनरंजएअंज  
एमअटकाव रामरसांइएिहेमनअंजएागर  
सांइएिवतादे जोहप्रसाधनसाधेयाकोतोमन  
केवनहोरजावे निरविकारनिरमत्वा नरबासीसोच  
जांताहोपावे सिद्धसनकादे औरअनंतजन  
नारदकरसत्त्वप्रांता रामचरणएरसांइएिसवके

।१६॥ कंक कला ॥ रां मर सां इ ए सिरो म

त ॥ ता हि सा विवो हो सं त ज न ॥ प ल टां ए म न मं त  
क हो इ नि व डे सा रा ॥ त न म न सु क्षि रू प त जे स ब

॥ ए र सां ए उ ति म स दा रां म च र ए न ही ॥

॥ रां म र सां इ ए स र ब के जां ए सि रो म ए त त ॥ १७

॥ रां म र सां इ ए न्न ज ब है ॥ ता के तु लि न को इ ॥ वे द

पु रां न र सा स त र ॥ न लि मु क ति प दा र ष हो इ ॥ १७ ॥ कं

क ल ॥ च्च ा रि मु क ति चो दा र त न न्न स ट सि धि नो नि

धि ॥ वे द पु रां ए र सा स त र ॥ नो ब्वा क र णं म थि ॥ नो ब्वा

क र णं म थि र सां इ ए सा रा जा वे ॥ मां न् मं द र षो ज के

हो त स क र के पा वे ॥ रां म च र ए चो जां न मे जां ए रां म

र सां ए ॥ ता कं सा ध्यां मि टि त है ज न म म र ए की वां ए

॥ त न म न इ इ

तां लि। छरिरांमचरणसतगुरकहे। पीवौरांमरसां  
लि २०। रांमरसांइलिपीइकेकितेपल  
टेअंग। जीबुधिसवपरहरी। नएजसीवअचंग। न  
एजसीवअचंगसंगसंतेनकौकीन्हों। विषीयाओ  
टनिवारिसुधपदआतमचीन्हों। रांमचरणकुंनए  
सहीज्यांलज्यौरांमकौरंग। रांमरसांइलिपीइकेकित  
पलटेअंग। २१। नीचपोचनिरणैकीयांगिएतीहोइन  
बीर। अजामेलगजग्यांनबिनिगिनकाअौरअधीर  
असासांडरमतिधारी। पीपीरांमरसांलिअएपदके  
अधिकारी। रांमचरणकाहानारिनरकाहाकंगाल  
अमीर। नीचपोचनिरणैकीयांगिएतीहोइनबीर। २२  
रांमरसांइलितनकसीपीयांजपलटेअंग। अजामेल  
सुतहितपीयोकीयोताहिअचंग। कीयोताहिअचंग

जजमसंजंनुवांस्यौ॥ नयो नयो करि च्छं तरां मरसं  
 चांस्यौ॥ रां मचरणकं च न ज्ञाये गये विकार जघं  
 सां इति तन कसी पीयां जपलटे च्छं ग॥ रक्षा  
 पाया॥ जगतपलटिकै जगता बाजे॥ विधे पलटि  
 तीन्ही॥ छाजी सबे च्छं

जुगता॥ छो के काम सील सुधियारण॥ लो जपलटिसं  
 तोष॥ क्रो धपलटिकै विम्या पाई॥ फलपलटे मन सोष  
 मो हो पलटि निरमो ही ऊ वा ममता मो हो बति टारी से  
 बति सबे कुसगति छो की॥ उति मसंगति थारी॥ ऊ च्छं पल  
 टि च्छं रसा च्छं समाना॥ तजि पाषं ऊ च्छं निमाने॥ निरप  
 षं की निर च्छं निमाने॥ सां इ लषे समाने॥ च्छं च्छं चित  
 मनै रथ पलटे॥ धीर जमनि ठहरां ने॥ तिसं ना च्छं सा  
 रसां मने॥ पलटो वे सो ग्यां नी॥ छाकि कर मरु कर

मचरणेऽगमगतिनतिनिरंजणरूपं ॥ अंजणं जंज  
नहोऽगोनिरंजणसुधिरूपं ॥ निरंजणसुधिरूप  
रूपसब उपजिषयां नो ॥ जघाऽरघरेणो नसाधव  
चनां सुं जानो ॥ तबही न्दत्तैः ॥ इहे नतिम जुगतिऽनू  
पां ॥ रां मचरणेऽगमगतिनतिनिरंजणरूपं ॥ ३७ ॥ नि  
तिनिरंजणरांभकी जाणि गुरां सुं हो हो ॥ गुरां बिनां स  
बलोक में नट क्वां तन है न को ॥ नट क्वां तन है न को ॥ कि  
न वैद पुरां नां ॥ जां कं बू ऊं जा ॥ करै क्यं ॥ और बघां नां ॥  
रां मचरणता तैर हो गुरवा ॥ कचित्तपो ॥ नितिनिरंज  
णरांभकी जाणि गुरां सुं हो ॥ ३८ ॥ सायी ॥ गुरसुं जां ऐं गं  
नगति ॥ तब सितला वैताप ॥ रां मचरणहम जां णीया ॥ ग  
रुसिरोमणिऽप ॥ ४० ॥ तते गुरसिरोमणि कही रे हे ॥  
ककल्य ॥ सकल सिरोमणि है गरुसंमृथ परमदया

॥ रांमचरणताहिमिलतंहीपलनमेंकरैनिहाल॥पल  
लसालदोइतुरतमिटावै॥आंनचरमपर  
टावै॥यंसतगुरपरमारघीसहजकरै  
॥संकलसिरोमणिहैगरुसंमूयपरमदया  
ल॥४१॥कितता॥सतगुरपरमदयालकालकीजाल  
निवारण॥नांवनांवबैठाइअथगतौजलरुतारण॥  
आपहोइसाहीकबिघनछलछंदमिटावै॥निरत्नैपदि  
पऊचाइफेरिससैनउपावै॥रांमचरणपरमारघीगुरग  
रवागुणजीतिजासंमूयकीसरणिसेमिटैसहजविप्री  
ति॥४२॥मिटैसहजविप्रीतिगरुकेसरगोआया॥गरु  
बतावैरांमरांमरसनांसंजाया॥आंनचरमअनेकदे  
षिचितचलेनजाको॥ग्यानजगतिबैरागधरमधनही  
नौपाको॥रांमचरणत्रैसेगरुसरुसदाउनसरहो॥तन

मनःप्ररप्यां ऐकर सिरां मरां म मुषिसं क हो ॥ ध्रु ॥  
मरां म जो कहै सो ही गुर क्रिया जां नो ॥ गुर किरपा को अ  
रघरां म पद मां हि मि लो नो ॥ ज्ये धारा सा अरती न हो इ धा  
रा अ ब नां ही ॥ अ च ल अ म ल अ धी ए षी ए ग ति हरि  
ति गां ही ॥ रां म च र ए गुर अ म र है स म र कर पि कां नै क  
रे ॥ गुर पर ता प ले सी स परि ॥ लो च षो च ता पर ह रे ॥ ध  
॥ लो च नि वार ए गुरु स रु नि ति उ न सं र ही ए ॥ वै प क  
ड वै ग्या न ता स के गां ठो ग ही ए ॥ द ही ए डुं द डुरा स अ  
स इ क उ न का च र ए ॥ वै गुर ही न द या ल मि टा वै न्द चै  
म र ए ॥ क र ए सु णि किर पा करै सु म रा वै मु षि रां म रां  
म च र ए सं तो ष ध न व क सि करै अ न्ति रां म ॥ ध्रु ॥  
॥ ग्यां न अ ध्या त म सा र का स त गुर जी दा तार वे द पु  
रां ए र सा स त र फु नि व्या क र ए वि चार ॥ फु नि व्या क र ए

विचारबतावै गुणमहं गाथा ॥ गुणं पाव गुर देव अगं मकी  
 विष्वाता ॥ रामचरणतातै करौ गुर मुषिहरि को ध्यान  
 दै अघ्यात मग्यान ॥ ४६ ॥ ग्यान न  
 गे कासत गुर जीदातार ॥ और तोर पावै नही  
 तीने लोके मंजारी ॥ तीने लोक मंजारी मोहो माया  
 का फंदा ॥ माया रहत दयाल गुरु जी हरिका बंदा  
 रामचरण जो नीरस गुर न चै त्यारणहार ॥ ग्यान न  
 गतिवै राग कासत गुर जीदातार ॥ ४७ ॥ सत गुर दीन  
 दयाल जी समरथ सारी रीति ॥ बोध अघ्यात मरुप ही  
 तन मन बैठा जीति ॥ तन मन बैठा जीति नीतिलीयां  
 निति नारी ॥ सकल धरं मुजाद विषमता सब हीटा  
 री ॥ रामचरण की आप पदिर हो निति नोत मप्रीति ॥ सत  
 गुर दीन दयाल जी समरथ सारी रीति ॥ ४८ ॥ गुर गुण अग



होइन जाको ॥ किरीया सब ही वाद किरत सब उन  
को घाको ॥ रामचरण पर हारी ऐत्रै से को सुन मान  
गुन वाइक साहिक सदा सो नही लखै अग्यान ५४  
गुर पारष सो ही गुरू गुणं ती तिगंजीर  
आदीत जि सा पर का सबंत निरमल जैसा नीर  
निरमल जैसा नीर धीर धर सांति ससी है रामनाम  
दा तार गुरू गति जांणि असी है रामचरण ऐह ल  
षणं सो मेरै सिर पीर गुर पारष सो ही गुरू गुणं ती  
तिगंजीर ५५ गुणं ती तिसो ही गुरू तब ही गुर पद  
सो ज सदा सांति संतोष सत जि तइ डी गं तिलोच  
जिति इ डी गं तिलोच सदा परसन पद राता और उ  
पाइन मूरि उदै अ ध्यात ममाता रामचरण चित एक  
रसिक देन उप जै लोच गुणं ती तिसो ही गुरू तब ही

गुरपदसोच॥पक्षात्तं द मनहर॥गरूपदसोचजाके  
।नकोनलेसकोइनिमोहीनिबंधनितिआनंदमैमं  
।गुणंतीतग्यांतासोबिष्यातासारीसिसटिसांही  
न नजाकेरामरूपजांनीए।रामरूपसहीआ  
परामकोत्तरगावैरंगकरतअंनंगसंगवासंसदाबांनी  
ए।रामहीचरणजोसरणिअसैगुरूजीकेसीषेहमसाच  
काचक्रमनकंजांनीए॥५॥असैगुरांपेसिषलच  
सिषीसोकहाएहे॥चंजांइगांधरिमुषिसाचबिच  
रामकोनाम्रहै॥दगोकपटपाषण्डकीभीमहै।सो  
सबहीपरहारिजारिडरिआसरे।परिहांरामचरण  
सुषसोचहोइतबआसरे॥५॥साचरामगुर  
बकसिहै।रचनांऊठीकाच॥रामचरणतजिआंत  
रौ।सीषिगुरांपेसाचंहेद।नहर।सीषेजबसाचनां

लिचालीऐजिनकी बिचलीमूठि ॥ मनमुषचालैमन  
मतेगुरवाइकदेपूठि ॥ ६४ ॥ गुरवाइकमानैनहीसो  
सिषजांनिअमोड ॥ जासंकदेनकीजीएहेतमिलापर  
जोड ॥ तोडचैकरैधरमकोवाकैनहीलिबलेसहीया  
मैकोईसरमको ॥ जेसांकासंगसाथमैनहीधरमको  
बोड ॥ गुरवाइकमानैनहीसोसिषजांनिअमोड  
६६ ॥ गुरतौदाताग्यांनकाअरसिषअजिमांनीअ  
गवाकैकदेनत्नागिहैरांमन्नगतिकौरंग ॥ रांमन्न  
गतिकौरंगत्नगैतबसुधिजिग्गासा ॥ रंगबिरंगहो  
इजाइजिनकीमैलीअसा ॥ वाकंसाचसुणावतां  
षडौहोइहैजंग ॥ गुरतौदाताग्यांनकाअरसिष  
अजिमांनीअंग ॥ ६७ ॥ अजिमांनीसुअंतरेरह्यां  
रहैगुरग्यांन निकटिरह्यांनहचैसहीअधरमघाले

करौ

कोन॥ प्रधरमघालैकांनसुण्यां सबधरमनसावै॥  
धैपापपाषंरुजुतसंगकुणती जावै॥ तातेलाकंप  
रौरोमकाध्यान॥ अत्तिमांनीसुत्रांतरैरह्यारहे  
॥ ६७ ॥ साषी॥ मनमुषसूनाहीमिलै॥ जोचा  
कैपदनिरवांन॥ रामचरणवैगुरमुषी॥ रामैगुरको  
ण्यांन॥ ६८ ॥ सिषीगुरमुषी॥ कंकल्लो॥ गुरग्यांन  
रषेसोगुरमुषीवैसतगुरजीकादास॥ रामचरणवाकै  
हीएसदाधरमपरकास॥ सदाधरमपरकासआसअ  
तिउतमजाकै॥ रामचजनमैलीनरहैमनमनसायाकै  
वैसिषसाचासुलषणां गुरपदिजाकौबास॥ गुरग्यां  
नरषेसोगुरमुषीवैसतगुरजीकादास॥ ६९ ॥ दास  
आसंग्यांनकीत्तोरनआसाकोश॥ करैदलबरीदीन  
नागंमचजनचितपोश॥ रामचजनचितपोशषीरहि

यामदस्त्रादरसकरै जगतको त्याग ॥ करै जगत  
को त्याग तो ज हरि सुमरण मांहीं ॥ और और की  
दोर कलम न दोरै नांहीं ॥ रामचरण हृदचरि के  
कलम न बांधै राग ॥ गुर कै सरणें आइ ले ग्यां न च  
गति बैराग ॥ ७७ ॥ ग्यां न च गति बैराग है गुर सर  
णों की सो च ॥ सरणें लीयो सुफल है जो मन नही  
उपजै लोच ॥ जो मनि नही उपजै लोच षोचता  
हरि निवारै ॥ चित समता उपजाइ बुझ सर  
बगि बिचारै ॥ रामचरण न जीऐ सदा गुण इंद्र  
सब थोच ॥ ग्यां न च गति बैराग है गुर सरणों की  
सो च ॥ ७८ ॥ सी सरणों की सो च आगे कह्यो ॥  
इहा ॥ ऐ रामर सांइ लिमाहारसा ॥ गुर सिष पारषकी  
न ॥ सरणों की सो च कलम सो सुणीयो परबीना ॥

७०॥ इती श्रीरामरसां इति बोध आनंद प्रमो धरसां  
गिगुरासिष पांर षनिकू पण नां मसबद ॥ ७०॥ प्रघ  
व करेण ॥ १॥ सिष वचन ॥ उहा ॥ सरणां की सो नाके  
॥ स्वां मी जी समजा ॥ सोमै कुल सिउ पाइ कौ ॥ रक्तं ग  
रुसरणा ॥ १॥ गुर वचन ॥ के कल्या ॥ गुर सरणां की  
सो न्प्रतिक ही एका हा बणा ॥ जन मे सरण नै नम  
मिटे बिघन न सकै संता ॥ बिघन न सकै संता ॥ गुरु  
रखा करि ठाठा ॥ सदा रहै होइ सरणि धर मधारण में गा  
ठा ॥ राम चरण वौ दास है सुष आनंद पद पाइ ॥ गुर  
सरणां की सो न्प्रतिक ही एका हा बणा ॥ २॥ गुर के  
सरणें रघां न है न गति न जन बैराग ॥ समता साता सा  
तिसुष मिटे सकल दुषदाग ॥ मिटे सकल दुषदाग रा  
ग बिषीयादि क मारे ॥ हांसी हरसां रु सम नौरथ मैल

द्वारै रामचरणं प्रतिदीनता गुरचरणैः अनुराग  
गुरकैः सरणैः गणानहैः नगत्तनजनवैरागः ३  
नजनवैरागः एसरणि संतां तणैः वणैः जनमहरिसुखा  
इत्थैः सीः दासधारणकरैः जगतजलनिसतरैः जा  
इतिरत्नैः घरांवासपैः सीः जाहांकोईरीतिविप्रीतिन  
हीकपजैः कपजैः अमीरस नितिप्रीजैः रामहीचरण  
एसरणि निजरांमकीसरणैः सिपिछोणिलीजैः ४  
सरणैः चैः सोरांमकोताहिपिछोणैः दास  
रामचरणसुषकपजैः उषडुंदरतानासः ५ उषडुंदर  
तानासनिरासीतिरत्नैः रहनां ॥ फाल्गुमसतगुरदस  
तलीयांमुषरांमजकहनां ॥ बेपरकावैरागदठकरैः न  
कोकृत्वासः सरणैः चैः सोरांमकोताहिपिछोणैः दास  
पः दासपदीमैः नितिः रहैः एसरणैः कीरीतिः ॥ स्मामसुहा

याचा लक्षण कोइ करै नही विप्रीति॥ कोइ करै नही विप्रीति  
। ति धरम सज सदांइ॥ अ धरम अ क न अ गि सं  
जा एत है सांइ॥ रां मंचरण न जिरां म कं जां इ अ वि  
द्या बी ति॥ दा स प दी में नि ति र है ऐ सराणं की री ति॥  
द॥ स्वा सी॥ रां मंचरण न जी ऐ स दा॥ सु णि सं तां की सा षि  
सराणं की री ति है॥ मन सं क ड यो रा षि॥ १॥ कं क ल्प  
जै सराणं त्यो रां म कौ तो मं ति मु क ल्प ज्यो मं ना या कं दी  
ज्यो सां क डे॥ यो सा ध न जो ग ज तं न॥ यो सा ध न जो रा ज  
तं न स्वा द के सं गि न ब ह ज्यो॥ स ह जं फु रै सो पा इ स दा सं  
मराणं भै र ह ज्यो॥ त ब इंद र्यां वि च ले न ही सो जै स म ता ध  
न॥ जै सराणं त्यो रां म कौ तो म ति मु क ल्प ज्यो मं न॥ ७॥ स  
राणं त्नी जै रां म कौ तो की जे उ ति म त्रां सां प र ह री ऐ त्रा  
सा अ स ध जा सै बु ध बि नां स॥ जा सै बु धि बि ना स ग्यां न



वैराग्यनन्नावे नगतिहो ५ वे जुगति कोमनाकरम  
कुमावे ॥ रामचरण नजिरामकंधरिहिरदै बिसवा  
स सरणै लीजे रामकौतोकीजे उतिमत्रास ए उ  
तिमत्रासै रामचजित जिसवनीचीत्रास ॥ नीची  
त्रासै नीचपद कुंचा ब्रह्म बिलास कुंचा ब्रह्म बिला  
स वास त्रीनुनका कुंचा ॥ रामनिमति जो बिरति उ  
कति उपजावै संकुंचा ॥ रामचरण सुमरण करै जे  
जन सरणै दास ॥ उतिमत्रासै रामचजित जिसव  
नीचीत्रास ॥ १० ॥ नीचीत्रासै कुंचहो ५ धारै सो विप्री  
ति ॥ कुंचा कुंचा वाही ऐहवमाकीरीति ॥ ऐहवमा  
कीरीति जीतिका नाकारेही ॥ नजे निरंजण रामदेह  
सुषजाणै धेही ॥ रामचरण सरणै रहै धस्याधरमसुनी  
ति ॥ नीचीत्रासै कुंचहो ५ धारै सो विप्रीति ११ ॥ त्रासै

उतिमचाहीऐसंतोंसरणैआइ॥रामचरणनीचीतज्या

५.

जुगतिसंसहजेमुकतिसमाइ॥आसेउतिमचाहीऐसं  
तांसरणैआइ॥एतनसुषमनसुषमांनमदऐसबनी  
चीआसा॥काहालोकपरलोककानौगनचाकैदास॥  
नौगनचाकैदाससदासरणैजरहावै॥ओरनकोई  
उपाइरामरसनांसंगावै॥रामचरणनिरबासनांजा  
कैनितिबिलासा॥तनसुषमनसुषमांनमदऐसबनी  
चीआसा॥३॥नीचीनिरतीहरिकरिमनिनउपावैओ  
ररामचरणनजीऐसहीओरघकावैदोर॥ओरघका  
वैदोरजोरबलअपणैत्यागो॥सरणैरहौसदीवबंद  
जीमांकुंजागो॥ऐसिष्यागुरदेवजीचाषेकारिजंतो

नीचीनिरतीहरिकरिमनिनुपावौश्रौर १४ रामच  
रणकैरामजीमतिउपजाज्योकांम ॥ सरणेंसंतदया  
लकैरसनांउचरूंराम ॥ रसनांउचरूंरामआनकी  
घातरिनांही ॥ आतरिश्रौरनिद्रासुरतिसुमरणकैमां  
ही ॥ कांमणिकनकआंवरैयौहीबरुबिसराम ॥ राम  
चरणकैरामजीमतिउपजाज्योकांम ॥ १५ ॥ श्रौरऊ  
पजेकांमनांतौरहैआंमनांनंहि ॥ करिआंमनांचाल  
तांधरमध्यांनसबजाहि ॥ धरमध्यांनसबजांहिहोइ  
निरधनजगजाचै ॥ ऊंचनीचनहंगिणेंजणंजणि  
आजेंनाचै ॥ रामचरणनहकांमहोइरामन्नजोउरि  
मांहि ॥ श्रौरऊपजेकांमनांतौरहैआंमनांनंहि ॥ १६ ॥  
कांमऊपज्यांरामकीन्नगतिसध्वेनहीमूरि ॥ ग्यांनवि  
चारनगहरेश्रौगणहोइजरु ॥ श्रौगणहोइजरु

रिहरिसुषसाताजागे॥सुबुधिनरहेनजीककुवां  
रजागे॥रांमचरणकेचितरहोरांमतुम्हाहो  
नरि॥कांमऊपज्यांरांमकीचगतिसधेनहीमूहि॥१७  
रांमचरणकेरांमकीचगतिरहोउरिमांहि॥नजन  
रांमकोनितिकरुंरुजोउचरुंनोहि॥रुजोचरुंनोहि  
मकोसुमरणमेरै॥रांमगरीबनवाजमहरिसाधोनेरै॥धे  
रेकवकंनोधिंरुंमायामोहोकेजांहि॥रांमचरणकेरांम  
कीचगतिरहोउरिमांहि॥१८॥रुजोउपजेदिलमहीन  
हीसरणोंकीजांणि॥रांमचरणजांणोंपछेरहेनकोईबा  
णि रहेनकोईबांणिआंणिइकतारअषंमाजीसांइके  
सरणिरहेसबहीबिहमंमा॥असीनहचैराधिकरिमन  
केउत्तरटाआंणि॥रुजोऊपजेदिलमहीतोनीसरणों  
कीजांणि॥१९॥सरणोंपायोरांमकोतोमनकीषोअषषा

३॥ लोकां लोकी जोगसुषजांहांनचितचला३॥ जहां  
नचितचलाइरहोरजवाइमांही॥ स्यांमधरमीदासअ  
समैलीकोइनांही॥ रामचरणवैरामकासरणैआनंद  
पाइ॥ सरणैपायोरामकोतौमनकीषोइषषाइ॥ २०  
मनराषोमाहाराजिकाअजनमांहिगतान॥ कबहुं  
नऊपजैऊरमीसदा निरंतरिध्यान॥ सदानिरंतर  
ध्यानग्यानहजोनहीजाकै॥ दोइअधिरअहृतिराम  
रसनांस्त्राषै॥ रामचरणवादासकोसबलोकांसु  
नमान॥ मनराषोमाहाराजिकाअजनमांहिगत  
तान॥ २१॥ सरणैलेबोसुफलहैजाकैअैसीरीति॥  
तनमनइडीबसिकीयांतज्यांसकलविप्रीति॥ तज्यां  
सकलविप्रीतिजीतिजुगजगतैरन्यारा॥ गुरपरता  
पजसीसिलीयांसांइकाप्यारा॥ रामचरणचितऐकर

तावै निति नीति ॥ सरणीं लेबो सुफुल है जाके  
ति ॥ २२ ॥ रीति धरम सिषधारी यांगुर समल  
दात्र चाहितो राम चरणता सिषके सद आनंद  
बरता ॥ सद आनंद बरता इके दे दिल गीरी नांही  
राम न जन संप्रीति दिने दिन बधती जांही ॥ ऐजुगति  
सरणीं तणीं नगति करै सो पाइ ॥ रीति धरम सिषधारी  
यांगुर समुद्य सदात्र चाहि ॥ २३ ॥ गुर समरथ सिषस  
रणि रहै तो समुद्य होत न बार ॥ जुं जुं गील टपल टिके  
करै जुं गनिर धारा ॥ करै जुं गनिर धार दीप दीपक समि  
करि है ॥ होइ कंद दरी या व बंद दरी या जो परि है ॥ राम  
चरण न जी ऐ सदा ऐ समरथ का उपगारा ॥ गुर समुद्य सि  
षसरणि रहै तो समुद्य होत न बार ॥ २४ ॥ ३६ हा प्रिथी  
मूल न संच स्यो ॥ उदिक उदक्यो नांही ॥ बधत बरला

कनकं जेद जीव जगदी सब घांनो ॥ राम चरण उती  
यान हीं मही बाजि इकरां महे ॥ जाकं परगट दरसि  
हे जे जननि तिन हकां महे ॥ ३४ ॥ कुरुत्या ॥ राम  
जे जनकरतां गइ कां मकषा इकु बांणि ॥ उजलत  
न मन आत मां ऐ जे जनमाहात मजांणि ॥ ऐ जे जन  
माहात मजांणि जांणि त्रै सै निति जे जीरे ॥ राम राम  
दो इन्द्रक सदा मुष उर मै सजी ऐ राम चरण चित ऐ क  
रसि संपि सां ई कलाज ॥ सब धर मां कौ मूल है राम स  
कल सिरताज ॥ ३५ ॥ सब ही के सिरताज है राम निरंज  
ण नाथ जाकं पार पुगा वही ता कौ पकडै हाथ ॥ ता कौ  
पकडै हाथ घात मे टण घण नामी ॥ घट घट मै व्यापी  
क सरब के अंतरि जांमी ॥ राम चरण जे जि मिलि रहौ  
ज्यं क दे न बिबुडै साध ॥ सब ही के सिरताज है राम नि

रंजणनाथ॥३६॥ रामनिरंजणनाथकरे मनसुमरि  
॥ वेदपुराणरसासंतरयोसबही कौजीवायो  
जीवजगतगुरनितिअबिनासी॥ जाकेस  
रणेहोश्यडेनहीजमकीपासी॥ रामचरणसबकाज  
सिधिसिरिपरिसंमरणपीव॥ रामनिरंजणनाथकरे  
मनसुमरिसदीव॥३७॥ सुमरणकरोसदीवनितिप  
रापरैपदराम॥ रामचरणतबपाइहो॥ आगमअच  
लमुकोम॥ अगमअचलमुकोमकोमनांसबसित  
लावै॥ सदासांतिसुषलीनकदेनहीजोमेंआवै॥ निर  
नेपदआनंदमैरहैसदाअठजाम॥ सुमरणकरोसदी  
वनितिपरापरैपदराम॥३८॥ किवता॥ परमपदइक  
रामकोमनांसबहीपूरन॥ उपजावैसंतोषमनोरथक  
रिहैकरन॥ सदासांतिसुषलीनतीनगुणपाररहो



वै॥ उरै उरै की अजक डंड डुर मंति मिटावै॥ रामचर  
ण शंकरांमजी सुषिम फल सरवंग॥ जाकौ जे सुमरण  
करै जाकै सुष अन्नंग॥ ३९॥ सुमरै राम अन्न  
गकै॥ जाकौ अन्नंग न होइ॥ रामचरण निरत्नै सदा॥ न  
र मरहत न ऐ सोइ॥ ४०॥ कितत॥ नर मरहत नो न  
ज पुंज धरमन को सांई॥ अधरम और अण्णान अन्न  
मत जाई बिलाइ॥ करै सुध परबुधि पाप पुंजन कंजारे  
नेक बिघन अण्ण सुगन सुमरतां हरि निवारै॥ आनंद  
करि उरि में वसै राम निरजण देव॥ रामचरण निति सुम  
रि हू मरै याही देव॥ ४१॥ चंद्रशंकरा॥ मरै याही देव अज  
न शंकरांमकौ॥ ४२॥ हरि निवारिक नद चौ नो मकौ॥ गुर  
पक डायौ गण नर हो उरि में सदा॥ परिहारामचरण विनि  
राम नदी शंजी कदा॥ ४३॥ कंकुला॥ ४४॥ शंजी दिल सुधरै न

ही उधरेनां ही प्राणा प्राणा उधर्या बाहिरा सब ही कि  
रत अजाणा संवही किरत अजाणा कीयां को हा सि  
लकां ही समता उयजीनां हि आ ५ उरि अंतरि मां ही  
राम चरण फल पाई ऐत बलगे नजम का बाणा ॥ ६  
जी हिल सुधरेन ही उधरेनां ही प्राणा ॥ ४३ ॥ प्राणा उधार  
ण परम गुर नौ नै न जन राम ॥ राम चरण ज जी यां थ  
कां पावन नष सष गं म ॥ यां वन नष सष गं म बा जि अ  
तरि सुचिकारी ॥ बाल तरण विध कं च नी चा का ही ना  
री ॥ सब ही के अधिकार हे सार धर म सुष धाम ॥ प्राणा  
उधारणा परम गुर नौ नै न जन राम ॥ ४४ ॥ नौ न जन मन  
म जनै रो म तु हारो नां म ॥ ले त षे द ष ड च ड न ही जी ल  
गति नां ही दां म ॥ जी ला गति नां ही दां म कां म नां सक ल नि  
वारणा ॥ जु गि जु गि व मी जि हा ज अध म जी व पार उता

ता ॥ रामचरणचरणरतामता अगमउरिध्यांन प्रे  
मप्रीतिपरतीतिपणकणरूपानिजग्यांन ॥ ५० ॥ क  
णरूपाकरणीलीयांग्यांन अध्यातमसार ॥ उतीया  
अरमनिवारकैरामहीरामउचार ॥ रामहीरामउ  
चारपारनौजांणसोही ॥ उदरहतिनिरुदसदा  
सुषीयाजनवीही ॥ रामचरणमनबिचिधरमजा  
कैपरउपगार ॥ कणरूपाकरणीलीयांग्यांन अध्या  
तमसार ॥ ५१ ॥ सो अध्यातमग्यांनकहीरहे ॥ अध्या  
धातमअणनैउकतिजासंजुगतिबिचार ॥ कार  
णबुह्यअगाधनितिकारिजसबसंसार ॥ कारि  
जसबसंसार छोटकाहामोटाहोई ॥ कंचनएकस  
दूपलिनि नूषणमैजोई ॥ आदिअंतिसुधहंमहरि  
नूषणजगतनिसार ॥ अध्यातमअणनैउकति

जासं जुगति विचार ॥ पर ॥ जुगति न जै निति रं म  
 कं उदै अ ध्यात म ग्गं न ॥ उति म ज न उति म क था उ  
 ति म ब्र ह्म स मां न ॥ उति म ब्र ह्म स मां न आं न नै अ  
 मन को ड ॥ निर नै निर म ल दिस दि वा स नां मै ली  
 षो ड ॥ सदा ति र प त्पार है त है पर का सि क ज्मं न  
 जुगति न जै निति रं म कं उदै अ ध्यात म ग्गं न ॥ प ३ ॥  
 ग्गं न अ ध्यात म जां णी ए जा सं अ ध्या ति म मि टि जा  
 सम ता ली यो स दी व जे सा रां सा र दि षा ड ॥ जे सा रां सा  
 र दि षा ड अ सा र ज त्पा पा न क रि है ॥ सा रं म को नां  
 म स दा र स नां उ च रि है ॥ स म र स क सं सै न ही र है सं  
 तो ष ज पा णु ॥ ग्गं न अ ध्यात म जां णी ए जा सं अ ध्या ति  
 म मि टि जा ॥ प ४ ॥ अ ध्या आं स की आं न की ति म अ  
 ग्गं न अ धी या र ॥ मि टै अ ध्यात म ग्गं न सं त व अ र ॥

सिपरसिदीदारतबअरसिपरसिदीदार आप  
आपण्यौषेसुषमघृत्ननरिप्ररिसंमरमता  
सबदेषै॥ रामचरणरटीयांघकांनगेनरमका  
आर॥ अधाआसकीआंनकीतिमअग्यांनअ  
धीयार॥ ५५॥ साधी॥ तिमरमिद्यासांइरया॥ जा  
एांएकसमांन॥ रामचरणदीरघमता॥ ज्यांगरवा  
र्या॥ ५६॥ कंजत्या॥ ज्यांगरवाइग्यांनकीकोइआंन  
मांनकीनांहि॥ जेन्याराजगतबिद्वारसैसमजिली  
यांमनमांहि॥ समजिलीयांमनमांहिउपाध्यांनि  
कटिनजावै॥ जेजावैतौसुषमताबादबधावै  
रामचनजनलाग्यारहैनहीजोउदिसाचलिजाहि  
ज्यांगरवाइग्यांनकीकोइआंनमांनकीनांहि॥ ५७  
ग्यांनीजनगरवासहीसहीकीयांकरतारहजी

दिलज्रावेनहीकोइबातांकशेहजार॥कोइबा  
तांकशेहजारसारबिनिककसंगाको॥कएबि  
निमित्तैनक्षत्रगीतजोजनकागावो॥रामचरणत्व  
छिग्यांनएज्जितिरिऐनौधार॥ग्यांनीजनगरवा  
सहीसहीकीयांकरतार॥पठ॥ग्यांनीगुणांगनीरहै  
धारजलीयांध्यांन॥पीरपेजोसिरपरिसदावरतैन  
हीज्जग्यांन॥वरतैनहीज्जग्यांनज्जानमततनजा  
ण॥एकरामसरबंगज्जग्यांनज्जग्यांनपबषांनै॥सु  
षिमघूलजरपरनूरनिरमलसुषदांनै॥रामचर  
णज्जिरामकहावैज्जैसैग्यांनीमापण॥हेदमजहै  
ग्यांनीगुणपारनिर्धारसोज्जलेपज्जापतापतन  
गरिबैठैबासनाबिमारीहै॥निरबासीनिरबं  
धसदाफिरतसुछेदहोइदोइपणहैरिकीयौए

कता विचारी है ॥ एक सो अनेष तेष लषै कूज  
जैसी गति सति चिदानंद कंद चौक स ए धारी है  
राम ही चरण निति उति मज्जन करै राम राम एक  
रसि नर मनो सवारी है ॥ ६० ॥ नारै नर मत्तै चक  
अने कना ना फेल मन तन संकत बक कछू करै न  
करावना ॥ जाँए जादी सई सरांम जी अषे म सारे गि  
एँ कं ए घाटि बाधि ए कर सिजावना ॥ जै सै मन धी  
र निति ग्पां नी कौ गं नीर मतौ ऊपं ज्यो अनिति सा  
रौ जाँए सब जावना ॥ राम ही चरण जन साँसै सब  
दरि वै ठै पै ठे सुष सागर मै राम राम गावना ॥ ६१ ॥  
राम राम गावै नही नर ममै नुला वै कदे सधे सब सा  
धन चलै न को ई रीति सु ॥ ना ना सुष नौ ग के संजो  
ग आऽ मिले तो ही वो ही ग्पां न ध्यां न ध्रम निगे न

विप्रातिसं॥ तनकोबिफारनाडौनरैजोविचारली  
यांमनइहीजेरवरतैजनीतिसं॥ रामहीचरणजन  
सुषीयासदीवगणंनोनीयेजुगतिसारीनजनक  
जातिसं॥ ६२॥ चदजाइए॥ जीतैगणंनोजनमन  
कमारिके॥ इजाकेरसजोगसकलहीठारिके॥  
नजेरामरमतीतिजनाकीरीतिहै॥ परिहाराम  
चरणएदेषिनपजावीतिहै॥ ६३॥ केसैलोकही  
है॥ कलत्या॥ उपजीउपजीनरमनाउपजा  
सोषपिजाइ॥ निरउपजिकनिरचैसदारामनि  
रंजणराइ॥ रामनिरंजणराइतासकौसुमरणकी  
जा॥ सुमरिसुमरिचितलोइअमीप्यालाचरिपी  
नरामचरणनिरचैरहोनिरउपजिकपदपाइ  
उपजीउपजीनरमनापजैसोषपि



उपजै सोही सब षपै पांच तीन कै माहि छोट मो  
ट ऊंचा तल्हा उबरै कोइ नाहि अकलि सं सबै  
निहारौ तातै तलब लग्गा इराम हीराम उचारौ  
राम चरण तब होइ सुषुषु इंदर ता जाहि उप  
जै सोही सब षपै पांच तीन कै माहि ६५ पांच ती  
न में आवणों पांच तीन में जात ॥ बार बार उपजै  
षपै काल करत है घात ॥ काल करत है घात बात  
एना ही छानै सत कहै समजाइ अंध नर तो हीन मा  
नै ॥ राम चरण न जीऐ सदा करि सत गुर को साथ  
पांच तीन में आवणों पांच तीन में जात ॥ ६६ ॥  
॥ आवणों जावणों जगत उपजै षपै नही जग  
त गुर चित फोइ ॥ चित चोगा न मै दडी ज्ये रूलत  
है टलत नही रै ॥ दिन उष होइ ॥ उष दिन रात जा

हास्यांति सुषनां मिलै च लै च ल हो इ ब है न र म च  
 रा॥ एक अर दो इ की बात मति जाणी यों जा ए अ जा  
 ए स सारा॥ जा ए पर बी ए सो ही जा ए हरिके ज पे  
 ऊप जैष पे नही ज गत मां ही॥ रां म ही चरण मन धी  
 र धर रहत है जिन के अा वणां जा ए नां ही॥ ६७॥  
 चंद्र का इशां॥ उप ज्या आवे जां इ रहै न ही थी र शो वा  
 र बा रै बंद नीति जूया ति है श्री रे ता तै रे मन थी र  
 जवौ जे चाही ए॥ परि हां निर उष जिक निर सिंधु संभ कं  
 गा इ ए॥ ६८॥ निर उष जिक निर बां ए रां म पर अा प है॥ स  
 दा थी र गं नीर जिन का जाय हो जे ज पि है मन ला इ न उष  
 जै फे रि रे परि हां रां म करण मन विति ल ई नि ज घे रि रे॥  
 ६९॥ उप ज्या जावै बी ति प्रीत का सं करे ऊं च नी च ति ह  
 लोक मां हि जो त न धरे त न मन

उपजेसोहीसबषपैपांचतीनकैमाहिछोरमो  
रकंचातल्हाउबरैकोइनाहिअकलिसंसवै  
निहारो॥ तातैतलबलग्गाइरामहीरामउचारो॥  
रामचरणतबहोइसुषडुषडुदरताजाहि॥ उप  
जेसोहीसबषपैपांचतीनकैमाहि॥ ६५॥ पांचती  
नमेंआवणांपांचतीनमेंजात॥ बारबारउपजे  
षपैकालकरतहैघात॥ कालकरतहैघातबात  
ऐनाहीछोने॥ सतकहैसमजाइअंधनरतोहीनमा  
ने॥ रामचरणनजीएसदाकरिसतगुरकोसाध  
पांचतीनमेंआवणांपांचतीनमेंजात॥ ६६॥  
ता॥ आवणांजावणांजगतउपजेषपैनहीजग  
तगुरचितपोइ॥ चितचोगानमेंदडीज्परुलत  
हैटलतनहीं॥ एदिनडुषहोइ॥ डुषदिनरातजा॥

सार

होस्यो तिसुषनां मिलै चलै चल हो इब है नर मना  
 रा एक अर दो इकी वात मति जाणीयो जाण अजा  
 ए संसारा जाण परबी ए सोही जाण हरिके जपे  
 कृप जैषपै नही जगत मांही ॥ रां मही चरण मनधी  
 र धर रहत है जिनके आवणां जाण नांही ॥ ६७ ॥  
 चंदरा इणां ॥ उपजा आवै जां इर है नही थीर ॥ जो  
 र बावै बंदनीति ॥ नुपा ति है नीर ॥ तातेरे मन थीर  
 जवौ जे चाही ॥ परिहां निर उपजिक निर सिंधुगंभके  
 गाइ ॥ ६८ ॥ निर उपजिक निर बांण रां भपद आवै ॥ स  
 रा थीर गं नीर जिनका जाय हो ॥ जे जपि है मन लाइ नु उप  
 जे फेरि ॥ परिहां  
 ६९ ॥ उपजा आवै बीति  
 लोक मांही जो

५६

उपजै सोही सब षपै पांच तीन कै मां हि छोट मो  
ट ऊंचा तल्हा उबरै कोइ नां हि अकलि ससवै  
निहारौ ॥ तातै तलब लग्गा इराम हीराम उचारौ ॥  
राम चरण तब होइ सुषुषुषु इतरता जां हि ॥ उप  
जै सोही सब षपै पांच तीन कै मां हि ॥ ६५ ॥ पांच ती  
न में आवणं पांच तीन में जात ॥ बार बार उपजै  
षपै काल करत है घात ॥ काल करत है घात बात  
एनां ही छौं नै ॥ संत कहै समजाइ अंध नर तो हीन मां  
नै ॥ राम चरण न जीए सदा करि सत गुर को साथ  
पांच तीन में आवणं पांच तीन में जात ॥ ६६ ॥  
ता ॥ आवणं जां वणं जगत उपजै षपै न ही जग  
त गुर चित पोइ ॥ चित चो गां न में दडी ज्ये रूलत  
है टलत न हीरै ॥ ए दिन उष होइ ॥ उष दिन रात जां

सार

होस्योति सुषनां मिले चले चल हो इब है नर मना  
रा एक अर दो इ की बात मति जाणी यो जाण अ जा  
ए स सारा जाण पर बी ए सो ही जाण हरिके ज पे  
ऊप जैष पे नही ज गत मां ही ॥ रां मही चरण मन धी  
र धर रहत है जिन के आ वणा जाण ना ही ॥ ६३ ॥  
चंद ल ॥ उप ज्या आवै जा इ रहै नही पीर श ॥ जी  
र बा रे बट नीति जूना ति है नीरे ॥ ता तेरे मन थीर  
ऊवो जे चाही ए ॥ पर हां निर उप जिक निर सिंधु संभ कं  
गा इ ए ॥ ६४ ॥ निर उप जिक निर बाण रां भ प ह ॥ आ प है ॥ स  
दा थीर ग नीर जिन का जाय हो ॥ जे ज पि है मन ला ॥ न उप  
जै फे रिरे ॥ परि हां रां म चरण मन बितिल ई नि ज घे रिरे ॥  
६५ ॥ उप ज्या जावै बी ति प्रीत का सु करे ॥ ऊच नी च ति रु  
लोक मां हि जो त न धरे ॥

परिहारांमचरणवजिरांमनांमोः ७० न  
मकौरूपन्नयमन्नापरे षपेउपनेनां हिन्ना  
जापरे जाकं सुषपेसाइसोइन्नांनदरं परिहारांमच  
णसुषपाइजाइउषउदर ७१ उपजेसुषपरी  
रुषनीऊपजऊपजेनकंअरसजकसारी  
जेदेवदाणांसवैऊपजेऊपजेपुरषअरऔरनारी  
पजेसुषिमअरथुलधसामवतोकपरलोकइग  
लसाग रचीरचनोसनऊपजीजाणीरोकाहाधरअ  
रसरसेलधाम ऊपजीबुसतषपिजाइफिरिऊपजे  
तासकीआवकीइरिनीजे रामहीचरणविनिऊपजे  
रामहेतासकसमपिजुगिजुगिजीजे ७२ रामविनि  
ऊपजेअचलरपिगनाहेआपन्नलेषन्नाइतिसारे  
सकलधरमाहिचरणजेनंननांआपकवऊन

॥ ध्याये ॥ घटधरघटतन्त्रघटकुं नां घटै र्टै सो  
॥ होइ जात नाई ॥ तासकी साधिसब संतजन कहत  
॥ हत है वेदपुराण गाई ॥ ताही तै समजि मन अघट  
॥ सुमरी ए दुमरी ए दिलसूइ जि सारी ॥ राम ही चरण त  
॥ अचिरं जीव तब सीव सां नंद पद नेटि नारी ॥ ७३ ॥ सीव मंत्र  
॥ को जीव बुधि जात है बात परसि भिसब संत गावै ॥ वेद व  
॥ कहे सुषसन कादिका नेटि नो मां हि फिरि नां हि आवै ॥  
॥ न ऊबा जां हां जीन आगी सही कही जोरीति प्रतीति सा  
॥ राम ही चरण निज जन करि राम को मिलि रहो अच  
॥ होइ मन बाची ॥ ७४ ॥ यद राग्य जाव ॥ अचल ऊबा मिलि  
॥ वेद पद मै ॥ हृदकी हरसति गाईवै ॥ राम राम कहै अण  
॥ नै छोलां ॥ सराणै सिधियाईवै ॥ टेक अगति नजन अण  
॥ न्य ध्यातम ॥ निजन रवेद समाईवै ॥ मनोवास



संवादांबसिपद्मजाकोसदाश्रदंन ॥ नोगांमांही  
रोगहैसोजांऐंबिरत्नाजन ॥ ७० ॥ नोगकरतांनोगी  
यांरोगनहीसैकोइ ॥ जूंचोरीकरतांचोरकमारन  
संजेसोइ ॥ मारनसंजेसोइहोइआसकतिअपाग  
होसीतबैहस्याबपडैगीमूढैद्वारा ॥ रामचरणन  
जाऐसदानोगांदिसानजोइ ॥ नोगकरतांनोगी  
यांरोगनहीसैकोइ ॥ ७१ ॥ मीठकैसंगिजहरदेयूं  
नोगांसंगि ॥ पातांकुछिजांऐंनहीपीछैमास्योजावै  
नोग ॥ पीछैमास्योजावैजोगलोगसबकरिहैहांसी ॥  
दूषोआवेगलेलागीस्वादांकीपासी ॥ रामचरणनजि  
रामकंपरहरीऐसबनोग ॥ मीठकैसंगिजहरदेयूंनो  
गांसंगिरोग ॥ ७२ ॥ रोगीकोमनबसिनहीचाकैनोगस  
वादा करैउपाइबोहोनातिकीनांनंकरमबिषाद

नानां करम विषादं विषवधैः प्रपारा ॥ सध्यां होइ सुष  
चैनसध्यां विनिकरिहै कारा ॥ रामचरणनिजीएसदा  
परहरीएविषबाद ॥ रोगीकोमनबसिनहीचाक्षे नो  
गसबाद ॥ ७३ ॥ रोगीहोवैरोवणं जाहांतां होआधीना ॥  
काहो लोकपरलोकमें फिरेंदीनकोदीन ॥ फिरेंदी  
नकोदीनजीनगतिनोगेनांही ॥ सदाडुषीबेकाल  
चालनाचीमनमांही ॥ नोगरोगपरहारीएमननि  
रोगोकीन ॥ रोगीहोवैरोवणं जाहांतां होआधीन ॥  
७४ ॥ चेदराइएष ॥ तजिआधीनीआस नोगपरहा  
रीए ॥ माहारोगकोमूलकांमनांमारीए ॥ नहकांमीनिर  
दोषनेरोगाहैसही ॥ परिहां रामचरणनिजिरामबातस  
चीकही ॥ ७५ ॥ साचीबातांसावमुषि ॥ इम्रत  
काप्याला रामरसांइएपीनरे ॥ रहै नही ठाला ॥ ७६

श्रीरामरसांशुलोधन्त्रानंदप्रमोक्षसंयोगेणुमरण  
ग्यांनक्षारिणंनिरूपणनामसबद॥१७३॥उतीयो  
परकरण॥२॥अकलिबिचारकहीऐहै॥किवता॥  
ऐहीअकलिबिचारकंणवारसहेमेरा॥ताकंकरितहती  
करहंमैजाकेनेरा॥सोसतगुरसंतीकसीषउनकीचित  
धारो॥गुरूबतावैरामकांमरागादिकठारो॥जीवब्रह्मकाअं  
सहेउलहब्रह्मपदपाइरो॥रामचरणवारिसिमित्यंरामरां  
महीगाइरो॥१॥वारसहेकोहीरामकांमसबपूरणहारो॥ह  
जोवाकोकीयोजांणएसकलपसारो॥उपजैषयेअनंत  
ततयामैकुठिनांही॥ऐहीजनांकीसाषिअकलिसंतो  
लोमांही॥ऐबिचारजाउरिवसेकोइमुसैनघाटाषाशरां  
मचरणनिरनेअजोअसीअकलिउपाइ॥२॥करुया॥  
पूसुचंदनबिंदीऐऐहअकलिकातोल॥पूरोऊवोसबीत

सी ज्युं जने क पडे मोल ॥ ज्युं जने क पडे मोल डोर नी जं  
नी ज्ये सै ॥ नवां बरी बरिनां हि मोल को हो पावे के सै ॥ शंभु च  
रण जिन्र कलि सुं क दे नषा वै जोल ॥ पूं चंद्र न बिंदी ग  
ए हं कलिका तोल ॥ ३ ॥ पूरा वासी चंद्र मांता दिन बंदै  
लो २ पिड वासै घटती कला देषि बिचारो को ३ ॥ देषि बिचा  
रो को ३ बीज सुदिलु घदर सां वै ॥ पिदिन दिन चढती दसा  
दो ३ प्रष मां हियु जा वै ॥ यं ना सति बुधि म द मां घटे आस  
ति प्रबता दो ३ ॥ पूरा वासी चंद्र मांता दिन बंदै लो ३ ॥ ४ ॥  
पूरा वासी को बमो लुघ दो जिकें दिन ॥ सुध पाष बंध  
ती कला सबै बिचारो मनि ॥ सबै बिचारो मन सबै बंध  
ती कंचा के ॥ ज्यो न धर म का हां प्रौर नति म घटती न  
ही जा वै ॥ तातें अकलि अध्या तमी बंधती हो ३ संध  
पूरा वासी को बमो लुघ दो जिकें दिन ॥ ५ ॥

है है कंकलत्या ॥ अगनी चंचल अतिबुरी दा है गि  
हवन सोश ॥ नसम करै उतिमत रू गिह में चीजां  
जोश ॥ गिह में चीजां जोश असे तिसनां गुण जारै  
नसम करै लछि ग्यां न ध्यां न सुं सुरती टारै ॥ राम  
चरण नजिरां मकं तिसनां पाव कठारि ॥ चित बि  
तधिर ताराषी ऐ चंचलता सब मारि ॥ १६ ॥ सां सै सि  
लता चमजल अगि पाव सत लो चढाव ॥ बह्या जा  
इवे अकलिनर ककू टिके नही पाव ॥ ककू टिके न  
ही पाव नाव बिजिति रे नकोई ॥ नाव नाव परमाण  
षे वद्या सत गुर होई ॥ राम चरण तातै ककू ऐसा धि  
बिचारो मार ॥ सां सै सिलता चरमजल अगि पाव स  
त लो चढाव ॥ १७ ॥ बालक सुत मो हो चंचला देवे  
बुधि बिचला ॥ तातै बेसिं करि राषी ऐ मति मो हो

बसं होइ जाइ ॥ मति मो हो बसं होइ जाइ मोह फंदग  
लमै पासी ॥ बोलै सि सु सु चाइ लोग सब कहि है हांसी  
तातै होइ निर मोहि तारां मंचरण पद पाइ ॥ बालक सु  
त मो हो चंचला देवै बुधि बिचलाइ ॥ १७ ॥ कि वत ॥ न  
र प चंचल बदनै ति नै धि ध्रु म चूरै सोइ ॥ बिगडै राज बि  
कार सुष साता देखोइ ॥ होइ उदंगल के लै कुज सा  
अर कर म बधावै ॥ चढै आप सिर नारै तिस बही उ  
ष पावै ॥ तातै तजि चंचल पणों घणों समाव बरु कां क  
ह्यो ॥ रां म चरण नजिरां म के धीर धर म गाठो ग ह्यो ॥ १  
७ ॥ कुरुत्या ॥ नारी चंचल अति बुरी षरी षुराबी होइ  
नमै आवरु आपकी पुर षरि सावै सोइ ॥ पुर षरि सा  
वै सोइ असे मन सावै राग्यां ॥ जो अति चंचल होइ फ  
जाती करै अनाग्यां ॥ सो ही सजाग्या अटक दे मजौ

कामनाषोऽ॥ नारी चंचलः प्रतिबुरीषरीषराबीहोऽ  
२०॥ किवत॥ हरिजनचंचलकोऽमाहाधीरजधर  
मधास्या॥ समतासीलसंतोषमोषपदः प्राप बिचा  
स्या॥ सबबिधितिरपतिसंतः चंचलपदचंचलना  
ही॥ अकिगः अमरितिरामः प्रापसुमरैमनमाही॥  
जोकदपि चंचलकुवैतौजनपदरहैनकोऽ॥ राम  
रणहचलसदासाक्षसुषमऽसोऽ॥ २१॥ तुरीनमां  
नैबांगताहिचंचलः प्रतिजानौ॥ तापरिहोऽप्रस  
वारकदेनहीकरैपयांनौ॥ यूमनकह्यौनिवारिः अ  
तीतीसोनापावै॥ चंचलचपलजहोऽफजीतीतुर  
तकरावै॥ तातैरषीएवागमैमनतुरीयांसमजाऽ॥  
समतासुषवधैऽपडदरताजाऽ॥ २२॥ ककुल्या  
गजग्यांनीचंचलबुरीकरैघणांकोनासबलवसे

हीउपहासि॥करैनहीउपहास

किनल्यवै॥पहिलीअकुंसधरमंधसां

नहीफैलउपावै॥तातैरहैमुरंदमैतोसुषसोजाता

सा॥गजग्यानीचंचलबुरीकरैघाणकोनांसा॥२३॥

ऐमनजाणैजोहिरोरिवबारकोमनांहेति॥सावधां

नधीजेनहीधीजेकौइअचेत॥धीजेकौइअचेतत

सकैकोटैसोई॥मरैमोतिबिनिअंधमंत्रतापरिन

हीहोई॥तातैमनन्हकांमकरिहरिजिबिषलजि

देत॥ऐमनजाणैजोहिरोरिवबारकोमनांहेति॥२४॥

साषी॥ऐदसचंचलअतिबुरा॥धीमाहोइतोकाज॥

तोलमोलमहभांबधै॥नांतिरसबैनिकाज॥२५॥सो

निकाजसात्साकहीऐहै॥कैमलसा॥सत्साम

निमात्साफिरैमुषमुकलाइकैयाणि॥ज्युंआवैज्युं



कामनां षोडश ॥ नारी चंचल अतिबुरी षरी षराबी होइ  
२० ॥ किवता ॥ हरिजन चंचल कोइ माहाधीर जधर  
मधास्यां ॥ समता सील संतोष मोष पद आप बिचा  
स्यां ॥ सब विधितिरपति संत अचल पद चंचल ना  
हो ॥ अकिग अमरितिरां म आप सुमरे मन मा हो ॥  
जोक दपि चंचल कुवै तो जन पद रहै न कोइ ॥ राम  
रण न्द चल सदा साधु सुषम इ सोइ ॥ २१ ॥ तुरी न मां  
नै बांगता हि चंचल अति जानौ ॥ ता परि होइ अ स  
वार क दे न ही करै पयां नौ ॥ यू मन क ह्यौ निवारि अ  
ती ती सो ना पावै ॥ चंचल च पल ज होइ फ जी ती तुर  
त करावै ॥ ता तै र षी ए बाग मै मन तुरी यां सम जाइ ॥  
समता सुषवधै इष उंदरता जाइ ॥ २२ ॥ क क ल्या ॥  
गजगणां नी चंचल बुरी करै घणां कोना सब लवसे

सि। मरै नही उपहासि

ताहि बंधमैं किन ल्यावै। पहिली अकुं स धर मंधर्या  
 नही फैलन पावै। तातै रहै मुरं ह में तो सुष सो नाता  
 स। गज ग्या नी चंचल बुहौ करै घणा को नां स। २३।  
 एमन जो एं जो हिरो रि वबार का मनां हेति। सावधां  
 न धी जै न ही धी जै को इ अचेत। धी जै को इ अचेत त  
 सक काटे सोई। मरै मोति बिनि अंध मंत्र तापरिन  
 ही होई। तातै मन न्ह कां म करि हरि न जि विषत जि  
 देत। एमन जो एं जो हिरो रि वबार का मनां हेति। २४।  
 साणी। एद स चंचल अति बुरा। धी मा होइ तो काज।  
 तोल मोल मह मां बधै। नांतिर सबै निकाज। २५। सो  
 निकाज सा ल्हा कही रहै। कं क ल्या। स ल्हा म  
 नि मा ल्हा कि रै मुष मु क लाई कै पाणि। ज्युं आवै ज्युं

बरवरे नही बिरीयां बषत पिछांणि नही बिरी  
यां बषत पिछांणि और की सुणे न मां नै का हा ऊ  
ठ का हा सा च आप की सिरे बषां नै ॥ गुण और गुण  
सम जै नही कुं ज सहो इ ज लि हांणि ॥ सा ल्हा मन  
मा ल्हा फि रे मुषि मु क ला इ कै पांणि ॥ २७ सा ल्हा  
मुष मु क ला इ करि बो लै बि नां बि चार ॥ स्यां णं सु  
णि मां नै नही उ ल टी दे धि र कार ॥ उ ल टी दे धि र का  
र कार मु र जा द ब ही नां ॥ सा ल्हा सा ल्ही वा त कर  
त नै षी नां ॥ और से न र की अ क लि मै क दे न नु प जै सा  
र ॥ सा ल्हा मुषि मु क ला इ करि बो लै बि नां बि चार  
र ॥ २८ ॥ अ प णं बो त्या ब च न की सा ल्हा ब धै न पा  
ज सा च ऊ ठ की ग म न ही बो लि र करै अ का ज ॥  
बो लि र करै अ का ज सु णे सा ल्हा की सा ल्हा जा

केधरमनक्षानमुदरीतोड्याशात्या॥सोमनेजनमु  
षिसाचबिनिबोलैकोइनित्ताजा॥अपणबोल्या  
वचनकीसात्याबधेनपाजा॥उ०सा॥सात्यासात्या  
रुलिमिलैसा॥हीबातबणाइ॥नगेफेटआइसाच  
कीतबसारीहीउमिजाइ॥तबसारीहीउमिजाइक  
णबिनाक्यावदरावे॥तातैनकणीबातकीयांका  
हाहासित्तावे॥यामचरणनजिरांमकंसा॥ह्यार  
होरिसाशासा॥सात्यासात्यारुलिमिलैसा॥हीबातबणाइ  
इ॥सात्यासा॥हीबातकरिज्वाहीमनिमोद॥तोल  
हीणतरकांकरैजाकेउरिनहीबोधा॥जाकेउरिनहीबो  
धसोधस्याणपकाटोया॥समफिनहीलगाएअऊमम  
तामनिमोदारांमचरण॥सेनकंदीजेकाहापरमोद  
सात्यासा॥हीबातकरिज्वाहीमनिमोद॥इ॥सा॥

सा सा ॥ ५ ॥ सा वि स प क ठा क दी रे है ॥ सा च सु ज स  
न ही ग ह रे ऊ ठां के संगि साथि ॥ न ल म ण सी बा टो ल जे  
क छ न आ वै हा थि ॥ क छ न आ वै हा थि न्नी की र ति न्नी  
न र्थ बो ले ॥ चित व्र ति र है न थि र नू त जूं न र मूं मो ले  
॥ गूं लि ष टो टा दारी ऐ रां म न्न जौ दि न रा ति ॥ सा च सु ज स  
न ही ग ह रे ऊ ठां के संगि साथि ॥ ३३ ॥ ऊ ठां सं ट लि चाली  
ऐ क दे न की जे संगि ॥ ऊ ठां का संग साथ सं रां म च र ण  
सु ष न्न ग रां म च र ण सु ष न्न ग सा च उ रि क दे न जा गे ॥ उ  
ति म गु ण आ रा म ऊ ठ सं द रा ना गे ॥ ऊ ठां कौ आ द र की  
यां बि ग डि जा इ स ब ट ग ॥ ऊ ठां सं ट लि चाली ऐ क दे न की  
जे संगि ॥ ३४ ॥ ऊ ठ पा प कौ मू ल दे ऊ ठां षो टा षा इ मो टा रो  
टा जा स कै का रूं सूं न न रा इ का रूं सूं न न रा इ द्वा इ है  
रां न कर आवे ॥ ऊ ठ त णे फल क स ट उ स ट ले दो जि ग जा वे

रामचरणतजिह्वठंकरं हो राम ल्यौ लाइ ॥ ऊठयापको  
मूलहै ऊठगषोराषाइ ॥ ३५ ॥ साधी ॥ षोटाबावेऊठला ॥ सा  
चो रामसदाइ ॥ रामचरणताकारणै ॥ ऊठपरौ छिटकाइ ॥  
३६ ॥ कंकल्या ॥ ऊठपरहरेसाचला जाकेसाचो ग्यान ॥ रा  
मचरणनुरिमैसदा रामनिरंजन ध्यान ॥ रामनिरंजन ध्यान  
आन गारी नबिचारे ॥ मनबचकाइकसाचसंगऊठ  
कोदारे ॥ हरिगुरको जैराधि मनकनिकनिदेहनका नऊ  
ठपरहरेसाचला जाके ग्यान ॥ ३७ ॥ साचग्यानसाइ नजैत  
जैतरमनाऊठ ॥ ऊठऊषेसोऊठला सोहीमिनषलक  
ठ ॥ सोहीमिनषलकटलाप्रस्थाबापरजैसा ॥ जाहानऊठ  
घास धानकोहो निपजैकेसा ॥ रामचरणरहो आतिरेउप  
जै अकलिअट्टि ॥ साचग्यानसाइ नजैत जैतरमनाऊ  
ठ ॥ ३८ ॥ रामचरणऊठको तणो परहरीएपाडोसावाका

सा च काहा कर होइ सो निज स्यां आवै ॥ बिनां बाइद्वै  
बो लिप छै सुक चै पिछ तावै ॥ राम चरण पहली सम  
जिक स्यां बाजी ऐतर ॥ लखि लीजे कीजे पछै बाता  
कौ मच कर ॥ ४५ ॥ लखि धारी सुं वात करि बाचिक  
कौ तस कार ॥ लखि धारी सुं लखि मिलै बाचिक सुं  
संगि षुवार ॥ बाचिक संगि षुवार सार क्रिया नही  
जाके ॥ कीया ही ए जो होइ संगि नही रही ऐ ताके ॥ रां  
म चरण नजिरां म कं करणी किरत बसार ॥ लखि  
धारी सुं वात करि बाचिक कौ तस कार ॥ ४६ ॥ ब  
चिक तस कार कहै रहै ॥ सीरवा ॥ बाचिक वा  
तल बाल ॥ करतां मन हारै नही ॥ तिन का बाइक जा  
ल ॥ कहै सु ऐ उल जाड के ॥ ४७ ॥ साषी ॥ के ता ही  
बांचे सु ऐ मन मै मोद नुपाइ ॥ पै बिनि करणी नह

चाबिना ला न नही दरसाइ ॥ ४६ ॥ कंठ लया ॥ च  
लिकेता ही बांचो सुणो बिनि न हचे परतीति ॥ ज्युं बि  
धवा गाइ रे नि च रि ठो ला मारू जी ता ॥ ठो ला मारू जी  
त हर धि मन मोद नु पा यो ॥ गायो से ऊ स वा ग सु तो  
प्रापति न ही पा यो ॥ यू किर त व को किर क्यो न ही जे  
बिना सा च की री ति ॥ च लिके ता ही बांचो सुणो बिनि न  
हचे परतीति ॥ ४७ ॥ बो हो बांचे बो हो सां म्ह लै बो हो  
ता सि पती की ना ॥ बांचि सुणो सि पती करै अरथ ग्रंथ  
को जी न ॥ अरथ ग्रंथ को जी न हो इ प्र वी न य सा वै ॥ ४८ ॥  
कू ग म नां दि बांचि सु णो मोद उ पा वै ॥ रां म च र ण न जी  
या बिना र ह्या दी न का दी न ॥ बो हो बांचे बो हो सां म्ह लै बो  
हो ता सि पती की ना ॥  
सुणो का



अन्नमांनजाणपणनाहीची न्हों॥ रामचरणवाचिक  
नरांवातांतणविनोद॥ विनिकरणीवाताकरैवा  
चिककैमहिमोद॥ पधधरतीवाह्योऊगिहैविनिवा  
ह्योऊगिनांहि॥ रामचरणइरैसिकेसमजिदेषिमंन  
मांहि॥ समजिदेषिमंनमाहिलाचकरणामैपावै॥  
विनिकरणीसुणवाचिनफोनांहीदरसावै॥ नहच  
संनजिरामकं ज्युंगपाननुदोफलपांहि॥ धर  
तीवाह्योऊगिहैविनिवाह्योऊगोनांहि॥ पपकरण  
विनिक्यापाइहैजेअसत्ताकीलोगकाहाविका  
रवैरागमैकाहाकोइसाधौजोगकाहाकोइसा  
धौजोगविनांसरधानहीकोइसरधासुसबव  
एचजनसरधासुहोइरामचरणसरधातीय  
कदेननुपजेसोगकरणविनिक्यापाइहैजेअ

सलाकीलोग ॥५६॥ असलाकी आसामुषी कहीए  
है ॥ असलाकी आसामुषी उषी सदादिल काच ॥ षय  
तषराबी कौर ह्या जाकी जैसे ता ॥ जाकी जैसे ता  
मनोरथ षीए परां ॥ हीए धरम अरध्यान अन  
दिसिनिति कुलसा शीरामचरण हरिजनबिनि  
काहा देसी दरिसाच ॥ असलाकी आसामुषी सदाउ  
षी सदादिल काच ॥ ५७ ॥ असलाक्यां सं प्रापको मील  
न जैसे जा ॥ आसण सं जमनां सं धै विकल रहै विच  
ला ॥ विकल रहै विच लाइ सं मयाप कडे नां ही ॥ जास  
कै सौ ज्ञान अरध्या अंतरि मां ही ॥ रामचरण ता अषत  
संक ही काहा समजा ॥ असलाक्यां सं प्रापको मीलन  
जैसे जा ॥ ५८ ॥ रामचरगतिसरधालीयां कीयां काजिसी  
ध हो ॥ वि

गईवा तक्का गाइकै पाड उघाडै दास ॥ दो रो ॥  
स है न गट जाणिकु दास प्रमट जाणिकु दास वस  
सो ही सो मरथ जाइ गुणार हत पर ब्रह्म बोपनां  
सी ल्या ले दासन जे पर ब्रह्म पद हद की किरीया  
त्यागि ॥ बेह दमै बासा की या जग सुयनां सुं जागि ॥  
जग सुयनां सुं जागि ॥ आगिति सनां की गरी ॥ सदा सां  
तिसुष पूरि हरि की ऐक न करनारी ॥ राम चरण चित  
ऐकर सिर हे राम ल्यो लागि ॥ दासन जे पर ब्रह्म पद  
हद की किरीया त्यागि ॥ ७० ॥ दास कु दासां ना बणै जा  
की आसै दोइ ॥ वैस मता ग है सां ई न जे वै बिय तारत  
जोइ ॥ वै बिय तारत जोइ षोइ माफि कजे चालै ॥ दास  
मनोरथ जीति आस तिसनां कं पा लै ॥ राम चरण च  
नां बणै मित्या षडा सट होइ ॥ दास कु दासां ना बणै जा

की आसै दोश ७१ ॥ दोश आसै मिले नही सो कही ए  
हो ॥ काया एक करं कके मूढा दोश ७२ ॥ तौ बो  
हो मूढा बाता घणी के सै मिले जमेल ॥ के सै मिले ज  
मेल मिले नही आसै मनकी ॥ मन मिली यां बिनिबा  
त करे सोही कन कनकी ॥ राम चरणा ताते करु क  
रि सुध आसै नेल ॥ काया एक करं कके मूढा दोश ७३ ॥  
मेल ॥ ७२ ॥ बोहो मूढा बुधि एक दोश आसै एक बिचार ॥  
तौ वै घण नजाणी ए बोहो बुदाइ कधार ॥ बोहो बुदाइ  
कधार नीर सो प्रगट कही ए ॥ सब काजि सुधारण  
जोगि एक मै आनंद लही ए ॥  
राम नाम तत सार ७३ ॥ चंप्राइण ॥  
सुषु परिहै ॥ एक बिना उषुद नि कटि प्रण ६  
तै बात बिचारि एक दोश की जी ए ॥ परिहार ॥

जिरामत्रसैसुषलीजीए॥७४॥कंरुल्यां  
मिलापमैगपारांकौबलहोइ॥एकएकन  
जासंकहीएदोइ॥तोजासंकहीएदो  
वांकेरो॥दोइन्यारामासाजाइआइदेइ  
मचरणगुररामकंएकरूपकरि  
लापमैगपारांकौबलहोइ॥७५॥एव  
इउरंगांजोइ॥दोइजयजैसोइरिका  
एकैआनंदहोइउरंगांरहीएन्यार  
लापऊयजैहचैकारांरामचरण  
आसाषोइ॥एकरंगांसंएकतादे  
आसैजतिममधिमामिलैनमे  
मिलिचालीएतौजवैअधिकसं  
सतायबोधबुधरहैनकोइ॥षे

दि  
ते  
नौ  
रां  
कमि  
ता  
इ

॥ घोकै अकलि अथा तमं जा मिल  
आसै उति मम विमं मिले नमेल मिलाप  
नपसरि नरिसंगि सरो नरि आसै नो  
शक त्यागी शक रांग षडं सरुप जे मां ही ॥ रजनी  
नेल जल तेल न हो श सुध अ सुध न  
पाप पुनि मिले न दोश ॥ कन करी ग नां ही मिले  
तले र हो अ ए  
ज उदास ॥ ७८ ॥ एक कहै अ हति रां म ही रां  
म उचारन ॥ वेद पुराण साधिनां म जो जल के तार  
एक सरल रे ल बुधि को इ उ हरा व न जा के ॥ ज्यं अ  
वै ज्यु कहै अ न षां मूठे नाषी ॥ ता तै ते को हो क्यु मि  
ले का जा दोश ॥ राम चरण न जि रां म कं मिलाया  
ने ॥ ७९ ॥ साषी ॥ मिलाया सं मिलि

चालीए॥ आसै उति मदेषि॥ रामचरण कोई जहो  
 ५॥ नलिषटदरसणनेष॥ ७०॥ सो नलिषटदर  
 एगति कही ऐहै॥ कंकल्या॥ सलिता साइरजल  
 बिनायूरामचजनबिनिनेष॥ वाहादजालीतप  
 तिन्नतियाकैत्रिसनारेष॥ याकैत्रिसनारेषन्नलेषी  
 रामबिसार्या॥ आसालोचरकांमसगिमांमजहा  
 स्या॥ सातासमतानां नईकरै जाहातां हांधेक॥ सिल  
 तासाइरजलबिनायूरामचजनबिनिनेष॥ ७१॥  
 साधी॥ रामचजनबिनिनेषधरिचूकाआह्वा  
 ल॥ नूषही नूषपुकारिहै॥ करणीबिनाकंगाल॥ ७२  
 कंकल्या॥ बिनिकरणीसामीपएफकीटीमांनिमरो  
 ड॥ नोगांकीनावटिलीयां देस्वारथस्वादां दोड॥ दे  
 स्वारथस्वादां दोडसंध्यासांनदउपजावै॥ बिनिस

ध्यां होइ वे जोष करै कल चाउष पावै ॥ गुण औ गुण  
समजै नही मां मै ऊठा जोड ॥ विनिकरणी स्यां मी पण  
फीटी मां निमरोड ॥ ७३ ॥ साषी ॥ अतीत अजुगती  
बात करि ॥ मनि मां नत अहलाद ॥ परनारी ऊठौ वा  
जडौ ॥ चाटै करि करि स्वाद ॥ ७४ ॥ गाफिलता मै जो ब  
स्यां ॥ दीन्हौ चेलमचा ॥ दमडी चमडी सू रता ॥ पुर मुष  
पान गुमा ॥ ७५ ॥ कन ल्या ॥ कन क मिल्यो कां मणि  
मिली मिली यो डनी यों धारि ॥ जमी मिली जा ॥ गां मिली  
बधे गयो जगत विकार ॥ बधि गयो जगत विकार जग  
तिकौ चेष वणायो ॥ असुध कां मनां लीन सील सम  
ता जगु मायो ॥ असे चहन कल काल मै कुं कुं मं कौ  
विकार ॥ कन क मिल्यो कां मणि मिली यो डनी यों धारि  
७६ ॥ ऐता मिली यों मनषु सीसो काहा करै बैराग ॥ तं  
न सुष मां ही मगन अ



बांध्यो दुनी यो राग जग मदन जन बही एणं गणो न ही  
ए गुण चोर जो हां तां हां फिरि है ही नां रां म वि मुषत  
न चेष धरि ला यो विषी यो दाग ॥ ग्रह त्या गि ग्रि हसूं  
रता माया मो हो संलाग ॥ ८७ ॥ जग वी वो ट प छे व डी क  
है गु सां ई नां म ॥ छो दै चालै जगत कै करै चा करी को  
म करै चा करी को म सका संकर का ला जै ॥ जाले  
ती तिल कंगलै रुदरा स बिरा जै ॥ सिव सुपने सुम  
रै न ही निधड क आठे जो म ॥ जग वी वो ट प छे व डी क  
है गु सां ई नां म ॥ ८८ ॥ का हा गु सां ई से व डी का हा जो गी  
दर बे स ॥ का हा ब्राह्मण का हा जंग मां का हा को ई धा  
स्यां ने स ॥ का हा को ई धा स्यां ने स पे स मन सां ई कर  
नां ॥ आं न न र म नां मे ट न ज ने नौ सा गर तिर नां ॥ ऐ  
गति सब क उचित है कहै गरु उ प दे स ॥ का हा गु सां  
ई से व डी का हा जो गी दर बे स ॥ ८९ ॥ का हा जो गी का

हा जंगमां का हा सेष सन्यां सी ड जि॥ का हा जंगमां  
का हा सेवडा एह जगत में पु जि॥ एह जगत में पु जि  
गु जि गाथान ही जां ऐ॥ स्वारथ मां ही लीन अच  
क्यौ ऊगडो ठां ऐ॥ सांग पलटि संनां नयारां मन  
लाकें सु जि॥ का हा जोगां का हा जंगमां का हा सेष  
सन्या सी ड जि॥ ए०॥ कां छ नि सट वा चा नि सट इष्ट  
निष्ट गुण चौर॥ दि० न दोष अर ड र बु धि बो लै ब च  
न क चौर॥ बो लै ब च न क चौर फि रै त्रि सनां कामा स्म  
कंड क पट पाषं रु करै गुर ग्यां न बि सा र्या॥ रां म च  
रण अ से न सं दो डि मि लै सो ही चौरा॥ कां छ नि सट वा  
चा नि सट इ सट निष्ट गुण चौरा॥ ए०॥ इ सट निष्ट  
जे नेष धर क सट स है दिन रा ति॥ इ सट दि ल ब री  
जगत की करत न सा ता सा ति॥ करत न सा ता सा  
ति अं ज क अ ठ प हर र हा वै॥ गुर की सी ष उ लं धि

जगतमनिजाइगावै॥ त्रैसामिलीयाउषबधे  
कञ्जन्त्रावैहाधि॥ इसटजिसटजेनेषधरिक  
सटसहैदिनराति॥ एर॥ कसटसहैकिरीयावि  
नांफिरीयाच्यास्यंदेस॥ काहाबिरकतनांगागू  
दडाकाहामुंरुतसिरकेस॥ काहामुंरुतसिर  
केसन्नजनकरिमननहीरोक्यो॥ संजमसाधि  
नसक्योस्वादकरितनकंपोष्यो॥ रामचरणइ  
नबाततसंजलो नदीसैनेस॥ कसटसहैकि  
रीयाविनांफिरीयाचास्यंदेस॥ एउ॥ देसदिसं  
तरिफिरतहीअंतरेसोध्योनाहि॥ परमोध्योस  
सारकंआसाधरिमनमांहि॥ आसाधरिमनमां  
हिआपत्राघोनविचास्यो॥ परैपरैजरमंतसं  
तमतनांहिनिहास्यो॥ रामचरणनजिरांमकं  
एहसंतमतआंहि॥ देसदिसंतरिफिरतहीअं

स्वारथस्त्रादन्ह सा ६

तरसो ध्यो नां हि ॥ एष ॥ अंतरसो ध्ये आपको सिरप  
 रिदल कबणा ॥ परमो ध्येत न मन के स्वारथसा  
 दन्ह सा ६ पा ६ सते गुरकी सिष्या ॥ जाडो दंतन प्रा  
 ए अज गरी नां वर निष्या ॥ राम चरण रामै जे जे ह  
 जीत जे नुपा ॥ अंतरसो ध्ये आपको सिरपरदल  
 कबणा ॥ एष ॥ दलकबण वैदीन को दां मां ति  
 लक सवारि ॥ दां मां म दिल से त ज्यो माई बाई  
 ना रि ॥ माई बाई नां बिहारि हर सां सं बैठा ॥ राम ज  
 जन दिन राति सील सं जम मै सै गा ॥ राम चरण सो  
 जेत बै त्रिसनां आस निवारि ॥ दलकबण वैदी  
 न को दां मां तिलक सवारि ॥ एष ॥ रेषता ॥ इजिदर  
 बेसका हा जंग मां जोगी यां से वडा और सं न्यां संधारि

तन्नाधीनषुवारी॥ धरमधाराहराकरतकाराषंबु  
 राईवांधिसिरपोटलाही॥ स्वादअरवादफुनि  
 रतसिंजारसुषणरूकीसीषपलनांहिचीही॥  
 मजनमायामहीमसतमनकोमनांआमनांच  
 रअग्यांनपूरा॥ रामहीचरणबुद्धदरसणीलबि  
 विनांरामसंबेमुषमुषिनांहिनूरा॥ ए७॥ नूरमु  
 षिनांहिदुषमांहिनितिहीरहैवहैबिनिनीरसब  
 नरमधारा॥ करमकिरीयानहीआसमायामही  
 करतवोहोउदिमअरकरतकारा॥ किरषिबांण  
 जअरवेदबिद्यापढेनीषअरचाकरीकिसबके  
 ता॥ त्यावल्सलोअमनषोअतानांतजेअजेनिति  
 संवादसुषकोमहेता॥ दरसणीदलकधरिषलक  
 मैसिलिगयापलकपरब्रह्मकेनांहिगायो॥ राम

हीचरणचजिरामरमतीतकंदरसाणंपारनि  
जदरसपायो॥एण॥यांचइंकीअरुठठौमनजी  
तायांजीतीयांलीनअरकांमसारा॥दांमबांमं  
तज्यांसीलसंजमसज्यांसज्यांगुरसीषसंतोष  
धारा॥रामकौचजनअरु तजनअपराधकंद  
रसाणंजाणितबदरसजोगा॥दरसंकीयांघकां  
दुरसिमनहोइहेंघोइहेंजावकाहरषसौगा॥अ  
सातोदरसाणंअसाहीनेषधरमांनिकररामकौ  
सुधचालै॥रामहीचरणवैउजिपरगटहैहठक  
रिहरसकीफोजपालै॥एण॥केरुत्या॥हरसफौ  
जकेपालवैसोहीसरासाध॥कंडासंगकांनैक  
रैमेटेसबअपराध॥मेटेसबअपराधतबैदरसाण  
मीमोचा॥जब

राम न जन करि ली जीए पर हरी ए सब बादा हर  
स फौज के पालवै सो ही सं रा साध ॥१००॥ हर स  
रुस षु सि ऊप जै ए माया कारंग ॥ का ही जे ष का हा  
हर स एणं ऊप जै ता हि कु संग ॥ ऊप जै ता हि कु सं  
गं जे ग सु ष सा ता करि है ॥ अजिक आ प दा पू रि  
मूरि मन धी र न ध रि है ॥ दर स ए प ह स्या दा स गी  
की जे संग उ तंग ॥ हर स ऊ सि ऊप जै ए मा या का  
रंग ॥१०१॥ सो मा या रंग आ गे क दै गे ॥ इ हा ॥  
अ क लि धा रि कु ल षी त जौ ॥ आ सै करौ मि ला प ॥  
मा या रंग आ गे क क ॥ जा की ज ग मै ता प ॥१०२॥  
इ ति श्री रां म र सां इ ति वी ध आं नं द प्र मो ध अ  
क लि धा रि कु ल षी त स का र आ सै मि ला प  
नि रूप ए नां प्र सब द ॥ २६ ॥ त्र ती वी प

रकरण ॥३॥ जाया का कहें है ॥ कूल ॥  
माया के रग अनंत प्यारे ता को पार को हो कुण पांड  
हैं जी ॥ छल छेद अनैक दिषा इ मारे रसरंग में जीव  
जुला इ है जी ॥ क कूला इ है क कूला इ है अधि  
बीचि में बो होत जुला इ है जी ॥ जन राम चरण द्वै  
जन सही माया देषिन चित्त चला इ है जी ॥ ११ ॥ क  
कल्या ॥ गिण न गिण ती हो इ दे माया चिरत अया  
राता क देषिन धी जी रो न जी रो सिरज ए हार ॥ न जी  
ए सिरज ए हार ॥ न जी ती सिरजी सो माया ॥ हिस टि सु  
ए न



निरंजणधाइ तंधणी निरंजणधाइ अंणी नुलुं  
दमआवै कणी कणी कं देषिकांइ मनकं जमुला  
वै रामचरणसतगुरतणी षणी नसीषनुलाइ  
जणी वणी मायासबै गिणी कंण संजाइ ३ अनंत  
कलाउपजाइ कै आमी फिरिहै सोइ कहुं दसावै  
तदेकहुं जोरावरहोइ कहुं जोरावरहोइ दोइतन  
करिकै आवै कनककाभणी अंगरंगनां नो ज  
दिषावै तातै कहुं नमहकी ऐ रामचरण नजिजो  
इ अनंतकलाउपजाइ कै आमी फिरिहै सोइ ४  
आमी फिरै अनागणी जातादरिके माघ रामचर  
णकोइ उबरै जाके माथे जाग जाके माथे जागर  
है बैराग करारै सतगुररष्याकार रामजी आयउ  
वारै औरनकोइ आसरो काया किरतल गलाग

आभीफिरैः प्रजागणीजातां हरिकें माघं ॥ यद्दरिमघ  
 चाले हरिजनां मनां मनोरथजीति ॥ लजेनिरंजण  
 रंमकं तजिमाया विप्रीति ॥ तजिमाया विप्रीतिरीति  
 उतिमजोधारे ॥ अनजरमपरहारिणां नगुरको  
 जविचारे ॥ मचरणतजिकं मनां राशिो सदा सु  
 नीति ॥ हरिमघचाले हरिजनां मनां मनोरथजी ।  
 बाजीगरकरतार ॥

षि

जं होइ नौयार  
 रतार ॥ ७ ॥ माया

जाण पण र है न को ई पी छै उ धी या हो इ हर  
 ऊप जै जो ई ता लै मा या पर ह रै क रै राम व  
 न॥ मा या क न ही न दे धी ये दे ष्या हो इ हे रं न॥ ७  
 ल ए॥ मा या दे ष्ट इ द रि च्छ लि जा वै मा या मो  
 रूप क हा इ है जी॥ अ ज इ स इ षा दि क रि षा र  
 जि ष्ट मा नि ष की का हा ग इ है जी॥ अ प त षा  
 ग्पा दि क जो ग क रै म द्मान अ हं का र व  
 जी॥ ज न रा म च र ण अ ज न वि ना मा या  
 ब ह का इ है जी॥ ए॥ को इ र या  
 ली या को इ अ ग लि ले जी  
 इ प ड्रा को इ जो इ ष  
 क रै न क र क त्ता वे न क र  
 है जी ज न रा म च र ण व च्चे

गाइ है जी ॥ १० ॥ कोमना ऊपर जोर माया काया  
है जी ॥ जैसे फल समे पाव कफैलि  
करि छार लगारन

सांर रषै बो होना ति असे क रषा इ है जी जन राम च  
रण न जन करौ असी रति माया उषदा इ है जी ॥ ११ ॥  
कोइ सीत सहै कोइ घामि सहै को पाव सपंथ चलाइ  
है जी ॥ कोइ नीरतिरे बनना हि मरै कोइ इरिदिसंतर  
जाइ है जी ॥ कोइ अष सहै कोइ प्यास सहै माया आवै  
मेरे युगाइ है जी ॥ कोइ बट न्हा लै कोइ जडिता लै को  
इ रोवत कोइ दुसाइ है जी ॥ १२ ॥ कंठ ल्या ॥ केरो वैके  
हीह सैके लडै जुडै मरि जाइ ॥ केही किसब किरीया क  
रे माया तणी नुपाइ ॥ माया तणी नुपाइ ल्याइ घरि मा  
ही धरि है ॥ धी कलि धाडि अने कं राजत सकर सेक

रिहै ॥ ऊइ जिनके अजकया नही सो अति उकलाश  
के रोवे के ही हसैके लडै जु डै म रि जाइ ॥ १४ ॥ अति  
अजकाया जीव डई मायाके संगि ॥ ऊपरिसुषला  
लीघणीरचातासकैरंग ॥ रचातासकैरंगसदा  
जीतविडषपूरावतलायाबिप्रीतिकैपडेकरम  
चुरा ॥ रामचरणनजिरामकंतमतिल्यावैअंगि  
अतिअजकाया जीव डई मायाके संगि ॥ १५ ॥ मा  
याकासंगिदोषसैमोषिनपावैजीव ॥ अजकआ  
पदाधेधकरिविसस्यासंमरथपीव ॥ विसस्यासंम  
रथपीवसीवसरबगिघणनामी ॥ पडिमायाकेकी  
चनगतिमैपाडीषामी ॥ रामचरणमायाबुरीक  
देमतीधीजीव ॥ मायाकासंगिदोषसैमोषिनपावै  
जीव ॥ १७ ॥ जीवबुधिजाकीसहीसोमायासुमोही

त माया मोहामां नवी जगभेफिरफजातं सीति  
 कोइसंगोनजाके॥ माया प्राया करतं मरंतं लज  
 माया ताके॥ रां प्रचरणं तजिछां वली सुन मुषिह  
 रिआदीता॥ जीव बुधिजाकी सही सो माया सं मो  
 हीत॥ षण॥ इहा रूपदासके रूपसो॥ मोहे सब संस  
 रां सां धं जन मोहे नही॥ मोके तो होइ बुवार॥ १५  
 ॥ दीको बचनका॥ रूपदा सं रूपीया ज्यो सं सां  
 रो संसार मोहीत होइ॥ तो भट्टे नही आइ ऊंचा  
 रहै जया सरबराजी होइ जाइ कैसो॥ जाहो कोइ राहि  
 ऊगडो माचे आं म्हा सो म्हा दल आ वरै तो बंधा ना  
 सरु होइ॥ तर वा स्यां वा जै जठे रूपदास जी सो ही  
 रूपीया आइ पूगे॥ जया याका बचन सुणिअर

जाहो इरहै ॥ रूपदासजीकी जैसे आइसरमप  
डे ॥ और अनैक ऊगाडा जो राहो इतो मिटि जाइ ॥  
जैसे सब संसार रूपीयाके अधीन है ॥ अरजी  
कास जाइ सोबो होत बेराजी होइ ॥ जीके आवें  
सो घणैराजी होइ ॥ जैसे राजारक दरमण नेष  
धारी सरब मोहेगरे ॥ याकं पदारथ मान्योतीस  
॥ अरसाधुजन मोहोबा मै आरे नही सोकेसै ॥  
जगत नगत का दोही दल आकै स्या ॥ जठै जग  
तके ऊपरै ॥ ग्यानरूपी तो बषांनां सरू होइ ॥ ग्या  
नका गोला छूटै ॥ तत सब दरूपीते गचालै ॥ ज  
द्यों संसार नेट पूजालेर सांझा मिलै ॥ इब आ  
णिच ठावै ॥ तब काइर संसार होइ नगतिरण  
मै मरवाकी संमरथान होइ ॥ जद्यों पूजाचढा

इद्विसयलोकहिलेअपणोसंसारपणोउवा  
रे॥अरएसाधनावधराइरपूजासंमोहीतहोइ  
रपूजाउठाइलेरूपीयासंराजीहोइ॥तोरांमजी  
काचाकरनहीगेरचाकरचाकरीचोर॥संसार  
संमिल्याकहीएतववाकोसाधपणप्रवारहे  
इअररामजीकीचाकरीसोजगतिजजन्ना  
पसबणेनहीरामजीकोजगतिराजजमायोन  
ही॥तववाकोस्यामधरमूरस्योनही॥रामजीकी  
दरधमैआदरहोइनही॥अरस्यामधरमीरामज  
काजनहैज्योपूजाइबसंमोहीतहोइनहीसंसा  
रलुडुघडीकरेतोमानेनहीविसयलोककरेनही  
ग्यानकीराडिपाडेबेरागरूपीफोजदारआगेरा  
षाजगतनेजीतरामजीमाकुलग



कौञ्जगतिराजजमावे॥ आपण सुषखादा की  
सौ कजे लैनही॥ स्यामरांमजी सं स्यामधर मूपा  
ले॥ यूजगतजीवांके रांमजी की जगतिवधाइ  
रजगतपण निवारै॥ जैसे कोइ बित्री के स्याम  
धरमी चाकर होइ सो कोइ गैर चाकर होइ॥ सो  
कोइ गैर चाकर के ऊपरै बिसा होइ सो वाको  
गैर बबेक मारिवांके स्यामधर मों करि धाणी का  
पगां लगावे॥ वाको आछौ दिषावे अैसे साधु ज  
न जगत का जीवांको अगां न अहंकार मिटाइ  
रांमजी कौञ्ज जन करवै॥ अैसे आत्मरूप करि प  
रमात्मामै मिलावे॥ आनंद पदमै पऊंचावे॥  
जगतपण निवारण करै अैसे जन निति निरमो  
ही है॥ काहु सं आसकति होइ नही॥ एक रांमजी कौ

ही आस कतिपयं ज्योके वैही रामजी का जनह  
एक कल्याण जनमाया के परहै मनिन उपादे  
लोच लोच कृपया जो लोच जनपद रहे न सोच  
जनपद रहे न सोच लोच लोच ता कृप जै नारी ॥ धरम  
ध्यान मिटि जाइ साध पद करि है षु नारी ॥ रामच  
रण निरलोच तारां मज जनसै सो जा जनमाया  
के परहै मनिन नु पावै लोच ॥ २० ॥ लोच लोच कही  
है ॥ साषी ॥ लोच लोच जिगा वै लोच ॥ अतिरलो  
च नु प्राश जा के उरि संतोष धना सो निरलोच ॥  
नही ठिगाइ ॥ २१ ॥ लोच लोच निरु मे सदा ॥ ज्योके  
दान समता होइ ॥ वैबाचो न लिश्रवणां सुणो ॥ हि  
रदे निदेन सोइ ॥ २२ ॥ के कल्याण ॥ हिरदे निदेन सां  
चसत जोलं खारघ मिगि खारघ मिटी पां जाण

एरं गे रां म कै रं ग ॥ रं गे रां म कै रं ग जि नं सु ष सा ता  
पा इ ॥ वि प ता भै वे क्ता ल जा इ ग ग्यां न ठि गा इ ॥ रां म  
च र ण न जि रां म कं स म तारा षौ ञ्च गि ॥ हि र दै त्रि दै  
न सा च स त जो तं स्वार थ स गि ॥ २३ ॥ स्वार थ स गि  
स्वां मी य णं प डै पा त लो हो इ ॥ दि न दि न ब धै ज दी न  
ता घ टै प र ब ता सो इ ॥ घ टै प र ब ता सो इ कां म नां क ल  
गु मा वै ॥ लो ग करै उ य हा सि आ य सु णि मु ष मु र ज  
वै ॥ रां म च र ण लो न रा थो न लान दी सै को इ ॥ स्वार थ  
स गि स्वां मी प डै पा त लो हो इ ॥ २४ ॥ कि व त ॥ प डै पा त  
लो हो इ लो न स गि सो न न पा वै जा इ बं मा य ण वी ति  
री ति र्ज मूं न र हा वै मां न नं ग म न नं ग रं ग र स र दै न  
को इ उ ति म चो ल न्न नू प लो न त्रि स नां स गि षो इ  
ता तै ब क य ण चा ही ऐ तो न जी ऐ रां म वि चार रां म च

रणसंतोषगहोत्रिसनानागरिदरिद्रिभत्रिसना  
साषी॥नागरिमाहीनागरिनाचै॥नागरिनाचनचा  
वै॥नरकोनासकीयोकरीनागरि॥नागरिनरनिय  
जावै॥रुक्षाटीकाबिचनका॥नागरिकहीऐबलो  
वणी॥सोहीकाया॥कायामेंसुरतिसोहीबलोवणी  
मेंई॥नागरिनाचनचावैसोहीअसंतरी॥बलोव  
णीमेंईफेरैहै॥मोहोमदंनकानेता॥हेतरूपीहा  
प्रत्यासूकेकरसिआहांसांहांषेचैवै॥सात्रिसना  
रूपीअसंतरीसुरतिनेउमायाफेरैहै॥परिवैठ  
बादेनही॥तीरूबबेकरूपीदेहीकोनासहोई॥  
सोहीनरकोनासनारीकसौकहीए॥त्रिसनाकी  
उमाईउमाईसुरतिफेरै॥सुरतिकानेवबासूब  
बेकताहरेनहीदहैबिलोयांथी

बबेकवीति बुधि विचल गइ पतलीपडि  
गइ सो न्येसै विपता बधीती विपति नारीदा  
ली इ पुरस नि प्रजा यो ॥ ती दा ली इ करि कै जीव  
उषी नयो विक्रम करवाला गो विक्रमक  
स्याय का चौरस सी को अधिकारी जवो ॥ ऐतो अ  
रथ या जाति कह्यो ॥ अरइ जो अरथने पै मै क  
ही ऐ है ॥ काय रूपी बलो वणी कै मूढे बलो वणी  
मै रइ धरी ॥ सोही मुष मै रसना ॥ रइ को फेर बो सोही  
रसना सुरा मरा म उ चारबो ॥ सोही नागरि मै ना  
गरि नाच नाचबो कह्यो ॥ समता रूपी असत  
री सी त्रसंतोष का हाथ ॥ सास उ सास कानिता  
सूरइ फेरबो ॥ सोही रसना सुरा मरा म कहबो ॥  
समता हो इत बरा म कहणी आवै ॥ सोही नागरि

नाचानचाबो कहीणानरको नासकीयो सोही दही  
रूपाञ्जहंकारको नासकीयो॥ निरञ्जहंकारी उबे  
ममतपातलौपडो सोही छठि कहीण सोही छो  
ठि त्रिपताइका जो जनकी लार आरोग गया॥ अ  
र सुरति नागरि बलौ बणी संहं लिख मोषन गं  
नरूपी नर निप जायो॥ सो मनस में टिर एक जा  
गा जे लोकस्यो॥ बिगंग को ता वदेर॥ बिगंग नञ्ज  
ण जो तगार कस्यो॥ अपण सुध सरूप के सहा  
ल्यो॥ सो किरीया जगति संमज जन करि को॥ सो  
ही नागरि नर निप जायो कहीण॥ उष दाली ज सब  
हरि जयो॥ आनंद सुष रूप ज्यो॥ सोही नर पुरस  
कहीण॥ रक्ष कि वता॥ जयो पुरष संतोष पोष पर  
गठ सुष दाई॥ सदा सांति वरताइ

नसाइ ॥ न्हकरमी निरलो नता सो नता आनंदका  
री ॥ अजक आपदा मिटै ल है पद सद मुरारी ॥ कदे  
नकाई ला गि है ही ऐ न उप जै दोष ॥ राम चरण अ  
जिराम कंपा इर है संतोष ॥ २७ ॥ संतोष क ही ऐ है ॥  
रेण ता ॥ लोष समता लीयां पुरस सो सति हे निति  
मनि निरम लै सांति कारी ॥ लो न अर कामना  
त्रिसन आसा त जी स जी सुष निति बिप्रा ति  
मारी ॥ धी र गं नीर अघा हटरी या व ज्युं नीर नै  
नर मनां नां हि व्यापै ॥ राम ही चरण बरु पुरस  
बरीयां महै राम ही राम ऐनां मजापै ॥ २७ ॥ किवत  
॥ जपै राम कौनां मकां मघटि ऊष जै नां ही ॥  
दाम बा मसू तर क लो न की सरक न मां ही ॥ त्रि  
सनो आसन मूरि हरि दाली दन सा रे ॥ समता

सीलसुजावविचलतासबैतिगाए॥निरबिकल  
पनिरबांसनांनिरमोहीनिरदोष॥रामचरणनजि  
रामंयांलषणांसंतोषा॥२॥करुल्या॥जाकैधनसं  
तोषहैजाहांनमुतलबमूरि॥सतोषीसमतालीयामु  
तलबविपतापूरि॥मुतलबविपतापूरिहरिसुष  
साताजावै॥जाकैधरमनध्यानएकमुंतलबमनिच  
वै॥रामचरणनजीएसदामुतलबमनसाचूरि॥  
जाकैधनसंतोषहैजाहांनमुतलबमूरि॥३॥मु  
तलबतसकारकहीऐहै॥रामचरणसंसारमेंमु  
तलबकोअधिकार॥रागदोषमुतलबकरैमेंमेरी  
अहंकार॥मेंमेरीअहंकारमुतलबांहंसिहंसिबो  
लै॥जैमनिमान्योनहींसधैदोषधरिअंगामोले॥  
सजिसमतानजिरामकं॥



सुधत्रयासासागयारामचरणमनधीरारामत्र  
जनपरतापसंमुतलवबीतावीर ॥ ३६ ॥ जाके  
मुतलवमनिनहीसोकैसंज्ञाषणसाच ॥ कंड  
कंपटनहीकोमनाएकरसिमनसावाच ॥ एकर  
सिमनसावाचसेकसोसैनहीआवै ॥ नजेनिरंज  
एरामत्रोरईजीनहीगावै ॥ वैहरिकावांहरिवसे  
रामचरणएताब ॥ जाकेमुतलवमनिनहीसो  
कैसंज्ञाषणसाच ॥ ३७ ॥ मनकैमुतलवउप  
ज्यांकडाजमीठाहो ॥ करैलुडषडीदीनताअ  
रुंबुधिकंषो ॥ अरुंबुधिकंषो ॥ जेजलडतानही  
लागे ॥ मुतलवचनतोजाणिहेतसुषपत्वमेंत्यागे  
रामचरणचजिबामकेरेमुतलवगतिजो ॥  
मनकैमुतलवउपज्यांकडाजमीठाहो ॥ ३८ ॥

उहा ॥ जहर पलटि इमृत नया ॥ नी जहर बसें ताप  
हि ॥ ता ही ते ऐ चतुर नरा ॥ दसन लगावत नां हि ॥ ३५  
टी का बचन का ॥ जहर कडो नी बजी की न बोली  
कडी ॥ सो पा कां घ कां मीठी होश ॥ फेर मही जहर सो  
त बोली मै गुठली कडी जहर छै ॥ ती सं बवे की चत  
र मी ठोर सतो ऊपरां सं चं सिले ॥ दांत लगावे न  
ही ॥ असें कोइ कुबधी नरा ॥ कपटी पाषं ही दगा द  
रा ॥ ज्या को सं जाव कडो जहर कही ऐ ॥ कोइ रीति मु  
तल बन्ना ॥ ए पडे जद्यो न बोली रूपा प्राणी मी ग  
बोले नर महोश ॥ घणं दास चाव करै ॥ बीन ती करै  
सो ही न बोली पाकी कही ऐ ॥ जहर पलटि इमृत क  
ही ऐ ॥ परि नून के मां हि गुठली कडी ॥ त्यही वै कु  
बधी जीव है ॥ तिन के मां हि कुबधी अ

जेई <sup>म</sup>सबमै व्यापकरांजी <sup>म</sup>जलानमानैकोइ। ह  
 तिषावैपरि प्राणकं स्वादवणवैसोइ ॥४३॥ ह  
 स्यांकरतां हरषवैदया न उपजैमांहि वैनरनांही  
 बिरघडां स्वानस्यालजिमं आंहि। स्वानस्या  
 लजिमं आंहि मानवैषाइनयाकं। षायाधरमबि  
 नासअसुचिनेतिगिणीयेताकं। रामचरणताते  
 कंकं हिंस्याकरीएनांहि। हंस्याकरतां हरषवैदया  
 नऊपजैमांहि ॥४४॥ हरीयानीलाफलफलजल  
 अणछांणामांहि। स्वादहेतहतताफिरैहंस्यासूजे  
 नांहि। हिंस्यासूजेनांहिहरसरसलागेमीठावैबि  
 कलबिक्रमीजाणिनिरदईचौडैदीठातातैतजी  
 ऐस्वादरसज्युंदयाऊपजैआंहि। हरीयानीलाफ  
 लफलजलअणछांणामांहि ॥४५॥ हरसांसहस्या

॥ परपीडा न सैन ही ता कंधि

॥ ता कंधि रकार न ही करता र पढां एणां ॥ कर म  
कां मनां हेत करत अ परा धन जा एणां हो सी जा हां ह  
स्या वत व जब पडै अ गि ए ती मारा ॥ हर सां सुं ह स्या  
व धै संधै न ग्पां न विचार ॥ ४६ ॥ दया क ही ऐ है ॥ ता तै  
दया विचारी ऐ सब जीवां निर दोषा ॥ आप ची त न ही  
दी जी ऐ दी जे सब कं पोष ॥ दी जे सब कं पोष होष उरि  
नां ही धारौ ॥ सुषि म थुं ल चर पूरि रां म सर बं गि विवा  
रां म चरण ज जी ऐ सदा त व ही पा वै प्रोष ॥ ता तै द  
या विचारी ऐ सब जीवां निर दोष ॥ ४७ ॥ जिन अपना  
आरं ज त ज्या जिन पाल्या सब जीव ॥ छट काया च  
कं षां निमै जां एणां रां म सदी व ॥ जां एणां रां म सदी व  
दया उपजी दित मां ही ॥ सुगति पंथ सुषदा इका इ

ज्यालगेनजमकीदाब॥सतासासाजातहैजा  
मैकछुनलात्रापण॥जागिचजैजगदीसकंजा  
कोनरतनजोगि॥दजाकोगिणीएनहीजोबीतै  
सांसेंसोगि॥जोबीतैसांसेंसोगिचोगबिषीयाज  
बिगस्यौ॥कीयोनसाधसंगसुषत्रपनौन  
बिचास्यौ॥रांमचरणतजवासनोरामकरैआ  
रोगि॥जागिचजैजगदीसकंजाकोनरतनजो  
गि॥पण॥जाग्यांसुषनौमिटतहैकटतकरम  
काफंद॥रांमचरणनजिरामकंपावैआनंद  
कंदपावैआनंदकंदजिंदसंजोरनजाको॥स  
दसांतिसुषकारपंथकुगतीकोथाको॥सुरति  
मितैबंधणषुतैबिलसैसदसांनंद॥जाग्यांसु  
पनौमिटतहैकटतकरमकाफंद॥१६०॥किंद

ता॥ कट्टे करमकाफंदजीवजबमुकताहोवै। जुग  
ताग्यांनविचारनहींजगतदिसजोवै॥ जगत  
माहाउषकारसारइनमेंकरुनांही॥ काहालोक  
परलोकसबैथोकनकैमांही॥ ऐसबनीकैदेवि  
कैएकब्रह्मआनंदकर॥ रामचरणजजाऐसदी  
गुरबाइकसुणिचेतिकर॥ दश॥ सोचितोवणीक  
ही॥ है॥ चतिचेतिनरचेतिरामहीरामउचारे  
सबहीअथरिबणवदेहंलगजाणियसारी छि  
निउपजैसुषचैनहोइछिनमेंउषदाइजासूकि  
सोसनेहतेहतिणकापरनाइयूविचारिकरि  
बावरेजावजजनसंराषि॥ नरतनअरथलगा  
इऐरामचरणजनसाधि॥ दर॥ साधिजनाकीदे  
षिदेषिजगरचनाकाची॥ जामैरहो

दिरहै करार ॥ जाही को नरतन सुफल जाको सु  
फल बिचार ॥ ६७ ॥ देषोई संसार में स्वारथतणों  
सनेह जैक चुइ कस्वारथनां सधै तौ जटकि  
बतावै छेह ॥ तौ जटकि बतावै छेह दवापबे दो  
अरनाइ ॥ संगी सजन प्रिवार मुतल व्यां करै ल  
डाइ ॥ रामचरण नजिरां मकं सब संरहो अरने  
ह ॥ देषोई संसार में स्वारथतणों सनेह ॥ ६८ ॥ सा  
ए ॥ ऊठी जगत सनेहता ॥ देषो सब निरताइ ॥ फ  
तपिता देषतरहै ॥ जम हूतप कडिले जाइ ॥ ६९ ॥  
असो तन का चौरचो ॥ मचोता समद माहि ॥ गुण  
इजी पोषत सदा ॥ हारि जति गमनाहि ॥ ७० ॥ सो  
हारि जति करि सिक्की है ॥ ककल्या ॥ सो  
लाबहण सहे लडी चारु चारि फिरत तीन

तुरी ब्रह्मावदन ॥ मारूं मार करंत ॥ मारूं मार करंत  
लडावे नर मिलि नारी ॥ लडे पडे चीषडे सीस विनि  
सांवत नारी ॥ हारि जति सिरदार की नलांबुरा  
दरसंत ॥ सोलाब हण सहे लडीच्या ॥ स्थ चारि फि  
रंत ॥ ७१ ॥ टीका वचना ॥ का ॥ हारि जति की ही  
तिचौ पडिका घाल ॥ दिसटांत करि कहीरे हे ॥  
सोलाब हण सहे डों सोही सोला साहि ॥ जीका दोः  
नागि ॥ आठि तौ लछि आठ अलछि जीमें चारि  
चारिका चारि जुष ॥ चारिचौ पडिका चारि दरा  
सो चारि तनकी ओसता ॥ बाल तरण जवान बि  
ध सो सोला ही सारि लछि अलछि चारि ही  
तामें बरतै ॥ जीमें लछि ठिकाणे पूजे ॥ सोतौ  
लछिको अधिकार होइ तो हारै ॥ जीमें दोः शुवावे ॥



मारांमजीकांनजनप्रतापकरिपरमारथकोपोसो  
 मारिसांतिगगुणमुषिलाइअलछिगुणहेतिन  
 कंहराएचाहतहैअरअणंतमकेनरपरांजामोहो  
 हैसोउतिमलछिगुणहेतिनकंस्वारधरथकोपा  
 सोमारितांमसिगुणमुषिलाइहरायाचाहतहैअ  
 सैहारिजीतिसिरदारकीहैसोसिरदारआतमांकेल  
 छिगुणजीतैतौजीवब्रह्ममैमिलेअरअणआ  
 तमांअलछिगुणजीतैतौजीवचौरासीमैरुलैजि  
 द्यांबुरोहोइउषपावैजीतैतौचलांहोइमाहापदनै  
 पञ्चैसुषपावैतीसंरांमजीकोनजनकरिजीतवा  
 कोउपावकीजेआतमांधरमकीपषग्पांनबैरागा  
 नगतीउतिमगुणंसहतिसदीवपधिराधिजेअ  
 एआतमअसुनगुणउदेहोइतोतिनकंमारिध

का वजे ॥ ई बात को दोष नहीं ॥ विद पुराण सा सतर सं  
त साषि सब कहै छै ॥ असुत्त अण आत मधर मकी ॥  
हाणिकरीए ॥ सुत्त आत मधर मकी उ दो करीए ॥ सो उ  
दो रां मंजी का न जन सं होइ सो न जन गुर क्रिया सं व  
णे सो असें महाराजि रां म चरण जी चिंतां वाणी दे करि  
हैं छै ॥ सो सा वधान होइ रां म न जन करि चेतो ॥ ७३ ॥ क  
कल्या ॥ चेतो रे चेतो सही कही गुरां ऐ साषि ॥ काल गज  
ब आ वै जदी को इन सकि है राषि को शि न सं कि है राषि  
ता क सं व त्रा सही मां नै ॥ रो वै अ पणो रोज उ नुं की पी  
डि म जा नै ॥ रां म चरण ता कारणें सं त कहत हैं साषि ॥  
चे तो रे तो सही कही गुरां ऐ साषि ॥ ७३ ॥ साषि कहें गु  
र देव जी वा सं वार चिता ॥ चेतै सो ही ऊ बारै गा कि  
ल जो ता था ॥ गा फिल गो ता था ॥ अ ध चो रा सी मां ह

यों हां धं धदि नरें नि स्या ति नी सा ता नां ही रां म च र  
 ए ला तै न जौ त जौ ज ग त की चा इ ॥ सा षि क है गुर दे  
 व जी बारू ब्बार चि ता इ ७४ ॥ या ज ग की या री ति  
 है प्री ति की यां उ ष हो इ ॥ प्री ति मां हि बि प्री ति है जी ति  
 ग या न ही को इ ॥ जी ति ग या न ही को इ मि न ष त न मूं  
 घो हा स्या मै बं रु मै बं रु मां नि कां म न्त्र स वा स्या बां  
 म दां म स ब रू सी यां न्त्र त का ल मै जो इ ॥ या ज ग की या  
 री ति है प्री ति की यां उ ष हो इ ७५ ॥ प्री ति की यां सं सार  
 सु ष पू री प डै न को इ ॥ कैं सु ष मा या बी ति है कैं न्ना प  
 च ला ऊ हो इ ॥ कैं न्ना प च ला ऊ हो इ न्त्र व सि न्ने ल प न  
 ही ब नि है ॥ क है क है का हा हो इ कां हां ल ग क ह त व  
 गि न है ॥ रां म च र ए न जी ऐ स दा ज ग ति दि सा म ति  
 जो इ ॥ प्री ति की यां सं सार सु षि पू री प डै न को इ ७६ ॥

जगत्प्रनादिसंज्ञप्रथरिहैथरिथरिथरिहैकोमासुष  
सामगरीसंचनाराजसाजधनधामराजसाजधनधा  
मबामसुतचहैनिरोजाानहीएकदोइकीबातज्ञेसै  
सबजानौलोगा॥रामचरणहरिनजनविनिञ्जति  
पडैगीमाम॥जगत्प्रनादिसंज्ञप्रथरिहैथरिथरिहैको  
मा॥७७॥कामकरतघरधधकारामनकरिहैयादि॥  
रामचरणवांप्राणीयोनरतनषोषोवादिानरतन  
षोषोवादिदादिकाहापावेसाइ॥स्यादिनुरैसबस  
तसुरांसिरवादिगुमाइ॥तातेनजीएरामकरही  
एसारैनादि॥कामकरितघरधधकारामनकरिहै  
यादि॥७७॥यादिकरौनितिरामकतौवादिनजावे  
देह॥रामचरणसबजनकहैवैपदि  
दिपूजाजेहनेहकाऊनहीराषो॥ते

है जासु उदवै कांम ॥ कांम उदै मन कल्पनां मुषसं  
 कहै नरांम ॥ मुषसं कहै नरांम जांम अठ कुबधि  
 कुमावै ॥ सुबधि नसाता मरि असाता अंगिर हा  
 वै ॥ इनवातां मुषनां मिले तुलटी पडि है मांम लो  
 कारं जन करत है जासु उदैवै कांम ॥ ७४ ॥ सां  
 को अंगि गलि अंगो कहै गी ॥ इ हा ॥ माया मुत  
 लबह सता ॥ लोचतोषनुपदेस कहि चिंता व  
 णि ॥ अब कतं कांम कुचल परवेस ॥ ७५ ॥ इ त  
 श्री सुमरसा इ वि बंध अना नद प्रमो धमाय  
 मुत लचदरसा लो चि व क न उ ष दे स वि ल  
 वणा मिरु पयना म सब द क ॥ ए ॥ न इ र  
 यो पर करण ॥ ७६ ॥ को अंगि त क दो ए हो ॥ क  
 म ल ॥ कांम ब धारे कांमी या चोषा जी मण षा इ

रसिकसुणैसीधैरसिकरसिकलमात्रैगाइरसिक  
लमात्रैगाइमोदमनकेनुपजावैकांमीधरसांमां  
निमिनषतनबादिगुमांवे।रचौरांमकीनगति  
कंसोनरतनदीयौबुहाइ।कांमवधारेकांमीयां  
चौषाजीमणषाइ।१।चौषाजीम्याचावकरिवो।  
षाकरमकुमाइ।रांमचरणवांकाकीयाभिनषा  
तनधनपाइ।भिनषातनधनपाइरांमधननहीपि  
छान्यो।षरसंकरअरस्वानजसैंबिषीयांरूखिमं  
न्यो।चौरासीसंआइकरिफिरिचौरासीमैंजाइ।चै  
षाजीम्याचावकरिवोषाकरमकुमाइ।२।करम  
कुमावैकांमीयांकांमणिसंमनलाइ।जांमणिकैउ  
णहारणीपणित्तुगतेजांमणिगाइलाइबलतीन  
हीसंजो।पडैमांहिअण्णानअटकदेजासंजुजै।रां

मचरण त्रैसैत्रधमनितिही त्रसुचिरहाइ क  
रमकुमावै कांमीयां कांमणि सुंमनलाइ ३ कां  
मीनररत कांमणी सदा त्रसुचि त्रण्यांन सुचिता  
मैसमजैन ही निति ही कांमणि ध्यान निति ही कां  
मणि ध्यान म्पांन मैमन नही राषे ५ मृतपीवेनां हि  
सदा विषीयार सचाषे रामचरण वैषरनराका  
हा करै सुषण्यांन कांमीनररत कांमणी सदा त्र  
सुचि त्रण्यांन ४ कांमीनर कांमारघी जाकै सुचि  
तानां हि तन त्रसुचिमन विकल्प नमैली चित  
वनिमां हि मैली चित वनिमां हि दिसटि डुरमति त्र  
तिलीयां कांमदां मल्लोली नमुठमाया मदपीयां स  
दसुषसमता परहस्याराम रहे विसरां हि कांमीनर  
कांमारघी जाकै सुचितानां हि ५ कांमीनर किरीया

करैन्होए धोए आचार ॥ तन उजलाये मोदकरि पेट  
ऐन बोध बिचार विहं ऐन बोध बिचार कां मन कां दे  
नरीया ॥ नष सष मैला पूरि उपली ऊठी किरिया ॥ राम  
चरण नजिरां मकं मन कां म करौ त सकार कां मी नर  
किरीया करैन्होए धोए आचार ॥ ६ ॥ कां मी कै म नि कां म  
नां न ही आं म नां मूरि ॥ साधन करि जीवो कही न ही मनोर  
थ पूरि ॥ न ही मनोर थ पूरि बिचल वे अर थां मो लै ॥ स  
हा नष अथ लष क दे तिर पति न ही बो लै ॥ राम चरण  
नजीयां विनां र ह्यारं म स्तं हरि ॥ कां मी कै म नि कां म नां  
न ही आं म नां मूरि ॥ ७ ॥ जां हां जा इ जां हां षो जिता लो न कां  
म की लाइ ॥ त्रिसनां तन मै इ ज लै सी त ल कै सै थाइ ॥ स  
त ल कै सै थाइ अ ग नि मै इ ड ए पूरै ॥ चु ल सै नष सष अं  
ग उषी हो इ नि स दिन ऊरै ॥ राम चरण



नामरसपाइ ॥ जाहां जाइ जाहां षो न्निता लोचन काम की  
लाइ ॥ ॐ काम जाहां तां हां कुलषणी करै कुबधिकी ब  
त सुबधिन साताऊ पजे सदर है पर घात ॥ सदर है  
पर घात ही ऐ हाथां मनि आंटा ॥ स्याफन ही सत ही ए  
बषेरत मोलै कांटा ॥ अरै सैंकं पर हारी ऐ निरषिरता त  
बरात ॥ काम जाहां तां हां कुलषणी करै कुबधिकी बा  
त ॥ कुबधी कांमीं कर कै मूढै नर न होइ ॥ सुकबदन  
सो आरहत चले मिन षत न षोइ चले मिन षत न षोइ  
रोइ चौरा सी जै है ॥ जाकौ उष अणार मारवो होते री सैं  
है तातैं तजी ऐ काम नां रांम चरण सुष जोइ ॥ कुबधी  
कांमीं कर कै मूढै नर न होइ ॥ ए ॥ नर ही ए करत बक  
रै जा काम न मै काम ॥ साधन साधै अणरितान ही नरो  
सो रांम न ही नरो सो रांम काम नां अति उष दाइ ॥ सदा

असाता अजकसजकसुपनै नही कां छी रां मचरण वा  
के ही एब सैं दों म अरवां म॥ नर ही ए करत ब करै जा का  
मनि में कां म॥ १०॥ कां म म नौर थ कां मी यां कां म ए ही को  
ध्यान॥ वा कै जां हां ही संचरो वा कै ही ए अ ग्यां न वा कै ही  
ए अ ग्यां न कां न चित कर मां दे वै॥ गुपत प्र गट मन रैं सि  
र है कां म ए कै ठै वै॥ वा को का हा ऊ ज ल प एं जे न च जे मु  
षि रां म॥ स्वाद बाद सि गार त न ज त न जि न्क के कां म॥ ११॥  
ज त न करै ज त ही ए न र च है ब धै त रि कां म॥ इं ज्यां म  
न चंच ल स द्वा च जे न पू र ए रां म॥ अ जे न पू र ए रां म ज  
म अ ठ क प ट कु मा वै॥ सा च स क री ह रि तो ष स म तान  
ही च्चा वै॥ तां को फ ल ज म रा ज के धा रि प डै गी मां म ज त  
न करै ज त ही ए न र च है ब धै त रि कां म॥ १२॥ न्क कां  
म ता क ही ए है॥ कां म कां म नां पर है रै जे

ए देव ॥ जे नह कोमी निरमला जा कै र ही ए देव ॥ जा कै  
र ही ए देव ॥ जे व जे जनां नंद पावै ॥ जा के साता पूरि अ  
साता निकटिन आवै ॥ राम चरण घारी तिसुं प्रीति प  
रम पद लेव ॥ कांम कांमनां परहरै ॥ जे निरंज ए दे  
व ॥ १३ ॥ जे निरंज ए राम के समता सील बिचार ॥  
असुचि कांमनां परहरी उतिमता उरि धारि ॥ उतिम  
ता उरि धारि सारिन रतन की जीता ॥ जनम न धिरता  
पाइ मनौर घसब ही बीता ॥ राम चरण न्ह कांम जन  
मन सुं बिषीया टारि ॥ जे निरंज ए राम के सील  
बिचारि ॥ १४ ॥ नह कोमी निरमल जे राम जे जनसै  
बीर ॥ औरां के उजल करै जे सै त्रिमल नीर ॥ जे सै  
त्रिमल नीर तपति तिसनां सब षोवै ॥ आं नंद कार  
सदीव मिलै ताहि साता होवै ॥ राम चरण चित एकर

सिपीवैश्वर्यतसीर॥ नहकांमीनिरमलनयारामचजनै  
१६॥ उतिमजनकहीऐहै॥ उतिमजनमनजीतिहै  
बीताजिनकाकांमा॥ नहकांमीनितिनिरमलानषस  
षत्राठजांम॥ नषसषत्राठजांमरामकौनांमउ  
चारै॥ नित्या नितिअषंमंएकअहतिविचारै॥ रामचरण  
वासंतकं करीऐ नितिपरणंम॥ उतिमजनमनजी  
तिहैबीताजिनकांकांमा॥ १७॥ कांमकुलषणबीतीय  
जेनहकांमीजन॥ मनबचकाइकवासनांजाकैतन  
मन जाकैतनमनबनांग्रहैलषैसमांनं॥ हांणिविध  
हरषसोगरहतिनितिएकबषांनं॥ रामचरणतजि  
रामकंपाकौकीयौजतेन॥ कांमकुलषणबीतीयांजे  
नहकांमीजन॥ १८॥ नहकांमीजनउजलानषसषउज  
लअंग॥ असुवैकांमनांमिटिगइलज्यौरामकौरंग॥

प

लज्जेरांमकौरंगजंगजोहोवैनांही॥हजीनहीषषा  
इनुजलीआसामांही॥तातेंजनअपरससदास  
परससंराजंगनहकोमीजनकुजलानषसषऊ  
जलअंग॥१९॥मैलीचाहिअनादिकीउजलस  
दाअचाहि॥तातेंचाहिनकीजीऐरांमनांमल्यौला  
इरांमनांमल्यौलाइयाइइमृतरसधारा॥षारवि  
षीयाजोगतज्यांतनमनसंन्यारोकोईपदारघट  
षिकेनांही॥मनललचाइ॥मैलीचाहिअनादिकी  
उजलसदाअचाहि॥२०॥मनमनसाउजलसदाउ  
जलनैनरबैन॥हाथपावक्रितकुजलाजेकदेनकरि  
हैफैन॥जेकदेनकरिहैफैनअैनआतमसबजांनै॥  
अौरअरमनांरदसदपरमातममांनै॥रांमचरण  
अैसेनकोसंगकीयांसुषचैन॥मनमनसाउजल

सदा उजल नैन रवेना ॥ २१ ॥ उजल च जि उजल च या  
राम निरंजण देवा ॥ राम चरण श्रेणी सुगत गुरु बला  
यो जेव ॥ गुरु बला यो जेव पवीतर मन सा बाचा ॥ उ  
पजे न ही गिला निधर म जो धारण साचा ॥ निति निर  
मल न्का मता पाई उजल मटे वा ॥ उजल च जि उजल  
च या राम निरंजण देवा ॥ २२ ॥ श्री सा उजल  
संत जेन ॥ मन सा बाचा सोई ॥ संगि वैठे मन अर पि  
कै ॥ सो जी उजल होई ॥ २३ ॥ कं कल्या ॥ उत मजन  
को पाई बौ उति मजन के संगि ॥ राम चरण निरतीत  
णे वै कटे नरा चै रंग ॥ वै कटे नरा चै रंग सुगति का जे अ  
धिकारी ॥ जा के ही ऐ परष सर क खार थ की मारी ॥ रा  
म चरण च जि राम कला गिरहे जि ज अ जि ॥ उति म  
जन को पाई बौ उति मजन के संगि ॥ २४ ॥ सो उति म

रामचरणप्रज्ञाएसदासतसंगतिसुषपाइ ॥ जनममर  
णसंगिवासनांविनां प्रजननहीजाइ ॥ ३० ॥ रामप्रजन  
सतसंतविनिमित्तेन आवाण जाण ॥ नावैवेदकतेव  
पठिनावैपढौवषाण ॥ नावैपढौवषाण सुणै ॥ नलिम  
नचितलाई ॥ उपजेनहीविचारजितेंकृतकडकुमा  
इ ॥ रामचरणसमजाइमनसतसंगतिमेंआणि ॥ रा  
मप्रजनसतसंगविनिमित्तेन आवाण जाण ॥ ३१ ॥ आ  
वाणजाणांनमित्तेजोलेसंगतिकच साचीसंगतिकी  
जीऐरामचरणमनवाच ॥ रामचरणमनवाचराचीऐ  
गुरकावैनां ॥ जाकीलछिपतवाणिदेधीऐअपनांनैने  
जबनिरवासीपदलहैआसिककीऐताछ ॥ आवाणजा  
णांनमित्तेजोलेसंगतिकच ॥ ३२ ॥ संगसुधादरीया  
वकोथाहनपावैपार ॥ जाकंचाक्षैसबकोईब्रह्माकर

तविचार॥ ब्रह्मा करति विचार सारको आगरकं ही ए॥ राम  
क्रिपासंपाई जतनि हजे नही लही ए॥ राम चरण जजी यांघ  
का मिटि जाई मनको घार॥ संग सुधादरीया वको घांहन  
पावै पार॥ ३३॥ सुधासमंदसतसंग है साधुपावणहार॥  
पावै सो जीवै सही रामनां मततसार॥ रामनां मतततसा  
र और जग छोई जाण॥ सुनौ जानां कै वाच मनोरथ न  
लटा आणै॥ रामचरणतब अमर होई समर करौ तसक  
र सुधासमंदसतसंग है साधुपावणहार॥ ३४॥ साधुपावै  
रामरससतसंगतिके घांट॥ विषीयारस जोस मिटे नि  
रविष होई निराट॥ निरविष होई निराट॥  
केश॥ चले विषणदास आसमैली ज्योगेशी॥  
निरवासनो जां हो रामनगतिके घांट॥  
सससंग



साधुसंतकेजाकेपतिब्रतएक॥४१॥जाकेपतिब्रत  
रामकोएकअषमकार॥हजोजाकेनांसधैइजैहो  
इषुवार॥इजैहोइषुवारमारजमहतादेवे॥पतिनही  
राधेमानअनकेदेष्ठांटेवे॥तातेऐनैमांनिकेअंगिस्यं  
मइकतार॥जाकेपतिब्रतरामकोएकअषमकार॥  
४३॥एकअषमंतरामजीजाकेपतिब्रतराधि राम  
चरणसुमरणकरोइजोमुषानआधि॥इजोमुषान  
आधिराधीऐसिरपरिसांईसांईकैपरतापसदाअं  
नदकैमांही॥मनसाबाचाकरमनांऐसतगुरकीसाधि  
एकअषमंतरामजीजाकेपतिब्रतराधि॥४४॥पतिब्र  
तापतिरामविनिहजाकीनहीआस॥हजासंडबधाब  
धैधरमध्यानकोनास॥धरमध्यानकोनासदासपदरहै  
नकोई॥बिगडेदोन्मूलोकसोकसांसोअतिहोईरामच

रणतातैकं ऊं ऐकै सं गि नि वा स ॥ पति वर ता पति रां म वि नि  
ह जा की न ही आ स ॥ ४५ ॥ आ स ऐ क च्च बि ना सी प द व से  
जि न्कै वा सि ॥ त्रै प्र ति पा त्रै पो ष दे वै ही स दा सु ष रा सि ॥ त्रै  
ही स दा सु ष रा सि ॥ सि न्नौ का ट ए हा रा ॥ रां म नि रं ज ए दे  
व आ प स व का कर ता रा ॥ जा की र ही ऐ स र ए नि ति म ति  
को इ च्च को री ति ॥ रां म च र ए न जि रां म कं छा मि स क ल  
वि प्री ति ॥ ४६ ॥ वि प्री ति बु धि ह जो करै सो ही स है सि र मां  
र ॥ रां म च र ए प ति व त बि नि बि च्च चार ए नि ति षु वार  
बि च्च चार ए नि ति षु वार आ द रै कौ इ नां ही ॥ उ म्मी लो क  
पर लो क सो क सां सो न मि टो ही ॥ आ त म प ति पर मा त  
मा स व ही कौ कर ता रा ॥ वि प्री ति बु धि ह जो करै सो ही स  
है सि र मां र ॥ ४७ ॥ इ क ठा कर च्च र दा स वो हो या तो जां  
ए जो गि ॥ दा स ऐ क ठा कर घ णं या ही वा त च्च जो गि ॥

याही बात अजोगिको हो कुणकुण हीम नावै ॥ नी बां  
या पंडि जाइ जीव स्यांम के साचन आवै ॥ तौ एकरांम  
आराधी ऐधौ सद साधन आरोगि ॥ इक ठाकर अर  
दांबो हो या तो जाणें जोगि ॥ ४७ ॥ एक धणी सिरऊप  
रै तब सूरु करि है गाज ॥ अपणों जनम सुधारि है अ  
र बांनो की लाज ॥ अर बांनो की लाज स्यांम को निम  
षउ जे लै ॥ स्यांम धरमी दास मां हि अ धर मन ही जे लै  
रांम चरण नजि नौ तिरै सुष सो जा साज ॥ एक धणी  
सिरऊप रै तब सूरु करि है गाज ॥ ४८ ॥ सो करु  
एक ही है ॥ सूरु कंषा स्यौ नांष वै अ ध पती या नौ  
नाउ ॥ जैस त्रुनिज स्यांम पडै तो पकडि उपाडै जाउ ॥ तो  
पकडि उपाडै जाउ ॥ धणी कौराज जमावै ॥ सी सलीया  
परतापि नौर ॥ ६जी नउपावै ॥ रांम चरण जैरांम का

जाते मोहो मन धाडि ॥ सरकंषा सौ नांष वै अधपती  
यात्रौ जाड ॥ ५० ॥ अधपती यात्रौ नाड जे न वै न ही प  
तिषोश ॥ लषपती या न व ता फिरे उरिली यां को मनां  
सोश ॥ उरिली यां को मनां सोइ अधसुध आसै कामा स्या  
न ही समता न ही सा च काष्ठ को ना च बिसा स्या ॥ राम  
चरण सरांत एी सिपति करै सब लोश ॥ अधपती या  
त्रौ नाड जे न वै न ही पतिषोश ॥ पश ॥ न वै कां इन्ह कां म  
जन ज्या मन की यो जे र ॥ त न संजी ता ता त ज्या नां म स  
मसे र ॥ स ज्या नां म स मसे र घेर में पां चू ली या ॥ ती नां संत  
करार चारि अधपणे बसि की या ॥ राम चरण मन वा स  
नां मारि च जन सहे रिन वै कां इन्ह कां म जन ज्या मन की  
यो जे र ॥ थरा वे छता ॥ मन क जे रिके घेरि घेरो दी यो क्रो  
ध अधर काम के पाडि मारे । ८

त्वजेन जनपरतापकं देषि हारे ॥ रामकौन जन  
समसेर सेरा करं नर मन्त्र ग्यां न कै सी सबा दे ॥ रां  
मही चरण जन स्तर स ग्रां ममै स्यां मकै हेति सुचेत  
गडे ॥ ५३ ॥ स्तर स ग्रां मकै बी चि ता ठार है रो मि गा ठा  
घणं जं म मं ही ॥ रं ग ज्यारा वतां सि स ए पै ला घडा  
ऊडा ऊडि जाट कं रुं जे ज नां ही ॥ यूं ही स्तर मन मा  
न मर द न करै चित चो गां न कै बी चि पूरा नर निर  
ने पाणं घणं मुषि न ल ह ले ष ल ह लै कां मन्त्र र लो  
न करं ॥ ता स कं मारि न्त्र ब म ज त्व स्यां कर त है फि  
र त है चं म रा हो इ सारै ॥ रां म ही चरण वै रां म जन स  
रि वां सं क वै स्यां त एं नां हि धारै ॥ ५४ ॥ सं क क्यु सा  
वतां सी सन्त्र र प्यां फि रै ट रै न ही ब ग ल ब ल स्यां म  
के रो घालि कै सां क डै सां क ड पा डी यां धा डी या जे रि

करि दी यौ घे रो के सं एक अद चूत बां का बली का या  
गुण गुठ ता हि गुं मरि ज्ञानै ॥ सु मरि के रं मन ह कां म ज न  
सुरि वां बिंद पै लां त एं तु छ जां एं ॥ न जन की षा ग सं ला  
ग को इ नां र ही द ही सं ब फो ज अ रि षो ज षो यो ॥ रां म ही  
च र ए सं ब ध ड क धो का मि द्या रां म र म ती त मै चित पो यो ॥  
५ ॥ चित चो क सं की यां स्यां म कं अ र पी यो घ र पी यो सुर  
जा रा य ज्ञा री ॥ ब जे र ए तं र जां हां सं र सां नं द मै ह टा वै  
हो क क रि क न क ना री ॥ और सु ष खां द स मां द ये ल्यां फि रै  
बी र बां नै त कै गि ए ति नां ही ॥ रां म ही च र ए ज न रां म र  
ज मों ली यां नि ति पर फु लि नि ज ध र म मां ही ॥ ५ द्वा कं रु  
ल्या ॥ ध र म ली यां नि ज स्यां म को सुरां के अ नं द कां म का  
श्री पर ह स्यां प डै न पि स एं फं द ॥ प डै न  
जिं द ल गि यारी जी त्यां ॥ सदा सां ति ७

उरजनवीत्यां रामचरणतकरारसुनिकटिनञ्चावै  
धंधधरमलीयांनिजस्यांमकौसुरांकैञ्चानंद॥५७  
सुरांकैञ्चानंदसदाकदाननुपजैसोगसुरनरञ्चासु  
रञ्चादिदेकोपोकिनबोहोलोगकोपोकिनबोहोलोग  
जोगसांईसंजुडीयौकाहाञ्चौरकागिणतिमोहोमाया  
दलमुडीयौसुरास्यांमसुजावतातोड्राजरमकातो  
गसुरांकैञ्चानंदसकदाननुपजैसोग॥५७॥सोगन  
सांसोसरकैन्तरजिनकैमुषस्यांमधरमनितिसाब  
तौराषेनाहीरुषराषेनाहीरुषसुषसोनाजसलीयां  
रामधणीसरजंकवजबैस्यांकंकीयांरामचरणन  
जनानंदीकदेनपावैडुषसोगनसांसोसरकैन्तरजि  
नकैमुष॥५७॥यांचपाषस्यापाधराकीयासरसांव  
त॥५७॥नननननवैरागसैवकैवीरबलवंतबनेवीर

बलवत संतसरइ मजानौ ॥ रामराइ परतापिकीये  
बैस्यां कोहानौ ॥ रामचरणसिरकैसटै ॥ त्रैसौ जाल्यो मं  
त ॥ पांचपाषं स्यां पाधरा कीया सरसां वंत ॥ ६० ॥ रेषता  
जाल्यां सरसमसेरनिजनां मकी कामकी फोजपरि  
लीयो बीडौ ॥ स्वादसिं गार रसपांचयनिसां वतां घे  
रिघमसां एमैताहिनीडौ ॥ हरसक्तं सांषुसीहांसिंहं  
नौ करौपासि बैरागं कीसी समारौ ॥ रामही चरणजन  
तेजत करार करिहोइ नहं कामयूं काममारौ ॥ ६१ ॥ का  
मन्नरलोचनकं मां रिमदजां तीया सरकैरी तिया क्रोध  
मारौ ॥ मोहो मनमां नमगरु रीया हरिकरिसबलमाया  
तणं बांणटारौ ॥ ज्ञानका कवच बैरागकी षाग करिहो  
पगुरदेवसिरदसतमैलै ॥ त्रिसीसीरी तिसंजीतिं जं  
गसरिवं रामही चरणसुषमां हिषेलै ॥



तण्ण अगम अगाध है का इरा सु एत ही धड कि धूजे ॥  
सिंघ बघ बाव सं अं नि जी व न्हा सि है कं ए फिरि उल  
दि अर ता हि ऊ ऊ ॥ अ से ही का इरा रे ति की ची ति ज्य प  
वन ला गां घ कां रे ति मि लि है रां म ही चरण जन स्तर ह  
रि दा स है ता स कं दे ष तां चा ग च लि है ॥ ६३ ॥ अ सा न र  
का इरा क्रं म अा धी न है ही ए नि ज ध र म नै च र म वं धा  
कर का चा स ही इ बि सा चा न ही रि ज कर त मां बि ना षा  
इ अंधा ता स कं गारि जे हां रि के बा का ड्रा ध णी सं बि मु  
षि ज म हा क तो डै ॥ ज ग ति नो हर ण की चां मि न इ न रा  
जा इ सं सार सं प्री ति जो डै ॥ ज ग त सं प्री ति अर न ज त सं  
अान रै ला स के सी स ष ह मारि ना इ ॥ रां म ही चरण दे अ  
ध म अ धो ग ती जु गि जु गि जी व धि र कार षा इ ॥ ६४ ॥ ष  
इ धि र कार अ धि कार पावै नां ही का इरा कर नि ति कं

रहीनां त्वरवागंघकंतेजव्यापै नहीधडधडैयांणमा  
हाडधलीमांहाइहैशंनञ्जवकंणगतिहोइसीरोइसी  
वापडीञ्जेसंपरणं॥रिजकलेतांघकांवातसेधीनहीं  
त्रजकंनहीजाइकोइरीतिबरणींताहीतैगीदडाग्यां  
नजाणैकाहाचीडपडीयांघकांजागिजावै।रांमहीच  
रणंनरकडफ्रीटांसहीजांहाजाइडोहांचिरकारघा  
वै॥६५॥संज्ञा॥जगफटकाराषाइहै॥गुणइज्यांकंपोषि  
रांमचरणजेकाइरा॥मनकंसकैनरोकि॥६६॥कंन  
त्या॥मनसाबोचा मनरुकैतोघकैमनौरघवेग॥सत्र  
जागतहैसहीजोसूरगहैकरितेगाजोसूरगहैकरितेगा  
आपमरणपरिआवै।तबपैलाकितीइकंवाततुरतही  
मारिजगवै।रांमचरणजनसूरिवांगरदमिलारिकाम  
मा॥६७॥प्रज्ञा॥

सूरापूरा संत को निति मिला पदो राम ॥ हरि-त्रधूरा  
दलि ज्यो जे न स्या को मनां काम ॥ जे न स्या को मना  
काम राम की न गति न जावे ॥ प्राप मुल लवो का जि  
ने क पर प च उ पावे ॥ प्रा सबंध्या नर मत फिरे न ज  
क्या प्रा वृ जांम ॥ सूरापूरा संत को निति मिला पदो रा  
म ॥ ६७ ॥ उत्तर ॥ राम क्रिया से पाई ऐ को ई राम सने ही  
साध ॥ जिन सै हिलि मिलि का जी ऐ सारा सार समाद  
सारा सार समाद सुबधि समता उप जावे ॥ को म क्रोध  
अहंकार ता सकी मार मियावे ॥ निति प्रति उन के दर स  
को म निल ग्योर है अह लोद ॥ राम क्रिया से पाई ऐ को ई  
राम सने ही साध ॥ ६८ ॥ संतोषी समता लीयां जप ता  
र मता राम ॥ नर म जु लाया नां फिरे निर डु दी न ह का  
म ॥ निर डु दी न ह कां म कां मणी क न क नी यारा ॥ निर मो

हानिरमोनकरसिउतमधारांमचरणसतगुरस  
रणित्रांनंदत्रावृंजाम॥संतोषीसप्रतालीयाजपतारम  
ताराम॥७०॥मायात्यागीसंतकीत्रधरपधरगुदरांन  
बिनाऊजतिहाजरिषडीलीयांसजिसुनमान॥लीयांसुंज  
सुनमानतोहीजनऊलसेनांही॥लेनाडापरमाणस्वाद  
सुषनांउपजांही॥रामचजनपरतापतैहिरदैदितइमान  
मायात्यागीसंतकीत्रधरपधरगुदरांन॥७१॥रामचर  
णवैरागनैकनककांमणीदाग॥ऐनजनचुलावैरामकै  
निसटकरैवैराग॥निसटकरैवैरागगणानगमरहणनप  
वै॥वरतैहीऐत्रगणानसाचनोषेनसुहावै॥ग्रिहत्यागइन  
संतरकताहीकौबरुनाग॥रामचरणवैरागनैकनक  
कांमणीदाग॥७२॥कनककांमणीजगतमेंदोईउधाराष  
गा॥जुगतानहीअतीतकेएकतलकरैवैराग॥एकतलक

रै बैराग ग्यांन गम गिरद मिलावै ॥ रामचरन बिसराइ  
 कांमनी कांम बधावै ॥ ग्रिह त्याग बैराग ले जाकं दीरघ  
 दाग ॥ कनक कांमणी जगतमैं दोई इधारा प्राग ॥ ७३ ॥  
 काहा अण्णी काहा पारकी कनक कांमणी कांम ॥ जोग्यां  
 चितचितव निरहैं निसदिन आठूं जांम ॥ निसदिन आठूं  
 जांम काहा गिरहीं बैरागी ॥ सुषी लोक परलोक जिनूतन  
 मनसैं त्यागी ॥ रामचरण नजिरामकं वै हीलहैं सुषधीम  
 काहा अण्णी काहा पारकी कनक कांमणी कांम ॥ ७४ ॥  
 रामचरण बैरागनैं कनक कांमणी हत ॥ ग्यांन नगति  
 बैरागल हिरषे नही साबत ॥ रषे नही साबत कांमनांल  
 गनि बधावै ॥ साता सील संतोष साच कौ मूल गुमावै ॥  
 निसदिन अज कलगाइ दे जांणि कला गोचरत ॥ राम  
 चरण बैरागनैं कनक कांमणी हत ॥ ७५ ॥ शोषी ॥ पाव

कनेपाणीधकौ॥ अरुदीपकनेंमारुता॥ रामचरणवै  
 रागनें॥ हरसधकोबरुक्त॥ ७६॥ रामचरणवैराग  
 नै॥ कनककांमणीफंडाकोइसुजाषाउलजैनही  
 उलजिपंडातेअंध॥ ७७॥ नकवैसरिसोनानासिक  
 अरकुंमलसोनाकांन॥ यूवैरागसोचतात्यागसो  
 चीसमतासोनाग्यांन॥ ७८॥ नांकोइसाचैनांकोइ  
 जाचै॥ चीसुषसवादनहीबांछै॥ रामचरणवैरागक  
 राग॥ जेसाचीकछनीकाछै॥ ७९॥ विरकंतआलो  
 बांधैनही॥ चीकहैरिबंधावैनांहि॥ बासोलेनिरबंध  
 धरहै॥ कोइसाप्रसरूपामांहि॥ ८०॥ लुंदऊपालाज  
 विषैबवनंतजिहरिकंनहै॥ तजिहैअपनांनवनां  
 सोनिषाहेतिविचरिहैपुरमें॥ तपरनवननकरि  
 हैगुवनां॥ ८१॥ कंमल्यां॥ नाडो

प्राणपालणं जांणि ॥ रामचरणयोस्त्रधिकाली  
यां त्रतीती हांणि ॥ लीयां त्रतीती हांणि ग्यां न वैरागवि  
गडि है ॥ धंधकर मबंधि जाइत गति में चां जी पडि है ॥  
सुष सो चा वैराग सैं यौ ली ज्यो सबद पि छोणि ॥ चा डौ रो  
टी दो वटी तन प्राणं पालणं जांणि ॥ ७२ ॥ कंस न ही ह  
रसां न ही करै न खाद सिंगार ॥ चा डौ त्रि न्यारार है उरि  
वैराग करार ॥ उरि वैराग करार जाच नां चित वनि नां ही  
हरि अंष्ट्रा को ले ह अाप अंष्ट्रा न उ पां ही ॥ जे सुषी या  
सां नंद में ज्यो कल्प नि न ही लगार ॥ कंस न ही हरसां न  
ही करै न खाद सिंगार ॥ ७३ ॥ तं द म द हरि ॥ काल में  
मसत जो द सत ली यां ग रूं जी को फी को लागै सुष जो  
ग जो ग गति पाई है ॥ सो ग को उठाइ मूल सां सा की न सु  
ल जागै जागै नां ही ता प ल नि मन सित लाई है ॥ मग न प्र

फलिसदाऋत्तिकोननासञ्चावेदावेवंधैनाहिकाहं  
सदासुषदाईहोंरामहीचरणत्रैसेजोगीयाजुगतिल  
यारसपीयारसनांमरांमकोमनांगुमाईहों॥७३॥कोमनां  
रहतसोहीजांनीऐअतीतपूराकराकराकांमकितसारा  
हीनसांनोहों।सराहोइहराकरैममतरूमायाफंदइंद  
इरमतिदोषजरमक्रमहांनाहों।नचूमीनसंकजाकरै।  
करूपएकनएगएहदहरसविचारबनादोनाहों।राम।  
हीचरणत्रैरामरमतीतनितिसतसोचावांनजाकैसी  
सिचलावांनोहों॥७४॥वांनोकोविचारनितिनिव्रतिनि  
माणरहैगहैनाहीमाणमायाकायासूनयादीहै।निरा-  
रंअभिबिनांमनांमनौरथजीतिवीतिगएबदीसदीसुष  
सोगदारीहै।समतासबूरीसतमतकोजगाढलीयांकी  
रीहै॥रामहीचरणवांकीकही



एवमाइकाहारांमरांमगाइजतजरणां सजारी है ॥  
७५ ॥ विवतः ॥ जाकौनां मन्त्रतीत जीत वैठै जग बाजी  
उति मल छिन्नधिकार अगमकंसाजब साजीता  
जीकी ऐतयार सुधनर वेद करारौ ॥ जाकै संजम बाग  
नजन करिषड गडधारौ ॥ या विधि जन असवार होश  
मन पारध कावाणे जे करै ॥ रांम चरण द्वै रांम जंनता  
दिधर मसइ से कं कनरै ॥ ७६ ॥ साधु जन मन जीत  
नीत नै चरम निवास्यौ ॥ गुणां तीत पदलीन जीन  
सब रोग जटा स्यौ ॥ नया निरोगाने तसेत जग गऐ जपा  
रा ॥ धरम धारणां ध्यान ग्यान नगती शक धारा ॥ उति म  
ल छिन्न अगाध मततत नजन इकरांम ॥ रांम चरण जन  
रांम का सदा सुषम ई धांम ॥ ७७ ॥ सदा सुषम ई धांम रां  
मके संत उजागर ॥ ग्यान नगति बैराग धरम का कही

एन्नागरासातासीलसंतोषदयाधीरजमतपाकैःसांतिसु,  
धामंइवैनचैनहोइसुएताताकै॥दरसएकरतांयेमगुरि  
वपजैपेमनिधान॥रामचरणवैसंतजनरामनामदेदान  
७७॥रामनामदातारसंतपरमारथंकरिहै॥सन्नारथसरक  
नमरेकेदेन्नासानहीधरिहै॥निरदावैनिरदोषमोषिपद  
माहिमिलावै॥करमकाचकरिहैरिसाचचौडैदिषलावै॥  
वैसाधूपरमारथीपरमपदप्रातंतिकरै॥रामचरणरतरा  
मसंकांमदांमसबपरहरै॥७८॥कांमकांमणीत्याजिकनक  
ठीवैनकदाइ॥जांणैजेजातिकालकीकहीजन्नाडील  
टिलेइवैरागग्यानकीगमनरहोवै॥जगतिनजावैहरिज  
रमनांइषकैलावै॥तातेजनत्यागनकरैफिरैआपणैका  
लि॥रामचरणचजिरामकंवि॥सनांवेठायालि॥७९॥  
जेहकांसीजनमंनबांणैकैपारा॥तनमैहैतननाहिर

हैं सांमलिपणिन्यांरा ॥ ज्युंजलमैसिसंबंबंबजलहे  
कनहोई ॥ मांषनतकरसंमीपतकरघीनिदैनकोई ॥  
यूबिचारिकरिदेषीएजनन्हकांमीअंग ॥ रामचरण  
यूनिनिहैआपैरूपअंग ॥ ए१ ॥ आपैरूपअंगरंग  
पंचनसंन्यांरा ॥ सदाअरंगीरामेकरसिनितिनिरका  
रा ॥ गुणंपारनिर्धारनिरंतरिव्यापकसारे ॥ अजनांनंदी  
संततंतनिजनांवउचारे ॥ नामअरूपा रूपहैसबताके  
आधारि ॥ रामचरणअजिमिलिरहोआपैआपमंजारि  
ए४ ॥ छंदजुयाला ॥ आपमेदिआपमैमिलीयाआ  
परूपहोइरहीया ॥ जनमैमरैनुजुरासंतावैअसाअंगम  
पदलहीया ॥ वापदकीतारीफनआबै करीएकाहाब  
षांणां ॥ गुणंतीतपंचरंगनवाकेअंगसंजनहीजांनं ॥  
अंगनसंबाअंगनहीनिंनता ॥ सरबगिपूरणस्वामी ॥

विचार निरलेप निरंजल पर पूरण घणनां मी डोटन  
मे टन घंनो प्र गठः घटि घटि अघटि समाय अंदरि बहरि  
कस्तमो नो जाहं न व्यापे माया साया पार ब्रह्म न ब्रह्म सी  
सदुप रंत्त च वार म तारं म धां म धन न्यरु न न्यं करे करि प  
सा सो अ व ली न स दा त मा ही क व ह न धं रि है क या सं न  
र ए व लि हारी गुर की जिन ले ट व ता या ध्या ने द खे द  
स व ली जी जा गी अ ए नै लै सी नै नु म ग या र ह्या धा मी  
ही कं ही ए सो ग ति कै सी अ क थ का हो ए स त सुं र दा धी  
बी न्ही म हरि नि धां नो सं म च र ण नि ति च र णं तर ए पा  
इ अ ध्या त मं शो नो ए म के ह ल्या गुर मि ली यो सं क प  
नै सान अ ध्या त म सा र रां म च र ण नै च र म का हरि न वा  
या चार ॥ हरि न वा या चार धार मै वी व्र ण हा रा रा विली य  
अ दे व आ प का दि इ सा हा रा ॥ प ऊं चा ए पर ब्र ह्म प दि



रांश्रां॥हमतोहोतेतुछिकुछिनहीजांनते॥काहाग्यान  
अध्यासआंनगतिमांनते॥अबहमबाजैसंततंतअधि  
कारहै॥परिहांसतगुरमिलैक्रियालकीऐजगंपारहै॥  
ए॥किवत॥वरणबंधघरबंधसदाअजकार्यारहता  
नरमकरमकीधोरकांमनांसगिजबहता॥सुचिअसुचि  
ननेदजाहांताहीदीनजहोता॥तोऊंनसंधतोकांपरैएदि  
नघातागोता॥असेहमहोतेषरेरुकेकाजिअकाज॥गुरु  
मिलैक्रियालजीज्यांराषीसबलाज॥१००॥किंकल्यां॥  
लाजरषीक्रियालजीदीयांफतेकासाज॥कांश्रसंसं  
राकीयासंतगरीबनवाज॥संतगरीबनवाजकाजक  
रणकरिकीया॥आपकरीअपणतिरांमकांनमजदी  
या॥रांमचरणकहैसीसमसतगुरजीहोराज॥लाज  
रषीक्रियालजीदीयांफतेकासाज॥१०१॥माइतिगरी

कंजडी पूत फतेषां वाज वापन मारी मीरु की बेटो  
तेरुं हा ज वेद्ये तेरुं हा ज सा ज सरां संगि पाया का  
इर कुलि मै जन मि सर संगि सर कु हा या संघा सं सं  
घा की या गुरु गरी व न वा ज सा इ त्रि गरी कंजडी पूत  
फतेषां वाज १०२ संघा सं संघा की या सत गुर पार  
स आप वार स कै ली या आप मै मेटी सब ही ता प  
मेटी सब ही ता प स्वांति सी त ल सब अंगा नष सष  
निर मल च धो मन प्रितिर ह्यौ अ नंगा अबै न आप वै न  
ल टि के रा म चरण ज्यां व्या ध संघा सं संघा की या सत  
गुर पार स आप १०३ संघा सं संघा की या सत गुर  
पार स आप आ सि रै ली या हम तो जी व कुं ते लो हो रू  
पा ता कं पार स की या न या अ मो ल तो ल न या नारी  
अति अा ध का र व धा या हम का हा ज नै उ ति म प द

की। सो आप दी यो देखया। माया मो हो जो ह नही व्यापै  
काल जाल जै जागा। गुर पद पाइ थका स बगव नो। धी  
रुं वापरिला गा। एक ऊं वा उता या बिसराने। सो छो  
नी छिपे न को शिरां मरां मधुं जितो मरो ममै। सदा अघं कृत  
होइ। राम चरण यं पाइ माहापदा गुर गम मै निति रही ऐ  
और अनेक देवि मन रचनां। जाके संगिन बही ऐ। लग  
चाकौ तो सत पुर सो कौ। की जे देवि विचारी। लछि धा  
ह्यो कै निकटि जरही ऐ। जे जन जत मत धारी। १०४।  
कै कल्या। जत पूरा सत सरिवां जर मत ज्यां जनी  
का। उरिसाता विपता बिगत स्वाल संजाषण ठीक।  
स्वाल संजाषण ठीक पीक पर बितिकी नांही। ग्यान दो  
नदा तार सदा आसतिंबर तांही। जे से निज जन राम  
का ज्यां रही ऐ सदान जीका जत पूरा सत सरिवां जर म



तज्यो न जनीका १०५ रामचरणगुरदेव नि  
जवाइक मुषि उचरे रामरसांशुनिनेव परतीतचज  
नसेपाइरे १०६ रामचरणगुरदेव न जनेन प्रताप कहीरे  
गपथा रामरसांशुनिनीकी औररसंशुनिनिहं पूर  
मांही सोजांणी ज्योफीका फीकी फकत नहीर मजा  
में तौ कामें धरारे आसा माहारसांशुनि सदसरजी  
चण सबके परमनि वासा सोरे सतगुर आपवता  
ई रामरसांशुनिनेव रामचरणपी रामरसांशुनि  
राममिले मलिजीजे १०७ रामचरणगुरदेव रामरसांशुनि  
वरणं यो गुंघलु धामई सार माहाराजि अमां बिर  
प्राकरा जासैरे दावचार १०८ रामचरणमाहाराजि  
मुषि इमृत बिरषा कीन पापी जीव दास जो आपउ  
नूपदतीन १०९ आइ दासकीं करसि तौ फसैनको



तौ ली ज्यो दु भि वि चारी ॥ राम चरण जी सत गुर मेरा  
सुख सरूप सदा ॥ जे ऐ अ ए चै सबद उ चारे ॥ सब हि  
नकं सुषिदा ॥ १११ ॥ चं द्रा शणा ॥ ऐ वा इ क फुर मा इ प  
धारे धाम के ॥ रं र कार मै ली न उ चारे राम के ॥ अ ठ रं  
सै प च प न बु धि पा चै ष री ॥ परि हां वै सा ष मा स गुर बार  
दे ह त्या ग न करी ॥ ११२ ॥ कि त्त व ॥ दे ह छे तां दे ह र ह त नि  
ति नि र बु ति म त धा र्यो ॥ न यार कार ज ली न रां म ही रां म  
उ चा र्यो ॥ ज्यं नं ज न ज ल मं धि म धि वा हरि ज ल ए का ॥ रां  
म रू प ज न स दा रां म स व द न मै दे षां ॥ यूं त र व र को स्वा द वी  
ज र स फ ल मै जां नं ॥ रां म च र ण मा हा रा जि स व द के वी चि  
स मां नो ग या न आ या रां म जी रां म स व न मै ठी क ॥ रां म उ च  
रै रां म जं न जा के स दा न जी का ॥ ११३ ॥ चं द्रा शणा ॥ स व त  
अ स टा द स ष चां व न जां नो ऐ ॥ आ सो जं पं च मां बु धि स ॥

नसर... महार...  
परि...  
मौर...  
जिक...  
इ...  
म...

वि...  
है...  
व...  
म...  
म...

प...  
न...  
त...  
प...  
म...

क  
जांन

तिनां वदाइं उष जेनानमो संतमन अंत माहापद  
के अशिकारी तिरदा नेद वषां नि विपोक विचारी  
रांम जेनतन मनसू करै बंदनां सोइ आदि अंतिम  
धिसाहिकी तुम विनिनां ही कोइ अंतिम मन  
नमो नमो रांम र मती त हो अजात आप सत वि  
दानंद रूप निति निराधार जू नमो निजनूर जरषू  
रपर प्राप्तम हो आतम प्रकास वत मन बाणी पारज  
अषल अमल अति गति ऊन लषै कोइ ब्रह्मादिक  
वेद साधनां मही उचार जू रांम जेन बंदन करत क  
र मेरि मोर तोर पद ते जपुं जनमो निराकार जू र  
नमो निराकार निरलेप सो अठे प आपतापती नह  
रन करन मुक्ति को सरूप जू नमो आदि अंतिम धिसि  
धिसन अंतिम संस जस नोपे कर सि आ व म न प न

नमो सुषदाई सोबमो इतुजिके नून नकरनां निधान  
मिटिमाहा जग धूप ज्हा करंत प्रनां म सो प्रतां म्बुर मां  
हि धारि रांम जेन वंदत सुरे सरां म्बूप ज्हा आ ॥ न  
मो नमो गुर देव परम पंद के परं का सी ॥ नां व निधि दाता  
रहर नत्र गुन कौ पां सी ॥ निति मुं कति निर आ सु बिला  
सिके ब्रह्म सरूपा ॥ तन लु बि सों जा सर सं दर स ते सुष  
अनूपा ॥ अमर ध्यान मन मै र हो रांम चरण माहा रा  
जिकौ ॥ रांम जेन वंदन करे धनि दिहा डौ आ जिकौ  
धा ॥ अथ ग्रंथ ध्यान वं जा चौ निव्य ते ॥ १ ॥ ति  
त गुर रांम दया ल जन ॥ घन आ नंद सुष कार ॥ ति  
न के वंदन रांम जेन ॥ करि कं निति निर धार ॥ १ ॥  
ग्रंथ ॥ इहा ॥ सत गुर दया वषां णि कं ॥ ध्यान वै रं  
चौ सार ॥ रांम जेन र मी ए जा हां ॥ जा हां सी त ल सुष

अपार १ रामनामको ध्यान धरि ॥ जप्त सीतल होइ  
जीव रामजनतां हां लाईये ॥ उतिमबागसदीव २  
चोरे ॥ प्रथम ध्यान अलोकनकी जे ॥ उतिमधर  
नीकाठी लीजे ॥ माहाषेतत तां हां ऊसरनां ही ॥ सोही  
बिचारो अंतर मां ही ॥ ३ ॥ अंतर जो मिमाहा सुषका  
री ॥ मतकी दिठताले हू बिचारी ॥ करो हं वार बेगिया  
धरनी ॥ गंदीये अब सत गुरकी करनी ॥ सबद बैलिकरमा  
ही लीजे ॥ व्याख्यं पूरण चौकसकीजे ॥ अहंत हकरण च्या  
रिजे जा नौ ॥ कसरकोर सब इनकी जानूं ॥ ५ ॥ टाबा और  
उरसि करि नाई ॥ ऊचानी चाहो शजिताई ॥ बरण ब्रमा  
ई मान निमानो ॥ मोहो मद मछरता जानो ॥ ६ ॥ काम  
क्रोध लोभ अहंकारा ॥ उरमति उद्वेग नो सारा ॥ राग  
दाषरगति है जेती ॥ कुबधिकाल म्याममता केती ॥ ७ ॥

श्री अथ विद्या किं च यवारीः नैनं प्रासनां जलं जारौ  
अथैतन्मन्त्रं विद्वन्वाजिः पीड्यै रक्तं कथं वीजे न  
पूरुव नयां सनात्तं सानीः देवादिर्धो दुर्धतव  
जगो सत गुर नार दे इ प्रकड ई रासरा न ल्ये मारः  
महिः ऐ चो कस्तन रि च्यारि अ स याना व क्षतार  
सता वै द्या त व धाना वे हो स्ये एक कुं प्र ध णि ना ई  
ता स्ये पी वि जा ग व द ई १० अ व कु डे की लु ज व ता  
अं चा तै न ल प ताल का द्या जं नो न्द्र कु द्या ली सत युः  
रदा न्या सि व त्रा प न्द्र चै करि ली न्दी ११ ज साना  
सज सा स व ण्णै हो श्श क त षा द्णै ध्या णै त्प ग क  
रे सा दी षा न ण क्का टः क न व का म णी ह र उ मा ई  
१२ वे हो स्ये क म र न सि व त्रा इ ता कृ प रि क म्बी  
का रि जा ई त व व द र्शित व स त गुर नारः



सबदयूटेरै ॥१३॥ ज्यंज्यं नजनकरै मनघटके  
ग्यानजंबूरासिलपैप्रटके ॥ गुरपरतायसेसहजे  
फूटी ॥ तबदासीरनीरकीछूटी ॥१४॥ पेमसजल  
होइनिकस्पापांणी ॥ लागेबागतबैसहनांणी ॥  
निजमनषडोदरौगौभावे ॥ बागटदलनीकांक  
रिवावे ॥१५॥ इत्ता ॥ बागदरौगौरैणदिननिज  
मनषडोसदीव ॥ चेतनचौकीम्हेत्तीयो ॥ जाणि  
आपणेंजीव ॥१६॥ चौपड ॥ करैजाबतौनीकोप  
दली ॥ तसकरकंनहीलाधेगेली ॥ ध्यानधरमकी  
बाडिकराई ॥ जातेंचरौपडैनकाई ॥१७॥ अब  
बागमेंचेढाभारी ॥ मतगुरौपैनिजबनवारी ॥ प  
रथमधीसुइरमलगाया ॥ रसतैरसतैएउहराया  
॥१८॥ सीलुसंतोषनारेलुछवारा ॥ उतिमकलाके

लविंसतारा॥ श्रोत्रांनी वसो चरसमंता॥ द्वा  
 षड्दामदीनता नसता॥ श्रोत्रमलवेदबजोरा न  
 श्॥ सोही ग्यान वैरागस वदि सबरि विचारवं  
 वेक जोची न्हें॥ कंतरसेव सुपारीती न्हें॥ २०  
 सीता फल सोही सतजान्॥ षण्णां षरी कसोटी  
 मान्॥ चिंता रहत संसृतर नावै॥ अजाची क  
 सोताड कुहावै॥ २१॥ षुबीष म्या जाइ चमे ली॥  
 हरि रंगरचे स उति मबे ली॥ अगति केवकी मक  
 रद्वसेषा॥ जां हो केवडो न्ह चै एका॥ २२॥ बोहो  
 रि मोगरौ मन सुधे होइ॥ जां के फल माहाक स  
 बोइ॥ विडा गुलाब का करणी जाइ॥ तिगे फल  
 करी या

फलराम अरपावै

ध्रौ॥ पलादोइलटक ताकांधै॥ रा॥ डपटौके सस्य  
कीयौ॥ पटकोक मरिक् सिलीयौ॥ बनाती मो  
चडी पहरे सादी औरकी चरुयै॥ मि ले धम  
कि धराणा पाव बागा बाव ड्या अति चाव कस  
बाघोटिके पावै॥ अमल बिनिय लक नही जी  
वै॥ ४॥ नारी पारकी ताके नैणां कसर की ऊंके  
॥ ॥ औसौ अंध वेइ मान की यौ काम नहि राना  
॥ ॥ पा॥ छाया निरघतौ चाले बा चागरुत की पाले  
॥ ॥ नागरि पांनस अति जोष बीडी लीया पावै  
पोष ६॥ मं॥ अंधिक अणया ली॥ जु लफ्य  
सो फुती काली सुधा अंतरसंती नही बीदी  
नाल परिदी नही॥ ७॥ हलवै कांन में मोती गिणै

नहं द्वबलागोती करकी आंगल्यांबिंटी  
गलामैमांदस्याकंठी श्री न्यारोवापसंही  
ई त्रीयापुरषरहेदोई मायासखदेमरी  
हवेसीवासिल्युंतेरी ए संनेहीसासखा  
जावे कटंबीदेषिडुषयावे मातापिताके  
देगारिबीलेनही सबद बिचारि १० तिस  
नांलोचकी अतिलाद्र धनकं फिरेचऊं  
दिसभ्याद्र कामीकुटलमुत्तिकौही ए मृ  
रिषविषमैपरबी ए ११ हरिकोनांवसुम  
रेनांदि इसविधिजनमअहलौजांदि वा  
चाग्रनकीचू ल्यो सुषसंसारकैरू ल्यो १२  
करैनही नारिकं न्यारी हिरदेवसिरहीप्या

१॥ को ईत्तगति की साधे तासूं बैर करि राधे  
॥३॥ दृहा। रां न गति जां ऐं न हं। कर सां सूं  
ऊ सी या रा। ए ह त र ए त न अ व स ता। बो व का  
ली धारा। ए ब र स प ची सां प रि नं यो। अ व जु वा  
नी का जार। सु त कं न्या सूं हि ति की यो। नि ज रि  
न अ वं औ र ॥ चं अ र उं द ॥ प ची सां कृ प रे  
रु वो। क मां ह ति प चि म् वो। अ प ए गि र्हे  
को सां सो। न जां ऐं न ग ति को आ सौ ॥ श ध न क  
वा तु री जां ऐं। नि द्या नां व की ठां ऐं। रा धे ज ग  
त को ना तो। ति ड्डी नां व को तां तो ॥ २॥ ज्वां नी  
ज म की दा सा। सी यां कर बि षे की पा सी। की या  
ब सि जी व घे रे  
ई स् के ज्वां नी  
पा लि ३। म् रि ष

तातो हरिकी बात नही जावे साधू देषि ज  
लि जावे ४ अपणां सुवार थां रू डौ हरिकी  
जगतिसं क डौ करे नही साधको संगे अंत  
रिगति जगत को रंगा ॥ पा मेरे कबी लो नारी ॥ मो  
बिनि होइ सब पुवारी ॥ मै तो सब न को पित पा  
ल्य न्यासे नही शिर परिकाल ६ कर तां क्रम  
सब दिन जाइ सुषने सुषनां ही पाइ लीये  
सब आयो सिर नार कबी लो चलै नां ही  
लार ७ ऊठो मो हो बांधे कां ६ तेरे देष तां  
सब जांदि तेरो बाप कां हां जाइ ६ स वि  
धि छो मित जाइ ८ सा चौ सार हेरे करं म  
ता बिनि जगत सब बे कां म ॥ जो बन  
यां जाणो जाइ ६ दिन दि स देष तां जाइ ९

काचा कली का सारंग ॥ जो बन जग तिषा  
रुंजग ॥ बुढा पौसी सपरि आयो ॥ जो बन दे  
षि पर रायो ॥ सब ही लूट ले सी माल  
कर सी बुढा पौ बे फाल ॥ कट्टी कारन ही  
माने ॥ त्रीया संकन ही प्राणो ॥ १॥ उहा ॥ चाली  
सांके ऊं परे ॥ विध औ सता हो श ॥ चिंता चि  
तकं प्रासि है ॥ निसदि न बाढे सो श ॥ १॥ अम  
रबे लि जू बिचुं को ॥ चिसि लीयो सब तंत  
॥ राम चरण यू जगत को ॥ लीयो कबी ले  
अंत ॥ २॥ चापर कदा ॥ अब तो चेति रे अंधा  
॥ घर का फरीया कंधा ॥ नारी करे ना ही नेह  
सुत का वारण ॥ नितिले हा ॥ १॥ तन को घट गया

जोरै॥ दुनीयां सब कहै जोरै॥ बेरा बोल  
मां नै नां हि॥ ऊठै कल्यण नाम न मां हि॥ २॥ तन  
की तुचा सल पडीया॥ नैण नीर अति करी  
या॥ पल व्यास्याम सब ही केस॥ सो तो सुक  
ल रुवा नेस॥ ३॥ माथौ हा लण लागे॥ कर  
को जोर सब नागो॥ यगं मै पडु त है चोटी  
होइ गइ देह ली घांटी॥ ४॥ अचरण सु लो नां  
ही बैण॥ सूऊं जांत लो सो नैण॥ बाचो री क  
न ही बोलै॥ मन सा पडि गइ जो लै॥ ५॥ मुख मै  
दांत नां ही माठ॥ देही षडु षडु सब हाम॥ जठ  
रा अग निनी जागी॥ ब्रह्मा की सु ध्यान ही जा  
गी॥ ६॥ जो जिन खादन ही लागे॥ मूरष रोइ



रोइ त्यागै ॥ घरमें ऊक भूच तैनादि ॥ चुरा  
लीषा इये चां मांदि ॥ ७ ॥ बिद्यं कट कडी की  
ह्यो ॥ षटो लीषो लिमै लीह्यो ॥ मरिजी जाइ  
नही मा की ॥ नजां गां किता दिन वा की ॥ ६ ॥  
प्यासां जल नही पावै ॥ वैठ एदि गिनही श्र  
वै ॥ करिदै कल्पना नारी ॥ सब कंठे तद  
गारी ॥ ए ॥ छोरं हांसि करि नागे ॥ जिन को  
नो करौ लागै ॥ नही कोई सादि को करता  
॥ इदि विधि न्नाय दो नरता ॥ १० ॥ फाटो गूद  
डो दीयो ॥ नुगतै न्नाय एकी यो ॥ धणी की  
चूक है नारी ॥ जासून इहेषु वारी ॥ ११ ॥ ज्ञा  
चाचू की यो न्नाय न ॥ की . . . . . क

ध्यान ॥ बो लो प्र न मां ही बो ल ॥ नी सरि न  
ली यो सब को ल ॥ १२ ॥ कटु बी आ पा णी की  
या ॥ बुढा पै हरि करि दी या ॥ का डै घा ट मै जा  
वै ॥ असा उष न जन वि नि या वै ॥ १३ ॥ अ  
वतौ न ई पू र ण आव ॥ ज म कै हू त घा लो  
घा व ॥ आ यो सा व गै सा या ॥ न ही दो इ च्चा  
र की बा ता ॥ १४ ॥ आव त दे षि बि ल ला यो  
न यो ज म हू त कौ ना यो ॥ बु ला वै आ प  
णी नारी ॥ ष री तं नां व ती म्हा री ॥ १५ ॥ बु ढ  
वै सै न सं पू ता ॥ ली यो मो हि य क डि ज म  
हू ता ॥ करै कौ ई सा दि अ व म्हां की ॥ करी  
ही वे वि मै थां की ॥ १६ ॥ उष मै नि क टि न दी

आवे टल्लि टल्लि इरि दो इजावे

सबदासु अदोर हो नो क

जेवन कय कसर पोए

चोर पोस यडो गल के त

हो छामे नाले ए जम का

पहुँ चो धरम के दरवार

यो आयो जिन दो नाव वि

उहाप कडि इत नम क

ही को इ गंत चरण ज

आ सब र इ

मयो पाय

यो नार

कपटसंगे वै। हिरदैत्रधिक सुष हो वै। मि  
 द्यो है आज दुष नारी। निस दिन का ह तो  
 गारी। राषी रो क आधी पौलि उजल क  
 रोली पर धो लि। हमारे आजि त्रि ही सु  
 ष। बूढो ले गयो सब दुष ३ या क बालि  
 आबो बीर लागी छोति अधिक सररी।  
 पीछे नीर मे हाया दिवाले होइ करि आ  
 या ४ उ। जीवत ऐता दुष लया विना  
 न ज्यो जग वंत अब चौग सी जूणि मे  
 जुग ते क सट अनंत १ का हा क ह्या  
 जगत स माने न ही लगार सब ही देष  
 त जात है न जे न सिर जग हार २ मुष

केरैहरिचरितिसं॥ सुनमुमिरहैसंसा  
रागमचरणवैमानइ॥ जलैनरकिमं  
कारि॥ ३॥ चांशरबंदा॥ कइअबनरक  
कावजनेदा॥ तामैजीवयावैवेदा॥ अस  
टाबीसकुंमजारी॥ जलैअधमनरना  
री॥ श्यानासारकाताता॥ तिनसुनर  
वैवाया॥ रह्योतुंनारिसूलिपटाइ॥ सो  
अवयंननेयेआइ॥ सिलताइइक  
बोहोधार॥ तामैवहैजीवअपार॥ का  
यसारकासुला॥ तापरिचालरेनुला॥  
इहरिकीसदानदीचाल्यो॥ गुरकोसब  
दकंपाल्यो॥ तासुचलोकांटांमांदि॥ यो

हीधरणिन्नरन्नाकास जासीमेरमंरु  
कबलास २ नहीरहेसिलतसागरसा  
त नहीघरसरसिसकुसलात नहीर  
हेपवनपाणीवीर ऐसवन्नथरेनोही  
थीर ३ नहीरहेमेघमालादंड षासीका  
लकरिकरिकंड नहीरहेधरमधरमका  
दंत जासीमाइमाकापूत धा उपज्या  
जाहिसवहीबीति केताकरुकरिक  
रिचीत समजेसैनमैस्याण निजांगोत्रे  
धनिजगपाना धा काहासषासिब्रह्माच्छ  
लन कीधौमच्छहोइनिरदलन काहा  
गिरमेरकरमजुष्यो धास्योपीविसाइ

रम्यो॥६॥कांहांहरनांछिधरणीहरी  
जाहितिदेहवाराहधरी॥मास्योन्नसु  
रकीहोनासा॥मेरीधरतरीकीत्रासि॥  
७॥कांहांहरनाकिहरिसुद्रोहकोयोपुत्र  
सूत्रतिब्राह्मजबहरिधसेनरहरकप॥  
सष्योन्नगतमास्योन्नप॥यत्रसिकेधसेव  
वनरूप॥जिगमैआइजाचोन्नप॥सापा  
तालिमेलेजाइन्नपरिनिजरिआवेना  
दि॥ए॥जोधाएससखाहा॥नितिहीचले  
चेत्रछांहाजाकोअधिककहीऐजोर॥  
वासमिहसरोचहीऔर॥१०॥धरीयोनिप  
रकोऔतार॥ताकंमारिकीयोषुवारकं

द्वि हिरदै धारि चेत न होई २१ रसनां राम  
कं रटी ए सतगुरसरणि ही गही ए सांसा  
जीवका सब जाइ रहसी ब्रह्मपदसम्हाइ  
२२ एह चिंतावाण ग्रंथ सुणि हरिसं  
करे सनेह राम चरण साची कहे फिरि धरै  
नह जायेह शं राम चरण नजिरां मकं च  
कि देहादिके पिखाव जूगंत जिर चिसाच  
सं तो छुटै जसमार र राम चरण नजिरां  
मकं संते कहे समजाइ सखसागर कं छो  
दिके मति छी लरइष जाइ ३॥ २॥ अध  
री यादक कलि जाइ सबद ब्रह्मनां ही कले  
राम चरण रटितादि चौरासी कानै टले १



चौरासीकी मारा जउन विनां करे नही ता  
तेहो इ कुसी मारा एहसी मसन गिरक होर  
इता ग्रंथ चितावाणी संपूरणो हुहा ॥ २५ ॥ चो  
मरछेद ॥ १०० ॥ सारवा ॥ १ ॥ सखा ॥ १३९ ॥ ग्र  
य ॥ ३ ॥

... ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
... रमती तरंगगुरदे  
व्रजी ॥ फुनितिरु काल के संत ॥ जिन  
करंगमचरण की ॥ बंदन बार अनं  
त ॥ १ ॥ स्वामी श्री संत दा स ॥  
जिनके कि पारंगम ॥ रंगम चरण ताकी  
सरणि ॥ सत्यामनोरथ काम ॥ १ ॥ कि  
पारंगम क्रिया करी ॥ दमक की या निहा  
ल ॥ पर उष गारी रंगम रत ॥ मिली या पर  
म दया ल ॥ रा दत नारद स प्रदेव सं ॥ श्री  
गणेश ॥ श्रीगणेश ॥ श्रीगणेश ॥ श्रीगणेश ॥ श्रीगणेश ॥

दनवारुवार ॥३॥ का हाबरणं विसंसारक  
॥ सतगुरगुणं नपारं ॥ रामचरणदेसं  
धन ॥ अन्तको या उपमार ॥ ४ ॥ रामचरण  
सतगुरमित्या ॥ कीया बोधित उपमार  
सिरसंहरि नषा इया ॥ फुवा जगका नार  
प नारती याते वनीया ॥ नौ सागरकी धा  
रा गंमसुसंस्तु कानया ॥ सो नर उत स्या  
पारा ॥ धरामचरण सतगुर विना ॥ कृणु  
रे उपगारा ॥ नवसागरकी धारसे ॥ नूरतल  
घावरुणदारा ॥ ७ ॥ नौको नाव वरण हुकास  
त करे नौपारा ॥ रामचरण जगना चढे ॥ ताते  
वूनै धारा ॥ ७ ॥ असीको शिनकारि

त गुरसं होशं राम चरण गुरगारडु॥ सब वि  
षमारे धोशं ए॥ जो सचासत गुरमिते ॥ तो  
सिषजी सचा होशं राम चरण सचा विना  
बधिमति वंमोको ॥ १०॥ राम चरण सा वा  
गरु॥ सिषकंदे वैसा चरीफ करे सत सब  
दकी॥ इरिकरे नूमकाच ॥ ११॥ नरमकर  
मसवत्त तडा॥ सत गुरदेह उमाशं राम  
नाम निज कए सबद॥ सिषकंदे पिछाण  
॥ १२॥ सत गुरकी पुजा करे॥ तन मन आ  
पादेह॥ तो राम चरणे सत जन॥ आप  
जसा करलेह ॥ १३॥ सत गुरवरम्या ॥ १५॥ ३  
वध्वारपी नको ॥ जैसी साधानी पजे॥ तसी

नो मकाहो ११७ ॥ घम मि घम मि घम नवरस  
यो ॥ रतिवनिवालीषेत ॥ यं राम चरणगुरुरक्ष  
करे ॥ जो सिषहो ११८ ॥ अचेतं ॥ ११५ ॥ सतगुरुरक्ष  
मेघज्यं ॥ सिषज ग्यासीहो ११९ ॥ रामचरणत  
बनीपजे ॥ निरफलजा १२० ॥ नको ११६ ॥ राम  
चरणकरसण न गति ॥ सुधदिरदो सुषेत ॥  
नावबी जगुरमहरिजल ॥ तब बुद्धग्यान  
फलदेत १२१ ॥ रामचरणषेती फल्ग्या ॥ त्रिस्त  
गद्विला १२२ ॥ निरधनी या धनवत नया ॥  
अवधनपर चेषा १२३ ॥ रामचरण सतगु  
रसादा ॥ पूजीवकसणहार ॥ करे कुमा १२४ ॥  
दिनातो सिषहो १२५ ॥ सात्तकार १२६ ॥ सतगुरका

त गुरसं हो ५॥ राम चरण गुरगारडु ॥ सब वि  
षमारे धो ५॥ ए ॥ जो सचास त गुरमि है ॥ तो  
सिष जी सचा हो ५॥ राम चरण सचा बिना  
बधि मति बं मो को ५॥ १०॥ राम चरण सा बा  
गरु ॥ सिष कंदे वै सा च ॥ री फ करे सत सब  
दकी ॥ प्रिकरै चूम का च ॥ ११॥ नरम कर  
म सब त तडा ॥ सत गुर देह उमा ५॥ राम  
नाम निज कए सब द ॥ सिष कंदे पिछुए ॥  
५ १२॥ सत गुरकी पुजा करै ॥ तन मन आ  
पा देह ॥ तो राम चरण ए सत जन ॥ आप  
जसा कर लेह ॥ १३॥ सत गुर बर स्या ५५ ॥ ५  
बध्या रषी न को ५॥ जैसी साघानी पजे ॥ तसी

नो मकादो ५ ॥ १४ ॥ घम किं घम किं घन बरस  
यो ॥ रतिवनिषालीषेत ॥ यं राम चरणगुरुरक्ष  
करे ॥ जो सिषदो ५ अचेतं ॥ १५ ॥ सतगुरुवरस  
मेघज्यं ॥ सिषज ग्यासीदो ५ ॥ रामचरणत  
वनीपजे ॥ निरफलजाइनको ५ ॥ १६ ॥ राम  
चरणकरसण नगति ॥ सुधदिरदो सुषेत ॥  
नावबीजगुरुमदरिजल ॥ तव बुद्धग्यान  
फलदेत ॥ १७ ॥ रामचरणषेतीफलया  
गद्विला ५ ॥ निरधनीसाधनवतनया ॥  
अबधनपरचेषा ५ ॥ १८ ॥ रामचरण  
रसादा ॥ पूजीवकसणहार ॥ करे कुमा  
दिनातोसिषदो ५ साह

परतपको ॥ कैसोककुरुवषाण ॥ रामचर  
न ॥ अथरिन्नया ॥ मिटिगया ॥ आवणजा  
ण ॥ २० ॥ रामचरणबीजक ॥ बिना ॥ जोधर  
मैधन होइ ॥ दूधरागुरदेव ॥ बिनि ॥ ततनदी  
पावे कोइ ॥ २१ ॥ रामचरणफरा ॥ मित्या ॥ दो  
न्दाततउतादि ॥ जनममरणका ॥ नमिदो  
सासारध्यानको ॥ २२ ॥ रामचरणसतगु  
रुपना ॥ सबजग ॥ नल्याजाइ ॥ साचक  
वकी ॥ गमनदी ॥ धलिगुलऐके ॥ नाइ ॥ २३ ॥  
रामनाम ॥ गुल ॥ नरम ॥ प्रकदमदी ॥ कहताइ  
क ॥ रामचरणसतगुर ॥ मित्या ॥ जिनसग  
लल्याबिबेके ॥ २४ ॥ संजमिली ॥ सतगुर ॥ मित्या



मिल्या न जन का नेव ॥ सब दया ५ गा फल  
है ॥ तो काहा करै गुर देव ॥ २५ ॥ सत गुर संभूथ  
बौ दो बली ॥ ले काट गह बाह ॥ सासास सबे नि  
वार कै ॥ राधे चरण क बल की बाह ॥ २६ ॥  
अथ सुमरण कौ अर्थ ॥ इति ॥ रमती  
तराम गुर देव जी ॥ फुनिति क काल क संत ॥  
जिन क राम चरण की ॥ बंदन बांर अनंत  
अंग ॥ राम चरण का सी स परि ॥ ऐ क निर  
जण राम ॥ राति दिव सरट बौ करै ॥ नदी अ  
नसू काम ॥ १ ॥ राम चरण ५ स जीव का ॥ वा  
रस ऐ कौ दी राम ॥ ताहि सुमर सुप्रती जी ॥ ५  
जात जिबे काम ॥ २ ॥ राम चरण न जि राम क

ये सब का सिखाया दान राम छानि करिम  
तिवहे आंनदेवकी लार ॥३॥ आंनदेव  
आदरनदी रामकरण सुषराम गति दि  
वसरुट बौकरे ऐकरकार संकाम ॥४॥  
गति दिवसरुट बौकरे ॥ आणे मनइकता  
शरामकरण मति बीसरे ररकार आधार  
धराम नजन विनिगत नदी समफिम न  
बोरुंवार राम नजन सनैदले जामेफे  
रनसार ॥ रामकरण चितराम सं लाजि  
रख्यो निन्नतीन ॥ इति विधि कोइ लागसी  
जिनकारं जकारलीन ॥ ७ ॥ तेन मत तो न्दव  
ल करे संजन आसण साधि ॥ सबद प्रसा

में सुरति रहे ॥ ठोमिस कलज कवाद ॥ ८ ॥  
संमरंमरट बो करे ॥ रतिदिवसद्वक धार ॥  
आगे ही सुष हो ॥ १० ॥ राम त ए दरवार ॥ ए  
सुमरण की जे राम का ॥ सब सहो ॥ ११ ॥ नि स क  
समदिष्टी हो ॥ देषी ए ॥ का हा शव का वार क  
१० ॥ सुमरण सा चा सार हो ॥ फ व जे गत बिक  
र ॥ फ व त जि सा चा ग है ॥ त ब जी वा हो ॥ १३  
धार ॥ ११ ॥ न जन विना छुटै न ही ॥ राम चरण  
न वपास ॥ जे चा के दी दार कं ॥ तौर ती ए स  
स उंसास ॥ १२ ॥ नि स दिन न जी ए राम कं ॥  
त जी ए न ही ल गार ॥ राम चरण आवु पहरे ॥  
पल पल वारु वार ॥ १३ ॥

है। तौ लहे रामरसस्वादि प्यासा मूठी नी  
चके। जनम गुमावे वाद १४ उत्रै सहस  
रस नारटे सो नी पा के नाहि जाके नी  
त्मी क्य जरी ऐक जीन सुष मादि १५।  
सुमरण करी ऐ रामका तजि के मान भ्रमा  
न राम चरण तव ही सुदि घट मे के च न प्रा  
न १६ राम रामरस नारटे। उर सत गुरको  
जाय राम चरण तव पाईरो। ही रुका दर  
जाय १७ राम चरण हरि नावकी। मैवल हा  
री जाहि। सुमर्या पीव पर चै नया। कायानि  
जरी मादि १८ निज संरूप निरवै नही जब  
तग राम पुत्रा हराम चरण नर क्य लहे जो

पंथ मैं वै वै हार ॥ १ ॥ काचा सद गलुजा इगा  
 सा चाराम अरु म ॥ राम चरण सो सुमरी एत  
 जि पड प्र च पा प म ॥ २ ॥ अनेत कोट जन उ ध  
 र्या ॥ अजि कै केवल राम ॥ वो होत पति त प्रा व  
 न न ए ॥ राम चरण लेना म ॥ २ ॥ राम चरण नि  
 ज ना व की ॥ सब सत बोले सा वि ॥ सो त् अर  
 थ विचार के ॥ दि ड करि हिर दे रा धि ॥ २ ॥  
 नि सदि नर ती ए राम के ॥ यत्न धर ल बा इत जार  
 राम चरण त जी ए न ही ॥ जै सा सु मरणा सार ॥  
 २ ॥ सु मरण की जे राम का ॥ मन काले ल मि टा  
 ३ ॥ राम चरण गुर ग्या न ग हे ॥ तो जम का ध का  
 नषा ॥ २ ॥ स्या एण सु मरै राम के ॥ न्या एण नार

त्यागः करेति काणं ब्रह्ममे" जगसंभारे  
नलाग २४ घटघट व्यापकरां महै । ज्यं  
द्वनीमैनीर । संभरणकरणं विना ॥ प्रग  
टेनाहीसीन २६ करणीसंभरणपानिकर  
तवदीयसंभरण २६ संभरणवातासुणा  
पीवनपायको २७ संभरणसंभरणं नज्या  
नभं नभंकारे । तेन मोहोमैते मनी ॥ का  
मं नो प्रहा प्रहार २८ पांचतत गुणतीन  
का रतीनलागे जौर । संभरणसंभरणं नज्या  
नगरनकंके चार १५ चारनलागे जागता  
सूताय वेनको २९ संभरणकहरामकं ॥ न  
जतां क्रमनलो ३० संभरणं व्यापेनही । गुण

इन्द्राकाजोर ॥ शंभु चरण जा गै ध्यां ॥ तोषडा  
 रहै नदी चौर ॥ ३१ ॥ शंभु चरण त्रिद्वंद्वमे ॥  
 नजै निरंजण राम ॥ नि सबा सुर करण करै  
 तोषा वै सुषधामा ॥ ३२ ॥ शंभु चरण दम कहत  
 है ॥ कंठ्या कबीरै नाम ॥ सकल सा सतर सोधी  
 या ॥ कलि जुग के बल राम ॥ ३३ ॥ शंभु नजन  
 आनंद पद ॥ दुषदीरघ संसार ॥ शंभु चरण  
 दुषपर हरौ ॥ सुषपद करौ सचार ॥ ३४ ॥  
 विपति निवारण सुषकरण ॥ उदै ग्यान पर  
 कास ॥ शंभु चरण नजि राम कंत ॥ सरणि दर  
 णि जम त्रास ॥ ३५ ॥ सुषकौ सागर राम है ॥ दुष  
 नंज

॥ नजीरोव

रुब्यार ३६ काम धरम अरथ मोष फल  
राम चरण देराम न्ह चामांदिन जी कहे को  
ई न जो काम न्ह काम ३७ तीन पदारथ ज  
गत सुष वदरथ संत विलास राम चरण  
ए न जनमधि जैसी सुवग आस ३७ राम  
वरण संसार की मरिष माने संक सरा सु  
मरै राम कं सब सर है न संक ३७ राम  
ट सरां मे मित्या राम चरण नर नारि राम  
न जन बिना गत न ही तीन लोक मजार ॥  
४० राम चरण ठामे नदी सुमरण साची  
टेक न जन बिना निर जै न ही को ई वाता  
करो न्ने क ४१ राम न जे विषी यात जे



ये ही ब्रह्मगन्यां नारायणचरणसुनरणबिना ॥  
इति सब गुदरां न ॥ ४२ ॥ लपट्टरणसूरस्तद  
धरे नही असष्टूल ॥ रामचरण लौ लुम्परी  
सकल सष्ट कौ मूल ॥ ४३ ॥ रामचरण एक  
रामविनि ॥ तजादी संधंध ॥ नावली यामुक  
ताह वै ॥ और सबै ही बंध ॥ ४४ ॥ अथ बीन  
ती को अंग ॥ स्तुति ॥ रमती तरां न गुरद्व  
जा ॥ फुनितिक काल के सत ॥ जिन करामचर  
ण की बदनजर अंत ॥ १ ॥ अंग ॥ रामच  
रण की बीनती ॥ सुणै एक अरदासा तरण  
की प्रतपाल कर ॥ काटौ जमकी पास ॥ शराम  
चरण अंग न स्या ॥ तुमबौ हो गुण की वा

नि। श्लो गणसबही बकसीयो रामतुम्हारो  
जनि २। जेतुमश्लो गणचित्तधरो तौमेरी  
जीवननांदि। रामचरणकी सुरतिकं राषो  
चरणमांदि। ३। रामचरणकी ब्रीनती। सु  
एज्यो दीन देयात्। अबगतगतिमातरुं  
कदेनऊर्येकाल। ४। जेतुमत्यारो नगत कं  
तौमेरी जीवनिनांदि। रामउधारोपतित कं  
तौहमधुसां मनमांदि। ५। पतितनिवाजण  
रामजी। मेजाणपोउरिमांदि। रामचरण  
पतितापतित। पाछाफेस्यानांदि। ६। मेअप  
राधी जीवकी पीवकराप्रतपात्। रामचर  
णसंतोषदे। कांगकीयानिहात्। ७। अपरा

धीसाधीनही॥ हरिहरिजनसंघीति॥ अध  
मउधारणरामजी॥ तजीनअपणहीति  
॥ मैं निरबल बुधिबलनही॥ कामीकुट  
लनकामा॥ सरणैलेनिबाद्वैज्ये॥ रामचर  
णकरामा॥ ए॥ आपकरतारामजी॥ कुल  
षणकतेकवात॥ बसेबसेअधचतक  
तुमराषेदोजिगजात॥ १०॥ मैंकितधरणी  
कितवीसस्ये॥ गुणतजिऔजएलीन  
ल्योरामदयालकं॥ इनीयाआगेदीन॥  
११॥ गुनहजारबौदोजनमंको॥ धूनीबदी  
वान॥ बंदेऊपरमहरकरा॥ काटोबंधदि  
वान॥ १२॥ हमसंबणैनबंदगा॥ बंध्याइसं

गुन्हाअपार ॥१५॥ एकहरामंजी ॥ तुम  
चक्रनिवार ॥१६॥ तुमतीरामदया  
तदो ॥ मैअनाथनरधार ॥ रामचरणकदे  
रामंजी ॥ बेगिलजबो लार ॥१५॥ रामचरण  
कदेरामंजी ॥ मेरा गुन्हाबिसार ॥ पिताप  
रदरपूतक ॥ तोजीवेकएआधार ॥१७॥  
७॥ जगतअंधेरोबागदै ॥ बिबधिफू  
लफलरंग ॥ रामचरणमननवरदो ६ ॥ जाहा  
कीयापरसंग ॥१७॥ मोहोबिधकजाहीजग  
त ॥ मैचिघपड्योतामांदि ॥ फंदकाटएकरां

मजी॥ तुम बिनि पूजा नांदि॥ १८ ॥ अथ बि  
हको अंग॥ स्तुति॥ रसतीतरांम गुरदेवजी  
फुनिति कालकेसत॥ जिन कंरोम चरण  
की॥ बंदन बार अनंत॥ १९ ॥ अंग॥ गिरवर  
कंमोरा जये॥ साइर जये सुराल॥ राम चरण  
रामे जये॥ तुम रकां करण निहाते॥ २० ॥ ज्ये  
चात्रग घनकं जये॥ मिसकं जये चकौर॥  
राम चरण रामे जये॥ जैसे पंथो नौर॥ रामी प  
जये रति स्वांतक॥ आरति वंती पी वाराम  
चरण रामे जये तुम बिनि तल फे जी व॥ ३  
रति दिवस तल फतर है॥ राम वेद तुम आ  
व॥ राम चरण बाधी बिदे॥ कीयो कते जघाव

४ रामचरण विहा नवंग मस्यो कलेजो  
आश्रु रामगारुड विषदरे जैको इदेतमिल  
५ पवंध्यासिंघ कवांजरे परवत चाहे  
निति कदली बनरेवा नदी रामचरण ग  
जचित ५ को ५ ल चावे विबधिवन मोरा  
पावसरति रामचरणयु बिहनी चहेर  
मीया मित ६ नसम करेत नत्रपणं स  
तीविषेकी प्रीति बिह अगनिमे निति ज  
ले रेबिहनकीरीति ७ बिह अगनि अ  
पटी अधिक दपटी रहती नांदि रोमरोम  
परजलरदी रामचरणतन मांदि ८ बि  
हवधी विसतारकर फेली सबघट मांदि

रामचरणकंपं ही कीयां॥ बुझती दी सेनांदि॥  
ए॥ बिद अगनि सबतन व ह्यो॥ लोही र ह्यो  
नमांस॥ रामपी यारे दरस विनि॥ नाजनवे  
वैसास॥ १०॥ रामचरण बिद रोग की॥ पीड  
नजाणे को॥ के बिदनिका प्रातिमा॥ के जा  
घट बुदाहो॥ ११॥ सपी या सबसंसारदे॥  
बिदी चित उदासा॥ जाकव सै निति पी वमै॥  
कद हरि पर वै आसा॥ १२॥ ह जा दुष सब ही  
सक्त॥ पी व दुष सद्या न जा॥ रामचरण  
बिदन कहै॥ बेग मिले हरि आ॥ १३॥ दुष  
तुमारे दरस विनि॥ तुम कर दे लुका॥ के  
दरसो केतनतज॥ तुम बिनि र ह्यो न जा॥ १४

तुम तो राम दया लक्ष्मी कछु कछु कदम मंदि  
राम चरण मन एक हो १॥ तुम संलागत नादि  
१५॥ नी डा संहरा नया ॥ जब लग १॥ जी आस  
राम चरण हरि क्युं मिले ॥ नां दी मन बिस  
वास ॥ १६॥ राम निरज ए नि कट है ॥ माया प  
डु है त्रि ॥ बिद न का पड ॥ दा मि है ॥ तो दर  
से पी ब्रह्म जर ॥ १७॥ राम चरण १॥ बिद के ॥  
सद के करु सरीरा ॥ पहली ल हरि ल गा ॥ के  
पी छे बंधा १॥ धीर १॥ १८॥ अथ न्यात विह  
को न्यात ॥ सम ज्या के रा क्रम है ॥ जैसा ची  
ठा में ए ब्रह्म अगति विनि परज ल्या १॥  
लेन इ मृत केण १॥ १९॥ ब्रह्म अगति जव पर



जली॥ करसहोद्रगयाहार॥ इतसकजो डोज  
लगया रव्यासारही साराशुण॥ विदजलाया  
करमवबुद्धदिसनयातजासासबअ  
धायामिटमसा॥ तससबदपरकासा॥ २०  
विदअगनिदीतमतिमे॥ जलगयाविषेवि  
कारासमचरणसीतलनया॥ मित्तारस  
नरतार॥ २१॥ विदनिअतिरुपेसयाव  
लतीबुजीनआगि॥ पावप्रधारयाइहजमे  
मोदिसुदरकेलागि॥ २२॥ सुदरसुतीनीद  
रा॥ विदादइजगाश॥ निसदिनपीडपुनारता  
पीवसम्यालीआश॥ २३॥ विदनिअनदउ  
ठावकरि॥ मित्तीपीवसुध्याश॥ २४॥

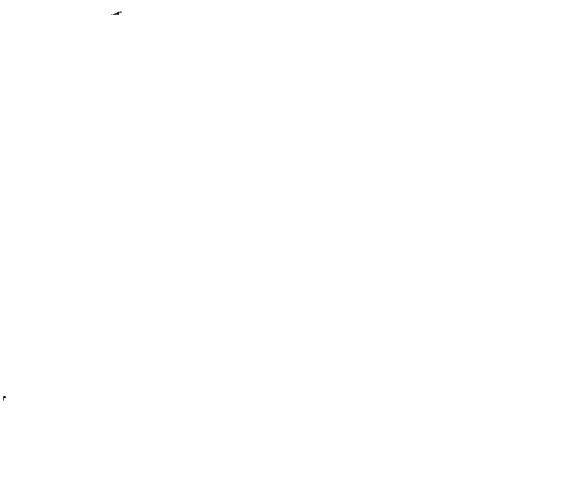
सुप्रसेऊपर सती अंग लगा २४ ॥ बोहे  
तदिना काबी ठडा ॥ मित्या समेही राम  
राम चरण पीव परसतो ॥ सरी वास बद्दी का  
म ॥ २५ ॥ राम चरण द्विदकी ॥ महमा के  
ही नजा १ ॥ चरम करम सबद गध करि ॥  
दी या पीव पिठण २ ॥ २६ ॥ राम चरण द्वि  
दकी ॥ देषी रोह उपा १ ॥ पहली तन के  
सोषिके ॥ पोषे प्रेम पिला २ ॥ २७ ॥ अथ  
को ॥ प्रथम ले रसना लगे ॥ राम चर  
ण नि सवास रसना सहि रदे ग १ ॥ बाजन  
ही परकास १ ॥ दिर दे ले लागी रहे ॥ सोही अ  
जाया जाप राम चरण तब नार दे ॥ पुनि पाप

की तोप रा लै लागी धोका मिया अंतर  
पडी पिछाण पल पल मेनु मउव तो ॥  
गक्षो मली बाण ॥ ३ ॥ राम चरण नुमउव  
तो ॥ बादर मिलसी राम ॥ गक्षो मली बाण  
एद दरसी ल्यो की धांस ॥ ४ ॥ हिर दे लै लागी  
नदी जब लग नुमन जा ॥ राम चरण लै के  
लग्या ॥ आनद प्रगटे आ ॥ पालै लागी तब ज  
गारे निसदिन छूटे नादि ॥ राम चरण रद  
करसि सोवत जागत मादि ॥ सोवत जाग  
तरे करसि सोमार सबे न ही काल राम  
चरण लै के लग्या कदी काल की जाल ॥ ७  
मन का नै सब मिटि गया सासा गया बिल

शंभुचरणनिरनेनया रक्षारंभल्यो  
लाइ ॥ १ ॥ शंभुचरणनिरनेनया रक्षारंभल्यो  
संतांबाणचलाइया धरि करिसूधीनू  
व प्रेमसदतसिषकेलीया गयाकले  
जाफूट १ प्रेमनात नीतर सुची बां  
हरिदीसेनादि शंभुचरणकसकतरहे  
निसवा सुरउरिभादि २ विहन्नप्रग  
निसीतलनइ जबनयापेमपरकास  
शंभुचरणअवभाइया मनवेप्रेम  
निवास ३ प्रेमलहरिअेसीबहे जैसे  
सिधतरंग शंभुचरणताछीलसुनी  
जतहेसब अंग ४ शंभुदयालदयाक

रीतवस्वसुखदिल्लः  
यायायाप्रमन्नदा  
धीददसाचीपुन  
सातननयासोतलक  
ममेदोप्रदया  
तवजायगिरेदुस  
पुल्यातवजायगिरे  
कामक्रोधव्यापि  
पुप्रमपुल्यातव  
गुणदोशकिकवद  
पुप्रायपुमपुल्यातवजायगि

विदनि न्निहात राम चरण दुषर्वा  
सत्या निसदिनरहत पुत्यात १०पि  
मप्रेमसवकदनेदि प्रेमलषेनहीको  
५ प्रेमजांहात ज्ञानही तज्याप्रेमन  
हो ५ ११ अण्णं सांइपरसता लाज  
करोमतिको ५ संककरेसंसारकी तो  
सांइमिलणनहो ५ १२ रामचरणसा  
चीकदे प्रेमविना सुधनादि सांइमि  
लतो सुधलहे नांतर लषचौरसीमा  
हे १३ सतजगोवै प्रेमक रामसुवदक  
ध्या ५ रामचरणसंतविना कोइसकेन



काया नगरी मांदि रं म चरण गाढ ग  
रु ॥ वाहर नर मेनादि ॥ ३ ॥ पाव पिछ  
ग्या हे सषी ॥ आदि अंत कासे ए न  
या जु मन का नाक्ता का संक ही ए  
वे ए ॥ ४ ॥ पा तो गं ल पा ए न यो ॥ अ  
त हो मे ग द्वि कां ए रं म चरण त वजा  
ली ए पी व सं न द्वि पि छो ए ॥ ५ ॥ अथ  
अच की न ज न र र र म ती तरं म  
ग र द न जी ॥ फु निति त को ल के सं त  
जिन कर रं म चरण की वंदन वार अ  
नंत ॥ ६ ॥ ॥ चौकी न जन प्र ता ष की



संतके हंगरे च्यार संम चरण्यासत  
है ॥ ५ ॥ जानरम असार ॥ १ ॥ रसनाके च  
रसपीइके ॥ हिरदे सुष विलास ॥ नान  
कवलसु उलटिके ॥ सुरतिग ई आका  
स ॥ २ ॥ सुरतिग ई ब्रह्म मरुके ॥ परसत्रि  
कुटी धाम ॥ संम चरण्या वादे समे ॥ सता  
की या मुकाम ॥ अराम चरण्या वादे सक  
कोई पक्षे बिरला जन ॥ जपतप जो  
गन ज्यासके ॥ जेकोटक करे जतन ॥  
४ ॥ अनेक जनम जपतप करे ॥ जो

गीजोग समाधि ॥ ग्पांनन्नगति वैरा  
ग विनि ॥ लहेनतत न्नगाधि ॥ ६ सुरति  
स ब्रदकं पका डि करि ॥ जा ५ चढी आ  
काम संम चरण सुनि सिषर परि ॥ निस  
दिन करत बिलस ॥ ७ ॥ अगम ठोर अ  
सथा नहे ॥ जांहां विघनन व्यापै का ५  
संम चरण ब्रांहां रमर ह्या ॥ धुनि में ध्या  
न लग ॥ ५ ॥ चंद नरकी गमन ही ॥ माया  
स केन जा ५ संम चरण ब्रांहां रमर ह्या ॥  
गे गनि संकल मठ छा ५ ॥ ए ॥ जीण माराग  
सुरति का ॥ विष लेग यान को ५ संम चर

ए वादे समै ॥ सब संत पर गट होइ ॥ १० ॥ ॐ  
सा अगम अगाधि है ॥ तां हां को इ बि र ला  
जाइ ॥ राम चरण वादे समै ॥ सब संतर ह्या  
समाइ ॥ ११ ॥ गिगनि म म ल मै र म र ह्या ॥ र ह  
ता पुर स अलिषा ॥ रूप रेष जा के न ही ॥ न ही  
कोइ स्या मन सेत ॥ १२ ॥ माया रूप अने क  
है ॥ वा के रूप न एक ॥ लांबा चौडा है न ही ॥ है तै  
सा ही देखि ॥ १३ ॥ राम चरण चषषो ल के ॥ निर  
षे पाणी माहि ॥ ज ला बंब स न र ल ह्या ॥ प्र जा  
दर से नां हा ॥ १४ ॥ ॐ सै देखे गिगनि म धि ॥ षो  
प्र सुर तिका ने ए ॥ ह ल बी ल न र पू र है ॥ अ ब  
क ह त न आ वै वै ए ॥ १५ ॥ रूप वरण गुण तत

नहीं। किं संक संख षां ए। राम चरण या पद  
कं। परस संत सुजां ए॥ १६॥ गिगनि गरज  
उमगी घटा। सुषम ए नी रजरंत। राम चर  
ए सा शरत्त स्या। जादा हसा केल करंत॥ १७॥  
दंस मिल्या पुमदससं। अंतर रहीं नरेष। वी  
तपीत जया एकरस। लषदी क्त्वा। अलेष  
१८। हादस ऊपर गिगनि गट। जांदा बुस  
का वास। राम चरण वाते जका। रोम रोम पर  
कास १९। रोम रोम परका सीया। त्रैसा तत  
अन्तप राम चरण दम पाईया। काया ग  
ठका न्तप २०। अणसम ज्या मुसक लघ  
एण। संता मुसक लनांदि। राम चरण रटि राम

कां मिले रां महि मां दि रां ज्ज हता म न र द ता  
न या ॥ न ज त म स र ज ण दार ण म च र ण क ही ए  
का हा ॥ यो त्त्र द नु त सु ष त्र पार ॥ २२ ॥ रां म रां म  
मं हो प्र र ही ॥ र र कार णु ण कार ॥ नि स वा सु र त्रा व  
प ह रां रां म च र ण ष क सार ॥ २३ ॥ ऊ व त वे व त  
जा ग ता ॥ सु ता सु म र ण द्वा इ रां म च र ण र र कार  
धु नि ॥ वा द रि त्त षे न को इ ॥ २४ ॥ रां म र ट त से  
जा षु ल्या ॥ रां म च र ण सु नि मां दि ॥ वा डी पी दि  
रे णि दि न से का टु टे नां दि ॥ २५ ॥ गि ग नि म क ल  
से ण षु ल्या ॥ प ग ट्या सु षे म णि नी र ॥ रां म च र  
ण ता की त्त ह रि सी त ल स क र स री र ॥ र द्वा कं  
प गि ग नि मे उ र ध सु ष ॥ नि स दि न त्र मी क र त

रामचरणनजिरामके पावैविरलासंता २०  
सुरतिसबददोऊरहतदे गिगनिगुफाके  
मादि रामचरणउसधाममें कालपकवे  
नाहिरट सुषवरसेपरसंसुरति निसदि  
नत्रातुजाम रामचरणवेधाममें नदीका  
लकाकामरण मिलवै सबदत्रकालस  
नयाजीवसुसोव सुरतिसुहागएहोइरहा  
परसत्रमरवरपीव ३० पावैअभारससं  
तजनइकीयाबोलेवेन रामचरणवादस  
काकदेसाषिमैवहन ३१ वहनछेपाया  
नाछिपे एमतवालाकीरीति रामचरणआ  
वेनहीसोफ्याकपरतीति ३२ रामचरणम

रचाविना निदीवाएभिस्वाद॥ वाणी जेकी  
सतही दरम्यातत अंगाधि॥ ३३॥ अयमती  
बुताको अंगान्तरिता रिमतीत संदुर्लभ  
जी॥ फुनितिरुवाकके संवर्गिनि कर्तव्य  
रणकी जेदन वार अनंत॥ ध्यायतुं पुरा  
स्तापतिवृत्तकी समझि मदीहो वदना  
करणछाने नदी॥ जोविनचार  
का॥ पतिवृत्ता कावामुद  
माहिवाके तोचितपतिवसे  
रुद्रजादेष्वीरसन॥ एकराज  
सुपेसामक॥ तीरीककरतार  
केगारवा॥ पतिवृत्तागारज

एको नदी ॥ वाकाजी ब बसे पी ब मांदि ॥ ४ ॥ पति  
वरता पति संक दे ॥ सुण हो कंत सुजो ॥ ५ ॥ मी  
न नी बस म हो शरही ॥ विछे ड त त जं पराण ॥ ५  
पति वरता अपण वृत सं ॥ निस दिन र दे सु  
चेत ॥ राम चरण गा फल रूप ॥ वरतर सात  
ल देत ॥ ६ ॥ पति वरता पति की न गति ॥ नि  
स दिन करि दे सोइ ॥ जेटुक संपे और कं ॥ तो  
क व सत्या जू होइ ॥ ७ ॥ तन मन को स्वारथ  
त जो ॥ से वे सत गुर राम ॥ राम चरण सोही न  
गति ॥ आपो अरपे स्यां ग ॥ ८ ॥ जिने आपा  
अरपनि की या ॥ हरि प्रीतम कं सोइ ॥ राम चर  
ण ताको सुजस ॥ तीन लोक में होइ ॥ ९ ॥ आपो



एक ही प्रीत मा ॥ ताह अरप्या सुष हो ॥ शाराम च  
 रण बो हो प्रीति मा ॥ बो ड्या सुषान को ॥ १० ॥  
 पति बरता सो ही जाणी रे ॥ लोपे न ही ब चना ॥ अ प  
 एत न वि स्मया फिरे ॥ पति क अरु पे म न ॥ ११ ॥ अ  
 न पुरष जो ए न ही ॥ पति बरता पति ए का ॥ राम चरण  
 ह जात जे ॥ यो ही व मा व वे का ॥ १२ ॥ सब का सा दि व  
 राम है ॥ जिन र च्या सक ल बुद्ध म मा ॥ राम चरण  
 तां हि छां दि कै ॥ क ए न रे ज म म म ॥ १३ ॥ अ धि क  
 मार ज म लो क मे ॥ जो पति क दे वे प्रु व ॥ राम  
 चरण या जगत मे ॥ जन म हार गया उत ॥ १४ ॥ पति  
 बरता क गाल है ॥ नगर नाइ का संग ॥ राम चरण  
 यं जगत से गा हो ॥ पति बत नंगा ॥ १५ ॥

विभ्रचारण जममजमम ह्रिपुत्रार पतिव  
रतापितसंमिले ॥ विलसेसुषत्रंपार १६ ॥ प  
तिवरताकापीवको ॥ जाहतांदांअधिकार  
रामचरणविभ्रचारण ॥ जाकापतिकंगार  
१७ ॥ पतिवरताकीपांदाण ॥ विभ्रचारणके  
सीसावापरपुरषारतिभ्र ॥ वासुमरैजगदी  
स १८ ॥ सांईमेराकेद्वै ॥ प्रजासबदीव्यार ॥  
रामचरणप्रजानाकरु ॥ जोगराउलटेनीर  
१९ ॥ गंगजमनउलटीबद्वै ॥ सदैसीसषु  
सांण ॥ प्रजासांईनांकरु ॥ जौपिछमठगेभो  
ण २० ॥ सांईएकोरामद्वै ॥ सबैसहेलीसंत ॥ राम  
चरणसुषसोतद्वै ॥ जौपालैपतिवत २१ ॥ पतिव

रताकापीवके॥निसदिनआदरमंनिरंज  
चरणविनचरणं॥परपुरषासनेद॥२३॥का  
लीकाणीकेबडी॥लुधकुलजनमलीयो॥प  
तिसुमरणनिसदिनकरे॥तोजीतवसुफलज  
यो॥२३॥पतिकरताविनचरणं॥रिताअंतर  
था॥वाजगततापमेनितिजले॥वापतिसग  
सुषफलषा॥२४॥चुडौदौवडौसदलदौस  
दलकदाबौनारि॥कठणिचालपतिवृतकी॥  
कठणिमिलाबौसार॥२५॥अथजिसवा  
सकोअंग॥स्तति॥रमेतीतरामगुरदेवजी  
फुनितिककालकेसंत॥जिनकरामचरण  
कीबदनबीरअनंत॥२६॥अथ॥अनयाए

का सोच क्या ॥ सब कं दे करतार ॥ राम चर  
ए बिसवास बिन ॥ दुष प्रावे संसार ॥ १ ॥ राम  
चरण न्न कराषीए ॥ रामतए इकतार ॥ दो  
सचराचर कं देत है ॥ तो नरका के साचार  
र ॥ सचराचर निरसं स है ॥ ऐकरामकी आ  
स ॥ निति सो सो संसार कं ॥ विनो राम बिस  
वास ॥ ३ ॥ राम सकल कं देत है ॥ चांचसवा  
ए चंन ॥ काहिकं कं लपति फिरे ॥ मेट ए दा  
रा कं ए ॥ ४ ॥ सिष्टि बाग बिछजी व सब ॥  
बांगवान करतार ॥ जिरोप्या सो सीचसी ॥ व  
दाक्यं ले नार ॥ ५ ॥ राम चरण बिसवास बिन  
नर दुषी या जगमांदि ॥ पसंपषी करताव

सं॥ आपो बांधेनाहि॥६॥ रामचरणकेरे  
केत॥ नदी प्रसरी आस॥ निरास बितनिरजे  
रहे॥ रामतणे विसवास॥७॥ रामचरणविस  
वासगदे॥ छानिजगत जमजाल॥ रामनाश  
तारहे॥ तोयाससके नदी काल॥ प॥ रामचरण  
निरामक॥ धरदिदे विसवास॥ रामनन  
न प्रतापसं॥ अनेके उधर्यादास॥ एजेको  
६॥ आगे उधर्या॥ तोतं नीरषकतार॥ सां ६  
के उव ध्यानदी॥ अज्या उतारेपार॥१०॥ राम  
चरणकी रामजी॥ आळीकी न्ही साहि॥ जोस  
गर बिचिब्रुता॥ लीधी बांधो समाक्ष॥११॥ जो  
सागरकी धारमैतेव्रुमासव संसार॥ रामना

वकी नांव चढि ॥ संत उतर गणपार १२ ॥ सारै सि  
स्नणहार के नर के सारै नादि ॥ राम चरणता  
तेर दो ॥ राम रजा के मोदि १३ ॥ राम करै सो क  
रण दे ॥ अपणी लोकि उपा १४ ॥ राम चरण नर  
संसर दो ॥ राम नाम ल्यो ला १५ ॥ की या देष  
करतार का ॥ तं मति करत दो १६ ॥ राम चरण  
करता क्त वा ॥ सुषी न देषा को १७ ॥ करता  
करै क सब द मे ॥ अनत को टि ब्रह्म मं ॥  
राम चरण ए जी व सब ॥ सदा दुषी ग्रिह मं ॥  
१८ ॥ ग्रिह को दुष व्यापे न ही ॥ जो राषे दरि वि  
सवास ॥ राम चरण ले आप सिर ताते नु गते  
त्रास १९ ॥ राम घाण को राष न रो सो ॥ संवास

वकीतौ है ॥ राम चरण वै सरण सब लकी ॥ फेर  
न जग सं जोड़े ॥ १८ ॥ राम धरणी के देषता ॥ धरणी  
वात आसा नि ॥ चारि पदारथ अष्ट सिधि  
ओर कृंग मजानि ॥ १९ ॥ सिव गराम दया ल दे ॥  
पोषे आदि र अति ॥ राम चरण पूजा सती ॥ दि  
ना चारिका मित ॥ २० ॥ पाले पोषे य न मे ॥ पु  
निर द जा हा ल ग दे हा ॥ राम चरण ता हि छा मि ॥  
कै ॥ आनन की जे ने द ॥ २१ ॥ आय साध संग  
तिको अंग ॥ स्तुति ॥ र म ता त राम गुर दे व  
जी ॥ पुनिति क्त काल के संत ॥ जिन क राम चर  
ण की बंद न वार अनंत ॥ १ ॥ अंग ॥ संगति  
की जै साध की ॥ सब ही छा मि जं ता ल राम चर

एतद्वपाद्ग्रे ॥ निरभैवैर अकाल ॥ १ ॥ संगति  
की जैसाधकी ॥ मनकी डुब ध्याषोद्गंमच  
रणेक पलकमे ॥ लोहा कंचनदो ॥ २ ॥  
लोहासं कंचनकरै ॥ सोपारसपरमाण ॥  
कसणदेमननिरमलकरै ॥ सोही संतसु  
जाण ॥ ३ ॥ पारसमिलि कंचनअथा ॥ अं  
तररद्वीसनेह ॥ रामचरणेसतजन ॥ स  
तरूपकरलेह ॥ ४ ॥ पारसकीसंगतिकरै  
लोहावरसहजार ॥ रामचरण अंतररद्वी  
पलटैनांहीसार ॥ ५ ॥ अंसेसंगतिसाधकी  
जेमनदेवैनादि ॥ रामचरण वाजीवका  
करमकिसीविधिजा ॥ ६ ॥ रामचरणचंद



ए संगति ॥ पितृव्यानी च पलासा ॥ ऊंचक  
ध्यापलद्यानदी ॥ अंतरपोला बास ॥ शास  
धसबदमने नदी ॥ अथ ए मज की टेका ॥  
राम चरण के से लदे ॥ संगति त ए चंबे काण  
संगति जाकी जाणी रे ॥ त न मन चर हयै दो  
राम चरण सा धसबद ॥ राषे हि हदे पोइ ॥ ए  
सत संगति सीतल करे ॥ तीन ता पहर ले हा  
राम चरण ए सत जन ॥ इम तवर से मे द ॥ १ ॥  
इम तवर से सत जन ॥ सुगरापी त्रै अघा ॥  
राम चरण गुरग्यान विनि जुग राष्या सा  
जाइ ॥ १ ॥ सत संगति सब सजली ॥ निति ही क  
जे जाइ ॥ राम चरण ए सत जन ॥ दिवै बुझा मिल

साधसंगति घुरसाणदे। जा मननिरमल होइ  
करमकाट बरा करे। गुरसकली गर सोइ  
१२ कहणी हेरदणी नदी। जाका काचा सं  
गरांमचरणरदणी विना। जैसै रंगपतंग  
१३ कहणी रहणी तेकहे। सोही संत सुजा  
णि। रांमचरणवाकी संगति। पावैपदनिर  
वाण। १४। जासंगतिकसाणी घणी। संगति  
कीजैसोइ। रांमचरणरदणी विना। संगकी  
याकाहोइ। १५। सोही संगतिसारहे। जाहां म  
ननिरमल होइ। रांमचरणमनुमलगहे।  
सोसंग करे मतिकोइ। १६। लोहाजलसंधी  
इते। तोइरणलागे काट। रांमचरणपावक

दीयां॥निरमलहो॥निरांत॥१७॥ॐसैसत  
गुरतापदे॥तोसिषकानिकसेषोट॥करेषु  
सामदजीवकी॥तोरेहेठौठकाजोरि॥१८  
नातांगटटुटेनही॥बातांक्रममजाशराम  
चरणसाचीकदे॥गौलाग्यानदगा॥१९ए  
रामचरणसतसंगकी॥सपतिकरेसुषदेवा॥  
रजतमदो॥छुटेनही॥तातेलहननेवाए  
ग्यानभगतिबैरागदे॥अरजगसकरैउदा  
सा॥रामचरणवासाधको॥कदेनतजीएषा  
सा॥२०॥रामचरणसतसंगमै॥ॐसीकरीए  
जाषारमतारामपिछांए॥ए॥दयासीलसंतो  
षा॥२१॥सतसंगसरवररामजल॥कोईसाधव

धैघाट॥ क्रमकचौ द्वि आतमा॥ बहती रेके  
वाट॥ २३॥ रामचरण पारसपरसतो॥ पंचगु  
ए पलद्याजो ५॥ वरणमोल मलकठौरता  
लोहाकहनको ५॥ २४॥ अथदुसंगतिको  
अंग॥ स्तुति॥ रमती तरंगगुरदेवजी॥ फु  
नितिकालके संत॥ जिनकरामचरण  
की बदनवार अनंत॥ १॥ अंग॥ रामच  
रणके संगका॥ देखौ फलनिरता ५॥ जीवबु  
झको असहै॥ देही संग दुषपा ५॥ १॥ देही दु  
षको मूलहै॥ नरीया बोहोत विकार॥ न्हक  
मीताकी संगति॥ करमाको अधिकार॥ र  
सत संगति जाणे नही॥ मिले जगतसे जा ५

रामचरणवैमानवी ॥ न्या इहलादलंषाश्रु  
जाकंसतसंगतिमिहै ॥ सीतजेकुसंगतिमेल  
रामचरणगालरह्या ॥ होइजाइउलटाबेल ॥  
४ ॥ जाऐबूजजीवसब ॥ करेकुसंगासंगारामच  
रणरचिमैहिसं ॥ पाडि जगतिमैनेगा ॥ थ ॥ तांबा  
कीसंगतिकीया ॥ जाइकनककोमोल ॥ दिना  
चारसरसोरहै ॥ पीठैमोलनतोल्लावारांम  
चरणयजगतमायासंगषुस्याल ॥ जोग  
जोगवैचारिदिन ॥ अतिषरावेसुल ॥ ७ ॥  
कुसंगतिकेतागया ॥ जाकीठीकनठामरां  
मचरणसतसंगका ॥ कलिअजरावरनाम  
जस्वांनजतीसबकोकहै ॥ वेदकतेवामोहि

रंम चरण काती कुसंग ॥ मारग ल्यां मैषा १०  
करै कुसंगरति उपज्या ॥ सोही होइ श्वेत्काल ॥  
रंम चरण निति ही कुसंग ॥ जाका कण्ठ  
पाल ॥ ११ ॥ हंसा कवा नावणे ॥ नाके दोइ वि  
चार ॥ हंसा मुकता हल चुगै ॥ वैत्रिष्टा नो  
गणहार ॥ १ ॥ फटाकी संगति करै ॥ तो सारो  
षावै चौट ॥ रंम चरण लूमतिरहे ॥ कुसंगति  
की चौट ॥ १३ ॥ कुसंगति के वचबिछ ॥ जो म  
न बंदर जाइ ॥ रंम चरण सुषनां लहे ॥ षाज  
करम फल षा १४ ॥ १४ ॥ उषीया मिल उष उप  
जै ॥ सुषी जया वै रंम ॥ सिके काज सी जैन  
ही ॥ त्यां ऐ सुधरै कांस ॥ १५ ॥ नुज ल न यातो

क्या नया ॥ मषी जंग क पूरा राम चरण लो  
ही कुसंग ॥ बिसरे हरिको नरा ॥ १६ ॥ धोया  
देष न धी जीरो ॥ जे मन धोया नाहि ॥ मन मे  
लात न उजला ताके संग न जा ॥ १७ ॥ ॥  
ए काल को जंग ॥ लूति ॥ रमती त राम गु  
र देव जी ॥ फु निति काल के सत ॥ जिन के  
राम चरण की ॥ बदन बार अनंत ॥ १८ ॥  
॥ राम चरण त चेतरे ॥ का हा सो वै न सरा  
लाप क ड सबद सम सेर के ॥ षडौ सिराणे  
काल ॥ १ ॥ काल त ए नै सिटि गया ॥ छटौ  
मजंजाल ॥ राम चरण निर नै नया ॥ पाय  
सबद न काल ॥ २ ॥ पाव क या सै त ल क ॥

दीवाबातीहिंजि॥ काल ग्रासे आवनिति  
स्वारथकरमांसंग॥ ३॥ लालचतौ छट्टेनदी  
अंत रलागा॥ ला६॥ रांमचरणहरिननेन  
बिनि॥ काल गिरास्या पा६॥ ४॥ तेल छता  
कोइ चेतजो॥ पी छे दो६॥ अंधार रांमचर  
णपेलादिना॥ कीजे नगति विचार॥ पा७॥  
की चाले कालकी॥ निसदिन आवुजाम  
सुरजरसबही पीसीया॥ रांमचरणबिनि  
नांम॥ ६॥ दो६॥ पुडजमा अकासदे॥ फुनि  
दो६॥ लोजरमोह॥ पीसे जगका जीवक॥  
सांसांसांग अदो६॥ ७॥ बौछाजलकीमा  
छली जैसे योर सार रांमचरण बुधकाल



२॥ निसदिन लो गो लार ॥ ७॥ मायां वो छो नी  
र है ॥ जीव मा लु ली जा णि ॥ रां म चरण ने का  
ल है ॥ नी डी रां म पि छं णि ॥ ए रां म चरण  
इ काल की ती न लोक मे घात ॥ रां म न जे सो  
उ ब है ॥ १० ॥ रां म चरण  
ला गे न है ॥ रां म न ज त ज म चो टा ॥ न ज न  
बि नो उ ब रे न है ॥ नो र प्र सरी चो टा ॥ ११ ॥ रां  
म चरण ता न व न को ॥ मृत लोक है ना मा जा  
मै व मै सो मृत वी ॥ तं वे ग स मा ले रां म ॥ १२ ॥  
रां म चरण श्रो ता र से ॥ सुर नर न सुर न नै क  
दे ह धारी सब मृत व स को शिन उ ब रे ऐ क ॥ १३ ॥  
न ला बु रा नु षी नै षे वि धा ति र ए कि सो र ॥

रामचरणद्विमितसं॥ नदी किसी का जोर १४  
कालमाहाबलवतमुषे उप ज्या सबे पडु  
त॥ रामचरण अब गतरता उबरे हरिका  
सत १५ रामचरण से तो तणे कालनलागे  
लार॥ मांणी पकडे तासके जा को सिर प  
र नार १६ और नरम सब हरिकरि राम  
ही राम पुकार॥ रामचरणे बात सं काल  
गयो हेदार १७ राम न जन प्रताप से  
कालनघाले घान धरि देह सो बि एि स  
सी ज्यंतर वरपा को पात १८ का चा  
दुटे काल बसि सो फिर जुग ते मार राम  
चरण पाका पडे तो घडे न पूजी वार १९

सकलसुरोंकी आदिहै॥ कहीरेपरजाप  
ति॥दिषो कालमाहाबली॥ बुझाउपरचि  
त॥२०॥ बुझाकरये कालसातो नरकी कि  
तीरेक आत्र॥ रामचरण नजिरास कज्ये  
जंमकालगे नरुचि॥२१॥ रामचरण बु  
झामरे कालवजावेगालो॥ सदा कालका  
गालमे॥ सोकफिरेषुस्थाल॥२२॥ रामच  
रणइंदेदका॥ जतन करै संसार॥ कालतु  
कै आनुपदरा॥ ज्ये मसैतकै मजार॥२३॥  
कालजाललीयाफिरेबचण नपावे एक  
केनांघायामारिके॥ घाइलकीयाअनेक  
२४ रावणसांजोधा गह्या॥ नसानदीअव

को ५ दषोगा फल राम सं रद्या न चीता सो  
५॥५॥ जैता ही से दिष्टि में सब कंषा सी का  
ल राम न जै सो उबरे ॥ न जन हो र कुपाल  
२६ राम चरण का चै किले बैठ करे न  
निमान का लप कड ले जा वसी ॥ जूची  
तो ले जा ६ स्वान ॥ २७ ॥ क्या किलो चरण  
६ कै बैठा हो ६ नि संक ॥ काल पि छो डे  
पलक मे राजा गि ए न रंक ॥ २८ ॥ क्या रां  
ए क्या रां ज वी ॥ क्या पति सा क्या र का रां  
म चरण हरि न जन वि न ॥ ज म ले जा ६ नि  
संक ॥ २९ ॥ जै विष्ठ बाटे बा ग को ॥ तो मा  
ती सु ए पुकारा राम चरण मंगरत ए ॥ ३० ॥

सदैसिरमारा॥३०॥ अंधकं पग्रिदं मेपडौ  
बंधो माया जाला॥ ज्येदप्ररविसहरिगिले  
श्रीसेयासेकाला॥३१॥ रामचरण गिरुके  
पमे॥ प्राण अति बेफाला॥ सुपने सुषस  
जे नही॥ उरसां साकौ साला॥३२॥ सां सोषा  
वे जीवके॥ काया सोषे ना शिरांमचरण  
आगे काहा॥ अबही नरक मजारा॥३३  
पीछे पीछे काल है॥ आगे आगे जीव  
नो सागर बेफाल है॥ पणि याद करे नही  
पीवा॥३४॥ अथ चिंता वाणी को आगा  
त्तति॥ रमती तरांम गुरदेवजी॥ कुनिति

कालकेसंत॥ जिनकरांमचरणकी  
वेदनवारभ्रनंत॥ १॥ भ्रमगा॥ छत्रप  
तीघरसोदतौ॥ कंजरधुएँसीस॥ भिन  
षजनमकदिपाइरु॥ कदन्नजिरुज  
गदीस॥ १॥ भ्रमक्रमसूलागकरि॥ भ्रमि  
रह्यासंसार॥ रांमन्नजनसतसंगविनि  
गयाजमाशेहार॥ २॥ रांमसुमररुसी  
दारहोप्र॥ सोवैकाहागिवार॥ रांमचर  
णमोसरए॥ मिलैनबारुंवार॥ ३॥ ऐह  
मोसरत्रैसीसबी॥ मिलैनरुजीवार॥  
चोकिपलटिफिरपाइहै॥ भिनषजनम

श्रीतार ॥४॥ जै पाया तौ क्या नया जो नमि  
ल्य सत संग ॥ परसूकर अरखान जपू ॥  
कीया विषे संग नंग ॥ फु बासुरक्षंधो निस  
विषे ॥ सकेयो नरं मसं नारा ॥ रामचरण ही  
राजन मग योज नंदहार ॥ क्षारं मकद  
रे बावरो ॥ जनम अमोल कजा शमति  
भलो धन धाममे ॥ जो स्यो सब छिटका  
५ ॥ शारं मकदै तै मानवी ॥ राम विनांस  
वरो ॥ रामचरण जो कादा नयो ॥ उघ  
डो नरको प्रोज ॥ ७ ॥ चौरासी के श्री सर  
सब पावै नर देह ॥ पाइ जिनकी सुफल

है ज्यो राम भजन कर लेद ॥ ए राम भज  
न परता प्रसं ॥ जम दर घे नही जाइ ॥ राम  
चरण सत गुर कहे ॥ कहे बेट समजाइ ॥  
११ राम चरण ऐक राम है ॥ सब जीवां त्रा  
धार या कं कोइ माने नही ॥ जाके मुटे छा  
र ॥ ११ राम चरण ऐक राम विनि ॥ प्रजिक  
हे न बात या कं कोइ माने नही ॥ जाका सि  
र परहात ॥ १२ ॥ भजन छांकि नरमत फिरै  
राम चरण संसार ॥ संगति करिषाली रद्या  
जाके वारन पार ॥ १३ ॥ राम चरण संसार  
सं ॥ राम कद्यान ही जाइ ॥ फूठा जां मर जो



लमौ॥ फिर फिर गोताषा १४॥ सोइसु सु  
निमुषर है॥ करमां कं दे पूठि॥ राम चरण  
न देहका॥ वैलेसी लाफाल टि॥ १५॥ मु  
षसं रामरटा करौ॥ करसं कुळ अं न दे  
हा॥ राम चरण ऐदो प्र करि॥ अति न रहस  
देह॥ १६॥ लष चौरासी जुगत तो॥ दत वस  
दुषनांदि॥ राम न जन प्रताप सं॥ निर नैप  
दके मांदि॥ १७॥ राम न जत सब उति मदे॥  
ती न लोक के मांदि॥ राम चरण सोही मुध  
मा॥ राम न जन रुच नांदि॥ १८॥ राम चरण  
चतै नदी॥ काहा कतु वा कतु बार राम न ज

न चावे नदी ॥ अंधधुध संसार ॥ १९ ॥ स  
तगुर का सारा नदी ॥ जीव पड़े फंद मा  
दि ॥ राम चरण चेतन की यां ॥ तो जी चेतै  
नोदि ॥ २० ॥ राम चरण चेतै नदी ॥ सतगु  
र कहत पुकार ॥ राम जनन विनि जात  
है ॥ जगत जमारो द्वार ॥ २१ ॥ तब जम ते  
षा मागसी ॥ जुगते पीड सरीर ॥ अपण  
की या पुनि पापमै ॥ नदी कुटव को सी  
॥ २२ ॥ राम चरण कडो जगत ॥ भी ती दे  
देषा ॥ नीड पडा जम हत की ॥ सब प्र  
राहो प्रजा ॥ २३ ॥ अबधि गई वातांक

जं २४ रत. के उदर नरत सुष सो ६  
रंम च जन विनि मूरिषा ॥ दीयो जमरी  
षो ६ ॥ २४ ॥ को दोरन त्रै सो पा व सी ॥ मि  
न ष जन म त्रै तारा ॥ रंम चरण ६ क  
रंम विनि ॥ हा स्योर तन गि वार २५ ॥ नि  
सर्वा ती सुष सो व ता ॥ दिन षो थो ६ ष  
ध धा रंम चरण हरि न जन विनि ॥ नर  
त न हा स्यो ॥ २४ ॥ रंम चरण हरि न  
जन विनि ॥ त्रै सर हारी नारि ॥ न ६ सि

कारण कुकरी ॥ फिरे न्नदडीकार २९  
रंमचरण संसारका ॥ ७४ कौवारन  
नपार ॥ तामेजूले मुगधनर ॥ न्नलेसि  
रजण हार ॥ २८ रंमचरण बिरधान  
या ॥ प्रीतिनरापैको ५ ॥ परे सुहेलो ना  
रि ॥ सोनी बेरणि दो ५ ॥ २९ रंमछां मि  
न्नरमति फिरे ॥ न्नतरह्या संसार सत  
गुरकी माने नदी ॥ सिरपर न्नार न्नपा  
र ३० ॥ नाना जण त फिरो ॥ कुलको  
मिटो न बंध ॥ जने मन्न जाती या ५ के  
न्न वक्य न्नले न्नंध ३१ ॥ वेग वेग स

संभ्रालोरे ॥ अमकलरहीरे जोदि ॥ क्व  
क्या हो ६ गा ॥ पाचपत्रकके  
मोदि ३२ ॥ अथ चक्षुषण गुरदेव  
को अंग ॥ स्तुति ॥ रमतीतरांमगुर  
वजी ॥ पुनितिरु कालके संत ॥  
जिनकरांमचरणकी ॥ बदनबार  
नता ॥ १॥ अंग ॥ सतगुरसरणे ॥ ६  
क न करली जीते ॥ काम क्रोध मद लोभ  
मोहोतजिदी जीते ॥ गुरनुचरे मुषलेन  
दिरदे धरणी ॥ परिहारांमचरण मुष  
रेणदिननाषी ॥ १॥ सतगुरसिरजए

हरजिनूतिरनाहं रे चरण मत चि  
तलाइ सीतनिति पाइ ऐ ॥ अग्या अग्या  
नद होइ काम सब दाइ ऐ ॥ परिहांसम  
चरण कर जोड काल मिट जाइ ऐ ॥ र  
डुषी जीव वैलाल जगत की जा लरे  
संत सरणि की चरण करी प्रति पा लरे  
सीतल की या सुनाव धर्या कर सी स  
रे ॥ परिहांसम चरण निज जो बदी या  
व क सी सरे ॥ २ ॥ ज्या हा ज रूप गुर दे  
व व एंवा नौ सिंध में ॥ संम चरण सिध

पारकरे एक पल के मैनां व ठांनिसं  
 सार बहग या धारो परिहांनियया  
 गुरग्यांनपक्षीयापारो ॥ अथ  
 अरण्ये ॥ रामनामकौ ध्यान स  
 दा उरिधारो काम क्रोध मद लोभ आ  
 रिरिपमारो पकडि सील संतोष दोष  
 सब त्यागी ॥ परिहांनमचरण पत्र सा  
 धि नजन संलागी ॥ नजन की पांने  
 जाइ नरमनां नार है ॥ त है अगम का ने  
 व सबद साची कहै ॥ नही आवै परतीत  
 सुरतिकं जो श्रे ॥ परिहांनमचरण सतरां  
 अहिरदा विचयो ॥ शरसनार टणल

गाइ ध्यान हिरदै धरौ ॥ जीवां सब निरबै  
रडव ध्या परहरौ ॥ गहो साच बिसवास  
कुबध कें मारी ऐ ॥ परिशंरंम चरण नर  
देह श्रे सी बि बित्यारी ऐ ॥ ३ ॥ मिन षादेही  
पाइ न जत है रंम कें ॥ अ चल पद में आइ  
ल है सुष धांम कें ॥ श्रे सा न जं न प्रता पडु  
ष कं नं हिरे ॥ परिशंम चरण कहे सा च स  
दा सुष मां हिरे ॥ ४ ॥ अइ नो निस प्रु वा  
निरधारं आधार सकल  
सरता ज है ॥ अ नाथ के नाथ गरी बं  
न बा ज है ॥ अंत काल की बार को न वै  
काल सं परिशंम चरण न जिशंम बो हो



तसुस्पालसं॥१॥ अनाथकानाथनिरं  
जएरामजा॥ निसवासुररटिताहिओर  
तजिकाभजा॥ तवहीहोइजपारधारतजि  
गदगा॥ परिहारामचरणकहेसाचसारेहे  
बदगा॥ २॥ जुगजुगहीमेंनेइजगतमेंनीड  
रे॥ साहिकरीततकालंपुणद्वीनीडरेसा  
हिबसदासुचेतदासकेसाचरे॥ परिहा  
रामचरणहोइबेरजाएउरकाचरो॥ ३॥  
रामकरेनहीसाहिजगतिकीनीडरे॥ तोज  
गतिजगहोइजाइबधेनहीधीर॥ जगति  
बिठलताबिडदजगतिपठिसोइरेपर  
होरामचरणएसाधिनेरेसबकोइरे॥ ४॥

रामनाम परताप सुरात कर जो इरे या वि  
नितरगनां हि प्रसरो को इरे जटनरे जल  
मां हि लिष्योर काररे परिहा पां हए उत्तर  
भार जीवक्या काररे स <sup>संज्ञा</sup> <sup>की</sup> <sup>वृत्ति</sup>  
के <sup>र</sup> <sup>ए</sup> <sup>स</sup> <sup>र</sup> <sup>ण</sup> <sup>की</sup> <sup>प्र</sup> <sup>ति</sup> <sup>पा</sup> <sup>ल</sup> <sup>र</sup> <sup>ं</sup> <sup>म</sup> <sup>अ</sup> <sup>व</sup>  
की जी ए जो वृत्त गह बांदां काठि मोह  
जा ए तुम हो दी नद या ल दया कर न्याली  
यो पर रंम कर ल रं रं म व वृत्त सब दाली  
यां ११ माया ता ए वि दान को हात है रंम जी  
न जन करे अतरा १ चुलापे नां व जी तुम  
संभ्रम सब जा ए कर काहा वी नती प  
रिहा रंम करण की रंम न आ वेहा ए तीर

राम एक अरदास हमारी मानी यो॥ कामी  
कपटी कडु आये जाएँ यो॥ जै हो मीतु  
महाय और नदी बोट जी॥ परिहार मचरण  
रष सरण बक स सब षोट जी॥ का हा क  
रु अरदास सक ल विधि जो ए हो॥ अंतर  
गतिकी पाडु पी व पह चाँ ए हो॥ श्री मो च  
न नग वान ही ल न ही की जी रो॥ अ  
सा ध सं जति को अंग॥ सत संग सुग म उ  
पाइ ध्याइ कै की जी ए॥ उ नै उष मिटि जाइ अ  
सो पद ली जी ए॥ ग्यान गरी बी पाइ नै जै निति  
राम रो॥ परिहार मचरण उरि क्रोध न व्यापै  
काम रो॥ अ ब उष मिटि जाइ की यां सत सं

गरी॥ असनांतरक विकारन व्यापे अं मरे  
 नीया की कर त्याग गहे नदी दाम कं परिहां  
 राम चरण ए धार नृजे निति राम कं र सब  
 व कर हरे संत समजिते आपरे॥ क्रम काल  
 करि हरिन व्यापे तपरि॥ जन का कदमाला  
 गले तदे सीतरे॥ परिहां राम चरण कह सा  
 चरहे नदी नीतरे॥ अ नीत नृए सब हरि  
 नृम नृए नासरे॥ राम सबद की सीर प्रेम प्र  
 कासरे॥ नृलं की गह बां हो बतया पांथर  
 परिहां राम चरण कलि मांदि असाहे संत  
 रे॥ ॥ श्री गुरु जी देवे श्री गुरु ॥ सो प्रा  
 एं जठरूप ही यो पां पां एरे जासं कि सो सं

श्राद्धलगेनही ज्मानरे संषनरात्रे और ५  
 ससेरंगपरिहोरंगमचरणवौ आदित्र  
 सोही श्रांगरे ११ श्रोटा न्पाएमांश्रा दिघडा  
 टक सालरे जाकी बांधे आपकांहालगया  
 लरे काली उनकलंकन जावे को पूरे परि  
 हारंगमचरण जठरूपनको मत होइरार  
 कालर नोमिपिला १ बीज काहा ब्रह्मिया  
 वांजन होवे पूत पुरसके पाईमां जलमैजू  
 दलनां हिरस परवेसरे परिहोरंगमचरण  
 जठकिसोउपदेसरे ३ काहा न्दवा ऐस्त्रान  
 सुरसुरीबीचिरे सूकरसंधी लेपजिसोही  
 कीचरे परके नाइ

परिहारं मचरणं मुठ कि सो उ पगाररे ॥ ४ ॥  
मे मेरी भो हो भान अष्ट मै ली नरे जगत चा  
री मां द्वि व नी पर बी एरे ॥ नर दे ही कं पा प्र वि  
सरि गयो दी न कं ॥ परि हो को हां करै उ प दे स  
अ से मु ति ही ए कं ॥ ५ ॥ अ क लि प सू की पृ  
रि न क ल न र की वं एं ॥ ब हे पर ए का ज बी  
स ह्यो हरि ध एं ॥ सा ध सं ग को रं ग वे ल कें  
ना ल गे ॥ परि हो मु णि के हरि की गा ज न ड के  
पा ठो न गे ॥ ६ ॥ मु रि ष मा ले कां दि अं ति तं जा श्रि  
उ ष न्तु ग ते दि न रे णि क सो सो षा श्रि ॥ वे ठ क  
बी ला मां दि वो ल के फ ली यो ॥ परि हो रं म च  
रण अं रं धार रं म कं न ली यो ॥ ७ ॥ अ थ

द्वितीयां चोक्तौ श्री गणेशाय नमः तस्यै इति  
एकवतं ब्रह्मसूत्रे । ननु च कथं चरणैः कथं  
तत्रासीत् सत् । किंश्चित्कालं कथं ननु । अपहृष्टं  
रतं । परिहृष्टं च न चरणैः न चरणैः न चरणैः  
रतं । न चरणैः न ही न चरणैः न ही न चरणैः  
रथ्या । न चरणैः न ही न चरणैः न ही न चरणैः  
सुतदाराधन धर्म कीया सबन्धात्प्राप्त  
रिहारां न चरणैः न ही न चरणैः न ही न चरणैः  
एषा प्रामुख्यतया धन धर्म च ले न ही न चरणैः  
श्रुतं न चरणैः न ही न चरणैः न ही न चरणैः  
कीया कथं न चरणैः न ही न चरणैः न ही न चरणैः  
चरणैः न चरणैः न ही न चरणैः न ही न चरणैः

सरह सीयारामरु लीजीए रामबिना सब  
आस सकलतजि दी जीए सुतदारा धन धा  
गन आवेकांमरे परिहारांम करए तहीवा  
रसगोएक रांमरे ४॥ अंत कालकी बार स  
गोइकरांमरे सुतदारांमरवारसवै बेका  
महे काल माता परबं नप छडि जीव कं  
परिदांतही श्रीसरहि छया ल सुकरता पीव  
कं ५॥ हरि नारि कैहेति नयानर अंधरे  
जि सादन आबुजांमकरे घर धंधरे छाती  
अपर सबल सिंलादेकांभूणी ॥ परिहारांम  
धरागरे नोज सुगधमन भांभणी ६॥ मोद  
जालकी पासि जगत सिरदेतहे ॥ आपणकर



बिसतार आप पस मरत हो ॥ अंध धु ध ससा  
र न जे न ही रं मरे ॥ परि हारं म चरण नर देह  
ग द्वे कां मरे ॥ ७ ॥ मिन षा दे ही पाइ न जे नू ह  
रं मरे ॥ क्रं मां सु रू सी यार आ न कां कां मरे  
जन म मरण दुष दो प्र सो ही न ही चट सी ॥ पर  
हो रं म चरण क ह सा च अंत ज म कं ज म कं  
त सी ॥ ७ ॥ सा स उ सा सां ध्या प्र सम कित बी  
र रे ॥ आव घं टे दिन रे एि ज्युं सा प्र र ती र रे ॥ त  
व स कै गां नार हं सं ठ मि जाइ गा ॥ परि हारं म  
चरण न जि रं म क नि ज घ र पाइ गा ॥ ८ ॥ ऊ  
चा वा स अ वा स गिर व रं सी मरे ॥ आ एि पि  
रे च त्त वी र अ व न का इ स रे ॥ सर वी र गं ज वा

ज जो डि अर मो ड ते ॥ परि हारं म चरण बि  
न रां म ग रे सि र फो ड ते ॥ ए ॥ कुं चा को ट अ व  
स क बुर ज व णं व ते ॥ अ प ण ॥ पर की त्रौ म  
षो सि अ प ण व ते ॥ हे व र गे व र तौ म जो ड ते  
ल ष रे ॥ परि हारं म चरण बि नि रां म उ से न रे  
षं ष रे ॥ १० ॥ ग ज पा ट ध न धां म ज ग त सु ष ना  
म रे ॥ दो स ब द सि र घा स अ थ द्यं वा म रे ॥  
स व सु ष को सु ष मार सु ना थ न रां म रे ॥ परि  
हां रां म चरण न जि ता हि अ म र प द धां म रे ॥  
११ ॥ अ थ स व द्रि या ॥ लि ष्य ते ॥ स क त  
र म ती त रां म गुर दे व जी ॥ कु नि ति क काल के सं त  
जिन के रां म चरण की ॥ वं द न वार अ नं तं ॥ ११ ॥



चरण त्रैसेगुरपाणि॥२॥ गुरदेवदयानिजना  
वलक्षौ नमफसजनाइदीयोफटकै॥म  
नताहीकसाधि सुनाथनयोठिकछाक  
रक्षोरसकैगटकै॥निसबासुरक्षीपल  
पावघडीघरत्पागपरघरनांनटकै॥क  
हेरांमचरणत्रैसोसुषसागरकांरुकेछी  
तरक्यंनटकै॥३॥जिनकोधनजीतव  
हैजगमेंधनपाइसंतोषसुनाथनए  
निजनावसेतीसुरतिनांदिटैतिसनांसं  
गक्रमबिलाइगए॥तजिस्वादबिबादनि  
स्वादनेगुरपांनगद्यांघटमांदिरो

कहै रामचरण संतोषदलाल है सुरतिरस  
 बदमिला प्रदरे ॥४॥ अथ सुमरणको  
 अंग सील संतोषदया उरि सुकृत ग्यान  
 प्रकास नृजास नयो यो है ॥ मान चढो सुनि  
 मान बढो सुष हरि कढो सुष पूरर द्यो है  
 हंस नयो क्रम बंस गयो सुष सागर वास वि  
 चार ल द्यो है ॥ रामचरण तो भै ऐत नो गुण  
 जानर राम ही राम क द्यो है ॥ राम कं गा प्र  
 ले राम कंधा प्र ले राम निरं ज ए नां इत गौर  
 राम मना इले राम रिजा प्र ले राम विना ते रो  
 कं ए स गौर राम कं ब्रु ले राम कं प्र ज ले  
 राम विना सब और द

राम सदा सिर राम ही राम समहात जगौरे ॥  
 १ राम ही राम पुकार तर हो मन राम बिना  
 को ई आसन पूरे ॥ राम ही राम चितार तर  
 हो मन चितन राम सबै नम चरे ॥ राम ही  
 राम सन्द लतर है ॥ सब राम समहात हरे  
 दुष हरे ॥ राम चरण के राम सदा सिर राम  
 ही राम पिढा गिर हरे ॥ ३ राम ही राम रटी  
 नि सबा सुर का द्वे क ह सरो चाट थ टौरे  
 ब्रह्म का असंके ब्रह्म उपासना माया उ  
 पासत सोही बटौरे ॥ नम का जाल मै बसै गु  
 रग्यान करद स फेद कटौरे ॥ राम चरण के  
 राम सदा सिरता हि समहात के लदाद टौरे ॥

अथ नोव ज्जुतमं कौ अंग ॥ जानि अ  
 जानि परे पग पावे के सो सत मा न जरै ही जरै  
 जा ॥ जानि अ जानि छुरी छि वै पारस मै ल बि  
 कार हरे ही हरे गो जानि अ जानि पी वे को  
 ई ई मुत जा स के सो ग ट रे ही ट रे गो जानि  
 अ जानि र टै निति राम चरण तरै ही तरै गो  
 पा ग ज या हा ग र्पा त ब रा म क द्यो न ही टी  
 ल करी त हि कालि उ बारे रा म ही राम पटा  
 वत की र क बार मुषी के से क्रम नि चारे  
 राम न रा श ए ना व ली यो सुत हेत अ जा मै ल  
 अ घ प्र जारे राम चरण दक्ष सिध राम जी  
 घारे ही भे अ से पा वर त्पारे रा हर ना कु स

पूत प्रह्लाद न योजिन राक सबेस मैरांम  
उचास्यो तादिपिता बोहोनासदइसिर  
सारीसही नही ने क बिसास्यो ॥ शरीकी  
जोरीसरोपिलीयोसिवको बिरदांनवि  
संदरजास्यो ॥ रांमचरणसिंधरांमजीना  
बलीयां नसुरांकुलत्यास्यो ॥ ३ ॥ माता  
सैग्यानलह्यो धू बालकहोइनिरास  
गयोबनमांही ॥ नारदरांमसुणाइदी  
यो गुरसीसधस्याउरिध्यानकरांही  
तादिविघननयो सुरराइकोषं न न्रम  
गमि ग्यो क हं नांही ॥ रांमचरण त्रैसेष



अत्रो हरिजासकैनांश्चि नैघरजांदा ॥४॥ गोत  
मरषसुतासुतदणवंत बजचरकौ अत्रतार  
लक्ष्योहे ॥ नाव प्रताप गयो लंघ सांर सीत  
कं जाइसदेसदीयोहे ॥ नाव प्रताप धस्यो क  
रपरबत नाव प्रताप पता लगयोहे ॥ राम च  
रण त्रैसो बल रामको निबल ही बल बत  
नयोहे ॥ ५ ॥ कासा मैरे क क बीर नयो जुल  
वाघ रश्मि प्रवेसकीयोहे ॥ कांमिदीयो स  
बदी कुल को धूमराम निरजण सोधि लीये  
हे ॥ स्पाहासकंदरतापद द्रत ब पूरण ब्रह्म  
मै प्राण दीयोहे ॥ राम चरण ए संत नैस जेत  
तानरको धिकार जीयोहे ॥ ६ ॥ अथ सा

करिरे मनसंगति साधन  
की जा हो बुध निरमल राम कंग वै लोचन  
मोक्ष कि रौ ध मिटे सब सील संतोष दया उप  
जावै धी रज कोरस पा प्रकृ का हृदे काम कु  
बुध की तरन आवै राम चरण न रात न पा  
५ के नाग बनी सत संगत पावै १ जिन को  
मिन वातन साफल है मिति साध की संगति  
राम कटे निस वा सुर धार श्री श्री श्री  
विषी यार स धार क व क्तन बहै उरि आन  
द कंद लदा यर वै उप जा ल जगत की नाह  
रहै कहे राम चरण श्री सो पद न्द चल राम द  
या विनि कंग ए ल है २ श्री मिलोष मिहे नि

तिदी निति डल न मेल दरी जन को ॥ श्री गितापनि  
तै जन कै दरम्यां न लक्षो प्रकें हर करे न न के ॥  
जीवनिरमल हो प्रकें राम रट को ई कन के न  
हिरै कन को ॥ कं दरं म चरण दे प्रो कन ले र्ये  
संत सथां न न्दा धव को ॥ ३ ॥ अथ श्री गे  
को अंग ॥ जान नें प स वा के से त प्र स न  
ट ग्या न न्दी न दर धि ॥ सी ल सं तो प्र का ह कर  
प्र ध व को न के का ज ड ला त की वा व न क  
खान स जे सु ध आ मन वा म त ले पु क डे र  
हा वै र ल च ग्या न त न करे के ई क न न  
की च क न प त्र ॥ ना य के जी व ल क न  
व के प व के प्र ति दे धा ग व दे के च द न व न

हाकरे सूकर गंदगी की चमैं ताइरहैं जो ॥  
आंव वज्र के क्यर ममारत ककरती मुष  
हाऊ गहें गो राम चरण जैसी जाके आवट  
आवट माफिक ग्यांन लहेंगो ॥ २ ॥ राम नो मसंन  
हनही सठ सूकर खान का स्वाद करै जग  
में जिनको धुम जीवन है निते चिति में वि  
तको ध्यान धरै ममता को भाव्यो समतान  
गह पर ज्यूरति ग्रीधमता तो फिर कर जाडु  
चल्यो न जग्यांन विना जैसे जी त्याज वार  
की प्रवृहरे ॥ २ ॥ पूरिध ग्यांन नही समजे जैसे श्रं  
धक मारता में कसै जैसे ॥ अंतर के करदीर  
चढो मधमांदि धर्यो काल जिति प्रकासे ॥

हारहमेलधत्योगलि नैसकै कंदतफादत  
तोडि बिनासे रामचरण ही ऐबिनिनेतर  
कण लषे असे साधकी आसे ॥ ३५ ॥  
चिंतावाणी को अंग ॥ नमका नाड मे  
ऊकत होदिनराम निरजए वधनरदो  
रा ॥ नाम न वाया संप्रीतिकरी सबसाध  
की सगतेका प्रफटारे ॥ ३६ ॥ दिन क्यनस  
महालतमरिषकाल पिछाडे सभ्राष्ट  
चटारे रामचरण कै रामसदासिरता हीक  
छाकिन आन अंटेरे ॥ ३७ ॥ गाइरे गाइलराम  
कं गाइले होइ सुचेतसं महाल धनी कं जा  
इरे जाइ चल्यादिनजात दे साहि गरीबी उम

शुभनीके लारेलाइ बुजाइ किरोधकी कां  
मक जीति सुभाइ गनीके रांम चरण के रांम  
सदा सिरताहि पिच्छाणिके छानि छनीके  
र सोवनही जम जातम को धनही धन  
कहाइहाइ करे गरवातन गोविदनां  
बली द्योतजिताहि कुबधी कंनारवध  
रहीए सार असारकी प्रषविनां छानि  
कंचनकाचनं नारनरे कहै रांम चरण  
नयो सठगा फलहाय चढे धन नक्षम  
रै सुइ करंम धाणं विनिनां दरसै तजिता  
हीके मूढ न चीत नयो धनकी दिन रैए

उपाय करे पडि फंद में आव गुमा ६ दीयो  
सुत नारी सनेह निराट की योजिन कै हित  
क्रमो को नारतयो कहे राम चरण बिना  
हरि वास पूना बधो जम हार गयो ॥४॥  
नजर मन राम निरजण के काही सो चष  
ओ धन ही धन के तठे जीवन हेति उपाय  
करै निति आव घटे छिन ही छिन के तट  
तुटत ताल नही दरसे मनु केलि करै मिल  
ही मिलि कै कहे राम चरण नयो सठगा  
फल धधल ज्यो घर ही घर के ॥५॥ घर बार  
घरे काम ठामि गयो करी घर की फि

इके सुत नारी के चार बच्चे। अति मूर्ख प्रक  
म कुमाइ गयो मर के तम राइ बुलाइ के  
न्यात्र की यी पुनि पाप लीयो सबही जर  
का कहें राम वरुण कर काण मार सुका  
र नही पक्षे ये हरिके। क्रम कुमाइ ली  
या अत्रण। सब जूहे मय्यो रत्नाइ वधने  
ही ते सुत नारी के हे प्रक ल्या जिन नारदी  
ये जे से फसको उही राष उमाइ ध ल्यो ध  
र पत्नी दे विवि चार कहो कए तरो राम  
बरण सगो श्करां महेता स विना सब  
का लको पंल शराम के नाइ लगे नू



गाफल कामही काम करै दिन षो वै ॥ जा  
लपणो गयो बालनके संग तरन नया  
तरनी दिस जो वै ॥ तरन गया बिरधापन  
आवत पोरपस्यो दुषही दुषरो वै ॥ राम  
चरण चिता प्रके हेनरनी रवदै करन  
नही भो वै ॥ ॥ कामही काम करै निस  
बासुरराम कानाम संपूति दइ है ॥ दो  
मही काम के दोड मरे सिरपाप की पो  
व उभा इल है ॥ नामही नाम के धाम चु  
णे ॥ ॥ से कामही आव बिसा प्रग है ॥  
राम चरण ॥ ॥ से मुठ अंधकी न्या इ बुढा

पैफजाता नदंहे. काहाउत्रपतीपि  
रथापतिसावतजैगठमंमलराजकी  
यो गजवाज काहारथपालषीकृध  
नसंषिपदमत्क जोड लीवों काहाको  
ड बरथजो आवनदसुतनारिकटुब  
को सुषयीथों कहेराम वरण संसोन  
को अरथिगंमविनाधिरकारजीवों १०  
किटरेनर मूरिषरंमतज्यो सजकांम  
कै काजसकांमसीदेही नारीसुब्रारार  
आनिसबासुरमदम च्याव ज्यो जग  
तसनेही हावसकृवसलागिरसोधन

धामसधूमसधंधकरेदी॥ रामचरण  
गयादिनबादहीयादकीधोनहीबुझ  
बदेही॥११॥ अथजुलणगुरदेवको  
अंग॥ स्तुति॥ रमतीतरामगुरदेवजी  
फुनितिरुकालकेसंत। जनकरामच  
रणकीबंदनवारअनंत॥१॥ अंग  
गुरपीरक्रियाकरि नारकरीतबकाल  
कीचोटनषावताहै॥ संसारकाफद  
सोकाटसबैनिजअपणीअणिबचा  
वताहै॥ मघराजकेआसिरेजाइछपै  
तबजंबककाहाकरावताहै। जनराम

चरणसरणि सदा सुष आनदमांदि  
स गद् ता है ॥ १ ॥ गुरपीरक्रिपा सुषसा  
रषुलीजगदीरघ दुषबिलाव ता है ॥ नि  
ज संत प्रसाद नया मन त्रपति व्रपति  
चितन आव ता है ॥ काहाराजमही सु  
रसाज सही वस लोक का सुषन न  
व ता है ॥ जनरांम चरण सरणि सदा सु  
षरांम ही संम कं गाव ता है ॥ २ ॥ सत गुर  
स वद की इद मदी सुष दुषन जी कन  
आव ता है ॥ ध्रम ध्यान धजापर का  
स परै निज ग्यान की सिंध कं पाव ता है

जगजीवसो आशुकेयाइलजे ताके  
ब्रह्मसरूपमिलावताहे ॥ मुरजादक  
रामचरणकही सोही वेदपुरांममेंगा  
वताहे ३ ॥ अथसुमरणको अंग  
आनउपाधिसोबादकरोऐकरा  
मनिरंजण ध्याइऐजी ॥ याही ध्यान  
मेंग्यान अपारपुलेनिजघरकत्व  
बहीपाइऐजी ॥ उसघरमेंमरनदी  
जमराइको आत्माब्रह्ममिलाइऐ  
जीजनरामचरणनजनकरोज

ललहर ज्पूउलट समाश्री जी ॥१॥  
मनपट के जो वसावण दी यांतव  
मैल बिकार बिला व ता है जल ग्या  
न बि चार संतोष सिला गुर सरक  
ताप तपा वता है ग्यानी ग्यान बि  
चारि निहार दैषो बिनि धीया सु  
पेदन आवता है जन राम चरण  
मगन नयारो मध्याश्के ब्रह्मरस  
वता है २ राहा चालता सरस ध्या  
न पाया वन संकपी छे रहे जावता है

घरपाइके ध्यान ल गा इर ह्या त बजा  
वका नावन गा वता है। यथा नी ग्यान  
बिचार निहार देखो क रुरा हा बिना  
घर आवता है। जन राम चरण मग  
न न यो राम ध्याइके ब्रह्म समुद्रा वत  
है। श्यायके डुग उतंग व ए नि सम  
दि तुषार उरा वतौ है। त बसर कौते ज  
प्रकास न यौ ग ल आदि सो अंतर  
हा वता है। दोइ जीवर सी व अ ग्यान  
अरे नि ज ना बली या मिलि जा वता है  
जन राम चरण मग न न यो राम ध्याइ

कैवल्यसमावृता है ॥४॥ अथ वि  
चारको जगत् । बट बीज का चंद्रको  
इन पाँचों वि सत्तर संसार भुजावृता  
है । कोश्या नसेती को शफलसेता को श  
मालही जट कुलावृता है । ग्यानी । ग्यानी  
विचार विहार देखौ क हं प्रातगिएषां प्र  
रपावृता है । जनरंभ चरण न गत भया  
निज बीज रंभो रंभ गावृता है । १ दरी  
यावृतरंग अनंत उठै को शलहर मै सा  
गरपावृता है । बल चंचल लहर पवन  
सेती घरिनी र नया निलि जावृता है । ग्या



नी ग्यान विचार निहार देषी क कूल ह  
रि गि एता सु प्र आवता है ॥ जन राम चरण  
मगन नया सु ब सिं धरं मो राम गावता है  
रा इ क मा टी का घाट अ नै क की या घट  
रूप ना ना ना व गावता है ॥ घट न ग न या  
ना व ना दि रहे क कूल का अत न आ  
वता है ॥ ग्या नी ग्यान विचार निहार देषी  
को काल बस न बहावता है ॥ जन राम  
चरण मगन नया प्र थी थी रं मो राम  
ध्यावता है ॥ शो ना का लक्षण होत घ  
डा घट घट का ना व ठ ह रावता है ॥ सब  
जो न मिला प्र के ऐ क की या ज ब घाट क



अकार असार मन्त्र ऐक निगुण सार ल  
षा इति जी जैसे नार मे षार मि ला इर द्या  
गुरुद स मिला पिठ एण इ ऐ जी जन राम  
करण ऐ सार जुगल का राम ही राम सो ध्य  
इति जी १ राम ही राम जि कर करे यारो  
और फिर बि सार ऐ जी निज ग्यान के  
आण अ ग्यान दर्शे गुरु सत का पथ निहार  
ऐ जी मनी मान म कर क दरत जो दिल द  
सगरी बी बि चार ऐ जी जन राम चरण न  
रात न पाशो नाहि बि गारी ऐ जी २ नर  
तन न कांम न षो इति जी नारानि की जो डि  
का हा वता है ३ ऐ लोक बिलोक विचार

त ज्ञेसो ज्ञोरनको इति प्रावताहे ॥ कामदा  
मविसारके राम न जे जावसावकी सिध  
मितावताहे ॥ कहे राम चरण बवेक बि  
नापसंकी टपु जंत मे जावताहे ॥ दांमकी  
आसगुलाम जगत के जाही कं ज्योन न जा  
वताहे ॥ मिलिसाधसंमान मरोड करे संसा  
रमिल्या रिघ जावताहे ॥ गुरसतकी संक  
निसकफिरे इक कोमी की कोण रषावता  
हे ॥ कहे राम चरण ज्ञेसी मुति मरिषसंग  
ति प्रणिल जावताहे ॥ ॥ अथ जलण  
उपदेश के अर्थ ॥ सुनि सुनि बेस जन्वा  
तके त्तर काजकी आज बिचारी ऐजी ॥

काल बत कौ कौटरे तन बन्धो श्रवतास  
कं काहा संवारी ऐजी ॥ सत संग कं सोधि  
सुजांन प्यारै रसनां सं रां मउ चारी ऐजी ॥ ज  
न रां म चरण मरण मिटे गुर ग्यान हिरदा म  
धि धारी ऐजी ॥ १॥ नर पर श्र कल सकल हरे  
गुर पीर बिना नदी पाव ता हो ॥ ही हू हो इ है रां  
न तीर थ फिरै मीयां मान म कै चलि जावता  
है ॥ को इ देवल का सम सीति मही को इ बंद क  
ते ब मै गावता हो ॥ कहे रां म चरण नर म पर स  
व नाचनां मां हि चुलावता हो ॥ २॥ अथ कि व  
त गुर देव को श्र गलिष्यते ॥ स्तुति ॥ रमती त  
रां म गुर देव जी ॥ फु निति क काल के संत ॥ जिन क

संमचरणकी वंदन बार अनंत ॥१॥ श्री  
कृष्णता - अथे धरम एक संमसादी सबसे  
तांगा मया कलिअें धरि श्री तार संत जी नेद  
वता यो सिप्रसाथ उरि धार मिले सतगुर  
पदमांही ॥ नरमी विनिव सवास नेषकल  
पदु चैनांही ॥ संमचरण गुरद सटकी को  
इ सुगरा राभेटेक ॥ कादा नयो विन वारण  
तनपदत्यासाज अने का ॥ संमनामसम  
तत श्रीरकह दीसेनांही ॥ सुरतिसंमृति कं  
जाइषीजीयासंतनमांही ॥ सब ग्रथन कासा  
रुमा ॥ सतगुर मोहिदी न्हा ॥ दलदपरिनिवा  
रांकंधन वंतकरली न्हा ॥ बरुदांनीक्रिया

ल की सुषमदमों का हा नाथी रो ॥ राम चर  
ए मन अरप के सत गुर सरणें राषी ऐ ॥ २ ॥  
बने संत बरीया मसाच समता के सागर दी  
नबि छल दुष हरन सरन सुषरा सी आगर  
ज्मान नगति बैराग ध्यान धन नरे नकारा  
माहा पुरस मन जीति नीति सत प्रम उदारो  
असे चदन चौक सती या स्वां मी क्रिपाराम  
ज ॥ राम चरणे सरणें कोषा ना जाद गुलां  
मजें ॥ ३ ॥ की या काग संदेस बेसक महिर निव  
र्या रर्या आप अलपति जीव सरणें निसता  
र्या ॥ पाप परम संतोष पोष संभे म जगाया ॥

नवेध्यानिजमनसंगयामनौरथकांसि जि  
नरंमचरणसूकरीसोष्ठैसिरनांम॥४॥  
सोसतगुरनिजरूपनोवनिरबांणिवतावे  
जतमंतसंतोषपोषदेसिषनिपावे॥त्रमक्र  
मश्चरभोगसोगसेसारनिवारै॥तीनताप  
कीजलनहरनत्रवपारउतारै॥करणधा  
रकरणांसुखोदयाधरमकौमूलरंमच  
रणाताकीसरणिमिठजाइसांसंमूल॥५॥  
सतगुरपषिमुषरंमजुगलगदहेगारजका  
जे॥निसदिनप्रीतिवधाप्रसन्नरटिइमृत  
पीजे॥उजैरुगसूषगगिगतिमैगवनजक  
रहीकलमश्चटकेचौरश्चकपुसतंगविस



तगि बसतरदा। होठमेलमुण्डाचक्रिब  
धिवाणीसउचरि। चकीपुडमिलिचनल  
कलकीनृषनिवारे। बुसतरैक अंगदी  
देसमजिदेषिमनमादिरामचरणेनि  
निजयाकारजसाजेनादि। सतगुरसंम  
थजाणिवाणिजुगीसबधौवै। कंकरह  
रिनपाइसुरतिमेदारायोवै। असाजाहीक  
इसगासतगुरसाप्यारा। जमसलीयाब  
चाइपाइइमृतकीधारा। रामचरणगुरद  
बबिनिमेरे। औरनकीइवेकरापेसीस  
परमेहरदेशभूपो। सतगुरसंमथस्वा

व सोही तत्काल बतया ॥ आपसी सा  
की या हत नैर ही न काही ॥ मिले बुझाप  
द मांही काल के लंदी सै नांही ॥ राम चर  
ए गुर देव धन मिलत मिठा इ मारा मै उ  
न कं सिर परि धर्या ता जिऊ वा संसार  
जा सत गुर मणि कौ रूप रदत बिस हर मु  
ष मांही ॥ नै रद जग मांही संत जन त्रि  
ये न तांही ॥ मिले जगत का जी व चर म स  
व हरि गु मा वै देवै बौ हो संतोष मु कति  
कै मारि ग ला वै कु जां ज्युं क्रिया करे पो  
षे ज्युं जग दी सां राम चरण सिष नी प जे  
जो सत गुर धरि सी स ल क लिय बिडु गु

रदेवकल्पनां प्ररिनिवारे ॥ अचिंतां मणि  
 भाङ्कितवनीरंकउदारै ॥ भगति सुकतिदा  
 तारसककुचिनांही ताके ॥ असट सिधना  
 निधरहे चरणं निति जाके ॥ कामधेनदरे  
 कामना करे कमेर निहाल ॥ परामचरण  
 गुरदेवमे सुरतिरजो मणि चाल ॥ १० ॥ सब  
 गिरासिरे सुमेरता सपरितरके तरही मली  
 यागरगुण एह सकलमलीया गिरकरही  
 यूसिष्ट ब्रह्म आधार ब्रह्म से ब्रह्म नही  
 द्रा ब्रह्म प्रकासी सत सत करि लेवे सोई ॥  
 हरिगुर एता आतरा हरि र ओ गुण बि सु

अथ सुमरण कौ श्रंग ॥ रामरह्या भरपू  
रप्रकाहेकं फिरी ऐ ॥ अथ एं घट कंषी  
जरे एिदिन सुमरण करी ऐ जंगारा की क  
ल ए नीर की सीर न दर से ॥ करमां के आ  
वरण संम नी डो नही परसे ॥ अत्र कमक  
में आगि पथर लग प्रगट होई ॥ धीरज सं  
करि ध्यान सबद गुर को ले सो शंभ च  
रण करणी ॥ बिनां जगे नपे म प्रकास में  
न रहे मुखे श्री च के तौ जल में मरे पीयास  
॥१॥ अथ नौ वस मथ्या ईको श्रंग ॥ राम  
जजन की चोट चोट जम की नही लागे  
सिध ग रज सु एि ना स चरत बन का जीव



होवनजावे अनल नांव औसै क्रमघो  
वे उदैजघां आदीतरे एतिमदोवेनां  
सा अरम करमउविजाइ नांवतव  
करे प्रकासा वेदसाधसबही करेसु  
मरणसु सुप्रहोइ रामचरणसतगुर  
सबदराषो हिरदे पोइ ३ करमवन  
परहार नांवारयवमो कुगरा साधि  
जरे सुप्रदेव सत सत्र कहत पुकारा  
मन बसि करण उपाइ नांव विन  
है जी नांही उपजे नही विकार नांव  
आवे मनमादी बाहरि को साधन  
की सं हणै बधै उपाधि रामचरण



पनेमके चुपनाइके हरिमलगजे पा  
पबावने नवगनां वमोराको नजे अ  
घ आरण उलफाड नां वपावक परजा  
रे अघपालाके पुजनां वसरजतप  
गाते गंमकरण सोरो सुरंग गढ उदि  
वापरजाइ ओसो अपरबल रामदे  
नजतां मुकतायाइ करे गरड सुस  
रपकरे मसोमजारी करे तीरसं कागम  
रेधाठे धनधारा करे साहा सुंचोरकरे  
अज्यां वुग आया करे अठारा नारराग  
कापीके गायां पतिवतापीदिसं करे नि  
सदिन आवुजाम राम चरण अघकरे



जो मुष उच्चैरे संसंम ॥ शांम न जन प्रता  
 पतापती न तन त्यागे ॥ काम क्रोध म न  
 न लो न को जो ख लगे ॥ हा ग दोष म द म  
 न आ न आ रा ध विला वै ॥ विद वि पति  
 नो ग्रिद वि घ न को इ न क टि न आवै ॥  
 सद सुष आ न द उप जे ॥ अ जे अ ग म पद  
 पा ॥ राम चरण परती ति सं जे म न सा वा ॥  
 चा गा इ ॥ ७ ॥ राम न ज न कर स ज न सी ष  
 सु ति रे म न मे रा ॥ सद सुष स म ता पा इ जा  
 इ दुष दाल द ते रा ॥ वि षे वा स ना ना स अ  
 स की ना स विला वै ॥ अ न वा स को वा स  
 सा स ना फि र न आवै ६

आदरसे तो मांदि राम चरणरटिरे एदि  
नपलकृत जी एमांदि ऐ॥ अजामेल अ  
घवत अंत सुति नां व उचा ल्यो॥ गिनका  
कीर घटाइ नारग जरा ज उ वा स्यो॥ न  
ही न गति वै शग न ही कुल ग्यां न विचा  
रा॥ न ही जो ग जि ग जा प न ही त प नै म अ  
वारा॥ पतित नि वा जण नां व लंत दुष  
दास ज सायो॥ अं सो संसु य जाण सरणि  
में पा वर आ यो॥ अं म उ धारण राम  
जी सरणि सुधारण का ना मेरे श्री गण  
मति ग हो व हो विड द की लाज॥ १०॥  
एक जगत् सत संगतिके

की यो नरम नै रहै न को ६॥ म लु वि कल मि  
टि जा आत्मा निरम ल हो ६॥ ज्यु पार स क प  
र स लो ह कं च न हो ६ जा वै ॥ ना व रु प गु ण  
मो ल फे र के आ ध व धा वै ॥ पार स तो कं च  
न क रै सं त सं त कर ले ह रं म च र ण दा नी  
व मे अ नै अ म र प द दे हा १॥ सं तां को सं त  
सं ग सं त क्रि पा सं था वै ॥ जे ब के पर स त च  
रण नु म नै प्र रि वि ला वै ॥ कां म क्रो ध म त व  
ध सो ग सां सो स च उ म रे ॥ अ नै प द वि आ  
म रं म नि स वा सु र सु म रे क्रि स् न दे व ना गे  
त मै म ह मां क ही व ण शं रा म च र ण सो ही न  
६ ह म कं प्रो प ति आ ६ ॥ २ ॥ सं त सं ग को पर व

हजिसो इंसुत को सागरा जाके जल की लहर  
रहरि हो ६ उष के आगरा जेसे सं मंद अघा  
हयाह वा को नदी आवे यूसंत ग्यां नम  
रपर बो होत जी वन कं पावे। प्या सापी  
वै ध्या ६ के अण प्या सा रहो हरि राम च  
रण सत संग कं नी दे जा मुष धर। संत  
को परसाद आद कए अण द कारी।।  
मोग शोग नै हरै च्रितिकं करै सुधारी सुर  
सुरपति के आ स नाग जो नर तन पावे।  
बंद करै बांधा ए जा स गुण जिण तन आ  
वै ता प्रसाद नारद नयो हरि को निज  
हित जा ए राम चरण ना गौतम कं यो कि

स्वदीपाणि ॥ ७ ॥ काल को अंग ॥ काहा  
आजिकी आसकालकी कए चलवै ॥ का  
हासासबिसवासग्रासकरमां हिरदावै ॥ क  
लमाहा बलवंत जंत सबमारि पिछा डै ॥ नर  
नरपति सुर इंद्र जाइ ब्रह्माके पाडै ॥ राम चरण  
अजिरामकंत जियल पावइ लाजा ॥ बारबार  
ध्रिकार फिट जै करै पस्युका साज ॥ १ ॥ काल  
बभौ बलवंत ममतकी जालय सारी ॥ सुरनर  
असुर और जीव सब दिन परमारी ॥ काहा बि  
रध अरतरण बालका बालन आवै ॥ हिरदे  
कैषा इच्छया कहे बचए न पावै ॥ राम चरण  
काहा जोइरे तीन लोक भेधात ॥ ताते नजीरे रा

कं परापरं कुसलात २ मां न बोद्धेत मं मां ए  
आवृषि एषि एत न जां ए ॥ अकरण कर  
ए विसार कित घण मन मत वां ए ॥ स ए सा  
सतर पुरां न ग्वां न हिर दे न ही राषे ॥ सै सलाष  
अर क्रो डि म ही पति क्त अ वलाषे धं वैषो  
यो अर वल सुत वित विषी याने ह गं म चरण  
वा प्रां गी या फेट पाई नर दे ह इ रे म्तरिष मु  
त ही एषी ए क्यं करे ज मा री सं वृ थ रां म सं  
महा लि ज न र मे रा ष ए हारो दि ना च्यारि की  
सारि हार म ति चाले नाई स गी न ही पिर वा  
र न रि सुत पि तार माई दां मन आवै कां म आं  
न म क र्त्त र सा हारि अंत काल की वार न ही

कोशिके सहाय ॥ आदि अंतमधरांसहै  
सब जीव करि कपाल ॥ राम चरण सुमह्य  
सुषी विमह्या बुराहं बाल ॥ धकार मकवी  
लाहेत करे हुनीयां सब आधी ॥ अथ ए सि  
रुके आरजा इजमं प्रारे वधी ॥ लेषा द्वीबा  
र नही कोइ सजो सनेही ॥ अथ एं क्रीया  
करम आपही नर नर देही ॥ लष चौरासा  
जणं मे क्रमां का फल या प्राजन नरण  
बोही तन धरे पसंपंषी बणरा ॥ पानितव  
सुररटिरां मठी लजन करे ॥ जोइ जे से ॥  
जली नीर आवयं जा शक्ति ॥ शीठी लोच  
लान होइ नजन कार ॥ ॥ आसजसा

सांख्यादसुरतिगहे इम्रतपीजे। रानचरण  
श्रीसी छिबी बेहीरनमिलिहे आश मन  
सावाचानां वसंप्रेमशी तिल्यौलाइ ॥ ६ ॥  
संमन्नजनकी बेरटेरके संतजगा वैग  
फलफिरफिर सोइ सुपनसगजनमगुमा  
बै ॥ पितामातकुलत्रातनारिसुतसगास  
नैदी ॥ पसंधामंशरदामलारनदीलागेदे  
ही ॥ संमचरण ॥ ७ ॥ पडारहेसकेलसिरको  
डि ॥ घणपिरवारऐकलौचल्योतैणंजंतो  
डि ॥ ७ ॥ जग्योसीको श्रंग ॥ इष्टसंमरमती  
तआनकंपूठिदेइहे ॥ पगनंजेगुरदरसद  
याकीमूठिगहीहे ॥ बिषेत्यागबिषवचनहा



सिधिव्रतन ही जांएँ ॥ हांएि बिधकी बाह नरो  
 सोहरिको आंएँ ॥ जंत वा चौरी घर लुबध फूग  
 कपटान ही राषे ॥ जोगतमा फू लमल लेष  
 जमदपानन चाषे ॥ पांणी बरते छोएि कैनि  
 रषया व धरणं धरो ॥ वैरां म सने ही जांणी ऐसी  
 कारिज अणकरै ॥ शोषा वामी वा खार साग  
 बन फल परहरै ॥ सर धासे ती त्याग संम  
 रथा मन मे धरी ॥ तन पर निरगुण साज मा  
 सवारा सम माने ॥ बरति फार उठा व जंम  
 मन को सब जाने ॥ मेला हो ली की रतन कटे  
 न देखे जाइ रा म चरण तन पीड के दं स्या तजे  
 उपाइ ॥

काश्रसं चाले नंदीराम नग तिका नार सी  
सधारा फरनां पता मूरिष दो इषु वार मूरि  
ब दो इष वार लोक पर लोक बिगाडे हसे ज  
गत का जीव वां हां ज म हत पि छाडे राम व  
रण न्ने सी करे जा के मूटे छार काश्रसं  
चाले नंदीराम नग तिका नार १ पडे सु  
जाषाषा म मे तो लोग ह से मुष मोड राम  
चरण न्ना धा पडे तो काटे सब ही दोड  
तो काटे सब ही दोडि हेत दे करण कर ही  
सुजाषा मुष धूर उलटि न्नु वग्पा बिसत  
रही राम चरण पाण जन घटो घटो लुटो ध  
न को डि पडे सुजाषाषा म मे तो लोग ह से मु

षमोऽयं मायाकोटो न फो सुतबधुले  
बाटो दो हरि गुरधरमको पडे आपणीटा  
टि पडे आपणीटाट साटि नो नही की  
जे निज घर हा ए न वेर ला न घर घर क  
दी जे राम चरण कर डी बपत सबही जस  
नाटि मायाको दो दो न फो सुतबधुले बा  
टा राम समंधी पणत जे ताही क धिकार  
सत संशमे आदर नही सत करे तस कारा सं  
त करे तस कार मारे मोटी जाए जण जण  
आगे दी न निष्ट बुधि पडे पि माए राम च  
रण सुप्रना लहे ५ षदा ली द अपार राम सं

मधी पण तजे ताही कं विकार ॥ ४ ॥ श्रे से  
 अनागी जीव के कटेन दी जे ग्यान चौ  
 डै सुष आद्या करे नी दु पडा हेरांन ॥ नी  
 दु पडा हेरांन गांठि का सतर बोधे जज  
 फिट का राषा इ मंमि जो जां दे रो धे रं म व  
 रण का इतणं जां हां तां हां अय मां न ॥ श्रे  
 से अनागी जीव के कटेन दी जे ग्यान ॥ ५ ॥  
 नी लापण का लौ वदन ऐ का इर के गार  
 ओगां की ना वट व धी गयो जगति सुंदा  
 र गयो जगति सुंदा रि कु व धी दो न्ये बो इ  
 धस्यो तिरण के हे ति ना वं बी च म बो इ ॥

अधि

सो पुरुषों की ज्ञानि के ऊले जरक मजा  
श नीलापग का लोबद नरे का प्रकंग  
रा धरं म चरण का प्रतण मुष देषी जे  
ना दिशं म न गति स न जि के ध स्या जग  
त के मां हि ध स्या जगत के मां हि न्रम  
की घोट उग शी सा ध संगति सुष का नि  
पडा सा सा की षा शी ग्पं नदी ए बुधि नि  
ए हो श्कर मां के मघु जा दिशं म चरण का  
प्रतण मुष देषी जे नां दिशं म चरण का  
ना संसार में फिरे स न कटा जाणा सुणे व  
सो ना सरवण जा के वृचा मां नि जा के



दि॥ शरं मन्त्रिपासुपाइए सरं कादीदा  
रां मचरण जाकी संगतिका इर होइ इर  
सीयार॥ का इर होइ इर सीयार सरकी  
छाया बरतै॥ पकडि उठै समसेर कछ  
सरतै अण सरतै॥ का इर करण घेत मै सर  
र लंघा वै पार॥ शरं मन्त्रिपासुपाइए सरं  
कादीदार॥ शरं मचरण एक सर परि  
का इर बार किरै॥ क्रम काट काने की  
या तन मन सेती तोडि॥ तन मन सेती तो  
डि॥ न जन सजाव वधास्या॥ पांचपची  
संजीतितेगका

षायामुकतिका सिधिसिद्धी करजोड  
गंमचरण ५ क सरपर का शरवार  
किरो डि ३ सरांकी सेवा करे चव  
दाती न लोक उरि आनंद मुष उज  
लै क देन व्यापे सो क क देन व्यापे  
सोक फिरै काया संतोड्यां असट  
सिधिनो नि धर देवाठी करजोड्यां  
रामचरण सत सर क मो सर सबही  
षोक सरांकी सेवा करे चवदाती  
न लोक ४ ॥



अंग ॥ जाको अतिम जाग है सो पावे  
साधू संग ॥ साधु सदा निरस्वारथी ॥  
देवे धरम अंग ॥ देवे धरम अंग  
संगता को नही जाई ॥ मैं ते सो क अने  
क लो क अपणे ले जाई ॥ राम नाम स  
ब कै सरे ॥ निज धरम उतंग ॥ जाको उ  
तिम जाग है सो पावे साधू संग ॥ १ ॥ सो  
सुष है सत संग मै सो बही प्रसरी गंग  
हरि चरचा प्रवण सुणे रसना उचरे  
राम रसना उचरे राम नही को शिधो व  
धधा ॥ साधु ठूठे जगत काटि आसा

काफंदा राम चरण नंद अति नि  
रुद्धै श्रावु जांम सो सुषदै सत संग मे  
सोन ही प्रसरी ठांम ए साधु दरसन  
जाव सु की या इता गुण हो १॥ माहा  
राज सीता मसी नयां सांतिगी सो १॥  
नया सांतिगी सो १॥ काल म्या मन की  
जागी काम क्रोध कंजीति प्रातिह  
रिं अ नरागी राम चरण संसार का  
दीया नरम सबषो १॥ साधु दरसन  
जाव सु की या इता गुण हो १॥ इ संम  
चरण संता तणें दर सवै गजिग हो १॥

तामें संसे को नदी सति मां नूं सब को  
सति मां नूं सब को ५ साध जो सचाप ५  
ए ॥ अ प ए सा चो ना व ना व ते सा फ  
ल ल ५ ॥ सति ना व अ समे द प गि क  
पटि ला न दे षो शं रं म चरण संता त लो  
दर स पै रं जि ग दो ५ ॥ शं रं म चरण संता  
त लो जे को ५ दर स ए जा शं रं म नो म सू म  
न मि ले तो अ म क्र म मि टि जा शं तो अ म  
क्रम मि टि जा ५ ज गत का बंध ए टुटे । सा  
ध संगति में बैठ न जन काला फालू टो । त  
न म न ५ ५ व सि करै काल क दे न ही या  
शं म चरण संता । को ।

अथरेषता गुरदेव को अंग लिख्यो  
सत गुरसारसा और दीसे नही ती नही  
लोक फिर देष जो ६॥ नम क पाट उघा  
ड दीप गधस्या मन की मल नता हरिषो  
६॥ विद कतेव सुणि समजि आ इ नही  
सुन अर सुन की नू लि नारी ॥ मिल तंगु  
र देव जगा ६ चेतन की या नू लि पर ग्या  
न की थाप मारी ॥ गंभ की धां म ह म हर  
क ह जा ए ता पं मि ब्र ह मं क का ने द पा या  
गं म ही चरण गुर देव दे या ल के चरण क  
पर सता सा च आ या ॥ १ ॥ सत गुर ग्या न दे  
बु धि निर म ल करी नम अर क्रम सब

रि कीया ॥ कालवेतालकी जालसबका  
टकरिकाटिके आपणा सरणि लीया ॥  
सीलसंतोष अरदिष्टिकापोषदेसी सध  
रिदस्त हरिनां वदीया ॥ रामही चरण गुरु  
देवदयालके चरण परसतां मरतजीया  
रतत सोतिलकपति बुतकी छापहेस  
त गुरुदसत काटो पराजे ॥ रामगुण प्रवण  
जो सरवण सरवण मुकट मणि नजन  
दामाविराजे ॥ मेषला सील संतोषसबमात  
गद्दरि के मुकदिषा ५ सारा ॥ रामही चरण  
एनेषदम कंदीया सोही निज संत है मित  
म्हारा ॥ ३ ॥ सत गुरुग्यानसे अब

पुत्र्या वेद कते बकी नादि वाधा ॥ नम  
अर क्रमकी ह्यामि पग म्की योंगं मदीपे  
यदरी या वला धा ॥ तास मघ चालतां षे  
द उपजे नही चादि कोइ क सट नही नि  
कट आवै ॥ पाप सबही कद्या सहज सुष  
प्रगद्या रं मविनि नादि अब आन नावे  
र रपता लोक का सुष तण अर नया बुद्ध  
का पद मै बास ली या ॥ रं मही चरण वेदे  
सनिर न्ने नया सत गुर सबदे अमर की या  
श ॥ सत गुर ता पसे पाप पर है नया मन वि  
चि ना वंछा प लागी ॥ क्रम रण छो फिर का  
र पद पर सी या नूति की नम ना हरि नागी

दिल सो उवार का जो मती गुरमतो जो प  
का चो दण तिल कती द्या। सो मही चरण  
जो स्रजि स्रैसी वणें तो उवार का दि स मे  
वासकी या ॥ ४ ॥ अथ सुभरण को अंग  
राम का नाम के ज परे वाचरे राम का नाम  
बिनि सुकति ना ही। सिव मन का दिका से  
स नी रट त हे नाव के रट त हे गवर ध्या ॥ ५ ॥  
नव जो गे सरा नाव के रट त हे सुप्रदण वत  
अर बिद गो ही। नारदा सारदा रट त मुनी  
जना नाव तत सारति क लो क मां ही। नाव  
के रटि के सत सब ति र गे नाव की नाव च  
ठि पार जां ही। राम ही चरण रटि राम मे मिलि

रोहो सुरतिके पकडि ध्यान लाई ॥१॥ ध्यान  
 धरि ध्यान धरि राम का ध्यान आनको  
 ध्यान से कौन काजा ॥ आनके ध्यान दे  
 रान दोइ लोक मे राम के ध्यान सुष प्रव  
 साजा ॥ राम के ध्यान कवला ससिव पा  
 इयाराम के ध्यान क अचल बैग ॥ राम के  
 ध्यान सनकादि सदेकर राम के ध्या  
 न प्रद लाद सैग ॥ राम के ध्यान सुष सार  
 दानारदा ग्यान गलतान सब संत सरा  
 राम ही चरण गद्दे राम का ध्यान के आ  
 नका नम दुष मारि पूरा ॥ राम को नजन  
 तिहू लोक मे सारहे से ससिव सनक अर

धरि



सुषध्यावे ॥ न जन सो न गति अर ओर  
सब अमदैनो व विनि क्रम करि प्रमपा  
वे ॥ रति विनि साषको हो करण विधिनी  
पजे सुरति सब संत कलिना व गावे ॥ नाव  
जुग च्यारि मे पति त पावन कीया नाव  
सिपति सुण सरण आवै ॥ नाव निरबाण  
जाहा विघन व्यापे नही नाव विनि अम  
सब काल पावे ॥ राम ही चरण न नाव  
की वोट गदें नाव से विमुष जम हाजावे  
शराम के न जन से अम सब नागी या राम के  
न जन से कम छटा ॥ राम के न जन से मन  
निरमल न या राम के न जन से भैल छटा



सूरवा जो धपर बोध मांने न ही अमलक  
र आपणं अरु वाया ॥ अंन धका व  
तारो मके गा वता स्याम मन नावता व  
गला गा रो मही चरण अवन गरि की  
काव स्या सिरका चौर अगा ॥ १ ॥ सरका  
वदन पर नूर फले के सदा स्या अका का  
मके धसत आघा तासकी दिष्ट मे निष्ट  
आवे नही जोर जंग बाजता दोरि लंगा ॥ पुर  
ज नो गा कृता सावता आवता चायडे घेत  
हरि हेत सरा रो मही चरण वे न्या इना ना  
ल है रिजक उजेर जपूत पूरा ॥ २ ॥ चित्त  
वणी को अगा ॥ रामका जजन विनिका

तच्छोभे नही रामका नजन बिनि मुक  
तिनां दी ॥ रामका नजन बिनि सुपसूजे  
नही रामबिनि निनिदी दुषमां दी ॥ राम  
बिने आन सव धूम बे कां मदे ॥ करत देष  
दनर जन मषो वै ॥ पुर पविनि अंधकी  
गा विषोटा ग्रय अंत की बेर दुष अध  
कही वै ॥ रामको नां मति हं लोक मे सार  
दे जोग जि गत पन ही काज सांजे राम  
ही चरण सब संत सा ची कहे आन की  
नगत न ही रामरजे ॥ १ ॥ रामका नजन  
सुनारि मुष फेर के गाल अरगीतिकं दर  
पगा वै ॥ ता सफल नी नरी होइ नी नी करे

राम बे सुषया जण पावै ॥ कें धिके वासते  
आन जयती फिरै ॥ फूत की वासना होइ  
सूरी ॥ जणत बीहो चैर्ब्या लाए लागाधि  
रनिष्ट ही नषतरहे दुष पुरी ॥ बूत अरव  
इ ल्या करत ही बह ग ई नम अर क्रम संग  
राम नू लै ॥ राम ही चरण कहे हो वसी बाग  
ली सी सकुं धोकी यांरुष जू लै ॥ राम ही  
राम तं सुमरै बाबुरेशम का न जन विदि  
काल पासि ॥ मो हो माया मही प्र क कं हे  
दूर हो प्र न की तपति तो दि नां हि नासी ॥  
जो राम रस नां रटे क्रम सद जै कटे नम का  
जाल की तो डि पासि ॥ राम ही चरण अब जा

गिजगदीसजघमाव-श्रैसौनदीबोहोर  
पासी ३ गाइरेगाइतरंमकंगाइलेबोहो  
रिनदीपाइगा जनमश्रैसौं जवसंला  
गकेसाचकपरहस्यो लारनदीचालसी  
एकपैसाहाइहीहाइकरध्याइधनक  
पारेचाहिकीलाइकेमादिपैठा तातत्र  
रमातसुतनारिकेवासतेलोचकील  
पटकाक्रमसैठा ध्रमकेइतसिरफोड  
लेजाइगेजाइगाएकतंसंगिनांदीरंम  
हीचरणकहेचेतमनमंरिषाकरबद्धो  
होरमतिदारजांदी ४ गाइरेगाइतरंम  
कंगाइलेदेषिसंसारमैकंएतेराकाल

करिल पट तो दिख पट सा ता दिनां प्रतपि  
 रवार नदी रदत नेशा काठ घर मांदि लिजा  
 पूगे जंगल में काठ के वीचि धरि जालि  
 देही ॥ फूठ कु छ सा च सोरो ज हो इ दो प्र  
 दि नो बे व सी नल नदी नां व ले ही पडे गो  
 जा प्रक जो ए चौरासी यो नर गो पुष जां हा  
 क सट नारी राम ही चरण करु चेत न गि  
 राम दि स काल की जाल का फे द टारी ॥ ५ ॥  
 चतरे चत अ चेत कं दो शर हो स्पाम कर  
 कंच सपेद आया ॥ नाड न ग म स करे हा  
 थ पंग थर ररे ऊठ तां वे वतां मगत काया ॥  
 नेतरां नीर लपर नाक से

॥ संत ॥

लगिरपरत छाती कट कटा बचमकि  
लकार कांमणि कहे कांणि नही मान  
ता प्रवनाती माल सबषी स अपणं  
ध्वेटा लीया पापका बोझ सिर तोर दीन्हा  
रंगम दो चरण घरका टिन्यारा कीयां  
पोलकी चेत स्यां वासकी न्हा द्वा चिति  
रे चेत अ चेत क्यं हो शरह्यो आजिको  
दिन सो कालनाही आगती चेर जो  
पाळली नारहे देधलं बुछ फिरजाइ छी  
ही बाल सैतिरण अर तरण सैवर प्रहो  
इ वरध के नया बोही दुषला गै जोर स  
ब तोर फिर चारं मे मा च ले नारि सुत गार





चरणतवरामसमृथधणाताहितजिमं  
 टत्रकाजकीन्दा।७॥ अथमन्त्रक  
 पद्विष्टतं॥ प्रथमराजनेरु॥ अथ  
 अजिरेमनरंमनिरजनकं॥ जनममर  
 एदुषनंजनकं॥ ८॥ अथमन्त्रव  
 सिलसाशरपाद्यो॥ रामचंद्रदलत्पार  
 ए॥ १॥ जलवृक्षतगजकेफंदकाटे  
 अनामेलअघजरणकं॥ २॥ रामक  
 हतगिनकांसितारी॥ जुगिजुगिअ  
 धमउधारणकं॥ ३॥ ऊंवनीचकीनां  
 तिनगधेसरणकीपुतपालनकं॥ ४॥  
 रामचरणहारिअसेदीरघ॥ औगुणगु

क



उम्हारी ६ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥  
मेहुं अनाथनाथ साहिहायि मेरो  
कीजारे सुनाथ तात आपसाथ तेरो  
टेक जगत को जजात जाल नमक  
मधेरो ॥ प्यानहरन नरन व्याधि जन  
ममरन फेरो ॥ १ ॥ काम दाम कपट ज  
पट नदी सा चनेरो ॥ हाइ नाइ करत  
जाइ अवि को निवेरो ॥ शतति मात  
सुतन संजम स कल स्वाद करो ॥ आम  
धाम अरथ नित खारया सनेरो ॥ ३ ॥  
मोह केस मोह परत करत काल देरो  
राम चर एराम सरणि साध संगति सेरो ॥ ४ ॥

पद ॥१॥ मेरा तो सुरति बिगति रोमनां सदा  
 दी अरसपरसमिलिरहा सो निदिहो फ्र  
 नांही टिकं अरमकरम नेदषेद संतया इत्य  
 गा ॥ रांमनां म सुगम कांमजा सं ल्यो लांगी  
 ॥ ऐकमे अनेक देष अलय अकलि  
 आगा ॥ बट क बीज कर सहज सुर सुमत  
 जागी ॥ २ ॥ रांम चरण चरण सरणि ग रु  
 ज्पान रागी ॥ बंध मुकेति जुगति जा नि  
 आंन सं बैरागी ॥ ३ ॥ पद ॥ २ ॥ अथ  
 राग बिलावल ॥ रांम गरीब न वीज को  
 सुमरण करि नाश ॥ नी उ पडा ॥ नी डी षडे  
 सादिक सुषदा इटिक अन्न वासर ब्या करी

करण नंद स्वामी । नरतन देज सवाठी  
यो हरि अंतर जामी । १॥ जाके कोई इन ज  
गत में जी वदी न अनाथा । तां दिदई सं  
सृष्ट करे । दिवै सिर हाथा । ए राषि नरो  
सौरांमको । करता क्या करि दे । च्यारि  
पदारथ ता सब स । सब ही दुष हरि दे ।  
शूराम चरण चरणार बिदा । उरि अंतर  
धारो । अन आस सब हरि करि मुषराम  
उचारी । ॥ १॥ नरतन बोद न प्रो  
इते सु मरण सुष लीजे । विषी मार स सब  
त्याग के । इ सुतर मपी जेते क । पांन पांन  
र स नो ग से । बंध्यो संसारा । इन से सुरति

बुकाइके॥ नजां रे करता रा १॥ मानं बक  
इ क करी दीजे डुरकारा ॥ आकाग  
ठ तोडके॥ निरपपर हो न्यारा ॥ २॥ धीरज  
ध्यान संतोष मे दी से सुषसां रा ॥ ऐतादि  
टि कर राषी ऐ ॥ पूजा लोका पसारा ॥ ३॥  
राम चरण वैसा धना ॥ जिनकी रेकारा ॥ जो  
सागर क प्रतिदे ॥ उतरे ज न पारा ॥ ४॥ पद  
॥ न्यारा ग जे जे वती ॥ आजिको आ  
नट मेरे अंग दी न माइ दे ॥ उम गि उम गि  
मरी हिर दो सरा इ दे दे का ॥ आसके बिना  
स नयो ॥ काम ना कले सग यो ॥ विष ताव

वेषलेपमप्रताविलाइदे ॥ १ ॥ समतासंतोष  
धनपायौदेत्रपतिमनः अचल अने  
गन्नयो कन्नचलाइदे ॥ २ ॥ फकतफ  
कीरीयाइ असलिउजीरी आइ स  
फाई सबूरी मांने विनिपरवाइदे ॥ ३ ॥  
मांनेव जनमधः ॥ ४ ॥ गरीसगतिकर  
रामचरणरामगाइ जुगजीतिजाइदे  
आजिमेरेजेजेकारजेजे  
वंतीगाइदे पंचसषामिलीआइहर  
षवधाइदे देवपीयाकोसमाजने  
यो अमन्तिनाजिगयो मनदीमुद



गलीयो॥ आनेदवजाइहे॥१॥ छतिकेप  
टबुलेपेमके प्रवाहचले॥ रुंमरुमर  
सजरे॥ अककककाइहे॥२॥ सुदरसुद  
गपायो॥ सेफको अरथ आयो॥ एकही  
इकंतनायोइजोनसुखाइहे॥३॥ रामचर  
एरामगायोनेमसेनिकटध्यायो॥ सतगु  
रसेमबेन अनेघरपाइहे॥४॥ पद॥२॥  
रागआसा॥ अबमेसतगुरसबदपिछा  
एयांजागाअलिअयामनेचेतनाघर  
हीजोविदजाएपा॥ टेकदसुदिसासु  
उलटिअफटीसुरतिनिरतरहागी॥

रामरामर टि नावव धाय्या ॥ प्रजीना  
घट नाग ॥ १ ॥ कोई ध्यावेपरि ये कमर  
कोई दस ओतारा ॥ हम तो सकल एक  
करि देष्या ॥ अषिर दो प्रम जारा ॥ र  
सारी सिष्टिर ची करता की ॥ करता स  
बके मांही ॥ एहम गपान लक्ष्मी गुरणम  
सै ॥ घट विधदी से नांही ॥ ३ ॥ त्रैसी दि  
ष्टिर हे मन न ह चल ल ॥ कवत्त नर मे  
नांही ॥ राम चरण तरपति घर पाया  
आय आय के मांही ॥ ४ ॥ पद ॥ १ ॥ सं

तौ सतगुर सतप कडाया ॥ ततैऊ ग  
नरम बिलायाटेक ॥ गद्दीसीपरूपी  
करमान्यो ॥ रजं नव गनैयाया ॥ दिव  
नेन सतगुर परका स्या ॥ ज्यो कात्योप  
छणया ॥ १ ॥ राग दोष अहंकार ईरष  
गरब गुमान उमाया ॥ २ ॥ नरमति  
मर अंधार मेया ॥ दिल दरपण दिष  
लाया ॥ सुरति बलं बीरोमनां म सांलो  
हे पारसयाया ॥ ३ ॥ रां म चरण की उरम  
भागी ॥ ऐ के घर मन आया ॥ मुसकल  
सं आसांनि नई है ॥ ततै समाया ॥ ४ ॥  
तत



जरा ध्याये ॥ तति अंजना विसतरा ॥  
करे ॥ हेद गुरगान स म्हा ॥ हेक अंज  
ए रूप धरै सब माया ॥ उपजे जा ॥ बि  
ला ॥ सबद अं प्रभा ॥ अंचल अं विन  
सा ॥ जासूयीति लगा ॥ १ ॥ जं यत  
जागनेम ब्रह्म सं जम ॥ मति नू लै ॥ ६ ब मं  
दरै ॥ ऐसब जां ए वैसे को पां ए ॥ तिरपा  
जा जे नां हिरे ॥ २ ॥ जे से सिलतानी खरु  
ए ॥ बीज बिनां प्रथतरे ॥ नां विबिनां  
अं से सब साधन ॥ कही का हा फल दे

तरे ॥ ३ ॥ यातन सेतीनेह न करीए ॥ लो  
त्र मो होत जि को नरे ॥ राम चरण अब  
राम सु मरीए ॥ निस दिन आहु जा मरे  
७ ॥ पद ॥ १ ॥ मन तरंग मदी राम पु का  
रैरे ॥ ना ना शक औ तार पाइके ॥ बिप्र  
या संग न द्वारैरे ॥ टिक ॥ पर सं कर अर  
स्वान स्या ल गति ॥ हृत्ती जं ए अपारैरे ॥  
इ औ सरमिन घातन पा यो ॥ सो न ही बा  
रु वारैरे ॥ १ ॥ लो च्र मो हो मद स्वा द वि  
बैरत ॥ ए सब प सं बि स्कारैरे ॥ जनम  
जनन ए ही बत साधी ॥ अब तो मु ग ध

विसारैरारा। मातपितासुतनारिवध  
वा। औरसबैपिरवारिरे। इनसूने  
हनिवारिबावरे। साधसबदउरिध  
रिरे। ३। सीलसंतोषदयासतगहीप  
हरिकीनगतिबिचाररे। रामचर  
एतजिजगतसनेही। अपएअप  
त्याररे। ७। धदर। ७। शशशद  
ता। मेरेसतगुरबकस्यारंगमनाम  
मोदघारालागेसकलकामा। टक  
जगतजालकाकाटफंदा। मिश्र

क्रीयासव दुष अंदा मोने सुदिन सु  
महं ज स ट नाम अरे सु बहिरं र  
देतं न रां न १० मै जन न मर ए को  
द ह्योन पा रा ने री जन म सु फल न  
यो अब जा ता रा मै गुर संगि रा या  
अ ग न मै वा दि षी रां म स व द मै सं क  
ले सं व रा स व घट व्या प क रां म  
न रा सु प न वृ ल न वा ऐ क जा ए  
को को न क ल क का न ही न प्रे री स  
रुते स व द मै न र्हे ली न अ ज प त प



कराण करै को प्रारै करै सबिना  
नदी मुकति हो शरै म चरण ह म  
कही नराषिाजा की अनंत कोट  
जन जस्त साषिा ॥ ४ ॥ धमालिा ॥ १  
मेरे मन वै की यो गुर सबद बास  
मोद फी को लगे जग बिलास ॥  
टेक जैसे बंस बास की यो बिरद  
वान ॥ जाहांद सदि सा दे जल सथ  
ना निजरन आवे आन धाना तव  
समजि समजि रहै एक ठाम ॥ १ ॥ जे  
से नारमी न मिलि की यो

व्यहरे तव प्रानने गायं सुरति स  
वदमै वसी हे जाश ॥ अ व व्रात्त पोत  
न इ हे कशा शर ॥ अ व कं ए करे  
इ जी उ पा श ॥ मेरी सुरति वसी निज  
न गर जा शराम बरण जा हो निति  
आन दा ॥ अ व पर से पूरण परमो  
न ॥ ३ ॥ अ व ॥ अ व ॥ अ व ॥ अ व ॥ अ व ॥  
न अ मै वी न नो दि जो के अ नो ह  
को द जन व से हे मां दि ॥ जा हो  
शिव मन का दि क से स ता धं सुनी  
नारद तारद व प्र ह त्मा द के व नो ज

मोह नो मां न॥ जां हो नेत नेत जि  
म ज्मान ॥१॥ जां हो रिष ब दे व ज  
ठ न्प्रथमो दि ॥ तां हो नो जो सुर जन  
करा शक्य प ल दे व न्प्र लाले मी क  
जां हो ध्यान धरै सुष न्प्र मरी का प्र  
जां हो रासां न द नी मां न द नो मां ता ह  
म ध वा चा र ज बि स न त्सां म न्प्र रा हि  
षा ली या संग सा धि इति चार न य  
क र्यो सब को हा थ जां हो गोर  
ष न्प्र थ र गो पी चं द तां हो ना न ग प्र

दा अरकाजीदा महमद दा इकरे निवा  
सा जांदा सदति एकाद सदरी दा साध  
जलप अकाले जाणती न आइ ॥  
सापकी महमां कही न जाइ अग  
नपुन गल नूर वासा जांदा घर घर  
आजद सु प्रविलास पा जांदा सब  
संत का साइसात चरणं जलरजसं  
गसाहे जांति नैमंदास कौपन ही सास  
गंदा संम चरण कं चरणं पास पात  
दा ॥ धमा ॥ अष्टराज काफी ॥ मो



दा अरवाजाद महमद वा इ करे चेवा  
सा जो दोस हति ऐकादस हरी वा स म  
अ लप अ कलि ग एं ती न आ ५  
या पद की महमा कही न जा श अ ग  
म पु री अ र वर वा सा जो दो घर घर  
आ न द सु ष बिला स प जो दो स व  
संत जो वा ५ सा त अ चरण ज ल र ज सं  
प मा हे जो ति नै सं त दा स को प न दो रा स  
वि रां म चरण कं चरण पास पा रा

द्विरामदद्या करदरस्यौ होइरन  
होमेरामकी प्रदो अस्तरे क  
दयालु दया के सागरा निरक्षसं  
रा जग जीवन जगदी सगु सां  
विजानन नहार ॥ तुमरी जो  
दी साधो ॥ अइ उवागए नारि  
उधार पतित के पावन  
सम्हाल ॥ २ ॥ ओर सषी इव  
मुणी ॥ मेरी अलुणी वाटा  
ने जर जर स्वामी ॥ तजी  
उ अपति नारि को हो को हो





रनसम्हाद ॥ बांदांपकड कानौ मति  
 सांद्रयो ॥ अघणी करि संगतगाशा ॥ ६ ॥  
 मेरी ब्रह्मकुप्याइसुसांशिरसवेमजल  
 धारा ॥ ब्रह्मनकंब्या कुलनही कीजे ॥  
 कंधतुमले शाराधा ॥ तुमरैहमसीनारि  
 घणरी ॥ तुमहोहसारेऐक ॥ शंभुचरण  
 कंकरी शबरी ॥ बकसाजैसुब्रह्मनेक  
 ६ ॥ धमालि ॥ १ ॥ मेरेमहलपदवासा  
 तिमांही ॥ संघीही साहिबसुणीहैपुका  
 राटका ॥ फलकरिपाननादकरजायो



चक्रं करमजलाश्रासांचसुपारीसा॥  
निकरिबिडलो॥ मोहिसतगुरदीयोऊ  
लाश्रा॥१॥पिमकादीपजजोप्रसिंदरमे॥  
प्रीतिकामिलंगबिछाश्रासीलसगार  
साजपीवपरस॥ अंगसुअगलगा  
श्रा॥ उरिआनदउछावजयोअति  
लज्योहेनबलोनेहातनमतधननछा  
वरकरिहासादिवकआपादिहा॥॥  
बौदोतदिनांसुप्रीतमपायासत्याहे  
मनोरथकोम॥ पावपलकठीलानदी  
छामो॥ घरआयाकेवेल

तो मेरा नया ज्ञा वता ॥ दश या सब  
दी संत ॥ स्यो सन कादिक से सरट तदे  
सो ही मे पा या है कंत ॥ ५ ॥ सांसां सो ग  
हा ग ५ डो सब सुदर लह्यो जी सुहा  
ग ॥ राम चरण फरण पद पाया ॥ पीया  
संजि जा ग्यो है जाग ॥ ६ ॥ धमा लि ॥ ३ ॥  
नेरे मन मतर मतारां स को हो ॥ हो हो सा  
धौ श्री न नर मन ही चा ५ टे क ॥ राम नो  
म सब संत वता वै ॥ ध्या वै से सम हे स  
सुष सन कादिक नारद सारद ॥ निगम क  
रत उप दे स ॥ १ ॥ दसत न पा व नैन न ही स

स्वन ॥ सुषेना सा न सरूप ॥ सब व्य  
पी ॥ क सकल संन्यासे ॥ निरमल नूर  
अनंपा ॥ १ ॥ सब की सुन सदिष्ट सब  
ऊपर ॥ सब कर ल्यो है समाधि ॥ नी  
उपद्रा ॥ प्रगटे अति नैरो ॥ विनिचर  
विलग्न लला ॥ शत्रु जि प्रह लार क  
री की करण ॥ संकट अर्थो है साहि ॥  
हो सो संमथ साहि लोका ॥ ६ ॥ जौ नही अ  
वे दोष ॥ साहि ब के ना ॥ इव मे है सत  
असा जिन सोहि दी यो है लमा ॥ शरान चर



रामो ही ॥ किछ फिट करत पुकारा हो ॥  
अगति उथा पदासके हो ॥ ऐच ठ हो  
गन ष्टे हो ॥ राम चरण जुग च्या रि बदी  
तै ॥ तो जी मार न छुटे हो ॥ ४ ॥ धमालि  
॥ राम राम यह लाद पुकारे ॥ असुर न  
क नदी आवे हो ॥ हरण कुसकी हाकन  
माने ॥ प्रेम अगन गुन गावै टे का ॥ सहत  
सजा सब ही मिलि ॥ नि सब सुर समजावै  
हो ॥ राम रसा प्रणि कामति वाला ॥ कव  
र के दाइ न आवे हो ॥ १ ॥ सांन शुर गा कर  
त बी नती ॥ राम नो म छ मि बाला हो ॥ भरो

कस्यो सति करि मां नो ॥ कोपकीयो न  
नाला हो ॥ २ ॥ को तुम हो ॥ नपाल कव  
न है ॥ बाद करो व क बा प्र हो ॥ राम स  
ने ही जीवन मेरी ॥ इस ट ह मारी ॥ आ  
हो ॥ काठि प्र ड ग हरण कु स को  
प्यो ॥ इस ट का हां अ च ते रो हो ॥ मे मे  
तो मे प्र ड ग व न मे स क ल व्या पी ने  
डे हो ॥ ४ ॥ राम वरण नर हरि हो ॥ प्र  
गटे ॥ न न को कार ज सा स्यो ही राम  
॥ विमुष न गति न को शे ही ॥ रा के स मार  
वि मा स्यो हो ॥ ५ ॥ ध्या ल ॥ २ ॥ रू वारं



मरिजा इमना ऊं ॥ निस बा सुर गुण ॥  
ऊं हो ॥ नट वा जू ना ट क करि मो हू  
सां धू रा ग सु ण ऊं हो ट क सी ल सं तो  
प द या आ अ ष णा ष ष्या ना व व धा ज  
हो ॥ सुर ति नि र ति सां इ मे रा षू आ न  
दि सा न ही ना ऊं हो ॥ श य ब गु सां न  
पा व सं पे लू ॥ आ पो सां न उ ना ऊं हो ॥  
सा दि व की स जा इ न से क व हार ग दे  
ष न हो ल्या ऊं हो ॥ रा पां चू प क डि प धी  
सं च रू ॥ त्रि गु ण क वि सुरा ऊं हो ॥ दो धे

दाव चेतकैषेल मोज मु कतिकी पा  
ऊं हो ॥ ३ ॥ प्रसबिधिकरि कै रांमरिजाऊं  
प्रेमप्रीति उपजाऊं हो ॥ अनंत जन  
मको अंतर नागो राम चरण हरि  
नाऊं हो ॥ ४ ॥ धसाहिता रं धार प  
तिसुरति सुंदरी ॥ अरमपरसमं हो  
री हो ॥ बर अबगति नह चल अ  
बिनासा ॥ सुंदरनवलकिसौरी हो  
मचरणपीस गुलाह नुमई ॥ त्रिगुण  
केसरगारी हो ॥ अरथ अबीरसाच

करि सुधो ॥ अरत प्रेम पद का सी ही  
१ ॥ सी लसि गार ने द ह्यति ली तम वे  
लत पीया पीया सी हो ॥ अन दद नाद वे  
न धुनि ऊं ठै ॥ गर जत गि गनि मं जारी  
हो ॥ २ ॥ फा गण फा गार मत न्यो जा ह  
अ वर वर से नारी हो ॥ जी जत सु रति  
गर क न इ सुष मे ॥ निर षत कृष सु रारी  
हो ॥ ३ ॥ जा वन सु फल न्यो ना गर के  
ना गोरंग करारी हो ॥ रो म चरण पी व  
फग वा व क स्या पूरी आस ह मारी हो  
४ ॥ धर्या लि ॥ ४ ॥ अथ राज कव डो ॥

निसबासुरहरि आणै नां च ॥ चरण  
कवलकी सेवा जी चटक सुरग  
लोकका सुषवही चांरु ॥ जनमपाइ  
हरिदासकुहाऊं ॥ १ ॥ चारिपदारथ  
मनोबिसारु ॥ नगतिबिनां ६ जोनां  
हीधारु ॥ रीषिसिध लषमी काम  
नमेरे ॥ सेऊ चरण सरणरुंतेरे ॥ ३  
सिचसन कादिक नारद जावै ॥ सोस  
दिव मेरे मन जावै ॥ ४ ॥ रांमरां इशक  
अरज हमारी ॥ रांम चरण कंदौ न  
पातितुमारी ॥ ५ ॥ पद ॥ १ ॥ निसबासु

रत्नजिरामसनेहीनिं वलीयांनिरमल  
नरदेहीटेक॥चौरसांतजिनरतनषा  
यो॥अबत्रमकोसिरभारउगयो॥१॥अ  
रुसठकोहोकाहेकंफिरिरे।सुरतिस  
मेटनांवमैधराए॥आघटिघटरमतारां  
मनसंजै॥सतगुरबिनबाहरिफिरिब  
जै॥त्र॥निकटनीरकीषबरनजाए॥  
म्रघत्ररुनामैषोजेपापां॥४॥जिनयाया  
जिनघटहीपाया॥बाहरिफिरिफिरिजं  
नमगुमाया॥परांमचरणमोहिअचर  
जन्नावै॥पूरबबुसतपिठमंकांध्यावै॥५॥

पदा २॥ प्रथममन्त्रेण ॥ रे मननां च  
निरजणजंपरे ॥ १ ॥ सकलसरोमण  
नां वपरमनिष्सांसोसोगं नरुपरे १  
संमनां वत्रोसागरतारण ॥ पापक्रमजा  
दृषपरे २ ॥ अजामेलुगजगिनकात्या  
शीजमप्रतनकोरिपरे ३ ॥ जोगजिगता  
कैतुलनांही ॥ परुचैसकै नहीतपरे ४  
संमचरणत ॥ आनउपासक ॥ चरणसर  
णरोही ॥ चपरे ॥ पा ॥ पदा ॥ ॥ रे मनसंम  
सनेहीकररे ॥ विनिसरसेतीनेहनक  
शीरे ॥ अबनासीवरवररे १ ॥ रोममोतवा

उरि धरि कै ॥ त्रौ सागर कंल ररे ॥ राशं म  
 मंम धन धुर निर बाहुं ॥ काया कौन  
 नररो ३ ॥ अग निरा ज जल को जेना  
 ही ॥ तस कर स कै न हरि शि ॥ ४ ॥ काल स  
 मै तेरो काज सुधारो ॥ ता कंर टि तने म  
 रहे ॥ ५ ॥ रांम चरण धरीयो न ही धी  
 जै ॥ ध्यान अधर को धरयो ॥ ६ ॥ पदा ॥ २ ॥  
 अथ राग बहंग लिख्यंते ॥ राम रस य  
 ल कन की जै न्यारो ॥ त्रौ सी सौं ज बो हो  
 र न ही पावै ॥ न बतन को अवतारो टे क  
 लष चौरासी अम अम आये ॥ अग लो





कसं प्रपारो ॥ प्रागं च लोमिन धातन  
 पायो ॥ अजिते सिरज ए हारो ॥ अशे  
 रसं मोरन ही को शि पावत लगे पीया  
 रो ॥ इन्द्रो सर मे पा दे रे प्राणी ॥ दो श्लो  
 इद्रु सी यारो ॥ रासि च ॥ सन का दिक्  
 से सपी वत हे ॥ अनंत को टि जन धारो  
 रास सब द निर वा ए पु कारो ॥ जिज सि  
 र नार उ ता स्यो ॥ ३ ॥ मा या मो दो न रि सु  
 त वं धू ॥ त्या गे सं क ल प सा रो ॥ सं स ज र ए  
 ता की ब ल हा री ॥ जा के घार स को अ वि  
 कारो ॥ ४ ॥ प दा ॥



कसं च्छपारौ ॥ आगं नलो मितघातन  
पायौ ॥ अजिले सिरज ए हरो ॥ अने  
रसं मोरनदी को शि या वत ल ज य म  
रौ ॥ इ च्छो सर मे प्रा ले रे प्रा ए ॥ वि ल  
इरु सी यारौ ॥ २ ॥ सि व ॥ स न च ॥  
से स पी व त हे ॥ अ ने त को ॥ इ न ॥  
रा स स व द नि र वा ण प ॥ ३ ॥  
र नार उ ता ल्यो ॥ ३ ॥ मा य ॥ न ॥  
ते व धू ॥ त्या गे सं क ल प ॥  
ता की ब ल हा री ॥ जा व ॥  
कारौ ॥ ४ ॥ प टा ॥ गं न ॥

जरी ॥ ॐ चना च कोइ श्रुतिन जामे ॥  
न ज्जा उतारे पारी ॥ १ ॥ विन तगा बेवे  
दपुरा नां ॥ उनी यां आन पसारी ॥ २ ॥  
रिमारिग की प्रवरन पा १ ॥ ३ ॥ त  
वसंसारो ॥ १ ॥ संत मित्यां सवही वि  
धि पावे ॥ न जन न्येद अधिकारो ॥  
रामनां मनिह पप्रब तावे ॥ नही को  
इ म्हा रो न थारो ॥ २ ॥ छटि छटि व्या  
पक राम कदा जे ॥ उतिममधमबिस्त  
रो ॥ जो ध्यावे सोही पद पावे ॥ जामे फेर  
न सारो ॥ ३ ॥ तन मन जाति रामरस पावे

जावे इ आधारे ॥ राम चरण ताहि ज्ये  
नजावे ॥ सबरस लागे धारो ॥ ४ ॥ प  
दा ॥ २ ॥ अथ राग अंगला ॥ सत गुरहे  
इदया लदया मोह कीजो ॥ जावप  
लट होइ इहं स मोदी बुझि दी जाये ॥  
मैं फटो माया जाल का लघा छै लगे  
ओसागर बिजाल फिरत लागो ॥ का  
म क्रोध मद लोभ मोहो ममता तजो ॥  
परहरि विषै विकार रं मरमता तजो  
॥ राग दोष अहंकार के इब ध्यात्वा  
जाये ॥ साच सील सं

ऐ ॥ ४ ॥ आसात्रिसनां जीतिवासनां  
जालीए। ऐसतगुरकासीषहंसव  
तपाकीए। प। रामराममुब्रगाइसु  
रतिनहचलकरै। रामचरणहो  
इहंसजीवबुधिपरहरो। ६ ॥ ४ ॥  
सतगुरदया। बेचारकेमोहजग  
ईया। न्त्रमअंधाराभेटकेपंचवता  
इश्री। सतगुरसवदाबेचारसमफि  
हरदैधस्या। मोषिमारिगकीया  
गवनकैमयंधपर। ॥ २ ॥ रसनां

रामदासो मरे एदि नगाईया ॥ विसरया  
 वंसविस्तार हंसपदपाईया ॥ ३ ॥ खं क  
 नालकै घाट अमीरस आदिरा ॥ उमि  
 वैश आकास जंदा सुषंसागरा ॥ ४ ॥  
 मुकति अंबी धाया इबी धनदी आदि  
 रे ॥ राम चरण सुषसिंधं संकेला क  
 रे ॥ पदा ॥ २ ॥ अथ राग नीरव ॥ संदिया  
 अरजद म्हा रा दो ॥ विद्वनि उपपदी ॥  
 जीएटु काम हरतु म्हा रा दो ॥ ३ ॥ राम  
 पीडा तरक व्यापि पि ॥ ४ ॥  
 काठने सं अस्तदी कि

षाड्... नद सुषत सुक वी लुवा भेरो  
बदन गया मुराश आसकी दादार  
की दाश नै नरै कड लाशर पुषी  
तुम्हार दर सांवेनि तुम क वरम लौगे  
आर सोहा दो हा डो नासरो सोतो एक  
वरस के नाइ इ राम चरण की चीन  
ती पीया मात नाह वा सर गा श ब्रह  
नि के बिसवा क दा जे ली जे कुंचल  
शा... रम इ यामिरी फल  
कन लाग दो द... न भूरा कारणे



नि सबा सुरजागे हो ॥ टे का ॥ दिसदि  
सा आतर कल ॥ तिनै पंथ नि दा रु हे  
संमशंम की टेर दे ॥ दिनरे पियु कार  
हो ॥ १ ॥ निन उषा रा दार वि नि प स म  
र स आ से ॥ दिस दो कल से हेत क ॥ ह  
रि क व पर का से हो ॥ २ ॥ स्वा ति नंद वा  
त्र गर ट ॥ जल आर न पा वे हो ॥ धन आ  
सा पू रे न दी ॥ तो के से जी वे हो ॥ ३ ॥ दा स  
की आर दा स सु ए पी या दर स ए दा जे हो  
गंम चरण बिहन क दे ॥ अब बिल मन दा जे



श्रेयसांधांश्री मुरली रामजी द्वारा  
 का सब व लिखते ॥ प्रथम स्तुति का वि  
 वत ॥ नमो राम इत्यां राम नमो सत गुर हरि रूप  
 नमो सत परबी ए राम रटि नमो अ नया ॥ न  
 मो सिध जोग स्व नमो नव रात के खान क  
 लो नाथ नजी शिवा मरति मिलर दे  
 प्रालक मुरली साधु राम गुर कारण ती न  
 एक ॥ त के पद वंदन करत पुत्रि जा शब्दि  
 धन लेने क ॥ १ ॥ साधु राम गुर देव जी  
 कारण एक पि नो लिखे ॥ साधु दया दित  
 पाकरां म ही राम उ चारै ॥ ने समि दिखटी  
 सुधि सदा एक रूप वि चारै ॥ राम राम सब

मां हि निति निरधारः प्रजिनमां ॥ निगम  
कहत गमनां हि वरणिः प्रावे नही मनमां ॥  
सत गुरसिर जणहार ऐक मुरली मन बिचि  
मां नलै ॥ साक्षरं मगुर देवजी कारण ऐक पिछो  
णलै ॥ २ ॥ नमो राम निरधार निमो निरंजण नि  
रकारा ॥ नमोऽऽज्जणी नाथ सकल तैरैऽऽधारा  
नमो त्रि ऐगुण रहत नमो मन बुधि चित पारं  
नमोऽऽरं गऽऽजं गनां वसु मरत न वतारं ॥ अ  
कह अगह अदेह नेह कि ससुं नही जेता ॥ न  
मो अबोल अतोल तोलता कान ही होता ॥ मु  
रली राम बंदन करै किस बिधि जां एषो जाइ ॥  
राम कहुतरां मै मिलै ५ जी नही उपाइ ॥ ३ ॥

नमो ब्रह्मनि जदे व ज्ञ ब गति त्र विनासी पून  
मो न रं ज ण रा इ सदा सं लं न सु ष रा सी ॥ नमो  
गरी व न वा ज प ति त पां व न वि ड द ते गौ ॥ च क्ति व  
छ ल नै ह र न म र न मे द्यौ स व मे रो ॥ नमो नार म  
धि पार व र ण वै त्रा वै नां ही ॥ नमो चि दानं द रू प  
रू प मै लि पो न कां ही ॥ नमो दि ष्ट न ही मु स ट नां व हे  
रो का हा दी जे ॥ ता तै ए ह वि चा र रां म र स र स नां पी  
जे ॥ धे सि व नार द से स से र टे त्रा षं क्त धार ॥ मुर  
ली त्र षि र दो श वि त्ति पा या स व त्रा चार ॥ ४ ॥  
नमो परमदयाल नमो त्रा ए ह सु ष रा सी ॥ नमो  
त्रा षं क्तानं द सं दा सो द्र म पर का सी ॥ नमो ग्यां न का  
रू प नमो वै रा ग स रू पा ॥ नमो सी ल के पु ज नमो  
न ग त न के त्र पा ॥ नमो त्र ज ण सं र ह त नमो

निरंजणनिरकारा॥ नमोऽञ्जुणीनाथनमो  
तुमरहतबिकारा॥ नमो ग्यांनके पारनमो बि  
ग्यांनञ्छातम॥ नमो दयाके मूलसकलमै  
जांणिप्रमातम॥ जनमुरली बंदन करै वार पा  
र दीसै नही गुं रंमचरणपद रंमके बरतर  
हे सब घटम ही ॥ ५ ॥ इती किवतस्तुतिका  
सपूरण॥ अथ गुं चिंतांमणसारवोधि लि  
प्यते ॥ स्तुति ॥ प्रथमस्तुति गुरंमक ॥ जासु  
सब परकास ॥ नूतनवषिब्रत मान संत ॥ ति  
नको मुरलीदास ॥ १ ॥ गुंथा ॥ उहा ॥ नरतक  
तरसै सदा ॥ ब्रह्मादिक सब देव ॥ ता करिसु  
मरणकी जीए ॥ पावै हरिका नेव ॥ १ ॥ जब  
दीपर चरतषंम ॥ एह माहा वैकंटपिबान

ज  
शुभमगदै कदरंम मुषि ॥ होमिदि जाइ आवन जा  
न ॥ रो नरतनतौ कं मिल्यो ॥ विरागर कीषाना ॥  
सोधन विद्या नषो इरो ॥ सिते न वेग निधो न  
शरेक सासत्रे लोक के ॥ मोल बराबर मान  
ताक वार लग इरो ॥ करे रामपि वष मुषपाना ॥ चौप  
चौरासी मैरु लत फिरो नौ ॥ भिनष जनम कं तंतर  
सानौ ॥ सोमिन घातन लयो गि वारा ॥ जुग च्या  
स्य लगि करत पुकारा ॥ ५ ॥ भिनष जनम हरि व  
सोमो कं ॥ जाकरि अंधं न जं मै तौ कं ॥ स्वाधी  
न कै काज सुधारु ॥ अब आत्म जो जळ नदी का  
रु ॥ ध पराधीन प्र न मे दो ॥ मेरा विषयी सुरतिस  
मे  
रपि लायो ॥

निरंजणनिरकारा॥ नमोऽन्नंजुणीनाथनमो  
तुमरहतबिकारा॥ नमोऽग्नानकेपारनमोऽबि  
ग्नानन्नध्यातम॥ नमोऽद्याकेमूलसकलमै  
जाणिप्रमातम॥ जनमुरलीबंदनकरैवारपा  
रदीसैनहीगुरुंमचरणपदरांमकेवरतर  
हेसबघटमही॥ ५॥ इतीकितस्तुतिका  
स्तपूरण॥ अथ गुरुं चिंतांमणसारबोश्रित्ति  
प्यते॥ स्तुति॥ प्रथमस्तुतिगुरुंमक॥ जासू  
सबपरकास॥ नूतनवषिब्रतमानसंत॥ ति  
नकोमुरलीदास॥ १॥ गुरुं॥ उह॥ नरतकं  
तरसैसदा॥ ब्रह्मादिकसबदेव॥ ताकरिसु  
मरणकीजीए॥ पावैहरिकाजेव॥ १॥ जब  
दीपरनरतषंम॥ ऐहमाहाबैकंटपिबान



ज  
 ग्रंमगदैकैरंममुषि॥ त्तोमिटिजाइत्रावनजा  
 न। य। रेनरतनतौकं मिल्यौ॥ द्वैरागरकीषाना॥  
 सोधनब्रिथानषोइरो॥ मत्तैनवेगनिधान  
 श। ऐकसासत्रेलेकके॥ मोलबराबरमान  
 ताकंतेरत्नगाइरे॥ करेणमपिवषमुषपाना॥ चौप  
 चौरासमैरुत्ततफिरानौ॥ मिनषजनमकंत्तंर  
 सांनौ॥ सोमिनप्राननत्तदो गिवाशा॥ जुगच्या  
 त्यलगिकरतपुकारा॥ ५॥ मिनषजनमदरिब  
 सोमोकं॥ जाकरिअंधमज्जमैतौकं॥ साधा

न  
 रुंधपराधानप्रचमैहो॥

म

मो कं संज द्यो हरि एती ॥ इग देरु तु व जन कं दे  
पूं ॥ जी व न जन मं सु फ ल क रि ले षूं ॥ ७ ॥ चरण  
व क सि ज्यं ध्यां ऊ दर स ए ॥ बृ धि वि स ल स  
वृ ङ्ग पर स ए ॥ द स त दे रू ज्यं से वा क रू ॥ स  
र व न दे तु व गु न उ रि ध रू ॥ १ ॥ ना सा द्यो स व मु  
ष को न्न ष न ॥ ध्यां न न र ति क व रू न ही चू क  
न शु ष सु दर स सु म रू रं मां ॥ जा ते सु फ ल क  
रू स वं कां मां ॥ १० ॥ इ त नी सं ज स वै हरि दी ज्यो  
ए क्रि पा मो षे प्र न्न की ज्यो ॥ श ए दि व स च्च रू  
अ स ट ही जां मां ॥ ऐ क अ ष ण त सु म रू रं मां  
॥ ११ ॥ सा स उ सा स न धा रू ष ण त ॥ रा म रां म क  
रू ए क अ ष ण त ॥ त्रै सां को ल बौ ल तै की या  
न व हरि तौ हि मि न ष त न दी या ॥ १२ ॥ अ न्न वा

संभ्रमं मुंषं ज्ञत्स्यौ ॥ निक्कसत्तुं रतुरंतं हं  
नत्स्यौ ॥ धिगधिगतेराञ्चवत्तारा ॥ जननीबो  
जमरीतुजनांश ॥ १३ ॥ जननीबो जमादिका  
हाकीयो ॥ रामपिवषरसनामहीपीयो ॥ साध  
संगतिकवक्तं नहीबैतो ॥ परदारातकपुत्रघ  
रपैतो ॥ १४ ॥ धिगतेरीजननीजिनजायो ॥  
गुरलागेलजहरकिनपायो ॥ धिगदाईजि  
ननीलोमोस्यो ॥ पकिरिपाछेनोपेटनफो  
स्यो ॥ १५ ॥ धिगब्राह्मनतननांबज्जका  
द्यो ॥ षोटा निषतरकहकिनब्राह्मो ॥ धिगउ  
नगुरजाबैद्यापदाई ॥ कलमगेरकिनकरद  
गहाई ॥ १६ ॥ धिगत्रीयाजिनफेराषाया अणि  
लासकृतसकलगु ॥ माया ॥ तीरण

रासिरवेग ॥ बेदबुलंगि दो। जंगमैपेठा  
 १७। व्याकृत बेरनिनिनिनिममजायो वि  
 नांसमजसोजनमजंजायो ध्रिगकनफूके  
 फूकजूदीन्ही कांनंमांहिकररकिनकी  
 न्ही ध्रिगकूवाजिनमंगलगाया कुलकं  
 दहणबुदंगलत्रायात्रगलेपित्रजेसुरगस  
 ध्राया सोपापीनेनरकपराया १८ हतलेवो  
 जोडतत्ररूषोलत नाकगह्यांश्लोकाबोलन  
 धूकंदेषतजूवाषेलत जूतीधोकिप्रकूपद  
 पेलत २० गात्यां गावैसासरयाली फिटिफिटि  
 नांफिनांफिदेगात्री नांनंनानीमांमांमांमीस  
 तादिहडीदेवलजांनी २१ तीरथत्ररूनग  
 रीकोनाइक तिनकं नांफिनांफिकहेवाइक

अगले पिछले सकल ज्ञान प्राप्त करिष्ये  
गणन न प्रायः ॥ २२ ॥ ७ ॥ हाकिम करन दुषनास  
का ॥ हस्त चरण न भवात् ॥ मुरली जल की जं  
दम ॥ हरिकेशै रषै संहात ॥ २३ ॥ हरिकेशै ल  
नही ॥ न भूषिष्य चतसो गत ॥ मुरली नर न  
लो सबै जं ब काहे की कुसलाता ॥ २४ ॥ जठर अ  
गनिकी जुवाल सै ॥ २५ ॥ पिनी यो ली कल  
रला गो प्रा न सं ॥ २६ ॥ जं इ क र वीर ॥ २७ ॥  
कठन चाषी सी ग्रन की ॥ लष चो स सी जं ॥ ता  
उष स हरिकेशै कौ नरत न दी यो जं ॥ २८ ॥  
नरत न हे माहा मोहि कौ ॥ जं न मुरली निज सार  
ता ते करि संत संग ॥ २९ ॥ जं नि व न पति सार  
२९ ॥ मान वतन नि ज रतन की ॥ जं ॥ ली व न वा

न तासकाठिउजालमन॥ नजिचौमौचनन  
गवान॥ सीलदयासंतोषसत॥ सुक्तपरउप  
गार॥ धिम्यांगरीवीरतनरेह॥ रसनांगमउ  
चार॥ २७॥ नोपई॥ उचैहोटमुषसौकतकीया  
षातामूछबदनकरिलीया॥ बाल्याचाकौताहां  
बालबणया॥ नहीसोकौताहां हरिकराया॥ ३  
प॥ दांतमाठकैसेकरियापै॥ जिहांचालवचौ  
जनसबकापै॥ नालिकाठिबालनपैलई॥ प्र  
वश्रोतनमेंसुरंगइकगई॥ ३१॥ नाकनोषके  
सीकरिलईनैननमेंफुतरीकौरही॥ चुवारदि  
गनीपरिकैसेकीन्हें॥ अवनपरिछाजेकरिली  
न्हें॥ ३२॥ हापनपावकरीनिजरेषा॥ जुदीज  
दीसोकौतअनेकांनषकीगौरनषवनवाया

ॐ बृंदमैष्णलरचाया ॥ ३३ ॥ जीवज्जवाच ॥  
परा लबदतैपायामुष ॥ नाकश्रवनिपलखबद  
तैचष ॥ हाथपावलबदतैकीया ॥ लंघीमुदपर  
लबदहीदीया ॥ ३४ ॥ स्वादसकलषाणककीया  
छाजनतनपहरनकदीया ॥ त्रीयासोत्रौगण  
कंकरा ॥ एमायाकीन्हीसबहरी ॥ ३५ ॥ हरीज्जवाच  
मुषदीयाणांऐकतांही ॥ जीचकरासांधीमुषमाही  
दांतमाठषांणककीया ॥ एसबपरालबदतैदी  
या ॥ ३६ ॥ करडीबुसतफोडकरिमरै ॥ दणकौपडेपे  
सरीगारै ॥ दांतमाठ ऊठैफुणकाशिसोसाबीसुर  
सौलुकाई ॥ ३७ ॥ नारीकंतैत्रौगरतही ॥ मरौ  
तेजगमायोकही ॥ मरौतेजमांगमैलेहू ॥  
तबहुमकौहोकांहांतैदेहू ॥ ३८ ॥

नरामही कहै ॥ तजा स्वाद सब दहै ॥ स्वाद देइ तो हरि  
रस पावै ॥ बाद बिबादा निकटिन जावै ॥ ३९ ॥ असु  
न करे मांन की सुनिलेह ॥ मुषसंबात बाणं बोकेह  
षायमी राखाद करावै ॥ गालिगीत बोलत दिन जा  
वै ॥ ४० ॥ जन्पारससूं मीन मराइ ॥ ऐदिष्टांत देषीए  
जाइ ॥ सुने वोल्यां सब कै मन जावै ॥ असुनबकां  
माघामै पावै ॥ ४१ ॥ गिनकातरी रामरस चाष्यां ॥  
बिषीयादिक सब हरि बिनाष्यां ॥ कोइलुबचन  
सब नकं प्यारा ॥ वाइसबै नलजै अतिषारा ॥ ४२ ॥  
तातै परालबद करे मांन ॥ संचत कर मतगत है  
अंन ॥ ऐनाषीइक मुषकी कथा ॥ नहीतौ गूं गाहौ  
इरहौ जथा ॥ ४३ ॥ ५ ॥ स्वाद बाद बिषबै नत जि  
रामही राम कहंत ॥ तौ मुरली संचत कर मत जि ॥ जी



वसोवपाचत ॥४४॥ स्वादवादमुषेप्रसुबकिंशामन  
कहेहिलिमात ॥ तौमुरलीनिबिधिल्लमेल ॥ जीवर  
सितलजात ॥४५॥ त्रौषई ॥ नासापराचनदतौपाइ  
तौपीनसुनोरजंवरताई ॥ वासकुवासनहील्लित  
देवै ॥ नासानिरतिसुरतिकरिलेवै ॥ एसुनकवे  
मानसोकहीए ॥ फूलफलवादवासनहील्लहीए ॥  
अंतरफुलेलपुसपंगंधनावे ॥ सोअसुनकरेमान  
कहावे ॥४६॥ दुहा ॥ सुगंधदुगंदतजिव्यारजं ॥ राम  
रदैनिरतिष्पासं ॥ तौमुरलीपावेअंगप्रघरि ॥ संच  
लेकरमहोइनासा ॥४७॥ सुगंदसुजसलेसंतजनी  
अमलसिदुगंदनिवारि ॥ नासानिरतिलगाइके ॥  
नएअनंतनीपारा ॥४८॥ सोरगा ॥ सुगंदवासना  
लेहा ॥ मनभेधरेजंमोदअति ॥ केवलअतिकेने

सुन्न सुनै संत न के वै न कथा की रतन निरगु  
ण अंत सुरगुण में चित नै क न देवै विष सब  
द सुणि मन न ही नै वै ६३ ऐ सुन्न करे मान नि  
ज धरम सह जै मु चै परा लंद के करम असु  
न सुन्या होइ कुरंग त मा सा जा वै नर क विषे  
की आसा ६४ विषे सब द सुणि आनंद मानै  
घट बंध सुनै देकां नै सो वै अ सुन्न जानि करे  
मान नर क जान के एह चह नान ६५  
कुरंग मूवै विष सब द सुनि विध क त स्यो सु  
निरा म सुरती देषो ग्यान करि सुन्न असुन्न क  
रण धाम ६६ विषे सब द सुनि कां न  
मन मै रु चै न संत जन धरै राम को ध्यान तो सं  
चत करम मिट मु कति होइ ६७ मन मा ही अ

तिष्णास॥ विषे सब द सुनजे सदा॥ जे जा इन र कहा  
इनास॥ त्रिविधिकर मकलारले॥ ६॥ घट बधु  
नेऊ बांत॥ तोपंकडि बुलावै रावले॥ कथा सुनें प  
र न्नाति॥ तोपाइ पडै पूजा करे॥ ६॥ चौ पई॥ पाव  
मित्यां पराल ब द संतो ही॥ आं सरइ दे षण क जोई  
निरष निरष धरणी परि मोले॥ तो निज सु न सु  
जन बोलै॥ ७०॥ सुन संत न के ध्या दे दर सणा॥ सुन  
करे मान होइ हरि पर सणा॥ हरि के हेत प्रमार्थ मां ही  
धरणी परि त्रै सै विचरां ही॥ ७१॥ सो सुन करे मान क  
रि जां नो॥ अ सुन संचत कौ मो है हां नो॥ पनी एव  
डी पाइ नि पहरावै॥ सो करे मान अ सुन कहा  
वै॥ ७२॥ दुहा॥ दिषि चं लै व सु धा परों द या ग ह ठ लै  
जीव॥ तो मुरली त्रिविधिकर मत जि॥ परे सै पूरा

पीव ७३ पनीपावडीतापड्यो त्या गन्नजे मुषिरा  
म तो संचल करमचूरण ऊव पावे मोषि मुकोम ७  
४ पनीपावडीपहरिकरि पटकै पावस जोर तो  
त्रिविध करमले सी सपरि जावे नरक अघोर ७५  
नगेपाइ नै ऊपे जै कांटे अलि दिषाइ पनीपाव  
डीपहरिकरि आधाई कै जाइ ७६  
पनीपहरिकोई सरालडे जरण संग्राममै तो सदगति  
जाइ नमूर नगेपाइ देषतवरे ७७ संतनके दीदा  
र ध्यायासूलीटली देषी सबसंसार तीनचौ  
रसूली दीया ७८ करसंकरमकरै नही  
कोई अथवा सुन्न असुन्न जै दोई परालवधए  
कहीए नाई संचल करमननें कमिटाई ७९ क  
रमकरै निसवा सुरकरसुं नै सोअधमकरै

नही हरिसं॥ परालवद संचत करे मांन॥ त्रिविधिकर  
मले जाइ नरकांन॥ ७०॥ संतन करे देषर कर जोरै॥  
टहल करे चितनै कन मोरै॥ सो करे मांन सुजनि ज  
कहीए॥ त्रिविधिकर मत जि हरि पद लहीए॥ ७१॥  
सो एग॥ कर जोरै द्वै दीन॥ सो मरां म सुष सं करे  
टहल मां हिलै लीना॥ सो त्रिविधिकर मत जि ह  
पा कहोइ॥ ७२॥ सुज करे मांन पिं लोना॥ संत च  
रण सेवा करै॥ करै दांन सुन मांन॥ सो म सु म रि  
नौ सिंधति रै॥ ७३॥ हे स्यां करे अ पार॥ काट ए ह  
वाट ए अ सुज गति॥ जे त्रिविधिकर मले लो  
रा॥ बौ होत चत्या नरकांन मे॥ ७४॥ मी एो से क  
देषि॥ कर जोडत करि  
चष॥ कर सं सीतां पा कडी॥ ७५॥

बार सबकोइ गावे जगतमें गहीपराई नारि  
सोरावनवच्योननेषधरि णई नेतरसंतदी  
दारकं अवनमुननकं जसमुरलीमुषदीयो  
नजनकं नहीतौचंदवाविलदाडुरस ६७  
हस्तजोडिसेवा करण चरणसंतदीदार  
नहीतौतरकरपातजुर सरपाचलैदरार  
७७ ॥ ॥ ॥ तुचाइं दीपशालबदतैलीन्ही  
तामैंकाहाकमाईकीन्ही देषनमूतैधरती  
कुपरि आलैसुकैगिणेंनततपरि ७७ ॥ सो  
तौतौनफोनताकहोई लषचौरासीमिटैन  
तौहीसुनकरेमानुतारैअमरी निरहंस्या  
सुकीचूपरी ७७ ॥ सुनकरेमानसंजमजल  
पीवै तौसंचतकरमरहै नहीठीवै सप्रस

जावे॥ त्रिया बुद्ध प्रवेश करे॥ ए॥  
 सोवैत्रसुनजिनोकरेमाना॥ नरक जानकेहस  
 हनाना॥ संतसासत्रकहेऐतौस॥ सुणिकरिबुरा  
 नमानोमोस॥ ए॥ गजकेदेखोसबकोइनेतो  
 पडैषामेंविषकीसैना॥ नहीतोसौकृतफोज  
 नमाही॥ पातकविश्रुतिकराही॥ ए॥ ३॥  
 हा॥ विषेकरतकरपैनही॥ दयाहीए॥ तिध्या  
 नाजेनरत्रिविधिकरमले॥ जावेनरकसंध्यान  
 ए॥ सोरगा॥ चामचौरीकोरुंरुलेवेराजामा  
 रदे॥ होइजमारोचम॥ सुतसुतनीपरणोवता  
 ए॥ सीलवतसिररुंरु॥ ३॥  
 म॥ पूजेसंब्र  
 उहा॥ दयासीलपालेसदा॥

बार सबकोई गावे जगतमें। गहीपराई नारि  
सो गांवन बच्चो न जेष धरि ण्ही नेतर संत दी  
दारकं अवन मुननकं जस मुरली मुषदी यो  
न जनकं नही तो चंद वा बिल दा डुरस ५७  
हस्त जो डि सेवा करण चरण संत दी दार  
नही तो तर कर पात जुर सर पाच ले दार  
७७ ॥ ५५ ॥ तुचा इंडी पराल ब दतै ली न्ही  
ता में का हा क माई की न्ही ॥ दिषन मूते धरती ॥  
कु परि ॥ आले सुं कै गिणे न तत परि ॥ ७७ ॥ सो  
थे टो न फोन ता के होई ॥ लष चौरा सी मिटे न  
तो नी सुन करे ॥ ननु तारे अ मरी ॥ निरहं स्या  
र मां न सं ज म ज ल  
नही ठी वै ॥ स प्र स प



तबिरजसो जावै॥ त्रिया बुद्ध प्रवै सकरावै॥ ए०  
 सोवै असु नगिनो करे माना॥ नरक जानके ऐहस  
 हनाना॥ संतसा सत्रकहे ऐतौ सं॥ सुएिकरिबुरा  
 नमानो मो सं॥ ए० गजके देखो सबको इनेनो  
 पडैषाममै विषकी सेना॥ नहीतौ सोक्षैत फौज  
 नमांही॥ पातक विअस्तैतिकरांही॥ ए० ३॥ उ०  
 हा॥ विषे करत करये नही॥ दया ही एगति ध्या  
 नाजे नरत्रिविधिकरमले॥ जावै नरक संघाने  
 ए० सो दगा॥ चांम चौरी कौं कंकले वैराजामा  
 सुत सुतनी परणां वती

सीलवतसिरकका

हादयो सीलपाले

तेनर होवैपसूसमान १०७ ॥ तातैपडैनरकके  
मांही ॥ मुकतिजुगतिबहुस्यूनहीपांही ब्रह्म  
कानितिपरलातांही ॥ आवनजावनमितेनक  
ही ॥ १०८ ॥ ब्रह्माकीरैनीकेमांही ॥ अंधरसातल  
माहिरहांही ॥ सैसचौकलगरहैरसातलि ॥ सु  
षनहीमितैएककृषिनपल ॥ १०९ ॥ बहुरिपर  
जापतिजाजैसोई ॥ तबहीआनांजानहोई ॥ धि  
नजनमैधिनमरिउषपावै ॥ माहापरलातमि  
यूनरमावै ॥ ११० ॥ बोहोस्यूसिसटरचैकोईमो  
सर ॥ तौहीजनममरनरुंरुमितैतौसिर ॥ हरि  
सूकौलकीयोसौनूल्यो ॥ वारुबोरउरधमुष  
ऊल्यो ॥ १११ ॥ पवनरसकताहांसकैनआई ॥ उ  
रधमुषसौरह्यौलुकाई ॥ काटैक्रिमजलनितां

मांही ॥ यो दुष्वेगमिटेनही कांही ॥ ११२ ॥ नौ जो  
 रोसुरकही जनकस ॥ एकादसमेंतौ डितनक  
 सं ॥ एही सबसंतनमुखचाषी ॥ पीताञ्जलूजाग  
 वतसाषी ॥ ११३ ॥ तातैअबतंवेतसयांनां ॥ सं  
 तचिताइदेतहैग्यांनां ॥ संतग्यांनहिरदैधरि  
 लीजे ॥ ऐकरांमदसनांरसपीजे ॥ ११४ ॥ तनकी  
 गुजरकरैनिरदोषा ॥ पाठैकरैसंतसंगतिजोष  
 संतदयाकरिग्यांनसिषावै ॥ सारञ्जसारचेदा  
 संमजावै ॥ ११५ ॥ सकलसिष्टकोअघअनमा  
 संमसुमरि ॥ जाडो

सौसाक्षरमीहोइहरि  
 क्यडोपररितज्यांठ

द्विरगुमावे ॥ ११७ ॥ रामस्तसिर ऊपरि शषे ॥ त्रिप  
ति संपति हरि देह सुपाके ॥ हरि विनि और कं न दे सा  
दी ॥ तातै हरिकी रजारहाही ॥ ११८ ॥ हरिके संत  
क दे सो करै ॥ सो अरण्य कुल ले जे सिंधतै ॥ क  
सो उलंग पाठार नदी सै ॥ जाहां जावै जाहां ही जम  
पा सै ॥ ११९ ॥ संत सोही क दे राम स मंधी ॥ त न ध  
न सं म म तान ही बंधी ॥ तिन संतन को क दान लो  
पै ॥ जाको मिन ष जन मतन बौपै ॥ १२० ॥ करताए  
करा म सबहन को ॥ पालन पोषन सब त्रिनि  
त्रिनि को ॥ जाके छोदि न जै न र अना सो पावै  
दो जि ग अ स थाना ॥ १२१ ॥ तातै चेत राम र सपी  
जे महंत जनो को संत संग की जे ॥ महंत सो ही र  
हे ना बडे को ना ॥ पर हरि अर म कर म जे ना ना ॥ १२

सारपकडिके कसतजिदेवै ॥ तनमनसुरतिपे  
मरसजेवै ॥ येमलीयां मुषरांम उचारेणम  
लीयां गुरसेवाधारे ॥ १२३ ॥ येमलीयां अत्र  
निसुनकथा ॥ येमलीयां रमिसंतनसथा ॥ ये  
मलीयां कीजे सुनकरमां ॥ विनायेम सुनध  
रमअधरमां ॥ १२४ ॥ तातैयेमसहतिबिधिकी  
जे ॥ सीलदयासंतोषगहीजे ॥ विष्यांसहणता  
सुरिधरीए ॥ सुकृतग्यांनध्यांनअनकरीए ॥  
१२५ ॥ संतचरणसिरपरिदीजे ॥ चरणामति  
पणंसुनितिलीजे ॥ सीतपरसादसंतमुषके  
रो ॥ प्रीतिसहतिलीजेनितिबेशै ॥ १२६ ॥ सेवन  
नितिसंतनकोकीजे ॥  
नदीजे ॥ असनबसनधनसं

सुंहरिबिनिश्रीरनरुजा १२० तनसुंरां  
मगंमकरसनां ध्याननरतिरायैनितिन  
सनां श्रीसैवेमनेमसुंसेवै हूजीगौरनदी  
चितदेवै १२० = एहतिरवेकं जगति  
जु सतगुरदेइवताइ तातैजजीऐगंमकुं  
परहरज्ञानउपाइ १२० शुभवानसैकव  
येसुतवितज्ञानउपाइ ताज्ञागश्रीतकसु  
मदि जुंनवजलनरतएइ १२० जगते  
संकषज्ञागैतसै कहीकपलसुंसेवै  
मुरतीवैरुलेखनसुंसेवै १२० जगते  
१२१ जगते सुंसेवै १२१ जगते सुंसेवै  
एतौलसुंसेवै १२१ जगते सुंसेवै  
जोगा एजगते सुंसेवै १२१ जगते सुंसेवै

रूधाममहलकर जाल्या ॥ ते तौबो होत कर  
मकै जाल्या ॥ माया महल सांपूकै घणं एक  
अगो सर सुतसो जणं ॥ १३३ ॥ बया वणं वे  
महल जरो का ॥ ऊंचे ऊंचे काठे गोषा ॥ विरष  
नकै परवार घणेशी ॥ मारै जगत तजै नही  
करो ॥ १३४ ॥ विनिआयां कोइ निकटिन जावे  
फल्यां फल्यां सब कोइ संतावे ॥ पाहण लंक  
डी वाकै आइ ॥ विनिव्यायां कोइ निकटिन जा  
वे ॥ १३५ ॥ ऐही त्रास सकल मन धारो ॥ अचके  
कोलबोल संनारो ॥ होइ चुपचाप जजो अ  
बिनांसी ॥ जूं छूटे नरकन  
इहा ॥ मुरली सुषत ए नर नही  
जां हो मारो ॥ तातै करि सत

सुहरिबिनिश्रौरनहजा १२७ तनसुंग  
मगंमकहरसनां ध्याननरतिराधैनितिन  
मनां श्रैसैपेमनमसुंसेवै ६जी गौरनही  
चितदेवै १२७ एहतिरवेकी जगति  
जु सतगुरदेईवताइ तातैचजीऐरंगंमकं  
परहरन्नांनउपाइ १२७ ग्रन्थवासमैकव  
येसुतबितन्नांनउपाइ तांहांगण्णोताकंसु  
मरि ज्जुंनवजलपारलघाइ १३० त्रतीऐ  
संकधनागोतमै कहीकपलसुनितौडि  
मुरलीवैचूलेवचनानरलहीजगतसूजो  
१३१ सुतबितदारासजनसगाइ  
ऐतौलषचौरासीन्नाइ षांनपांनरसजोग  
जोगा ऐनरीयांचौरासीरोगा १३२ ५



रू धाम महल कर माल्या ॥ तै तो बी हीत कर  
मकै जाल्या ॥ माया महल सांपू कै घणो एक  
अगो सर सुत सो जणो ॥ १३३ ॥ बया बणो वै  
महल ऊरौ का ॥ ऊंचे ऊंचे काठे गोषा ॥ विरष  
नकै परवार घणो रो ॥ मारे जग तत जैन ही  
करो ॥ १३४ ॥ विनि आयां को इनि कटिन जावै  
फल्यां फल्यां सब कोइ संतावै ॥ पोह एलक  
डी बाकै आइ ॥ विनि व्यायां को इनि कटिन जा  
वै ॥ १३५ ॥ ऐही त्रास सकल मन धारो ॥ प्रज के  
कोल बोल संचारो ॥ होइ चुपचाप जजो अ  
बिनासी ॥ ज्युं छूटे नरकन की त्रासी ॥ १३६ ॥  
इहा ॥ मुरली सुषत ए चरन ही ॥ जांहां जाइ ए  
जांहां मार ॥ तातैं करि सत संज अवार सनां

राम उचार ॥ १३७ ॥ ऐमौ सरत्रैसौ समौ ॥ वे  
गिमिलेनहीतौ ॥ तातैचेतसंमहालिकै ॥  
सुरतिरामरसगो ॥ १३८ ॥ अबकैचूकांग  
तिनही ॥ चेतकहूसमजा ॥ सुरलीनजले  
रामकै ॥ ओसरबीतौजा ॥ १३९ ॥ तातै  
बोहोरमिलेनहीमेल ॥ नरतनसुमरणसं  
तजन ॥ तातैतजीऐजेल ॥ सुतबितदारा  
कुटबकी ॥ १४० ॥ ऐजाहोताहोचरेअपार  
सुरगमितजलमही ॥ नरतनसुमरणसार  
मिलेनलीजासंतजन ॥ १४१ ॥ तातैचेतअ  
चेतगाफलहूवांगतिनही ॥ देषोअपने  
नेतकालकहीमाथेबहै ॥ १४२ ॥ मायासुत  
बितवांम ॥ मातपिताचाईसगा ॥ रहैवांम

रामधन ॥ आतमपरैपि ह्यंणि ॥ २ ॥  
रामरूपनिज होइ रदे ॥ रामचरणगुर  
देव ॥ मुरलीरामबनचरणकी ॥ कीजे  
निति प्रतिसेव ॥ ३ ॥ मुकैपिलाया राम  
रस ॥ सतगुरतुजिवारी ॥ जलतबु  
जाइ आत्मा ॥ गहै इमरतरसकी  
कारी ॥ ४ ॥ इमृतकारी दायिले ॥ आ  
तमहुरकी आन ॥ मुरलीसीतलक  
रलीया ॥ सतगुरकिपा निधान ॥ ५ ॥



रामधन ॥ आतमपैरैपिच्छाणि ॥२॥  
रामरूपनिजशोहरहे ॥ रामचरणगुरु  
देव ॥ मुरलीरामवनचरणकी ॥ कीजे  
नितिप्रतिसेवा ॥३॥ मुजैपिलायासंम  
रस ॥ सतगुरुतुफिवारी ॥ जलतबु  
जाइआत्मा ॥ गहैश्मरतरसकी  
कारी ॥४॥ इंसुतकारीहाथिले ॥ आ  
तमठरकीआन ॥ मुरलीसीतलक  
रलीया ॥ सतगुरक्रिपानिधान ॥५॥

सतगुरक्रिपानिधानदोइ॥नाप्रदा  
याबकसीस॥मुरलीपूजाकाहाक  
रू॥दसतधर्योमुजिसीस॥धाजल  
तबुजाईआत्मा॥सतगुरअपना  
जांनि॥मुरलीपुजाक्याकरू॥पर  
मगरूकीआनि॥७॥सतगुरकीपू  
जाकरौ॥मुरलीतनमनसीस॥हा  
थबाधिषाबांपरौ॥सबसंदोइअ  
नीस॥८॥सतगुरमास्याबांएनर

मुरलीमोउरिऐक॥लागतहीसबज  
डुपड्या॥नरमरुकरमअनेक॥ए  
सुरणकोअंग॥मुरलीनजीऐरंगक  
रसनाप्रीतिउपाव॥सुमरणसीजो  
षानदी॥त्रिलोकीफिरआव॥१  
नावसरनरनावद्वै॥औरनदीसेको  
५॥मुरलीतनमनअरपके॥रहोगंम  
रतहो५॥२॥मुरलीनजीऐरंगक॥  
अपनीरसनालागि॥ज्येइमृतसरवे  
मुषमदी॥बुजैमदनकीआगि॥३

मुरली सुमरण सार है ॥ तन दू बैकर  
जांनि ॥ अरधनां ३ गज उधस्यो ॥ गिन  
का चढी बि बाण ॥ ४ ॥ मुरली सुमरण  
सार है ॥ सब धरम सिरताज ॥ नां बलि  
ष्या या दणतस्या ॥ जल सिर बंधी प्राज  
५ ॥ मुरली सुमरण सार है ॥ सेस करे  
बांषाण ॥ उ नैस दं सरस नारटे ॥ एक  
रंम निरबाण ॥ ६ ॥ मुरली सुमरण सा  
र है ॥ सिवकी जीव जडी ॥ रंम रंमर  
स नारटे ॥ तजे नरे कघ डी ॥ ७ ॥ मुरली



सुरमण सार है ॥ सिवकी जीवन प्रा  
न ॥ सो ऊमाके बक सीये ॥ सुषनी  
लीये पिछाणि ॥ ६ ॥ मनकाटिकु इ  
आसरे ॥ जन मुरली जीवे ॥ सुमरेरस  
ना रामके ॥ इ मुरसपीये ॥ ए ॥ मुर  
ली सुमरण सार है ॥ इजो साधसंगति  
तीजो सारजूनादिकलि ॥ आषे निज  
नागवत ॥ १० ॥ बिहको अंग ॥ मुरली  
चंदचकोर जू ॥ तल फे दिवसरगति  
कब दरि दरसदिषाबसी ॥ योतन चा  
येजाता १ ॥ मुरली तल फेरै एदिन ॥

जैसे चंद्र चकोर ॥ क ब हरि दर सदि  
षा वसी ॥ सो दिन आवै मोर ॥ ३ ॥ मुर  
ली चंद्र चकोर ॥ जू ॥ तल फे मे रा जी व  
सा मन वै वै ना न वि चि ॥ क ब मुष दे  
शु पा व ॥ ४ ॥ बिद ज ला वै रे णि टिन  
मुर ली या तन मा दि ॥ रं म दि षा इ दे न  
ही ॥ जी व डायं ही जा दि ॥ ५ ॥ मे रा मन  
की बात डी ॥ का सं क दी ऐ जा इ ॥ कै सा  
दि व की सु दर ॥ कै पी व षा स कु हा इ ॥ ६ ॥  
सा दि व जी की से ज परि ॥ हम कै सा बि

धिजादि ॥ काम क्रोध मद लोभ मत्सर ॥  
मुरली न स्यो अघा ॥ ७ ॥ साहिबजी  
की सफका ॥ मुरली सुष अ पार ॥ सोह  
मपे स धेन नै क नर ॥ के सै दो इ दी दार ॥  
७ ॥ साहिबजी री के सदा ॥ सोह मपे नदी  
दो ॥ मुरली पुत्र के सै मिले ॥ के सै पर सै  
सो ॥ ए ॥ बित चकौर क मो द के ॥ दर दे  
सिस की प्यास ॥ य मुरली बिद नि के स  
दा राम तु मारी आस ॥ १० ॥ चक वी दिन  
कर कर दे ॥ चात्र ग स्वाति कू लास ॥ य मु  
रली बिद नि के सदा ॥ राम तु मारी प्यास

बालकके मनमातकी रहै सदादरकार  
शुभुरलीबिदीदासवरि पलपलरांमत्रि  
तार॥११॥ पंषी तरवर कीरषे मुरलीया  
सहमेस॥ यंबिदीउसरांमकी रहैस  
दासरकेस॥१२॥ मुरलीतलफैरेणिदि  
न॥ ज्यंघनमोरां धुक॥ रांममिलिणकी  
लगरही॥ यंबिदिनिअंदरषुष॥१३॥ मुर  
लीतलफैरेणिदिन॥ जैसेबाइसनीर॥  
कबतरदेषुनेतरां॥ यंबिदिनिकेनदी  
धीर॥१४॥ मुरलीतलफणजीवमेरांममि  
लणकोहोद॥ जैसेकुरलैकुरजअति॥ अ

तरु मा मोद ॥ १५ ॥ मुरली बिहनि अति  
दुषी ॥ हरि दरसण के काज ॥ जैसे सिधक  
गंजरे ॥ कब बन जावे आजि ॥ १६ ॥ बिह  
जलावे रणदिना ॥ मुरली अंतर पै सि  
जी जे सो हरि दरस वै ॥ सो ही बण क  
अस ॥ १७ ॥ मरण आया  
बिहनी ॥ जीण गया बिलाश ॥ मु  
रली तरली ला १ के ॥ र दोरं म ल्यो लाश ॥  
१८ ॥ गणत बिहको अज ॥ बिह न न  
कि न समी क ल्यो ॥ मुरली पाप सरीर ॥  
ग्या न बिह न ब पर गटी ॥ सो धि जलाया

पाप ॥ सुरलीया या रंम जा ॥ त्रैसा क्रीया  
निसाप ॥ २ ॥ ग्या न बिद करि ग म ल दी ॥  
आग म बुद्ध की तंम ॥ रगर ग मे सुष क  
ज्या रोम रोम क दे रंम ॥ ३ ॥ ग्या न बिद ग  
लती न करि ॥ आंणे मिला रंम  
सुरली हू जी कांम ना  
जालि की या न्ह कांम ॥ ४ ॥ नह कांमी नि  
र म ल न्या ॥ ग्या न बि ह का रं दे स ॥ मुर  
ली सुष से जा ब ध्या ॥ रोम रोम धर का स  
प रोम रोम पर का सी या ॥ मि टि गया कांम  
क ले स ॥ सुरली उरि बिदा जगी ॥ सत गुर

का उपदेश सू॥ ग्यान बिह परका स॥ मुर  
लीति मर न्न ग्यान कौ॥ नयो पल कमें ना  
स॥ १॥ नयान जाला ग्यान का दिष्टा  
नै नूतादि॥ रोमरो मसीतल नइ॥ मिटी  
बिह उरिदाह॥ ७॥ बल तानै नसीतल  
कीया॥ न्नाइ ऐक हलरि॥ ग्यान कौल नि  
जन ये मकी॥ मुरली साहिब नूर॥ ए॥ सा  
दिव जी का नूर की॥ मुरली पाईजा ति॥  
शमरदा पगटी बिह॥ करम ज लाया ग्या  
न॥ १०॥ ग्यान ध्यान ने ला नया॥ ग्यान बि  
हक है संत॥ मुली ले लांगी तबै॥ पाया न

ह चल कंत ॥१॥ अथेहेको अंग ॥ प्र  
थम हेरसनांलेगे ॥ अष्ट जामदिनरा  
ति ॥ कामक्रोधमोहो लो नह ॥ मुरलीत  
दी बफात ॥ १ ॥ लेलागांसवबीसरे नै  
कनरहेसंमाल ॥ मतवालाजनहोइके  
पोवैरांमरसाल ॥ २ ॥ लेलागांसवबीस  
रे ॥ तनमनमुरलीरांम ॥ लहरिलगारहे  
नावका ॥ निसवासुरअठजाम ॥ ३ ॥ ले  
लागांतवक्यारही ॥ मुरलीइजीलाग  
रामरामकहेसुरतिस ॥ सासरसनबिचि  
४ ॥ जागजयेजगदीसक ॥ मुरलीलगनि



उषा ॥ उठत बैठत टगटगी ॥ हँदें राम ल्या  
ला ॥ ५ ॥ लै लागं नागी सबै ॥ हँजी लग  
नि अणार ॥ राम अके लार मर द्या ॥ मुरली  
मना मजारि ॥ ६ ॥ सुरति निरति मन पवन  
को ॥ जे कब होइ टवाव ॥ तो मुरली रस  
नारस करै ॥ लै का होइ उगाव ॥ ७ ॥ उगाव  
होइ अदर बिषै ॥ रट्या तलव सरांम ॥  
मुरली लै लागै तबै ॥ राजा करै न काम ॥  
८ ॥ लै लागं विसस्यो सबै ॥ मुरली तन  
बिफार ॥ साहिबजी की सेरु परि ॥ न्हच  
ल को या संवार ॥ ९ ॥ लै लागं नागी सबै

मुरली तन की प्यास पर देसांसूं आ  
इ करि ॥ प्रेम की या प्रकास ॥ १० ॥ लेला  
गा नागा सबै ॥ मुरली मन का षोट ॥  
जाणि के बरसी ना देवे ॥ प्रेम पिबष की  
पोट ॥ ११ ॥ मुरली ले के ला गणे ॥ प्रेम च  
ले नर पुर ॥ बिद धुक ती सी तल नइ  
चमक्या निरमल नूर ॥ १२ ॥ लेला गा  
तब जाणते ॥ छुटै नही लगार ॥ मुरली  
प्रेम पधारीया ॥ इ मूतर सकी धार ॥ १३ ॥  
इ मूत की धारा चलै ॥ मुरली बिब के ला  
गि ॥ तब नी दनि मष आवै नही ॥ बिस

वासुररहे जागि ॥ १४ ॥ ऊमपाएँ सम  
दका ॥ जाहां मी नरहे लै लान ॥ जे जनर  
सी पारामका ॥ सो के सेत जि दीन ॥ १५  
मुरली लै लागी तबे ॥ पीव की पडी पि  
छाएँ ॥ परदेसा की बरता ॥ कंए सुएँ  
वै आँएँ ॥ १६ ॥ मुरली लै के लाग वै ॥  
अतरि नया उजास ॥ पीव पति नी मेल  
नया ॥ सुरति सबद के पांस ॥ १७ ॥ लै  
लागां जागा सबे ॥ उरिका आन जंजा  
ल ॥ मुरछी दरस्पाराम जी ॥ पत नी ली  
या संमाल ॥ १८ ॥ लै लागीं जागी सबे ॥  
इजा मन विन चार ॥ मुरली पीव पि

छांणीया ॥ अयाणहीया मजार ॥ १६ ॥  
पावदमारैरंमजी ॥ पतिना सुरति  
संमारि ॥ तैलागाजागा सबै ॥ इजा  
जरम अयार ॥ २० ॥ मुरली तैकैलाग  
वै सुषमधुनि बाजे ॥ उपजे आंनंद  
उरिमही ॥ कुक्रमसब नाजे ॥ २१ ॥ मु  
रली रामक्रियाकरै ॥ तबही तैलाजे  
रहेषुमारीपेमकी ॥ निसबासुरजागे  
२२ ॥ तैलागाजागा सबै ॥ इजातनमन  
नेम ॥ जाग्यासां वण लुबज्यं ॥ रामध  
एणिकापेम ॥ २३ ॥ प्रेमपकासको  
मुरलीपेमपरकासकी ॥ बाताबाही

तमिठास ॥ रामरामं कहुतां नये ॥ उरि  
में आइउजास ॥ १ ॥ मुरलीदिलदरीया  
में ॥ नरीयाइमतदोदा ॥ रामरतनतावी  
चिहै ॥ सोले मरजीवा सोधि ॥ २ ॥ मुरली  
दिलदरीया वमें ॥ निषजे ये मरतन ॥ बु  
वकी सासउसासस ॥ कोइले मरजीवा  
जुन ॥ ३ ॥ मुरलीदिलदरीया वमें ॥ इमत  
की धारा ॥ पावतसांजी मळज्ज ॥ कोइगुर  
मुषमतवारां ॥ ४ ॥ मुरलीदिलदरीया  
वमें ॥ जाति जातिकानंग ॥ सीलदयासते  
षंसत ॥ रामपी वकै संग ॥ ५ ॥ मुरलीदिल  
दरीया वमें ॥ नरीयोप्रेम अघाइ चव

की सास उसास की ॥ ले मरजी वा आ १॥ ६  
मरजी वा संसार मे ॥ वे मपी सारा दास ॥  
सुरती पी व पि ढाणी या ॥ सुमरण सा स  
उसास ॥ ७ ॥ सुरती वे म न नारक ॥ अरण  
अरै अनत ॥ ताका जल को इ गुर मुषी  
अद जिस जि आपी वंत ॥ ८ ॥ सुरति ठवे  
निज निरति परि ॥ सुरती सा स उसास ॥  
रं मरं मरुस नारत ॥ तो दो इ अब स पर  
कास ॥ ९ ॥ प्र वा को अंग ॥ प्रथं म गुर  
मुषि सर व्रण ॥ सुणि करि की यो अध्या  
स रसना सास उसास सं ॥ धं व ए ल  
ग नि स वास ॥ १० ॥ रसना सं कंठ दो इ कै

द्विरद्वै गयो सबद ॥ दद्वैदां दं ए जगति क  
रि ॥ चत्पाना न्न कै मधि ॥ २ ॥ ज्ञान कव ल  
मे सबद की ॥ उते घोर अषम ॥ चत्पे फ  
वार पे म का ॥ ज्ञां हां हो द न स्या पर चं म  
३ ॥ पिच्छ म दि सा हो ५ तुर क टी ॥ सुर ति ग  
ई ५ क सा स ॥ सुर ती सु ष म णि घा ट ज्ञां हां  
कृ ति करे के ला स ॥ ४ ॥ पिच्छ म दि सा हो ५  
तुर क टी ॥ सुर ति ग ई ५ क दो र ॥ त्रि वे णी त  
टि न्हा ५ करि ॥ पर सा नि र न्ने षो र ॥ ५ ॥ अ  
व प हर चो स ट घ डी ॥ वर से सु ष म णि अ  
न ॥ जन सुर ती वा सु ष मे ॥ सुर ति न्न इ ग र  
ग प ॥ ६ ॥ सुर ती पर चा पी व सं ॥ सुर ति पा

इं श्रै न॥ सब दुष मिट्या सरीरका॥ आ  
तम उरि नया चैन॥ १॥ सुरती परचा  
रामस॥ विरच्या जग सं जो १॥ आतम  
मिली परमातमा॥ अबमारिनसकै  
को १॥ ७॥ सुरती परचारामस॥ विरच  
रद्याससार॥ सुरति सबद मेलानया  
चौधेद सबे डवार॥ ए॥ सुरती परचा  
पीवस॥ ताकैरेदसदनाण॥ सुरतिस  
बद मेलानया॥ मिटिग द्विषे चाताण  
१०॥ प्रतिवस्ताको श्रंग॥ पतिवस्ता  
पीवसमिली॥ धारिपतीवस्त श्रंग॥  
सुरत्यागे सुषच ज्ञ॥ ६॥ जा श्रानकुसंग



पतिवरताके प्रीवपण॥ ऐके चितइकइ  
तार॥ प्रजात्यागे सुपचज्यं॥ पतिवरतगा  
ठविचार॥ रा॥ रामके दे पति वरतसं॥ सा  
सउसासनिसंक॥ तो मुरलीलिष्या  
ललाटका॥ सहजे पलटे अंक॥ प्र॥ प  
तिवरता जाहा तो दांग वै॥ वेदपुराण  
मोहि॥ संतसबे जेजे करे॥ उनी यां निति  
जसगादि॥ ४॥ मैलो तन फाटालतां॥  
जाके पतिवरतराम॥ वाकं निति उचि  
बंदजे॥ विनचारण कुंण कांम॥ ५॥  
पतिवरतामीरां जइ॥ ऐकरामकी दो॥

मुरलीताकोनावसुण्ण सासनव  
सबकोप्रद धृषहालादरनामदे  
दासकबीरबिचार अनंतकोट  
जननांवको पतिवरतगह्योकरा  
१॥ पतिवरतीजनकोबजे जा  
हाताहाजसनीसाण जनमुरली  
बिन्नचारण जादातांदापडैषि  
साण ॥ ७ ॥ मुरलीनगतिजंरामकी  
पतिवरतसहतपरमाण बिनिप  
तिवरतसषरीषरी पेदोइडुषमि  
टैनजाणि ॥ ८ ॥ एकजनमहजौमर

ए॥ मिटे न आं न उपाइ॥ सो मुरली स  
द जे मिटे॥ जै एक पती बरत साहि॥  
१०॥ पति बरत राषै राम कौ॥ पूजो दे  
छिट काइ॥ मुरली सत गुर राम बि  
नि॥ टिष्ट मुष्ट सब काइ॥ ११॥ से  
नौ चाकर राम का॥ मरै पावे बराम  
जे पूजा कौ नावल्य॥ तौ नरस नरावो  
चाम॥ १२॥ चाकर कं बिस राम दे॥  
कं चाकर क सीष॥ जैसा जा के ना  
बना॥ तै सीता कै पाक॥ १३॥ मुरली  
पति बरत राम कौ॥ पाले सत सुजाए

जा कै कनकर कांमणं ॥ और  
नऊठी बांणि ॥ १४ ॥ कुरुकुवाणी  
सबामटे ॥ गद्या एक विस द्वाः  
सुरली अषिर दो प्र विनि ॥ सब अंग  
मायान स ॥ १५ ॥ सुरली पति वरत  
रंमको ॥ पकडे कोई मन सुध ॥ तो  
रंमभिल ए दो इ सह ज मे ॥ बटे  
और कुव धि ॥ १६ ॥ जे जन सुमै रंम  
का जा कै वसि है रंम ॥ रंम न जन  
विनि रंम जी ॥ दत न दो विस रंम  
१७ ॥ मेरा दांणं बां इ करि ॥ मेरा ली

जेनांमं॥ सुरली रंम विसारि के॥ मति  
बनौ बेकांम॥ १८॥ सोरग परमसर बि  
निआन॥ केसे पूजत प्रीति करि॥ पति  
बतलीया पिठान॥ सोधकाषाइन  
दीआनसं॥ १९॥ अपनो पतिसर  
मार॥ हजात्रा इबीरसम॥ परहरिजा  
मरजोल॥ कूरुदेइकरंमकी॥ २०॥  
भलाकदे सबकोइ॥ पतिबरताके  
जगतमै॥ बदैदोन्यलोइ॥ सुरलीया  
बालोकमै॥ २१॥ पतिबरतापतिहेक  
हजात्यागे सुपचज्यु॥ योही बनौब

बेक सोपलो नमैलै आन ॥ २२ ॥ चैप  
कुवारैनातेंबो होबरहेस्या ॥ पायाए  
क औरसबफेस्या ॥ जबमुषएकक  
द्वोजिनरंम ॥ तबजपतपभरमकोहो  
कंए काम ॥ २३ ॥ साषी ॥ रंमबिना  
साधनसब उलटावेरीहोइ मुरली  
नूषणपीचबिनि सकललजाऊ  
जोइ २४ कन्यासबसाधनसध्या  
मुरलीसिरभरतार ताकपीहरसा  
सरे आदर अनंत अपार २५ सा  
सालसंतोषसत ऐसाधूसिएजार

मुरलीषावदरंमसर॥ तो दोहू लो  
कसुषसार॥ १६॥ विधवा बबे कको  
अंग॥ विधवा क सोवे नदी॥ तिलफुले  
तसिगार॥ मुरली आ॥ योगरके॥ सु  
मरैसिरजएदार॥ १॥ विधवा क सो  
कै नदी॥ स्वाद बर सषाट॥ मुर  
ली सुमरै रंम के॥ आयो मे टि निरा  
ट॥ २॥ या है मेरा धरणि पर॥ तो पद  
ली करणं जोग॥ मुरली न जी रंम  
कै तजि अट सित्यारोग॥ ३॥ विध  
वा क सो कै नदी॥ विषी यागी तरगा

लि॥ तनमन आयोगालि कै॥ बोलै स  
बदरसाल॥ ४॥ मुरली बिधवा नंग  
चै॥ हासिबिलासांघ्याल॥ सुमरैसिर  
जणहारकं॥ अपनोविडरसंमहाल  
५॥ छपनकोटजाप्रमुरे॥ चारिघडु  
कैमांदि॥ बिलवति संतांमसत्रवो  
तांमसषाषमिला५॥ ६॥ बिलवतिमा  
सौनादिपे॥ साधुबिधवा अंग॥ मुर  
लीजाप्रकोचिरत॥ करैधरमकोअंग  
७॥ मेलाहोलीकीरतन॥ सिरगुणति  
कारसिगार॥ जनमुरलीदेखैनदी॥ नू



लिरविधवानारि॥७॥किरकाट्याज्यना  
कैरे॥मुरलीविधवारंग॥कागमोटा  
पहरकै॥सुकचारषि-श्रंग॥ए॥बि  
धवादेहनविदका॥अरुहारमैरता  
मोल॥तनकंकवनिरषेनदी॥परहर  
मनकीजाल॥१०॥कसणीदेतनआ  
पसे॥बधएनदेहलगर॥मुरलीसुम  
रैगमेक॥सदासीलवतनारि॥११॥त्वा  
दबाटषटरसतजै॥मैदानिकटिन  
जाश॥केसबैसनिरगुणसदातजबि  
धवासोनदिषा॥१२॥उत्रैलोकनै

आणमन। यूरदै विधः। कारि। जनमु  
रली कलि कालसं। तव नलि होइत  
वार॥१३॥ षाटांमी वा चिरपरा। विध  
वा लेहन खाद। मुरली सुमरै रामकं  
तव नलि पावैदाद॥१४॥ विधै सबदन  
हीसां नलै। नैननरे धै जाइ। मुरली  
विधवा असतरी। रदैरां मल्योलाइ  
१५॥ निरगुणकी संगतिकरे। निरगुण  
गदै उपास। मुरली विधवा नारिकी  
की। तव सिरकी टलै अलास॥१६॥ नि  
रगुण बसतरपहरकै। निरगुण जा

झेदेह॥ मुरली विधवा असतरी॥ क  
रेन सरगुणनेह॥ १७॥ स्वाद गि एो सम  
सरसे॥ विषीया विष समान॥ मुरली  
विधवा नारिके॥ ऐ आचरण परमाण  
१७०० मरं मरम नारटे॥ स्वाद रवाद  
निवार॥ सील सदा हिरदै रधे॥ मुरली  
विधवा नारि॥ १७॥ विधवा साधु जन  
नकी॥ ऐ क मजल परमाण॥ ऐ ह रद  
णी मेरद सदा॥ सुमरै घद निरवाण  
२॥ साधु विधवा असतरी॥ वधेन  
धात सरीर॥ मुरली सुमरै रं मके॥ त  
बनलि उवरण बीर॥ २१॥ गालिगी तति

आणमन। यूरदै विधवा। हारि। जनमु  
रली कलि कालसं। तब नलि होइत  
वार ॥ १३ ॥ षाटा मीठा चिरपरा। विध  
वा लेहन खाद। मुरली सुमरै रामक  
तब नलि पावै दाद ॥ १४ ॥ विषै सबदन  
ही सां नलै ॥ नैन नरे धै जा प्र। मुरली  
विधवा असतरी। रदैरां म ल्यो ला ५  
१५ ॥ निरगुण की संगति करै ॥ निरगुण  
गहे उपास ॥ मुरली विधवा नारिकी  
की ॥ तब सिरकी टलै अलास ॥ १६ ॥ नि  
रगुण बसतर पहरै ॥ निरगुण ना

है गरीबी हरि न जे ॥ मनी न लावे अंग  
जन मुरली राते रहे ॥ हरि जन हरि कै रंग  
२९ ॥ बिधवा कं सो है नदी ॥ मुरली देण  
आसीस ॥ आपन निरकल होके पुन  
करै कसीस ॥ २० ॥ रां मरां म सुष उ  
चरबो ॥ बिधवा कं सो फलत ॥ औरां कं  
आसीस दे ॥ तो लाजे अपणो मत ॥ २१ ॥  
गति जग वै रां मकी ॥ करै माहासंत  
संग ॥ मुरली बिधवा असतरी ॥ त्प्राण  
और क संग ॥ ३० ॥ लोनी कां मी लाल  
ची करै नवाकौ संग ॥ मुरली बिध

वा असतरी रती रट्टै हरि रंग ३१ ॥ ह  
रि रसमाती नि तिर दे ॥ रषे त विष की  
ल हरि ॥ मुरली विष ई पुर सकं ॥ गिणे  
सरप सिघ्र जहर ॥ ३२ ॥ विधवा नारी  
पी व विनि ॥ जे क ब करे सिंगार ॥ ज  
न मुरली सो छे नही ॥ जाहा तां हाषा  
वै गार ॥ ३३ ॥ ती ज त मा सो म सकरी ॥  
त जै गी त अरु गालि ॥ सा म उ सा सी  
रां म कं ॥ रट्टै सी ल वत नारि ॥ ३४ ॥ मुरली  
विधवा असतरी ॥ ज जै रै एि दिन राम  
मन सावा चा करु नो ॥ द दे काम की

धाम ॥ इक्षु ॥ विधवा बधनी टैनदी ॥ प  
लौ पुरुष संजाइ ॥ जन मुरली सुकवी  
रहे ॥ हरषि हरषि जसगाइ ॥ इशारंग  
योग नारहे ॥ लिखे नदी चितराम ॥ नौ  
कल नलकानो देवे ॥ रहे ऐति दिन राम  
इषा ॥ धर उधर दे घे नदी ॥ चाले नीची  
नौ ॥ मुरली विधवा नारिको ॥ तब न  
ल उबरण होइ ॥ इए ॥ विधवा तन मोडे  
नदी ॥ रहे मरजीवी होइ ॥ अज ए नं ज  
ए सब तजे ॥ नौ गजन सर्वे को ॥ १॥ ४०  
सखी निरगुण उपासनी को ॥ अंग ॥

व्रा असतरी ॥ रती रट्टे हरि रंग ॥ ३१ ॥ ह  
रि र समाती नि ति र दे ॥ रषै त विष की  
ल हरि ॥ मुरली विष ई पुर सकं ॥ गिणे  
सरप सिघ ज हर ॥ ३२ ॥ विधवा नारी  
पी व वि नि ॥ जै क व करै सि गार ॥ ज  
न मुरली सो कै न ही ॥ जादा तां हां षा  
वै गार ॥ ३३ ॥ ती ज त मा सो म स करी ॥  
त जै गा त अरु गालि ॥ सा स उ सा सी  
रां म कं ॥ रट्टे सी ल व त नारि ॥ ३४ ॥ मुरली  
विधवा असतरी ॥ जै रै ए दि न रां म  
म न सा बा चा करे ॥ द दे काम की



धामा इदं विधवा बधनी नदी ॥ प  
लौ पुरुष संजाद्रा जन मुरली सुकवी  
रहे ॥ हरषि हरषि जसगा ॥ इशा रंगा  
यगा नारहे ॥ लिषे नदी चितरं म। नौ  
कल नलकाना देवे ॥ रटे ऐण दिन रं म  
इषा इधर उधर देषे नदी ॥ चालेनी ची  
नो ॥ मुरली विधवा नारिको ॥ तब न  
ल उबरण हो ॥ इए ॥ विधवा तन मोडे  
नदी ॥ रहे मरजी वी हो ॥ अज ए मं ज  
ए सब तजे ॥ नौ गजन सके को ॥ ५०  
साणी निरं गुण उपासना को अंग ॥ ॥

निरगुणकी दिठ गंगादे॥ सरगुणको  
करित्याग॥ मुरली प्यासी नावका  
सोही है बरु नाग॥ १॥ निरगुण प्रष्ट  
ली यो रहे॥ तजि सरगुण को पास से  
ही उपासी नावका॥ सोही साचा दा  
स॥ २॥ निरगुण गंदे उपासन॥ सर  
गुण नि कटिन जांदि॥ मुरली इष्टी  
नावका॥ निरगुण मांदि समादि॥ ३॥  
प्राण पान निरगुण सवै॥ निरगुण  
इष्ट उपास॥ जन मुरली रह ज्यो सदा  
उन संतन के पास॥ ४॥ निरगुण साधू

निरमला ॥ निरगुण नाडो देत ॥ निरगुण  
को सुमरण करे ॥ ससुण नां व न लेह  
५ निरगुण गुण संरद त है ॥ न जे श्रव  
नतरांम ॥ भैतें मनी निवार के ॥ त्या गेत  
न मन कांम ॥ ६ ॥ सुरगुण निरगुण कं न  
जै ॥ तो सी जै सब काज ॥ मुरली चाकर  
पेट को ॥ ब्रह्म से प्रले राज ॥ ७ ॥ घण दोडे  
उमेद गार सं ॥ मही नो बांधै नां हि ॥ तो सु  
रली ब्रह्म निवाज है ॥ करि ले आप सं  
मां हि ॥ ८ ॥ सरगुन कु छि राषे नही ॥ पात  
र पिं रु सिंगार ॥ मुरली निरगुण सतज न

निरगुण करै संचार ॥ ए सरगुण सो भ  
सवे तजै ॥ दिष्ट मुष्ट आकार ॥ निरगु  
ण सिद्धो ॥ वन को संग विचार ॥ १० ॥  
अनंदान निरगुण को जग ॥ नेद्विता  
वे परम गुरा ॥ सुकृत तणो जनेन भूषा  
भौ जन दी जीरे ॥ इति धर्मी मन फेन  
॥ सुरली ग्रह जाल में जतन जीव काणे  
हारां मरां मक होत लवसं ॥ आतुर के  
अनंदे हार ॥ आतर पात रजगत में ॥ सुर  
ली ना वनि धान ॥ आतुर त्पारै जगत सं  
पातर पा जिहान ॥ ३ ॥ सुरली हाथि पषा

तलै बहते पाएँ बीर सु मरण सु कृत  
की जीते ॥ ऐ मण माणक की सीर धारा  
मनिमत बरताई ऐ ॥ मुरली अंत जल  
चीर ॥ थापां मास्यो अति चले ॥ नदी यां  
बेरी नीर ॥ पारं मनिमत रिध बांटता सं  
की ऐ नांदी बीर ॥ मुरली बेरी छाटिता ॥  
प्राण ॥ आवै सीर ॥ ६ ॥ मुरली रिध जल क  
जला ॥ छाट्या वाट्यां जाण ॥ पड्यार ह्या सं  
विगडे ॥ निज स्याटे पिपि छालि ॥ ७ ॥ गुण  
चुपरिध बाट्यो करे ॥ मान बग इमेल  
मैक मनी आं ऐ मनी ॥ तो हो इजा इ ब  
लटा धेल ॥ ८ ॥ मनी मनी ल्यावै नदी ॥

बाटे दो इनह काम ॥ मुरली सुमरै राम  
कं ॥ तो आइ मलै घट राम ॥ ए ॥ राम  
निमत नदी यां फरण ॥ मुरली सति करि  
जां ए ॥ आन देत सब छापरा ॥ रिध जल  
की दो इहाण ॥ १० ॥ राम निमत नदी यां  
फरण ॥ मुरली सति करि जां ए ॥ उसर  
न उपासना ॥ रिधि जल की दो इहाण ॥ ११  
मुरली काण मण पाइए ॥ सति सत जग  
करि जां ए ॥ सी पा मोती नी पजे ॥ कौ इव  
षत रूषत परमांण ॥ १२ ॥ राम निमत वि  
नि बां ट बी ॥ जि सो ऊट को बाव मुर

लीदी जैरं महित ॥ करि करि हरेणें नाद ॥ १३ ॥  
रं मनिमत विनि बाटवौ ॥ छापर का बेरी  
रिधि जल नैक न सांगवै ॥ दोरुका दाका  
ढेरी ॥ १४ ॥ रं मना मनरत बतएणें ॥ मुरली  
माहाधरम ॥ रं म बिना सुन न सुन स  
ब ॥ मन विचि जानि नरम ॥ १५ ॥ मुरली जो  
कुच्छ की जीरे ॥ रं महितारथ जानि ॥ रं म  
बिना को बाटवौ ॥ मूल व्याज की हाणि  
१६ ॥ हरि जी सासा लोकि कौ ॥ विण जै नाना  
नव चौर ॥ जैसे उसर वेतीयां ॥ बीज शु  
मावै नौर ॥ १७ ॥ मुरली जो कुच्छ की जीरे  
रं मनिमति विनि बीर ॥ परबत आनउ

पासमें ॥ चढे डोल कर बीर ॥ १८ ॥ रामनि  
मतसे जो समद ॥ के सेंध के बीर ॥ परब  
त आन उपासमें ॥ को दो क्यं चम के सी  
र ॥ १९ ॥ रामनिमतको बाट बो ॥ जैसे आ  
बै मूल ॥ मुरली देवे आनदिति ॥ सोसा  
चे पातिबंबूल ॥ २० ॥ रामनिमतको बाट  
बो ॥ तरपतितीन लोक ॥ आनपानकंसी  
चता ॥ ऐकनपावेपोष ॥ २१ ॥ तरोष्या  
सबत्रिपतिदो ६ पान फल संनादि ॥ पा  
तफल सरनही ॥ पातफल तरमादि  
२ ॥ फल ग द्याफल जात है ॥ सबदेषोनि  
रता ॥ २२ ॥ मुरली फल आवैतबै ॥ आनफल



ॐ जा ५॥२३॥ आं धरम सब पु स पत्र  
ता फल नि जनो व पि को लि ॥ आं न पु स  
पट्टा वि ना ॥ हरि फल मिले न जा ए ॥२४  
ना व बी ज फल संतं ज न ॥ आं न दे व स  
व पां त ॥ फल संग पा वै बी ज द शि ॥ फल  
गया फल जाता ॥२५॥ संत वं डे सर धा  
ली यां ॥ नृषा दे षि रं जी व ॥ मुर ली वै नि ज  
गि ह स ती ॥ ता स पर स ए पा व ॥२६॥  
मो सर बी ता जा त दे ॥ चि ति नृ ना गी जी  
व ॥ स त सं ग सु क्र त न ज न को ॥ मुर ली  
ला ला ली व ॥२७॥ य ड्यार दे ग माल सब  
दे द जा ५ गों छू ट ॥ ता ते लू या जा पू तो ॥

मुरली लाफला कूट ॥ २४ ॥ तन करि ला ला  
नजनका ॥ धन करि डरबल पोष ॥ बुधि  
करिसंगति साध ॥ मुरली करी ऐजोष ॥ २५ ॥  
सुमरण पर उपगारकी ॥ चौरासी में हा  
णि ॥ ताते नरतन पाइके ॥ लीजे ऐट पिढा  
णि ॥ २६ ॥ राम नजन सत गुर मिलेण ॥ ता  
जो पर उपगार ॥ ऐ चौरासी में नासधै ॥ यो  
नरतन तणै विचार ॥ २७ ॥ जितने सास  
सरीरमें ॥ जितमें काज विचार मुरली  
नजी ऐरामक ॥ करस पर उपगा ॥ २८ ॥  
सत बांटे सरधा लीया ॥ बित न्रपणै उनमान  
मुरली तसत जाण है ॥ वैग्रह सती परमाण ॥ २

नृपगवाकापदलिष्यते॥ प्रथमराग  
 जैरु॥ जागिसयां नारवि लावे। सा  
 सगयापाछानदी आवे॥ टेक॥ नदीयां  
 नारगयां रसोर लो॥ आवे नां हि दरब  
 कितपे लो॥ १॥ चुरासधे सो देषिधहे लो॥  
 जागि जागितजि नीदनहे लो॥ २॥ पूजा  
 पाड हो प्रमति गह लो॥ सतगुर सबदां रा  
 मरमे लो॥ ३॥ सतगुर मेरटेर देहे लो॥ रां  
 मसुमर न्यारा हो प्रबे लो॥ ४॥ तजितन  
 धनमनपंचवषे लो॥ तबतं हो प्रसत  
 गुरकौ चेलो॥ ५॥ मुरली राम सबद क  
 है छे लो॥ एमो सर ए भाव उहे लो॥ ६॥ पद



रे। परहरि सब का चा॥१॥ रांमनांमनि  
रबाणदे॥ लैवांणि बुलावो॥ अनंत  
जुग का रूठडा॥ जाके बोलमनावो॥ प  
रांमनांम मुष नाषीरे॥ तजिदी जै आं  
टा॥ अंतरपम जगाईयाहरि आवेन्हा  
ठा॥३॥ साच सील संतोष सता॥ हिरदा  
में जागे॥ सुरली उन कं रांमरस॥ अंति  
मी गं लागे॥४॥ पदा॥१॥ तालबबदा  
नांव॥ निरम लज सगावे॥ अगमयी  
याला नरयीवै॥ विषीयां बिसरावै टेक  
रांमन जे गहे सुरतिके॥ पवनो थरि रा  
षे॥ मायापासी काटिके॥ रसनोरसचा

वे ॥ १ ॥ समादिष्टी सबजी वस ॥ प्रोहोता  
षणि मारे ॥ सीलसदा उरि धारिके ॥ आ  
पागदं जारे ॥ २ ॥ पां च करि भे पक डिके  
त्रिगुण बंधि गषे ॥ मन् बुधि चिंत अहं  
कारके ॥ अतर सं नां षे ॥ ३ ॥ यो मो सर मि  
लसी नदी ॥ कलि जुग नर देही ॥ मुरली  
ना न्हा होइ के ॥ नजिरां मसने ही ॥ ४ ॥  
पदा ॥ अथ राग गौडि ॥ संत सोदा गर  
आयारे ॥ वैरां मजिन सिधन लायारे  
टेक ज्यो मांगे तादि तो तैरे ॥ सुष सबद  
अमो लक बो लैरे ॥ १ ॥ साच सीलसी जि  
न सारे ॥ वै तो लत न ल्या वै सन सारे ॥ २ ॥

धन देवेरे ॥ वैसा इहां मन

। मुरली सत सत नावेरे ॥ उ

गवेरे ॥ ४ ॥ पद ॥ १ ॥

मे कां जे हो ॥ जां हां रसन

जे हो ॥ टिका तन मन हनि

। वाहा एक रंग क हल

जावे हो ॥

मिलावे हो ॥ २ ॥ क

कारा हो ॥ जां हां भजन

रंग रस

वृत्त नावे हो ॥ ४ ॥







वा-अगमदेस जाके गावे संकरसा  
धसेस देक यापथमैनादी राडिधा  
डि जाहा सुरतिसबद की बाधिबाइ  
अगम बुद्ध गमहो ५ सहज जाहा  
सतगुरहरषेपरषहेज ॥ १ ॥ सतगुरसं  
बद विचारगौर ॥ यारामनामसमना  
दीओर ॥ सुषपीषतकौ अरथदेत  
जाहा नावमाहातम क्ल्यौचेत ॥ २ ॥  
नावमाहातम अति अगाधि ॥ न  
या जानत सुष आगौ तसाध धर  
मनेमतप जागजिग जाहाग्यानआ  
दिनही तुलैतिग ॥ ३ ॥ सुरतिसुमथ

आगौतकदत ॥ नयारांमसुमरम  
नदी ५ सुचेत ॥ एदसिषावनदेततौ  
दि ॥ तंसतगुरसबदासुरतिगो ५ ॥  
४ ॥ रामनाममैसबकोथान ॥ जांहा  
ग्यान नगति बेरागजनि ॥ सोमुरली  
कं मिल्योहै ॥ आ ५ ॥ ऐसतगुरक्रिया  
सदजना ५ ॥ ५ ॥ धमालि ॥ १ ॥ माधो  
साधसगतिमोदि दी ज्योनिति ॥ ते  
रेचरणकबलताजे जाऊन अंत  
देक ॥ साधसगतिमदमा अपार ॥ न  
यासुरनरमुनीनदी पावैपार ॥ अन  
तमुकतिजाके तुलेनलार ॥ जा

टचेतनकौपावै सार १ साधसंग  
तिबं छै सनक ॥ नया नौ जोगे सरस्व  
रजनक ॥ नारद सुष अमरी कना ५  
नयारषब कपल देतं तीमा ५ २  
सिवबिसन ब्रह्मादिसेष ॥ नया नौ  
लासारद ऊमापेष और अनंतक  
छ कख्यानजा ५ नया साधसंगति  
वैकंटी ना ५ ३ नौनीथ चौरसीति  
धनया साधसंगति जाहा सोहाप्रस  
ध ॥ नरधर गोपी चंद्र जोग ज्या साध  
संगति करित ज्या नौग ५ साधसंगति  
सुष अगमपूर नया नजनकीयां सु

क

षभलकै नर। इम तपी वै छुकि छक  
ज्या तनक चन करिमा ह्या षष ॥५॥  
जाहा च्यारिपदारथ अष्ट सिधा। त्रि  
नवन सुष जाणै। अति नैषेदारै करां  
मको जाकै रंग। जन सुरती मांगै उन  
कौसंग। ६॥ धमाल। १॥ अष्टरागक  
फा ॥ मोदिसत गुर अगमलषा द्वि  
हो। हाहो जै सैरजनी मै अरक उजा  
स। टेक नां वदिटा यौरांम कौहो। सुम  
रण सास उसास। रसना रस इमृत ऊ  
रैहो। पीवत लगैहै मिनास। १। सत गुर  
मेरा वम उपगारी। की यो हो परम उप

गार॥ नांव वता यो राम को दो॥ जास  
छटा हो नरम बिकाश॥ २॥ ग्यान न  
जति बैराग को दो॥ नलो जीवताया  
षोज॥ जाणे सो माणे सदा हो॥ वैचो  
ध्यापदकी जाहामोज॥ ३॥ नावन फो  
जाणे सो माणे॥ एक डि पती ब्रतराम  
मुरली तरली लाइ नाव सु पायो दे  
मोषि मुकाम॥ ४॥ धमालि॥ १॥ सब  
संत सहे लाराम की दो॥ दादो साधो  
पती ब्रत सुष हो शेटक॥ पति ब्रत प  
कडो नाव को दो॥ जेजे न ऐजी निहाल

रं मया वषप्पालापि द्वे हो इभ्रतस  
बदरसाल १॥ कांसक्रोधजां हारह  
ननपावै ॥ लालचलोन्नकोशकै  
सांशकैसाधवा ॥ जां हो ब्रह्मविलासी  
होश ॥ सा लदया सरपाव बाणो है  
ऋषण सब संतोष ॥ प्रेमप्रीति पाव  
संमिलिषे तै ॥ चौथा हो पदकी मो  
ष ॥ शरंकार पद परसी या हो सतगुर  
मेल मिला ॥ मै तै पड दाहर निमाया  
हिरदे हो दरसदिषा ॥ ४ ॥ मै मंद ज्ञा  
गी कछु नदी समजू ॥ लघुजी रामको  
नांम ॥ मुरली कं सरण गति ली जै ॥ बि

उदतुम्हारीराम ॥ ५ ॥ ध्याहि ॥ रा ॥  
अथरागत्रासासिद्ध ॥ मेरैभनरेर  
इतनिरंतर ॥ कबहरिदेषू नैनां हो  
उदिननाथकरो क्रियाकरि ॥ बोले  
दसिदसिवैनां होटेक सतगुरसेन  
लषाईदमकं ॥ रामरसनसंकदनां  
हो ॥ सासउसासनिरतनासापरि ॥  
सुरतिसबदके चदनां हो ॥ १ ॥ इम  
बिधिगमरुतसुषयाया ॥ सुधाजरे  
मुषवैनां हो ॥ कंठ ॥ सप्यांनसुरति  
सपीवे ॥ प्यालांनरिनरलेनां हो ॥ २ ॥  
दिरदैमहरिकरी परमातम ॥ सुरतिध



साहो प्रेनाहो ॥ इधर उधर दो प्रगइना  
नके ॥ रोमरोम धुनिगेनाहो ॥ प्रबंकना  
लहो प्रचव्यातुरकटी ॥ सुनिमं कलसु  
षश्रेनाहो ॥ वासुषकी गति सतगुरुजो  
हो ॥ हाक वाक नही कहनाहो ॥ धमुर  
लीराम सरण सतगुरुकी ॥ गावै सुनकी  
सेनाहो ॥ रामसुमर जनराम समाया  
जनमभरन दुषदहनाहो ॥ पाधयालि  
॥ सादिव मेरा आपर मइया ॥ मैचरण  
की चेरीहो ॥ सुरतिनिरतिनिरषुनिज  
मरति सुंदरी हेरीहो ॥ तनमन धनन  
वडावर करिके ॥ वारिउतारुकेरीहो ॥

१। रमै गुलाल लाल मित्ति प्यारी। ये  
मफ वारां नेरी हो। के सरबि सरन  
जन न लके। बदन सदन अरणीरी  
हो। २। उति मगुण गद एणें सजि सुद  
र मो हे पति जत लैदरी हो। और न चि  
त वैदिष्ट मुष्ट जन। हो रदी हरिकेरी  
हो। ३। पीव बिनिजरी कामना हज्जी  
सूफी सतगुर सेरी हो। राम नाम धनि  
जिन रूपया। अविनासी पति मेरी हो  
४। न जन करत सब नर मन सानो।  
राम रसन सुटरी हो। सुरति सुदाग एण  
नई सबद मिति। मे टि मदन जग फेरी

हो॥५॥ सुरली रामरामपी वपायो॥ सुनि  
सिषर चढि देरी हो॥ सुरति न प्रमुसता  
कपीया मिलि॥ तौ डि नवमकी बरी हो  
६॥ अथ राग बहंग॥ मन अब रामदी  
रामरटी जे मन साबा चा और करमना  
अने दान निति दी जे टे का हो प्रकत न  
जो अब नासी॥ साध संगति करि ली जे  
तादा मि नष जनम कारे दी॥ रामरसा  
इणपी जे॥ श्यां चपची संजी त्या चा फे  
तो मुमरण करि ली जे जे सी वातराम  
कं नावे॥ ते सा कारजि की जे॥ रा हो प्र  
चपचाष फाल मेर दी ए॥ जब जा प्र का

रजसी जै ॥ मुरली राम राम नजिनाई  
ज्यंजनममरण डुष छीजै ॥ ३ ॥ पदा ॥  
बंदेजेतरामसमंधी ॥ तोतकरिदे ऐकी  
षंदी देक ॥ ऐकपदरिफजरसाफइ कप  
दरा ॥ यकरिषंदी उतारौ ॥ काम करतही  
करौ क माई ॥ रसना राम उचारौ ॥ १ ॥ प  
रउपगार व्याजमें देवौ ॥ ७ ॥ उत्यागसत  
बोले ॥ तैलेदे ऐरदो ऐकरसि ॥ पूरा सबक  
तोले ॥ २ ॥ षतनागे चौरासी करौ ॥ रामद  
यालनिचाजै ॥ मुरली राम राम नजिना  
ई ॥ ज्यंपारदोइ सिंधज्यादाजै ॥ २ ॥ पदा ॥  
रजकील गडौ ॥ सतगुरउपगारी उपगारी

ब्रह्म तदेष जीव नौ नीतिरः कृतसि रज  
जाप सारी टेक ॥ ज्येत्पू कर उपगार उपावे  
देषि जगत दुष हारी ॥ ज्ञान नगति वैरा  
ग अगम गम ॥ ताद्यटि कवे संचारी ॥ १ ॥  
अगम निगम का नेद्वता या ॥ काटी क  
रम कि वारी ॥ नरम नान नौ सिध लघा  
या ॥ मेल्या मोदि मूरारी ॥ २ ॥ अंधे सदर  
अगम धर देष्या ॥ पं जे दोर करारी ॥ जंगे  
ज्ञान विज्ञान उचा ह्या ॥ सत गुर महरि  
बिचारी ॥ ३ ॥ चंचलं चयल चलय अरु  
बकले ॥ ताका मूल उषारी ॥ गुणा कीया  
जगत संयगा ॥ दे प्रम्वर सजारी ॥ ४ ॥ तीन

लोक सुषतु च दिषाया ॥ चौथे बंधाया  
शी ॥ ऐउपगारतु मारा सतगुर ॥ मैतो जा  
व विकारी ॥ ५ ॥ मुसकल सं ले सुगम  
दिषाया ॥ बक सिरक म म का ॥ मुखी  
रंम रंम गुर पाया ॥ राम चरण अवता  
री ॥ ५ ॥ ५ ॥ सतगुर अवतारी अ  
वतारी ॥ निजर निहार निहाल करे जी  
व ॥ रोप निने घर सारी दि क ॥ सुरति स्व  
द कामे ल मि ला वै ॥ पंचर गर ग बिहारी  
त्रिगुण पासा मारि अफटा ॥ असा अ  
त ब विहारी ॥ १ ॥ चौ प उ जी ति अगम  
घर पाया ॥ सतर ज जा प्र सं नारी वा जी

जीति प्रीति बल सुमरण ॥ रस वैजयं  
कारी ॥ रा ॥ पांचपची सच्चारिषट्त्रिगु  
ण ॥ जीतिष्पालमजारी ॥ रामसुमरजम  
रामसमाया ॥ बहुरिनरोपेसारी ॥ ३ ॥  
रसनादिरदेनांन कवलदोश ॥ गरजे  
गिगनिमजारी ॥ वंकनालत्रिकुटीकेका  
जे ॥ वैठेस्यामसुरारी ॥ ४ ॥ चौथोपदती  
नगुणभ्रागे ॥ कायाकंणविचारी ॥  
मायाथाकरहीनात्रीसं ॥ पंहुच्चारिक  
रकारी ॥ ५ ॥ त्रेसाष्पालपिलावैसतगुर  
जेकोइदोइपिलारी ॥ मुरलीरामरामप

तिपरसे ॥ तज्यां जगत की यारी ॥ १ ॥  
२ ॥ एक दिन उठि जां एण उठि जां एण पाप  
पुनि दोन्स संग ले के ॥ बस एण जाइ मसां  
एण देका ॥ मात पिता महरि सुत जाया  
गजर जतुरी बांदां एण ॥ धरे रदै जां हा के  
जां हां यं ही ॥ जब जाइ हस उमा एण ॥ १ ॥  
राजार क पातिसा जाइ गा जाइ गारा व  
तरा एण ॥ आचा बूची जाइ अ के ला  
जब जम करे पया एण ॥ २ ॥ देवत जाइ ग  
लेवत जाइ गा ॥ जाइ गारा क सदां एण ॥  
अण जां एण घट आइ द बावे षाण नदे



वैष्णवो॥३॥ पांचतती नृगुण जांदा  
लगा॥ करसी काल पिलांण॥ अष्टषष्ट  
काजी नट मुलां॥ सबकं उ सपंथ जां  
ण॥ ४॥ सरबीरसां वत सिध साधिक॥  
सब जम बूक बूकांण॥ उ बरुवा राम  
रंगी ला हरि जन॥ गुरमुष चोट चुकां  
ण॥ ५॥ पहली चेत पेंतर प्वा ल्या॥  
ज्यां गाभा नर आणया॥ गाफिल रखा  
जेके पि छताया॥ जमके हाथ विकारण  
६॥ मुरली राम राम नजि नाई॥ ओस  
रबी होरन आणण॥ ६॥ ओसरयो मावव  
एषो है॥ करिलै अण

द्वयं जगत्कारकं ॥ अत्राणीरामनगा  
योरै ॥ ऊठे जां ऊट जगत के ॥ पडि ज न म  
गुमायोरै ॥ कजां ए वृफि विषषाद्र्यो  
स्मिर कर म च ठायोरै ॥ १ ॥ सुकृत सोदा  
नां की या ॥ डुर मति विष वायोरै ॥ साष  
लुण्ण सो रो न्रयो ॥ ज म हारि प ग योरै ॥ २  
सुत बित बंधू अ स त शी ॥ कोर् साथिन  
आयोरै ॥ री तां हाथ्या ऐ क लो ॥ मरि मर  
दुष पा योरै ॥ ३ ॥ स त गुर सा धू रा म जी  
तां हां प्री ति न ला योरै ॥ स गा सं जे ती छा  
दि के ॥ ज म हा थि वि का योरै ॥ ४ ॥ रां म क  
हां स रं म जी ॥ ले हा थ सं म्हा योरै ॥ ज न

मुरली सुमरण विनां॥ ज्योति छट काया  
रा॥ ५॥ पद॥ १॥ मुसा परजाग ज्यो योरे  
नरतन बाजी हारिके जु गजुग में रो यो रे  
टके। मुसा परी दिन च्यारिकी॥ होइ अम  
रग जो यो॥ करम की या संसार का॥ सिर  
सां सोढो यो रे॥ १॥ सुपने रा तो जगत के॥  
विषी यारस मो द्यो॥ राग दोष में तै मदी  
पडि जनम विजो यो रे॥ २॥ ऊग सुषसा  
चा की या॥ ता में मन जो यो रे॥ प्रात मसु  
ष प्रमातमा॥ तादि सनदी जो यो रे॥ उकां म  
क्रोध का की चमै बुधि बस तरखो यो रे॥  
ग्यान नीर में न्हाइ के॥ नदी पंकन

३४ ॥ श्रवतो चेत श्र आंगिया मौ यो  
सौषो योरे ॥ मुरली तरली नावकी ले  
सुष संजो योरे ॥ ५ ॥ पद्मारा ॥ नत्पत्तय  
नत्पत्तय ॥ रिपरदेसी पावणा ॥ यां हा क्य  
रह्यो लुजा ॥ विषरी सुरति समेटिके  
रोरामनामसु लगा शाटि वातन मन  
इंशी प्रक त्यारे ॥ इ नदित सृजन षो ॥  
समता सीलु संम्या ॥ कैरे ॥ सुरति सबद  
मै जो ॥ १ ॥ खिर खेर पावे नदीरे ॥ मिनष  
जन मसी सृज ॥ ताते चेत संम्या लिके रे  
पद सत गुरका पूज ॥ २ ॥ बो दोरिन श्रैसी  
पावसी रे ॥ नरना ॥ क सी रे मोज ताकर

अजि नगवानके गह संतनकाषोज  
३॥ बागवाव ड्राजिनरमेरे जंगड  
लीनिवार साधसंगति करि प्रीति सं  
रसना राम उच्चारण ॥ मातपितां सुत  
नां वजीरे जाहो तांदां मिलसी श्री ली  
राम संत गुरदे वजीरे एनदी मिलेनि  
धां न ॥ ५ ॥ ताते मन अब समझि कैरे ॥  
करि सुकृत अजि राम ॥ जनमुरली सु  
मरण विना ॥ हजात जिबे कांम ॥ द्वापद  
॥ सब जग चाल्यो जात हैरे देषर  
करो विचार जाकरि भजी ऐ

परहरि चरमविकाररे ॥ बोदोत ३  
लननरतनमित्पेरे ॥ आगमित्पे  
सतसंग ॥ जाकं विथोनषोइरे ॥ लाग  
कुसंगासंग ॥ ब्रह्मासेसमदेससेरे  
तरसेवारुवार ॥ नरतनदीओराम  
जीदो ॥ जासंदोइउधार ॥ २ ॥ ओसो  
धनतेपाइयैरे ॥ माहामुकतिकोडा  
र ॥ जाकं दोरलगाइऐरे ॥ अजिचिअ  
वनपतिसार ॥ ३ ॥ रांपकहोसमता  
गदोरे ॥ सतगुरचरणलागि ॥ जनमु  
रलीतवही मिटेरे ॥ जनममरणकोदा

ग॥ धा॥ पद॥ श॥ राज के दारे ॥ मो सर  
क कोरे संसार ॥ स म न जन की संज  
कं ॥ ते षो द्विषीया लार टक ॥ दोरा सी  
लष भुगत तारे ॥ दार न दुष न्य पर ॥  
षिन षिन में जन में मरे ॥ अरि ष नो  
की धार ॥ १ ॥ च्यारि जुग का ता घत या  
ली ॥ उपरि बी सद जार ॥ अनां जां नां  
ग्रन हां नां ॥ सद नां ज म की मार ॥ २ ॥  
परा धी न पर वा से प डारे ॥ नां दी सुष ल  
मार ॥ मि न ष जन म सुदा धी न दो रे  
न ज्यौ न सिर ज ए हारा ॥ ३ ॥ सत गुर सर  
ए नौ दोरि न मरण ॥

सारं राममुरली कांभपूरण सास उम  
ससम्हादि ॥ ४ ॥ पर ॥ ५ ॥ नरकजी तो  
रे संसार ॥ कांभतजि नजिरं मरसनां  
नयौ जौ जल पारटेक ॥ सीतल धास्यौ कां  
ममास्यौ ॥ संघति विपति विभार ॥ ममत  
प्रायात्याग काया ॥ पायौ मोष करार  
१ ॥ अंगन त्याग्यौ ध्यानलाग्यौ ॥ दुबध्या  
प्ररिनिवार ॥ तिसनांतरक विकार छटा  
बूवापेम अपार ॥ २ ॥ आसकाटी कुर्वध  
न्हाठी ॥ लालचलोत्र अपार सुपन ॥  
सांसां जाजियां सो ॥ जागि ज्यौ करतार  
३ ॥ मानमूवा मोदो जूवा ॥ क्रोधबूवाकार



सबद पाया सा च श्रया ॥ ऐकरकार म  
 कार ॥ ४ ॥ पांच मरीया ती नषरीया ॥ च्या  
 रिदरी याहार ॥ पंची सां कासी सकाद्या  
 लाद्या अबकीवार ॥ ५ ॥ नां वने जाये म  
 से जा ॥ रो पिर जमां धार ॥ सुरती भरदा  
 रिगरदां ॥ आयो अपनो त्पार ॥ ६ ॥ पदा  
 रा ॥ अथ ग्रंथ प्रबंगसार का सब  
 लिख्यते ॥ प्रथम गुरमिलाप कही रहै  
 चौपई ॥ प्रथम गुरमिलाप मै जां ऊं  
 जाते अद बुसत को पांऊं ॥ गुर प्रसाद  
 ते अगम प्रकासे ॥ गुर प्रसाद ते क्रम वि  
 नासे ॥ गुर प्रसाद ते प्रम प्रद पावे ॥ गुर

प्रसादतै बंधनसावै ॥ गुर प्रसादतै अम  
रगति होई ॥ गुर प्रसादतै जंजैन कोई ॥ र  
ता की साषिकदै सब लोई ॥ वेद पुरांन  
अरु सुमृति जोई ॥ परसो गुर अति डुल  
न जाई जाकी डुल न ता करु समझाई  
३ साषिसाषी ॥ सतदास जी कही ॥ ५  
लनई संसारमै ॥ सत गुर कादी दार ॥ लेपहुं  
चावै मुकतिकं ॥ इन काए उपगार ॥ ४ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ता न गवान वाच्ये ॥ श्लोक  
नां नानासाध्यवै लोक ॥ नां नां देवषु पु  
जन ॥ नां नां तीर्थानि ष्य कश्चि मुक्ति  
नासती गरु विना ॥ ५ ॥ टीका ॥ वेदसा

गरुजीदयाहृजासंपाईरेजमोषपद  
सदसदासंभनांमन्नजनकराईहे॥१॥  
रुबिनासासतरपटीरेजनांनोवत  
नांनोवततीरथसनांनविधिलांईहे  
श्रीरक्तं ननेकदेवपुजतजो नली  
नातिसांतिनांदीगरुबिनामुकति  
नपाईहे॥ तातेगुरदेवकेचरणारवि  
दधारिचितरतकरैसंभजीसंभगति  
नपाईहे॥६॥ शिवजाक्य॥ श्लोक॥  
उलन्नत्रिषुलोकेषु॥ ततष्टएषवक्ष्य  
म्यहगरुब्रह्मविनांनान्मृत॥ सत्यस  
त्यकदा म्यह॥७॥ टीका॥ कर्मलया॥

डुल नती नं लोक मै सत गुरकादी  
दार ॥ परसत नासै अनंत दुष सुषया  
वै निरधार ॥ सुषया वै निरधार पार न  
व सागर दोश ॥ गुरविनि आन उपाइ  
मजल पत्त चैनदी कोश ॥ इ सुर कहै सु  
एइ सरी सत मां नं सो बार ॥ डुल नती  
नं लोक मै सत गुरकादी दार ॥ साषा  
सत गुरकादी दार मै सत न सफल एद  
रं ममिल एकी जुगति कं एद वतां यो  
देह ॥ मिलै नइ स नौरं तदा स सत  
गुर जदा सैण पूवा अमळू माइ करि  
पकडा वत सत वैण ॥ ए रं म चरण बी

जकविनां जौधरमेंधनदोः२ यूँ पूरा गुर  
देवविनि॥ ततनदी पावे कोश १०। रंमचर  
ए पूरा मिल्या॥ दीना ततबता १॥ जनमम  
रण कात्रैमिया॥ सांसारह्यनिका १॥ ११॥  
कबीरग्यांनप्रकासी गुर मिल्या॥ सो जन  
बीसरजा १॥ जब जौ बिंद क्रिया करी॥ तब  
गुर मिलीया ॥ ११॥ २॥ कबीरसत गुरका  
उपदेसका॥ सुणितू ऐकं विचार जोसत  
गुर मिललानदी॥ हो जाता जमकै द्वार १३  
कबीरजम द्वारामें प्रतसब॥ करते श्रेत्वा  
तानि॥ उनतै कवत न छुटता॥ फिरहाचा

रूषानि १४ कबीर चारिषानि मै नर  
मता कक न लंघते पार ॥ सीतौ फेरामि  
टगया ॥ सत गुर कै उ पगार ॥ १५ ॥ कबीर  
गुर पारस कै ॥ बमा अंतरा जानि ॥ वेलो  
दाकं चन करे ॥ वै करि है आसस मान ॥  
१६ ॥ सोरठा ॥ गुर बिनि नांही ज्ञान ना  
वैमी लाहरि मिलो ॥ ऐ नाषे वेद पुरान  
सु म्रत अर संकर कहै ॥ १७ ॥ उहा ॥ गु  
र मिला प मह मां कही ॥ फुनि सिष प्रन  
उ चार ॥ गुर लषण अर न गति अंग ॥  
आगे नवल बिचार ॥ १८ ॥ अथ गुरद

महकदाएहें ॥ गुरबचन ॥ चौपद ॥  
हेसिषततौबमौबिचषण ॥ सोतैपूछै  
गुरकेलषण ॥ प्रथमतोयाकोगुरएहा  
यामेतोकछुनांदि सनेहा ॥ १ ॥ अबतौ  
कंगुरलषणसमजाऊ ॥ तिनैसबसंदेसु  
माऊ ॥ त्रैसैलषणसोगुरपीरा ॥ स्वाति  
सतिताअतिमुतिधीरा ॥ प्र ॥ गुणइंडीम  
नताकैनाही ॥ ब्रह्मरूपसदेवैसबमांही  
करणनिधिक्रियालसदाई ॥ साषिषु  
रातमकहुसमजाई ॥ ३ ॥ श्राषि ॥ किव  
सोसंतगुरनिज

एवता वै जतमत संतोषपोषदे सिष  
निपादे ॥ नरम करम अरजोगसोग  
संसारनि करै ॥ ती नतापकी जल ए  
दृषण नवपार उतारै ॥ करणधारकर  
एण सुणे दया धरम कौमूल ॥ राम चरण  
ताकी सरणि मिटि जाइ संसे सुल  
४ ॥ सत्राचार येवा कां ॥ चौपइ ॥  
सति असतिको निनिकरि जेवा नि  
जकल्यान कइत जोए वा ॥ सोइसत  
गुरपगट तुम जानो ॥ मन वच काइ  
नलो करि मांनो ॥ ५ ॥ साषी ॥ कबीर



नरबेरी नहकांमता ॥ सांईसेतीनेह  
बिषीयासंन्यागरहे ॥ संतनकां  
गरेसादाजनहरदाससोहीजन  
नला ॥ अजे अषंरुतरंम ॥ रागदो  
षमैतै नही ॥ जोगमूलसंकांम ॥ क  
मक्रोधतिसनांतजी ॥ त्रिबधिता  
पकांमसनांमनांमदिरदैसदाजन  
हरदासपूदास ॥ ७ ॥ गुणंतीतईशा  
जती ॥ निसादिनसुमरैरंम ॥ रांमचरण  
असागरु ॥ सारैसबहीकांम ॥ ए ॥ अ  
गलबगलकासंतदास ॥ देवैसबअ

मषोर पकडा वैश्वकरांमनां म कहीते  
सतगुरसो १० दाप्रसतगुर श्रेसा  
कीजीते रामरसमाता पारउतारैम  
लकमै दरसएकादाता ११ तुरसी  
पुरेगुरबिना मनकी अतिनजाइ  
नावैकोटकी रतिसुणै कथासुणै  
बहुनाइ १२ रामरतनरबंधमतस्त्रा  
दुबादपरत्यागरामचरण श्रेसागर  
तौसिषको पूरण भाग १३ चौप  
ग्यान अध्यात्मकेदातार फुनिदिषता  
वै आत्मसार तुरसीतेहीगुरपरब्रान

और गुरकद्वे मातर ज्ञान ॥१४॥ क  
द्वे मातर के ॥ उतर ॥ साषी ॥ कबीर  
ना गुरमित्या न सिषरु वा ॥ रही अध  
री साष ॥ म्मि मुका इ मुकति के ॥ चा  
लन सक्या एक त्रीषा ॥१५॥ त्रीषरेक  
नही चल सक्या ॥ थक्या वा इका वा इ  
सत गुर सोही जाण रे ॥ जा कै रां मरत  
न उरि मादि ॥१६॥ कि वत ॥ सो कही ऐ  
गुरपी रतत बिण जे हरि दी रा ॥ हरि बि  
नि बिण जे और सोही दो जिग का की  
डा जाणे सब संसारना व विनि को इ

नसाज्या विनां नगति नगव तज  
वपरिज्ज्वीहीरीज्या करिए उसका  
न्यागबाट जौपरगट मारै हरिमार  
गसंफेरजाइ दोजिगमे मारै जनरज  
बज्जुवेगरुतिनको कांहा अधिकार  
नगतिवतावे अनकी बोवे कालीधा  
रा १११ साज्या ॥ नांनं १११ बताइ दे  
विषे नोगने नांदि चेतन औसागुर  
कीयां बुझ जाइ औसांदि १८ गुण १  
झीके सुषचहे मांमै बुघ ज्यं ध्यान  
ऊगगुरकी मंममाई

विषयवित्तै जग अर्थात् इति साधु  
लेखणं चैनां सा गौरव कहे ते गुरु  
राम ॥ २० ॥ ताषी कनक क्विस काम  
का ॥ तासु नाना हेतु ॥ इत्यर्थ की  
वाता करे ॥ प्रथम गुरु वही को १०१  
मित्री विषय गुरु करे ॥ अर्थ को ही ज्ञान  
जगनां यते जग पृथी ॥ न्याय क्विस क्विस  
षा ॥ २२ ॥ गुरु अर्थ ग पृथ पृथ विनि ॥  
सिषसाधा क्विस ॥ वा क्विस क्विस  
विना क्विस उत गे पार २३ ॥ दा क्विस सा  
जीवका सिषसाधा क्विस ॥ वा क्विस क्विस

आरापडी ॥ हो प्रगाक एहवाल ॥ २० ॥  
सिष्पालते बावरे देतेषरेनिलज मसा  
बिलिमावेनही ॥ पूछडु बांधे छज ॥ २५ ॥  
अपए सिषन सीषीया ॥ कीते सिषह  
जार ॥ सुधरास का कंसडा दोन्युके  
सिरजाडि ॥ २५ ॥ सोधी नही सरार की ओ  
राके उपदेस दात्र अचरज देषाए ए  
जादिगे किस देस ॥ २६ ॥ देस असकी गम  
नही ॥ गरु कहावे नाम ॥ राम प्रताप जेगु  
रनही ॥ जे सिषपे चा के दाम ॥ २७ ॥ जेटुक  
चाके सूत क ॥ मातापोवे सोश कहै क

बीरवा गरुसं ॥ कदेन जला दोशः ॥ प्र  
जाले गुर दोशकै ॥ सिषनिर वरत नदी की  
ना ॥ कहै चेतन वै गुर नदी ॥ बट पा डो प  
रबी ना ॥ २९ ॥ बट पा डो क्य ॥ संप्रस  
तका ॥ डला ॥ सुमर सुमारत राग एक  
सो गुर साध प्रमान ॥ आनद सा नरमा  
इदे ॥ ते बट पा डे जानि ॥ ३० ॥ साबी ॥  
जते अंधे गुर घए ॥ नट के घर घर बार  
कारज को इसी जे नदी ॥ दाह माथे मार  
३१ ॥ कबीर अब का गुर घर घर फिरे ॥  
दिषाद मारी ल्यो हा को इ बु नो को इ तरी

टको धोवता द्योह ३३ नदी सबरसत  
ता असतता बरतांदि ॥ असें गुरजन  
बोदातदे ॥ तुरसीया जुगमांदि ॥ ३३ ॥  
तया ॥ चोपद ॥ सांग धारमाया संला  
गादी नडनी दोन्या सुनागा ॥ विषई  
गरु विषई चेला ॥ अधधुंधमे देलमदे  
ला ॥ ३४ ॥ साया ॥ इक गुरनिष्ट विक  
ल बुधि बह बुदावे और ॥ तुरसीतिन  
को संग कीरि छटे ननर क अघोर ३५  
कनक कामनी गरु के ॥ सिषरु के फनि  
साइ तुरसी तरे नवजलमदी ॥ लोहिली



दिमिलिदोऽ॥३६॥ किव्रत॥ ऐके धीका  
व्यावरे ककानाता कारणे ऐकचदा  
वण जोग ऐक का सोत गचरनां॥ फेल  
पडौ पिरवारषाण के क डुवा लैडे॥ आ  
पाण चढतीत के पार की चढती फौडे॥ अ  
सी बिधि का गरु अरु लि बिनि आधे की  
न्हा॥ मदि मुगद की आं व माल घर का मु  
सिली न्हा॥ रजव बोदथ सार की मादी ला  
दो सार॥ अिदी को अिदी गरु यंबू मौस  
सार॥३७॥ नारद गी ता को॥ श्लोक॥ न  
जवानवाच॥ पाषाणस्य कृते नौका॥

सार-चार न धारयत ॥ अहा गरुन क्रब्धं  
नरंते न तारयेत ॥ ३७ ॥ सा ॥ कबीर  
ना गुरमित्पानसिषमित्या ॥ घेत्याला  
लचमाव ॥ दोन्पुं बुमावापडा ॥ चढपा  
दणकी नांव ॥ ३९ ॥ गुरषटरसबसिदो  
प्ररुहा ॥ सिषबिचिपांनी लून ॥ तुरसी  
दोऊं अंधरे पंथबतावेकून ॥ ४० ॥ कबीर  
जा का गुरदे अंधरा ॥ चेत्याषरा निरंध ॥  
अंधे अंधाठे लीया ॥ दोन्पुं कें पपडत ॥ ४१ ॥  
कबीर जाणता बूज्या नदी ॥ बूजन कीया  
जोन अलांक अलामित्या पंथबतावे

कंन ॥ ०२ ॥ हेरा दासजी कदा ॥ बात  
कदे आकासकी ॥ आयर सतल जाइ  
वाग्पानी गुरसं मरिष जला ॥ सकैन औ  
रनुलाइ ॥ ४३ ॥ जो जलतरस्यो बिचारि ॥  
तोसारी नाचसं जोश ॥ तुरसी फूटी नाच  
मै ॥ चढि मति बूमै कोइ ॥ ४४ ॥ जो कब जे  
रेवै तीरे ॥ फूटे जेरे मांदि ॥ तुरसी जब क  
मति परै ॥ तब जांदां रदी ऐ नादि ॥ ४५ ॥ अस  
तता आवु पहर ॥ संतता सुपने नादि ॥ सो  
गुरफूटी नाचरै ॥ चढ स बूमै मांदि ॥ ४६ ॥  
कबीर बूमै मति रे बावरे ॥ ऊठे गुरकी सं  
ग राम बिमुष प्रजां लियट ॥ मुकति करन



कारका ध्यानसं। मुडै न मोडी जा ११।  
रंतु चरण जी कही ॥ सुमरण साचा सा  
रहे ॥ ऊठ जगत विहार ॥ ऊठत जिहा  
चागदें ॥ तब जी बां हो ५ उधारा ॥ शरद एण  
राजस उपजे ॥ कद एण आपा हो ६ दश  
सब सं निरमला ॥ सुमरण लाग सो ३ ॥ ३ ॥  
दाह कं एण पटं तरदा जी रे ॥ ५ जा नां ही को  
५ रां म सरीषा रां म दै ॥ सुमख्यां ही सुष हो  
५ ॥ ४ ॥ क बीर नां वद जरी चा करी नां व  
ध्यां सं बात ॥ नां व जण वै ध्यान कं ॥  
नां व करे क्रम मात ॥ ५ ॥ क बीर निज सुष  
नां व दै ॥ ५ ॥ जा दुष अपार ॥ मन सा बा चा

क्रमनां ॥ ६ ॥ सुमरणसार ॥ ६ ॥  
सुमरण सब सिरताज ॥ रामजन सब जन  
कहे ॥ जगत सिंध कं जिहाज ॥ राम सुमर  
बोहोतेतिरे ॥ ७ ॥ सुमरण रत सनका  
दिक च्यारी ॥ नगन मगन अरु ग्यानि बि  
चारी ॥ सुमरण ते संकरनि ज ध्यांनी  
प्रजास कल नमनां चानी ॥ ८ ॥ सुमरण  
ते ऊं माधरिहो ॥ विनि सुमरण परलैके  
गइ सुमरण ही ते सुष वियोगी ॥ गरनवा  
सते न योज जोगी ॥ ९ ॥ से सनिंतर सुमरण  
करे ॥ उने संदं समरना नही टरे ॥ रषव न  
रथ सुमरण ते ॥ १० ॥ बोहो स्थं नादि जग

तमैबीधा १० ॥ सुमरणतें लो जोगी जया  
कही जनक संसाची कथा ॥ २ ॥ त कथ  
तदेकूती मात ॥ सुमरण ही तें नरे विष्ण  
त ११ ॥ सुमरण तें नारद मुनि नयो ॥ नृ  
चल सुमरण धूक दयो ॥ सुमरण तें प्रग  
ट प्रह्लाद ॥ हास्यो पिता कास्यो बोहो  
वाद १२ ॥ अजामेल गजगिन काभा  
नो ॥ सुमरण ही तें प्रगट जां नो ॥ बाल  
माक सुरण सच पाई ३ ॥ तै लो कभै होत व  
नाई १३ ॥ राम चंद्र तव प्रसन नया ॥ श  
रथ मात कें सुमरण दया ॥ सुमरण सार

सीयासुषलह्यो सोहीत्रदलधम  
कंदह्यो १७ इनेमानसुमरणकूनन  
यो इहीजीतिसबकारजकीयो वसु  
देवघरकिरन ओतार पे सुमरणबि  
निपायो नही सार १५ तबनारदकी  
क्रिया नई वसुदेवकी इरमति गइ  
सुमरणबिधितेकीयो उपगार जग  
त सेतते जणे बुगार १६ ऊधौ बिद  
अरुसदागा सुमरणते पायो बिसरो  
मां वेदसु प्रति सब संत पुकारे सुम  
एबिना और नही त्यारे १७ आदि



अंतिमद्विकिते जमन्त्रे ॥ सुमरण तैस  
बसद गति गे ॥ सुमरण ग्यां न ध्यान  
को कारण ॥ सुमरण काम क्रोध रिष जा  
रण ॥ १८ ॥ सुमरण बिना सिधनदी को  
ई ॥ आदि अंतिम द्विदेषो जोई ॥ जग सु  
मरण बोदो त बिधि करे ॥ अपणे श्र  
पणे आसै फुरे ॥ १९ ॥ संत कहे सो सुम  
रण साचो ॥ हजो सुमरण सब ही का  
चो ॥ ताते अब सुमरण युंकी जे ॥ मन  
कंपकड सांकड दीजे ॥ २० ॥ मन साब्ब  
चाहो हृन्द काम ऐक आषंमत नजी

सीयासुषलद्वौ सोहीनेदलषमाण  
कंदद्वौ १७ इनेमानसुमरणबनन  
यो इहीजीतिसबकारजकीयो वसु  
देवघरकिरन औरतार पे सुमरणबि  
निपायो नही सार १५ तबनारदकी  
क्रियानई वसुदेवकी इरमतिगई  
सुमरणबिधितेकीयो उपगार जग  
तसेततेनएजुपार १६ ऊधोबिद  
अरुसदांमा सुमरणतेपायो विसरं  
मां वेदसुप्रतिसब संत पुकारे सुम  
एबिना और नही त्पारै १७ आदि

अंतिमधिकिते जमभरो॥ सुमरण तैस  
बसद गति गये॥ सुमरण ज्यो न ध्यान  
को कारण॥ सुमरण काम क्रोध रिष जा  
रण॥ १८॥ सुमरण बिना सिधनदी को  
ई॥ आदि अंतिम धिदेषो जोई॥ जग सु  
मरण बोदो त बिधि करे॥ अपणे अ  
पणे आसै फुरे॥ १९॥ संत कहै सो सुम  
रण साचो॥ इजो सुमरण सब ही का  
चो॥ ताते अव सुमरण थुंकी जै॥ मन  
कंपकड सांकड दी जै॥ २०॥ मन साछा  
चाहो इन्द काम ऐक अ

राम ॥ यदम आस एते अम ग  
मात्रे ॥ सालसतो षट्श्यामनखावे ॥ २० ॥  
धारजधारधारणकरै ॥ रामरामरस  
नाउचै ॥ रसनांताली अषमलगावे  
रामकद तनिसद्योसबिदावे ॥ २१ ॥ पी  
हेहाप्रेमप्रकासा ॥ अगलबगल  
कीबुटे आसा ॥ आनंदमांदी जाइस  
मावे ॥ ताते सुमरणनीकोगावे ॥ २३ ॥  
सुमरणनेदमादा निजगुपता ॥ सुमर  
णकरत जते जनमुकता ॥ रामजनजे  
सुमरणकरै तेसंसारसमुदरतरे ॥ २४ ॥

उदा॥ सुमरणसमकोऊनदी संत  
नके आधाराजेजनसुमरणसुरवे  
गरेजगतकेपारारथ सुमरणकीजे  
रामजनतजिसाधनसब आनाएदी  
गीतामैकही॥ अरजनसंनगवाना॥  
रक्षारिषता॥ रामकोनामगुरदेव  
संपादियेप्राणसुगतसंतोषआ  
यो॥ तीनदीलोकमेंसारयोनामहेस  
सअरमहेससुषदेवगायो॥ ऐहजिन  
नावसंसमदसिलातिरीदेषताजाइ  
गडलंकटुटी॥ रामरुघनाथकोका

जसद्वजसस्यो सुरतेतीसकीबंधछ  
टी दासप्रदलादकेनासत्रधिकी  
बधाएहनिजनांवसेषषिलीयोवा  
ल्हीमीकयूंरामरसनारदोतास  
कोजसतिरूलोककीयो॥रामकानां  
मसेंपतितबीहीतिरणयातासकोपार  
कोइनांदिपावै॥दासचेतनकहेअसे  
निजनांमहेसुणतहीचित्तकेमादिना  
वै॥१७॥सर्वज्ञोडजिदानतुरागज  
दानकाहादेदानसुमेरसमालेको  
टतलावकाहाजुतलावमघिकोटक

बापा क लोले ॥ कोट क कं प अनंत अ  
नंप ऊरे जां हां प्रमत्त नीरु को ले ॥ सुश्र  
त वेद मुरार कहे सब ऐ को कं नां हरि नां  
मके तो ले ॥ २७ ॥ पुरष अ अन दु जां मज  
बहत बाध सदा ब्रत की धज धो ले ॥ अ  
जल नौ मि सु सी ल सु सी तल ग्री ष म धं  
ध में पावत मो ले ॥ पुनि अनेक अनेक  
करे प्रवी तारथ को अ अनंत ट टो ले ॥  
सुश्र त वेद मुरार कहे सब ऐ कं कं नां  
हरि नां व के तो ले ॥ १९ ॥ कंच न धां म ध  
रे जां हां नौ निधि अ न नं मार नरे अ ले

तौले नांनवरंग जाँदा सुषनांनव  
नांनव बास सुबास की जौले देउ  
जिराज कं त्यागि माहा प्रबंद पति  
दास करै ए के बोले सुमृत वेद मु  
रार कहे सब कहु नांदि रि नांनव के तो  
ले २० ॥ जौत म वाक्ये ॥ जौत म ॥  
जौकोटि दानं ग्रहण प्रकासा मन्त्र  
प्रयाग युत क ल्यवासा यज्ञायतमे  
रु सुव्रण दानं ॥ जौबिंदनां मानसां मा  
न तुल्यं ॥ २१ ॥ उद्गा ॥ गंगा तट कासी  
पुगी ॥ कोट गऊ दे दान ॥ ग्रहण अति दे



प्रातिसं। नांदी नां व स मां न । २३ । त्र  
वेणं अर प्रा ग जा हं ॥ म क्र म्मा सतां  
दां जानि ॥ तप बुद्धा के द स क ल प  
नांदी नां व स मां न ॥ २३ ॥ करै जि ग द  
स सै स जो ॥ क न क मे र तु ल्य दां न ॥ वे  
द सा ध सु म्र त क दै । नां ही नां व ल मां  
न । २४ । र ख त नां व ही ग्पा न अर ध्मां  
न फु नि नां व ही नां व ही अ ग ति वे रा  
ग न्ना शि नां व ही न्तर अ र ते ज फु नि नां  
व ही नां ही जौ ग की जु ग ति या शि सा ल  
अ र सा च सं तो ष फु नि नां व ही नां व ही

जप अरतपकी या क नृणां कृ  
कृत बाकी नही रोम ही रोम जिन नां  
पीया शय ॥ ~~दृश्यते हरा~~ तीरथ सना  
न दोन करत निवां न थां न मिदरव  
ना ५ मां हि मूरति वैवा श्रे जोग की जु  
गति जप तपकी सकति गुन गुन मेर  
कत अपक क्त न उषा श्रे धरम अ  
ने करे करे कते बसे कदेष मेटी जगरे  
ष विद्या ब्रह्म यथा श्रे ॥ ह्यो निके कप  
ट छल धो ५ कै सकल मल शत नी की यां  
को फल रंम नां मगां श्रे रद को मतन

भवगबसेजाकेरेहनागद्वनिक्कोध  
ज्वलरूपताकेसीतलकरनीरहे। तो  
भकेघटाश्वेकं अमरहेषजीनानाव  
मोहोमिघमारवेकं माहातीषतीरहे  
जगतकोचुलानेएह चारिमुकति  
षानिरेहअणतिकीपिछानिरेहइम  
तसुषसीरहे॥ कालसंबवचाश्लेत  
ब्रह्मसंमिलाइदेतसत्रमनसिधार  
वेकंनावसरबीरहे॥ २७ ॥ चमरूप  
बादराउमाश्वेकं पवनरेहक्रमका  
टषोश्वेकं मुसकलाअनूपहे॥ वि

पै। बिन स घन जा के जरबेकं अन  
लये तीन गुण थोथ के पिछोरबेकं  
सूप है ॥ जनम अरमरनता के कात  
बेकं के ती ऐसंत लूमदंतन क सुष  
कोसरूप है ॥ अछा ही के घरबेकं दा  
ता नावती मूलोक धूमनमै धूमरंम  
नांम बमो नूप है ॥ रण ॥ पद ॥ जबतै  
रसनां राम क ह्यो ॥ मां न धूमसाधि  
सबबैठे ॥ अत्रपठबेधु काहारह्यो  
देका हिरदै प्रकासग्यानगुरगमसे  
दधमथिघृतलेतज्योमह्यो ॥ सार

कौसारसकल सुषको सुषाहनसे  
ससुषजांनिगद्यो ॥ १ ॥ सिबको धन  
संतनको सरबस ब्रह्मा वेदबिचार  
कयो ॥ याही सुमुकति नरे मनका  
दिक ॥ हरिचरणचित रंगागिरयो  
नां वप्रतीति नईता जनकै ॥ ले आं  
नदुषप्ररिदक्षै ॥ सरकहे धनध  
नवै नगता हरिको व्रतलेन बह्यो  
रणे ॥ पूरन ॥ ५६ ॥ कननांति व्र  
तधारी ए सोही कहासमजाश ॥ में पु  
ठतक्षदासहो ॥ के सेंपार नित्राश

२०॥ उत्तरा ॥ चौरवा ॥ हरिबिनिम्न  
न उपासना सर्वतस ब्रजानी ऐ ता  
तै धरै जुदास राम न गति पति ब्रत  
सं ॥ २१ ॥ पति ब्रत वश ॥ उत्तरा ॥ रियाप  
राम बिना तिरु लोक मै ॥ और न कर  
ता को ६ संत दास उस पी वका पति  
ब्रत धरी ऐ सो ६ ॥ ७ ॥ राम बरण कामी  
सपरि ऐ क निरंजण राम ॥ गति दिवस  
स्ट वौ करै नदी आन सं काम ॥ ३३  
रद ॥ राम जुदार न और जुदारु ॥ जी  
वन जा ६ जनम कित हारु ॥ देव ॥

आनंदेव सैदी चनना प्रारंभरस  
निरसना च्चा ॥१॥ पतिवरताय विल  
गुणगा वै ॥ आनपुरव अंतरनदी ना  
वै ॥ ननत नामदेव जीवलहं मां ॥ श्री  
रदेव फौकट बेकांमां ॥ ३ ॥ साणी ॥ तु  
रसी कै कवाशी कंन्यारक्त ॥ कैवरवक्त  
राम मनसा वाचा करमनां ॥ नदी श्री  
रसंकांम ॥ ३४ ॥ जोगजिगती रथवरत ॥  
जपतपदान अनेका तुरसा सबही उप  
वै ॥ उतिम नां वकी टेक ॥ ३५ ॥ द्वेद वने  
धर अंबर विचिसंतदास

एणी ऐक रराममाकी टेक सं ॥ चटि गया  
संत अनेक ॥ ३६ ॥ किवत ॥ सिघनषावे  
घासक न आदर नही आवे ॥ मोती बि  
नां मुराल माछ ली चाच न बाँके ॥ नवे  
न नीचे नीरमतो चात्रगको नारी ॥ अ  
नलपेप आकास धरणि वैठे नदी हारी  
रामचरण रहै ऐ करसनको आदि  
सुजाव ॥ यं सुगरात जैन गुरमतो प्राणह  
टकन जाव ॥ ३७ साषी ॥ को ईक बदलेनां  
वके जैले सिरहर करत ॥ तोही रामनांम  
की संतदास ॥ पिछ नदी छोमै संत ॥ ३८



हरिजनदेतमसारसा। सरवीरकोइते  
काजगजीवनमाथोबीयो॥ रणीनां  
कीटेक॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥  
माअंगमा॥ कहीकनयेजाशानवल  
कहुऐकरेसअव॥ अगेकहसमअइ  
४१॥ अथजोवसाहावमकहगते  
॥ गुरवचन॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥  
विषिकज॥ गिनकागजप्रमेली॥ और  
अधमवोहेतेतिरे॥ जिललीयोनांननि  
रवाए॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥  
रेनांकी मइमाअंगम॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥

बलित गज उधस्यो ॥ सरण सुण तद्वाग्रा  
हर नदी मकार ज पक्ष त्रीयो ॥ ह्रीनो  
ऐकरकार ॥ पासिक टी गज उधस्यो ॥  
साषि बदत संसार ॥ ३ ॥ सोरठा अंतकाल  
की बार ॥ पार त्रयो छिनि एक मे ॥ सुवासु  
षरं म उ चार ॥ विधिक सुन्यो निज प्र  
न्ननां ॥ ४ ॥ सब श्या ॥ सब पाप पुराल को  
पुज नयो हरि नां व कृ ता मन को कम  
का छिन परजा सर पार करे नदी नैक  
करो मर हेतन को हरि नां व सदा परताप  
असौ न जि पुजि मनो रथ ले मन का

राधोदासपुरातम सावित्रुनीं अजामेल  
रूषोपुनिवागिनका॥५॥ हुजिरेक अज  
मेल अंतसमें जमके जट हतन आशुगदो  
ने अंतमादा अति आतुर हो प्र सुत देल  
नराश्रण नां बल हो। जब संतन आशुके  
सादिकरी गद बेतन संतत देह देयो॥ मा  
धोदासकहे प्रअशरण है हरि सुभ्रण से  
अधगांदि। दा। जम हत नगे जम लोक ग  
ऐ जमरा प्र सं जाइ पुकार करी॥ सब अंग  
के अंग दिषाइ देतु न आसकी धा सि उता  
रधरी। करत ह म और न जानत दे ह म पे  
अव होत न ऐ क धरी॥ सा धो दास

सिमेटत है सो ही संत उधारण दी नहरा  
१ करे धूमराइ उठे उ क लाइर है जु कि साइ  
कै सा बिनि आइ ॥ हरि नाम उचार नयो  
तदि बार सही रिखात गए क्ये न ध्याइ ॥ सु  
नो जम तत कु जांन क फूत न ली नइ सुत  
बचि दम आइ ॥ जांदां काल प्रचंरु कौंरुं  
मिद्यो तुमरी दमरी कौं हो कए चलाइ  
जम राइ कहै जम तत न संस्क बात न ली  
सुनि ल्यो सब दी ॥ जांदां न गति की टिक की  
रेष सुनो तदि मारग जा वो मतो क बदी ॥  
हरि के जन सं कौइ कौप करे हरि देत सिज्या  
तिन कत बदी ॥ मा धी दास कहै वि सवास

जहौनिज-जगति की पैस सदा निजइ ॥ ए॥  
जमहत कहै जमरा प्रसुनो तुम काहे कंब  
दकरावत दासी ॥ इतते पठ लोउ नवे नही मां  
नत हरि के जन ब्राहिमी मास्त घासी ॥ पुस  
पषिमि नष की कंन चली जाहां की टपं  
तंग सबे जुमे वासी ॥ प्राक्षो दाम न राश्रणो  
मप्रताप ते पाप जरे जे से कुस की रासी ॥  
१०॥ इहा ॥ नांव लीया जिन सब की या ॥  
जोग जिग आचार ॥ जपत पती रक्ष परस  
रामा सबे नांव की लार ॥ १ ॥ आथ सत सं  
ग महजा कही रहे ॥ इहा ॥ पुस्व चन  
सत संगति के नाहि समा जोगि



सो सुषन ही रजध्यां नी ॥१॥ कर कर एां उ  
पदे सब ता वै ॥ व्रत जुजाव सौ ॥ साध  
संगति की ऐही बजाई ॥ जतेक जतन कर  
तारै ॥ २ ॥ सदा आनद रहै हरिदा मो हरि आ  
नद में जूले ॥ तिनकी संगति द्यो किरपा क  
रा छिनि जर रामन जूले ॥ ३ ॥ काम जो धन  
ही उर जन कै ॥ राम राम सुषगा वै ॥ स्मरदा  
सकी ऐही बीनती साध संगति सुष पावै  
॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥  
कै संग सुष होइ ॥ और चूमति लोकने  
सुषन ही पावै कोइ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

तातैसिष अब समझि कै संगि माना तमजो  
न१॥१॥ कवक्या ॥ सो सुष है सत संग  
में सो नही दूसरी ठाम ॥ हरि चरचा प्रव  
एण सुणेर सना उचरै ठाम ॥ रसना उचरै  
राम नही को द्विधो का धंधा ॥ साध छ नावे  
जगत काटि आसा का फेदा ॥ राम चरण  
आनद अति निरने आवु जांम ॥ सो सुष  
है सत संग में सो नही दूसरी ठाम ॥ रा  
राम जी साध संगति मो द्विद्यो ज्यो बेर बेर  
में करुबी नती ॥ क्रिया मो परकी ज्यो ॥  
साध संगति ब्रह्मदिक बंके ॥ सन कादि  
क मुनी ज्योनी ॥ सो सुष पावे साध संगति में



सो सुषनही रजध्यांनी ॥१॥ करकरणां उ  
पदे सब तावै ॥ वरुत जुजागसरो ॥ साध  
संगतीकी ऐही वजाई ॥ अवेक जतनकर  
तपारै ॥ २ ॥ सदा आनर रहे हिरदा मी ॥ हरि आं  
नद में ऊरै ॥ तिनकी संगति द्यो किरपाक  
राठि निजर रामन जूले ॥ ३ ॥ काम क्रोधन  
ही उरजन कै ॥ रामराम सुषगावै ॥ स्मरदा  
सकी ऐही बीनती ॥ सुख संगति सुष पावै  
॥ ४ ॥ ५ ॥ उदा ॥ जेजन संगी जेम काता  
कै संग सुष होई ॥ और जे मति केली कर्म  
सुषनही पावै कोई ॥ ६ ॥ ७ ॥ तात सुष

वेवेदा॥ तत्प्रि॥ ताजरीश्रीकाश्री  
सुषुर्नारीका॥ करिविचारतिल्लोक  
मे॥ औरनकोईराम॥ वेदसुप्रतसवक  
हतदै॥ ऐसंतविराजेराम॥ २॥ इ नदमत्रं  
तनादि कुह॥ सतकतसुनितोदि॥ सा  
धसुषीतोमै सुषी॥ साधुषी दुषु मोदि  
वृ॥ मुजिबिनिजुवानजोनीरे॥ मोतेमै  
रादास॥ मनवचक्रमत्रव प्ररषु॥  
जु फलनमैवास॥ आपसरीसा  
करलीया॥ धरमसतग परहाथि सं  
गविराजसाधकै॥ कव कनहा प्रसाथ

साधजमेरोसराहै॥मैसाधनकोज  
॥सेवगस्त्रांमीयंमिल्या॥ज्युद्धनये  
श्रीव॥६॥साधलळकहीऐहै॥निरम  
लनेनबैननेनिरमल॥निरमलचि  
तउदार॥रामचरणवेसंतसिरोमणि  
निरमलनावश्रधारा॥७॥षष्पादयासब  
सुप्रेह॥निरलोनीन्हकांम॥विस्वादी  
निरवैरता॥साहीसंतबरीमाम॥८॥लो  
भमोहोहंस्थानदी॥बैतैगुरवशुमान  
समचरणदुरमतिमटी॥तबसाधूलळ  
परमान॥९॥निरवैरीसबहनसं॥निरका  
रतसाधातरसीऐमतिसाधकेषं

वृक्षसतका ॥ ३५ ॥ सतपुरसांकोलिद  
सिषसतसंसीतप्रसाध ॥ किकरजमका  
आशकरि ॥ बहुरिनमंमैबाद ॥ ३ ॥ साषी  
हरिजनहेतकरिदेतहै ॥ सीतजएकलगा  
र ॥ बटकबीजज्यंसतदास ॥ दोतबोदोत  
विसता ॥ ४ ॥ मुरलीसीतजलीजाए ॥ संतां  
इंदौसोश ॥ कामक्रोधउरितैमिटै ॥ रामजज  
नबिधदो ॥ ५ ॥ कंवापावैअमरफलसं  
तऊठिनिसवास ॥ यादीमेरेमुकतिहै ॥ सेऊ  
चरणनिवास ॥ ६ ॥ परमेसरकाभावको ॥ ऐ  
ककएंकौषा ॥ ७ ॥ दाप्रजेतापापछा ॥ तेतास

प्रसतावदरिचंद्रसंतभैकख्यो॥ चौपद्र  
संतगुलामदोनसुरचाहे॥ दिवन्नौग  
तजिनगतिनिबाहे॥ माहाप्रसाधसंत  
घरकेरौ॥ नागवमौपावेतहेचैरौ॥ १५॥  
येदबीनताअमरापुरतीजे॥ संतचर  
णकरताहमदीजे॥ फूठनषाडरहेघर  
चैरौ॥ हो॥ प्रसाधरामजातेरौ॥ १६॥ ता  
फूठनकेअजनिनिगावै॥ साषिताहां  
सुषदेवसुणवै॥ राजाकख्योव्याससुत  
सेतीसंतप्रसाधवौपमाएती॥ १७॥ तव  
सुषदेवनागवतसुनायो॥ संतप्रसादमा  
हातमगायो॥ सोप्रसाधनिनिजेपावे॥ बि

पतिकादाहरि नगति करावे १७ ॥ अत्र  
नाग देव का प्रसंग करि कहत कं ॥ इ  
हा ॥ महमासी तपसा धकी ॥ वरनं कच्छ  
इ करति ॥ नारद जगत्पति माद अब सु  
णित ही उपजे प्रीति ॥ १९ ॥ व्यास देव के  
तनम ही ॥ प्रचं रु प्रग टी लाइ ॥ तद व्या  
कुल होइ बुज एकी ॥ अतिर करे उपाइ  
२० ॥ चौपइ ॥ एक समै नारद मुनि आ  
ए ॥ व्यास देव तव दरसण पाए ॥ हस्त जो  
करि परसन ब्रजे ॥ प्रभु तुम्है सब ही वि  
धि ॥ २१ ॥ वेद व्यास व्यास ॥ व्यास  
इ तुम समान हजा

कौनांही ॥ तुमही साध प्रम क्रिया ल ॥ १७  
षा जीवकं करो निहाल ॥ १२ ॥ ह्रम बो हो  
विधि के अथ वनाए ॥ नां नां विधि के धर  
मदि टाए ॥ प्रथम चारि वेद बिस तरि  
ने करीतिका अरथ विचारे ॥ २३ ॥ षट्  
सासत्र अर जो व्याकरण ॥ कुनिमें पुरां  
नकी यो बहू निरनां ॥ ताते तपति लगीत  
नमां ही ॥ तब भे बो हो ल्यु करी उपाधि ॥ २४  
और सासत्र कीए अनेका ॥ तांमें बरने  
काम बसेषा ॥ अरथ कथ्यो बो हो त वि  
सतारा ॥ ज्यु ज्यु अगनि तन बटी अथा  
रा ॥ २५ ॥ अब मै ॥ ३ ॥ ३ ॥

नन्नाति हो वै निसतारा ॥ ॐ से व्या सक  
री लुघताई ॥ तब नारद मुनि कह सम  
जई ॥ २६ ॥ आ ग वंत प्रथम रक्तं धे आ  
ध्या ॥ ५ ॥ नारद वाक्ये ॥ श्लोक ॥  
नय तव च चित्र पद हरे यी शो जगत  
पवित्र प्रगुण त कहि चित ॥ तत वाय  
संन तु सिक क्षया ॥ २७ ॥ टी का ॥ चौपद  
व्यास का हा कत बते की न्हो पूरण बु  
स पदन ही ची न्हो सौ निज ब्रह्म क  
मतै न्यारा असुध जगत को करै उधा  
रा २८ अति सुचता दे आप मिला वै



सौजनरांमनांमगुणगावै॥ताप्रभुकां  
त्तेनदीजान्यो॥धरमन्नरथन्नरुकां  
मवषान्यो॥२॥केवलकागक्रमवि  
सतास्यो॥रांमन्ननेपदजादिसम्हास्यो  
न्नरुजो कथ्योतोकवृद्धकल्हेसाकी  
न्दोबोहोतंक्रमप्रवेसा॥३॥मांनंतीर  
थकागलोन्हायो॥तुल्लिजलन्हाप्रपु  
नित्रिष्टात्रायो॥तातेसदाअसुच  
दीरहे॥तीनतापतनमांहीदेहे॥३॥  
जौलन्नरमरुकरमउपासा॥तौल्लहंस  
वितनदीव्यासा॥

बिनि शोरन नाबे ३० ॥ प्रवण करि  
हरिनामही सुरे ॥ पुनिरसनां मगुण  
गुरे ॥ हरिदे नां वग्रहण नितिकरै  
तिनते ज्वाला सबही ठरे ॥ एतेनि  
जसाधस्वातिषट् रूपा ॥ ताकी संग  
तिषम धनूपा ॥ संतनको प्रभाव अ  
पारा ॥ बाल बुधि को जाते पारा ॥ ४०  
अनत गुण पारन ही जाको ॥ परक ब  
इक में संघेप जनांक ॥ उन के सात प्र  
भाव दिषांक ॥ ४१ ॥ वेद व्यास उवा  
च ॥ मुनिश्चन मां हि मादा मुनिना रथ



बेमधरमकेपरमबिसारदा॥सकल  
बुधि श्रेष्ठ स्वामी॥कननोतितुमन  
ऐअकांमी॥धरकृणितुमसीतकह्यो  
संतनके॥जातेमैलमिटेसबमनको  
ऐपरनमोदिबरनसुजावो॥भैरेतन  
कीतपतिबुजावो॥ध३॥श्रीसांक्रियाहो  
इप्रभूतेरी॥तातेअगनिबुजेअबमेरी  
ऐसुनितबबोलेमुनिनारद॥परमक्रि  
पालअरुनगतिबिसारदा॥०७॥श्री  
गवलेप्रथमस्कंधेअध्या५॥५॥मै  
नारदवाक्य॥श्लोक॥अहंपुरातीति



सोमनधारी ॥ सो जनपान आषमें कीजे  
तब कुबया लडु का कुंदीजे ॥ ५६ ॥ सो जन  
पान साधवै लेंवै ॥ तबही मोहि उचेष्टदेवै  
बालक जांनिकरे पुत पाला ॥ हेत बचन  
बोले क्रियाला ॥ ५७ ॥ साध प्रसाध देह म  
लासा ॥ सोमें निति ही पाऊ व्यासा ॥ परमें मा  
हात मन ही जांन्यो ॥ अंन प्रसाद करिता  
कं मांन्यो ॥ ५८ ॥ परिता को सो परता पू  
मम दुष पीर मिटे संता पू ॥ सीतल नरे सु  
मद्रिष्टि प्रकासी ॥ ५९ ॥ साध क्रिया तब मो  
परि नई ॥ निज सरूप की सुध ताल ही ॥ राम  
नाम मो कं समजा यो ॥ जबमें ध्यान अष म



रिदरसणदीये॥ जीव न जनम सुफलमम  
कीये॥ कुनिकेई असी होइ आइ॥ सोये  
दरसण गये बिलाई॥ ६५॥ सोमे व्यास न  
ति नये उदासा॥ व्याकुल चित नदी धिर  
स्त्रासा॥ तबे नई आ कासकी बाणे॥  
राम कृपाल अंतर की जाणे॥ ६६॥ तबे  
कह्यो क्य करे बिलाया॥ न्ह चल होइ जये  
हरि जाया॥ इतो दरसन अये सर जांये॥ अब  
तो कल्प समो पर मान्॥ ६७॥ वो होल्य प्र  
ष्टि फेर बिसतर है॥ तब तुम ब्रह्मा के पुत्र  
वतर है॥ अरु तुम होइ हो ब्रह्म विचारी॥ ह  
रिके मन सब में अधिकारी॥ ६८॥ कल्प स



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

का॥ जिगजोगबिबधिविधनेषा॥ वेदवि  
चारसासत्रजेते॥ सुनसुनधरमकस्त  
त्रवकेते॥ ७२॥ इनसबदिनकोफलनही  
जेसो॥ संतसीतसुतफलहेसो॥ सीत  
प्रसाधमाहातमजारी॥ चत्रमुषकाहाक  
हेबिचारी॥ ७३॥ सौप्रसाधताततुमपा  
यो॥ तातैनारदनावकुदायो॥ ऐतोब्रह्मा  
त्रायमुषनाषी॥ श्रीनगवानकहीऐसाषी  
७४॥ सोब्रह्मामोकंसमजायो॥ संतप्रसा  
धमाहातमगायो॥ तातैव्यासतुमऐदवि  
चारो॥ विद्याकुलन्ननिमानिसंबंजारो  
७५॥ त्रिगुणनगतिनिरूपणकरो॥ संत



इती प्रसादीमादातमसंपूरण॥ अथसी  
सीलको अंगलिष्यते॥ सोरठा॥ पूरणब  
ह प्रकास॥ अथो ज अथनाघटमदीकु  
बधिकांमको नासा। सीलरतनपाथोस  
दी॥१॥ सोम चरणजीकदी॥ साषी॥ सोम  
नामराजानया। सीलनया अमराव ॥  
सीलविनापकूचैनदी। कोटककरैउपा  
व॥२॥ कं मलया॥ सोमसोमरसनारहे  
सीलदया उरिमादि यासमती नूलोकमे  
ओरधरमकोइनादि औरधरमकोइ  
नादिसाधसुमृति सबगावे जनममरण

Handwritten text in a stylized script, possibly a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are bold and black, set against a light background. The script is highly stylized, with many characters appearing as thick, blocky shapes. Some characters resemble the letter 'E' or 'H' but are modified. There are some vertical lines and double lines interspersed, which might be part of the script or decorative elements. The overall appearance is that of a dense, handwritten record or list.

तपसी द्याणं ॥ सात वान को इरे क ॥ ७ ॥  
सी लरतन सब संव म ॥ स बरत नन की  
षांनि ॥ तीन लोक की संपदा रंही सी ल  
मैः आन ॥ ८ ॥ सी ल सह त सु मरण करै  
अर सु क्रत की बां णि ॥ रज बं मि न बा  
देह का ॥ फल पाया पर मां ण ॥ ए ॥ सं ज  
मत न मन रा षा णे ॥ सं ज म इं द्री प्रां नि  
सं ज म सं सां इ मि ले ॥ क हे दा स न ग वा  
न ॥ १० ॥ शो व इ ॥ अ ल प अ न अ र ल प  
दी पां ण ॥ अ ल प ही नि द्र अ ल प ही बां  
ण ॥ तुर सी अे सी जु ग ति ग हा वै सो ही



गति न्हो सुणि मतो विचारे ॥ करे पिता ह्यं  
अरज पुरष जंबू सरग्यारे ॥ मां नू कलि  
जुग न्यो सुणि तरे लागी धारी ॥ कंव्या  
कही धूम वात तातत बजा निविचारी ॥  
दीया तादि नरित्त परण वा चलि करि आ  
यो जंबू सरतां हां परण हाथ ताको छिट  
कायो ॥ वणं ऐ दीयो इब वे होत तादि ध  
रेन आरे ॥ विषे मरु यं जान आय निज  
प्यान विचारे ॥ चले वंदां ते आय आ ५  
बेवे निज न वजा तब त्रीया मतो विचा  
रकी यो ता के टि गज वजा जंबू सर वैरे  
जो हां सुमरे ने चवन



Handwritten text in a highly stylized, possibly Indic or Southeast Asian script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are bold and black on a white background, with some decorative flourishes. The text is densely packed and appears to be a continuous passage or a list of items.

नतीनलग ॥ छुटोयी छै भूला ॥ तो होजक  
बहु जाइये ॥ १९ ॥ त्रीया ० ॥ न्हाइनदीकी  
सोश मरकट ते मांण सन्नयो ॥ बौ हो ल्यं  
मरकट होश की योजला ल च्छे देव पद ॥  
२० ॥ जव ० कोई सा हारो नांदि ॥ जग सं  
मद मै भू वतां ॥ रक्त ग्रिह उरजा ॥ सो नदी  
का गज कर क को ॥ २१ ॥ त्रीया ० न ज्यो  
न प्र ए रांम ॥ अह सुष सो ना त ज्यो ॥ जा  
की वी क न वंम ॥ बुध ली ज्प लट कतर हे  
जं ॥ ० ॥ इंद्रा के सुष नां स ॥ या संग नास  
तरांम पद ॥ र लौ चाट त या स ॥ यो यो मूरि  
ष पां ह्ये ॥ २३ ॥ त्रीया ० ॥ न पति पति सु



तो दि। २०। बहण व्यादि माता धरी। माता  
जायौ जाम। ती नूत जिवन कंगया। रदौ।  
कं एनांम। २०। अष्टादसना तानया।।  
एती नू काहेत। ताको परसंग अब कल  
सुण ज्यो होइ सुचेत। ३०। चौपइ। ऐकन  
ग्रमै बेसांताके। सुत कन्या संग जनमै ता  
के। ताको तुरती नां वक डायो। सुलतां कु  
मेरनांम सोपायो। ३१। छोटे नषतरज  
नमे भाई ताहि नदी भेदी ऐ बुहाई। को  
ई नयत लनिक से जाई। ऐक माहाजन  
ती ऐकटांई। ३२। वाके पुत्रनरुतौ ऐका

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

कै नै नै तकी यो शिद ह्या गा॥ बबब  
न बिचरे ले बैरागा॥ पर बपाप के ल  
में की यो॥ वीर बहन घर वा सो दी यो  
शुण संत बं बै की बुकत जो ले॥ सुणि  
सुणि बचन सबन का तो ले॥ पर छे कु  
मेरनी की धौ गवना॥ देरत आयो बै  
सांके नवना॥ ४७॥ सो बैसां ता की मह  
तारी॥ ता कै रह्यो कर घर की नारी॥ वा  
कै पेट को ए क सुत नये॥ सुलता सं ना  
धांय क ह्यो॥ ४८॥ सुलता चली वां हां ले  
जब दी॥ बैसां कै घर शि तव ही जब

Handwritten text in a highly stylized, possibly Indic script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are bold and black on a light background. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The text is contained within a rectangular border.

जब धूम सा बतौ हो ॥ ४२ ॥ उहा ॥  
सुलतां के एह बचन सुण ॥ प्रबुद्ध ए ल  
ज्यो कुमेरा ॥ कौहे ते कही यो काहा ॥ सो  
अब नाथो फेर ॥ धर ॥ सुलतां उवाच  
किवात ॥ बेसां दारै वास कहु तौ दि  
नउवौ नाई ॥ बाप कहुं में तौ दि तुम्हे  
घर मेरी माई ॥ यां वंद पर गट मोर पले  
में बंधा तेरै ॥ सासु कौ नरतार सदा सु  
सरोहे मेरो ॥ ममदा दी कौष सम तासंति  
धिदादी कही रो ॥ एसा चो अपराधित ज्या  
बिनि सुषन लही रो ॥ नगति विनां जागे





घरकेसंगलुहारोहोमीरो॥४६  
जोरवा॥गिनकाअरकुमेराकहे  
दमकेसेनिसतिरे॥सुलतांकहये  
टेरात्यागकरीरामेनजो॥४७॥५  
हा॥जेबूसरबुधिवानअतिदीयो  
भारज्याग्यानातरीयामनआनदब  
दो॥गयोसकलअग्याना॥४८॥मोर  
ग॥त्रियाबाच॥जेबूसरबुधनाग  
धनितेरीमातापिताजनमतहीज्या  
राग॥छापरतोपरबुद्धसं॥४९॥इव

Handwritten text in a highly stylized, possibly Indic or Southeast Asian script, arranged in approximately 10 horizontal lines. The characters are bold and black on a white background. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The text is contained within a rectangular border.

मांदिन ही गेर जगति मांदि न ही गो  
रे और का हा क हा ऐ ना क्षा त्र हे विष  
त न र पूर न र मु ष च डे न को श दि वा  
दा स फिर ता स कं ज म मारे कर जो  
रा जो को इ त्पा गे सी ल कं सो पा वै  
न र क अ घोर ॥ ५३ ॥ ना स के त पुरा  
ण को ॥ प्र लो क ॥ अ ति थ वे ष स धु नो  
स्त्री ग म न करे त ज ॥ स या ति न र के घो रे  
सी ल लो ष कर न र ॥ ५३ ॥ टी का ॥ उ ह  
का हा पुर ष ना री व जो ॥ न्ने ष अ न्ने ष



३९॥ सोऊ पुरषही जडाहो श्रीसैंसबे  
रयेजांणे सोही॥ पाछे दुषसिष्टि भेंस  
है। ता दुषकी गिएती नही लहै॥ ४०॥  
दुहा॥ सुएत त्रासजनरककी॥ भेंन  
मेंउपजीएहा सीलनकरु त्यागीए॥  
भावेजावेदिह॥ ४१॥ सायी॥ सिधह  
रोगिरतेपरो॥ भावेबाहीसिरलोह॥  
एजुत्रासभलदोईयो॥ पैसीलनगोम  
तिहो॥ ४२॥ अगनिदहोनदीयांबहे  
मलकुजरमारोध्या॥ एजुत्राससह  
प्रीतिसं॥ पैसीलगयो नसुहा॥ ४३॥









संषदी घंटवृत्तैः शक्तिः विदुः सुदुःखिनः  
दिपसं स्यपेसरजले। कतिजिनुककवु  
धरमकदे ननने फले गणधरगदे  
स्यानेकापदवनाशकान्डागक  
गानजलकालोपे नदि...  
वनाय नकका, दयान...  
पीया नागय नमनका...  
पथनी कले कलेपुदु कलेकले  
नक्षपाय नाग शस्य...  
रेकनदी स्याजलन...  
मकालेन पद... ३३ ३३ ३३



चार ॥ १० ॥ श्लोक ॥ वस्तुश्रंगुलमात्रेण  
वस्तुश्रंगुलमावृतो ॥ तत्त्वब्रह्मरूपक  
त्यगलेततजलपीत्व ॥ ११ ॥ टीका ॥ किं वत  
चौडोश्रंगुलवासतीसश्रंगुलशेइला  
बो ॥ कामैकंपडोषुवगुटीविनिश्रैसे  
टाबो ॥ करौदोवडातादि सासमैजलक  
ठाणो ॥ ध्युनिरमलकरियावरेकफिरश्रै  
सीजाणो ॥ जीवाणोकीलबबिनांएश्री  
गिणो ॥ ऐषेद ॥ अबजीवाकीरष्याकह  
सुएसकलेनेद ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ तस्मि  
नबरेन्नस्थिताज्जव्वास्थ्यापयेतजलम  
मध्यतेएवह्वा ॥ चापीवेत्तोयांसयातिपरम

|| 1 || 2 || 3 || 4 || 5 || 6 || 7 || 8 || 9 || 10 || 11 || 12 || 13 || 14 || 15 || 16 || 17 || 18 || 19 || 20 || 21 || 22 || 23 || 24 || 25 || 26 || 27 || 28 || 29 || 30 || 31 || 32 || 33 || 34 || 35 || 36 || 37 || 38 || 39 || 40 || 41 || 42 || 43 || 44 || 45 || 46 || 47 || 48 || 49 || 50 || 51 || 52 || 53 || 54 || 55 || 56 || 57 || 58 || 59 || 60 || 61 || 62 || 63 || 64 || 65 || 66 || 67 || 68 || 69 || 70 || 71 || 72 || 73 || 74 || 75 || 76 || 77 || 78 || 79 || 80 || 81 || 82 || 83 || 84 || 85 || 86 || 87 || 88 || 89 || 90 || 91 || 92 || 93 || 94 || 95 || 96 || 97 || 98 || 99 || 100 ||

रामनां इलागे नदी ॥ रामे विकारो साधि  
॥ १ ॥ के मल्ल्या ॥ जो मज लागे नां वसं  
तो फी का लागे नैग ॥ द्यौरा सी फेरा  
मिटै छुटे दी रघरोग ॥ छुटे दी रघरो  
ग ब्रह्म का पद कं पावै ॥ सुष सागरा मि  
ल जाइ लहरि ज्युं उलटि समावै ॥ राम  
चरण रामें न ज्यो सधै सकल दी जोग  
जो मन लागे नां वसं तो फी का लागे जो  
ग ॥ १ ॥ साधी ॥ कबीर मन कै मतें न चा  
हीरे ॥ बामि जिया बाण ॥ कत वारी का  
ताग ज्युं ॥ उलटि अफुटा आण ॥ ४ ॥ क  
बीर काया कदली बन है ॥ मन कजर म

1  
2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12  
13  
14  
15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100

लीतिप्रतिहोइ। ए॥ मुरलीमनकीकां  
मनां॥ मिटेन आनउपाइ। सो देखितदीधि  
किरहे जेरसनांमकुकाइ॥ ११॥ कबीरा  
मारुमनकं टुकटुकदोप्रजाइ। विषकी  
क्यारीबाइके॥ लुएतक्युपिठताइ॥ ११  
कबीरमनगाफिलनया॥ सुभरणलागे  
नादि॥ घांणी सदलौसासनांजमकीदर  
घेमादि॥ १२॥ कबीरमैमंतामनमारहे॥  
घटहीनीतरघेर॥ जबहीचालेपीठदे॥  
तबआंकुसदेदेफेर॥ १३॥ कबीरमनांम  
नोरथछामिदे॥ तेराकीयानहोइ॥ पांणी





पणं ~~सि~~ चलाशं गं चरणं जिरं म  
कं मनकी बाग सम्हाशं १७। पगवेडी बैरा  
गज डटे ग्पांन चाषसी मांदि नां वतौ षग  
लघाली ऐतव मन कही न जाइ तब मन  
कही न जाइ संतजन श्रीसै अटकै ॥ घिस्यो  
रदै घट मांदि निकसवां हिरन ही अटकै  
गंम चरणं यूसाधकै देषौ गुण निरतां हि ॥  
पगवेडी बैरागटे ग्पांन चाषसी मांदि ॥  
१७। सुणित सुणित सरवण अरेणाइ गाइ  
अरेगाल ॥ फिरत फिरत गो माथके पै मन  
कौवो ही फाल ॥ पै मनको वीही फाल हरस  
गुण बरतै मांदि ॥ प्रावगइ सब वीतकांम

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is arranged in approximately 15 horizontal lines. The characters are dark and somewhat irregular, suggesting a historical or non-standard script. The document is framed by a simple border.

रजना ॥३॥ अंगदो नो वाच ॥ हेमदाने  
लनते हेम ॥ नोमदान गजबजक ॥ अ  
नदान लनते नरदेही ॥ सुणि हो पां रुव  
नंदनां ॥ ५ ॥ अरज नो वाच ॥ केन  
पापे मृते नारज्या ॥ केन पापे पुत्र नास  
कां केन पापे नरो ही जडा ॥ कथं ते ज नार  
जना ॥ ५ ॥ अंगदो नो वाच ॥ रिण पापे  
मृते नारज्या ॥ धाया पापे पुत्र नास कां मां  
न नंगं नरो ही जडा सुणि हो पां रुव नंदनां  
६ ॥ अरज नो वाच ॥ केन पापे नरा  
नरक जाएते ॥ केन पा  
पे नरो रोगी ॥ कथं तजि

१ कं ॥ केन पा

१९ ॥ अंग



नो वाच ॥ गुपतदानलज्जते अरथ ॥  
परउपगारेसरीरनिरमल ॥ तीरथसवा  
नेप्रापतेरुप ॥ सुएदोपांमदनदनां ॥  
१२ ॥ अरज्जो वाच ॥ केनयापेनरे  
काणं ॥ केनयापेल्लापिंगला ॥ केनया  
पेकरणनासती ॥ कथंतजनारजनां ॥ १३  
अगदो नो वाच ॥ डिष्टानयापेनरे  
काणं ॥ अगतिनिद्या लूलापिंगला ॥ वि  
सवासघाती करणनासती ॥ सुएदोपां  
मदनदनां ॥ १४ ॥ अरज्जो वाच ॥ केन  
पुनेलज्जतेराज ॥ केनपुनिधनारधन ॥ के  
नपुन्यप्रापतेविद्या ॥ कथंतजनारजनां ॥



ॐ॥ सुरापांने नरे मा मक॥ विधवाग  
वने गिरधवा। मास आशरी नरे जंब  
क। सुणि हो पां मवनंदना ॥२०॥ अ  
नो वाच ॥ केन पुनिल नते सुरगं के  
न पुनि च मुकति कं। केन युनं ल नते ग्या  
नां। कथत जनारजनां ॥२१॥ नग वा  
नो वाच ॥ सत वंत ल नते सुरगं बद्ध  
ग्यान स मुकति कं। आत्म विचारी नरे  
ग्यानी। सुणि हो पां मवनंदना ॥२२॥ इ  
ती संक्षरणा ॥ अथ ज गीतरणा  
सिद्धता र सिद्धता





सो मरे को दाद सपरमा ॥ दया काली या  
त्री यौद स ठां मां ॥ निज श्री जत च बदे  
नां मां ॥ ४ ॥ इती च त्रद स जम के नां मां ॥  
ता के अनवर बो होतं श्री मां मां ॥ ऐ सब  
धर मरा प्रमुष श्री गे ॥ श्री ग्या कारी तत  
पर मां गे ॥ प ॥ सु ए पार बती ता के नां म  
जम पुर मां दि व से इ क ठां म ॥ जम पुर  
के बि स तार बे ता ऊं ॥ नि नि नि नि बो  
रौ क द स म जा ऊं ॥ ६ ॥ प्रथम श्री षा बी  
स कु र नारा ॥ नर क धार बो हो बि धि बि  
चारी ॥ अधम पुर ष ता मे व हू जै लै ॥ लोक

Handwritten text in a cursive script, likely a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines, separated by vertical bars on the left and right sides. The characters are bold and stylized, with many variations in shape and size. The overall appearance is that of a dense, handwritten document or a page from a manuscript.

चष्टही एकरिता में नाषे ॥ पर असत्र  
रत अनषही नाषे ॥ पर इधुति बुरा  
इ आषे परसंग देपर नट्या नाषे ॥ ११  
दोइ सहसर बरषता में रहे ॥ जमकं कर  
की सासना सहै ॥ ती सरो रोवर नरक  
कुमकदीरे ॥ मूरत रोवरता में लईए ॥ १२  
संकलेवै अन्या ब्रही वांसे ॥ ऊगे ऊ  
गी साषिषति आंसे ॥ ऊठा साचा साचा  
ऊठा ॥ ती ए सहसर बरषता में घररुग  
१३ ॥ ऐकरीति करि सासना देवै रोवर नर  
क अधमगति सेवै ॥ चौथो माहारुदकं  
न अग्यात ॥ ता में अनैत रोग नररहे बिष्यात

12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100



Handwritten text in a highly stylized, possibly cursive or shorthand script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are dense and difficult to decipher, but appear to be organized into a structured format, possibly a list or a series of entries. The text is contained within a rectangular border.

शयौ तां लो॥ २५॥ अश्वरुची बसत बाट  
नदीषां ॥ पंचारजक चौर लेजा ॥ पां  
तित्रेदकरमानही मांरे ॥ असत्री परपु  
रषकं धारै ॥ २६॥ पितापुत्र बेच अनषा  
इतेदसं नंदसरब्रषनरकां मांही ॥ ऐ  
कादसमो पुतलेककुंरु ॥ चीटां पूररखौ  
बौदोउरु ॥ २७॥ असत्रीतो नरतारही लोषे  
चाकरधणं चौरही त्रौपै ॥ लणहरांमी  
चाकरही ॥ धणं मारचाकरब्रुसोइ  
रु ॥ तेरासहंसरब्रषतां ॥ पुतलेकनरक  
सासनायां ॥ सादससकलमलीनडर





न आपाडे ॥ सेंतां न हो इ मारा न हो चाले  
तो च वदा सहं सर बरष नर कामारे ॥ ३३ ॥  
प च दस मो इष वेद असाता ॥ ता ते ते ल न  
स्यो विष्पाता ॥ सुरा पान अर मांस आहा  
री ॥ आषेट करिके जीव सघारी ॥ ३४ ॥ ते पं  
च दस सहं सर बरष तां इ ॥ इष वेद कुं  
मां हि परां ही ॥ वेस सी नरक सो षोडसनां  
मा ॥ मु धम जनावर आं म ष आं ना ॥ ३५ ॥  
निर बल हास्या प स सिंघारे ॥ नू षेति सारे  
जीव फिर मारे ॥  
तिं नाइं

Handwritten text in a highly stylized, possibly cursive or shorthand script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are dark and dense, with some variations in stroke thickness and spacing, suggesting a specific dialect or a form of shorthand. The text is written on a light background and appears to be a single continuous passage.

धणं सुषाई ऊठी ब्यात बरणा वै चाई ॥  
४० ॥ गुर परमे सुर लोपै सोई ॥ तो न व दस  
सदं सवर ष ता मै जोई ॥ बीस मो कु म लोई  
पांन गणं ई ॥ लोहा सु लो पुर सो चाई ४१  
आमण वै सहो इ मद आहारी ॥ आस षाई  
लंपट पर नारी ॥ ते बीस सदं सर बुष नरक  
रहाई ॥ लोहा पांन नरक मो द्वि पराई ॥ धर  
एक बीस मो कु म हे ष्यो गण ॥ पाले पूरर  
हो बो हो ओ गण ॥ पूजा जना की भेटक  
रावै ॥ अधम बास ना पाप दिटावै ४३  
निति ने म मै विघन पराई ॥ एक बीस सदं

Handwritten text in a highly stylized, cursive script, possibly a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines, filling most of the page. The characters are dense and interconnected, with some larger, more prominent characters interspersed throughout. The overall appearance is that of a personal or working manuscript.

धणं सुषाई ऊठी ब्यात बणावै चाई ॥  
४० ॥ गुर परमे सुर लोपै सोई ॥ तो न व द स  
सदं स व र ष ता मै जोई ॥ बी स मो कु रु लो द  
पां न ग णं शी ॥ लो हा सु लां पू स्थो चाई ४१  
आं म ए वै स हो इ म द आ दारी ॥ मां स षा इ  
ले प ट पर नारी ॥ ति बी स सदं सर बु ष न र क  
र हां शी ॥ लो हो पां न न र क मां हि य राई ॥ ध र  
ए क बी स मो कु रु हे ष्यो ग ण ॥ पां ले पू र र  
हो बो हो श्रौ ग ण ॥ पू जा ज नां की मे ट क  
रा वै ॥ अ ध म वा स ना पा प दि टा वै ॥ ४३ ॥  
नि ति ने म मै वि घ न प राई ॥ ऐ क बी स सदं

Handwritten text in a stylized, possibly historical or religious script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are bold and black on a white background, with some vertical lines separating the text into columns. The script is highly stylized and difficult to decipher, but appears to be a form of historical or religious writing.

धापुरषबिमारे॥ बांहां देह करि जागतमारे॥  
तेचत्रबीससहस्रब्रषतांही॥ अथचरनरक  
संशुगतैमांही॥ ४८॥ पंचवीसमोजीऊरलंकर  
॥ तांहांजमजीऊरमुषकेकंकरा॥ शुध्वा  
रथीअतीतआइघारे॥ ताकंकुटकबचन  
उचारे॥ ४९॥ आयअनषाइअतीतनिरा  
सै॥ ताकोकोटधरमजाइनासै॥ तेपंचवीस  
सहस्रब्रषजांअचुगतैजीऊरनरकांवां  
॥ ५०॥ षटवीसमोजीअगनिपीडनांभां॥ अग  
निपुरदाहासंयूसौंभां॥ अंभांजा  
तीतसिंघारे॥ बाळकसह॥



Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines, with some characters appearing to be stylized or possibly representing a specific dialect or code. The ink is dark on a light background, and the overall appearance is that of an aged, handwritten page.

श्री श्री वाजी दजी की अरे लो लिखते  
अरे लो ॥ ताता तुरी पलाण चौ द टै कं  
एण ॥ टैठी माघ जु का १ छंदा कं निर  
षाणं रूप रंग अर राग पवन ज्यु बह  
गया ॥ हरिदां बाजी द केता क क वं षाण  
क बा डार द गया ॥ १ ॥ सिर प च रंगी प्रा घ क  
जां मो जर क सी ॥ हाथ मै लाल क बां ए  
क मर मै तर क सी ॥ जा घर च रंगी नारि दि  
षा वै आर सी ॥ हरिदां बाजी द जे नर च  
त्या म सां ए प टै ता पार सी ॥ २ ॥ सि र मै लं  
वे के स च ले गज चाल सी ॥ हाथ ग दे स

Handwritten text in a highly stylized, possibly cursive or shorthand script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are dense and difficult to decipher, but appear to be organized into a structured format, possibly a list or a series of entries. The text is written in black ink on a light background.

लोप वात्सवर्षी पाठ कठ कठु नल  
प्रो र्शिलित विनयं च शौरुति वाङ्मयं  
मास्याभीतग विद्वान्मनुनिवृत्ति  
दरिद्रावाच्यं च ज्ञानस्यै वाच्यं च  
रम्यादिनां च इत्यदिप्रवा ननु कथं  
गवकंगले सपुत्राणां पत्न्यस्यै च  
भे वेति शीघ्रं चोक्तं चो मारका  
रिद्रावाच्यं चोक्तं शीघ्रं चोक्तं च  
हे चारका च चोक्तं चोक्तं चोक्तं  
मांश्या चोक्तं चोक्तं चोक्तं चोक्तं  
मांश्या चोक्तं चोक्तं चोक्तं चोक्तं



कह नरददकीया। कडुधडुलिंगवणां  
नुजागत नजदीया॥ जांघापीमीजोडिचे  
लएकंपगदीया॥ हरिहोबाजाद ऊपर  
कलसचटाइकदीपगजोइदीया॥ ११॥ का  
रीगरकरतारक कह नरददकीया॥ दसद  
रवाजाराषिसहरपैदाकीया॥ नषसन  
मदलवणांइकदीपगजोइदीया॥ हरिहो  
बाजादनीतर नरी नंगारके ऊपरगुदीया  
१३॥ बुरी नलीका न्याविक संदियां मोगसी  
पगमैरसडी मारि नरधमुषटा जल ॥ जो  
दोकमदेसी मारनैणि नरकृण  
बाजाददिना च्यारिका मित



श्रधनां वपाषाणंतरे नरलोइरे। राम कइ  
तजगमां हि न बूमाकोइरे। कृमकते उध  
मानविले होइ जाइगे। हरि होइ सती के  
असवार कृता क्युषाइगे। १७। पीव च लघ  
परदेस कजागन भै नई। कांनो सुदरामा  
रन नृती मै लई डुवा सब ससाइ अलष  
जगइया। हरि होवा जी द वा सुरति द्वै पीव  
कल नदी पाइया। १८। पीव च लघा परदेस  
कत जाइ गया। हिवरे बजर कु वार क कंजी  
ले गयो। और घण रंग राग वो होत कर पोष  
ण। हरि होवा जी द वा सोइ



Handwritten text in a highly stylized, cursive script, likely a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines, filling most of the page. The characters are dense and interconnected, with some larger, more prominent characters that may serve as markers or initials. The overall appearance is that of a historical document or a manuscript page.

अधनां वपाषाणैरे नरत्नादरे ॥ राम कह  
तजगमाहि न ब्रु मा को प्ररे ॥ क्रम कते उन  
मान विले हो १ जा प्रगे ॥ हरि हो ह सती के  
असवार कुता क्यु था प्रगे ॥ १७ ॥ पी व च ल्या  
परदेस क जा ग न भे न श ॥ को ना मु द रा मा  
र न भू ती मै ल इ टु द्या सब स सार अ ल ष  
न गा श्या ॥ हरि हो बा जी द वा सुर ति वै पी व  
क ल न दी पा श्या ॥ १८ ॥ पी व च ल्या परदेस  
क त लो द ग या ॥ हि व रे व ज र कु वार क कं बी  
ले ग या ॥ और घ ण रं ग रा ग को हो त कर घे ष  
ण ॥ हरि हो बा जी द वा सो इ से ता प्री ति और न









Handwritten text in a highly stylized, possibly Indic script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are bold and black, set against a light background. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The lines are roughly parallel and fill most of the page's width.

कामकीजडानुयादी। ब्रह्मक्रमकमेरि-  
बधिकीकडीयांजाडी कतिनु केने ग  
जब्रतीयोसबजगभांही क शानायाम  
बक्रमध्रमकीसख्यानांही क मध्रम  
रजादमेरिकैचात्पायाग। श्रीधकारकृत  
कालब्रतीयोएकएधम निवृत्तशानक  
रिहरिभ्रवतार-प्रायसोती श्रीशुद्ध मुरतं  
मधरिनामकतुकुंडीकोउवाइ शभव  
केरुयकामशंवाकंमाया कसनटे  
समिजानिकंसक्रोधहीसिधाम्या क  
रुयटप्रयचमदमराबाहसारा





सादीयौनिवासा॥ नोवटैकइकतारीवे॥  
॥टेकदिवांनंस्थानछांजां॥ तनघनधनल  
वारीवे॥ देसपतीलगप्रगटऊवा॥ देसांमा  
लमसारीवे॥ २॥ सोकोईसिलीयाजागज  
षुलीया॥ सांसासबैनिकारीवे॥ मुरलीपुरा  
महंतउजागर॥ प्रीयाऐकौतरसारीवे॥ ३॥  
नंपराइपुरआयविराज्या॥ जिगासीनरना  
रीवे॥ रांमहुवारीसतसंगसौकै॥ बौदोज  
वजनमसुधारीवे॥ ४॥ अरामदे : तां  
पियानौ॥ फूवीजुंगीमारीवे॥ ५॥  
इपुरधनिजांहां॥ मुरली

Handwritten text in a highly stylized, possibly cursive or shorthand script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are dense and difficult to decipher, but appear to be organized into a structured format, possibly a list or a series of entries. The text is contained within a rectangular border.



Handwritten text in a highly stylized, cursive script, possibly a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines, filling most of the page. The characters are bold and interconnected, with some vertical strokes extending above and below the main line of writing. The overall appearance is that of a dense, continuous block of text.

हरषसोण उदास आसति हं पुरकी टांरी ॥  
जातिवरण उदास मांम तोमनकी पारी ॥  
जगतजाल उदास सीछ सति हिर दे लीयां ॥  
आनमान उदास साच सत गुरकं दीयां ॥  
मा हारा जिधरा जि उदास आस सब जगक  
तजीयां ॥ नांम जथा गुण धारिं मको नांम  
जजजीयां ॥ रांम लगन मन मगन न योइ  
तने गुणं सांसे नही ॥ गुर मुरली रांम प्रताप  
सूनांम जथा गुण है सही ॥ २२ ॥ छं पं तु मगु  
ण वारन पारणं मरटि नरो जसूरा ॥ निरा  
धार निर आस वासनांकी न्ही चूरा ॥ गुणं न



रामजी सहरिकरे हरिनांमदा योहो आपबिनं  
कं एजापदे वैद रिआपअतो लन तो लली यो  
हो आपन जागर हो बुधि आगर हं भूत सुर ति  
सुषु बधी योहो मनोरथ रामसला मकरे जिति  
सुरतिमें आपको ध्यानधी योहो ॥ किवताग  
रमुरली प्रतापपाप क्रम नके नोने ॥ सतगुरक म  
बेन अनेन हिरदा में आने ॥ रदे जगत सु ह रनरसा  
दिव को जान्यो ॥ नदी रोषन ही दोष बा चतौ गुरको  
मान्यो ॥ अल्पति ज्म राग ज्म जनक सदा ॥ उ  
नमन ज्म जट मानस सविधि समरण ध्यानी ॥ रा  
रष ज्म गलतान रिषव ज्म जाने ज्यानी ॥ सुषु ज्म  
गही यो जत तत लेकारिज की नो ॥ असा गुण ह  
मदधी या सतगुर उदासी राममो ॥ पानदा सगुण  
ज



Handwritten text in a highly stylized, possibly Indic or Southeast Asian script, arranged in approximately 15 horizontal lines. The characters are bold and black on a white background, with some vertical lines separating the lines of text. The script is dense and appears to be a form of historical or religious writing.

बदकाती रहे कुवांणगुरपांनकी झांण सोई कां  
मअरको धकं मारके गरदमें मे ली यो जे ली यो  
अपांनको नंगु जोई असे तो सुख निज संतगुर  
देव नदास हे जा सकी सरणि बो हो जीव आया अप  
नदध्यान देन गति बेराग देना बप्रताप को ते दयाय  
॥ नेद निज नांव को आप विनिकं ए विधि जानत  
मानता जगत का त्रु म सोई ब्रह्मा अरब सन सित  
आराधतु म करत हे धरत हे ध्यान जन दर स जो  
ई जनदास नदास ई लषाणं जांणं ए जा सकी सो  
न ए र सरब नाषे तु मारी तो म द मानि ति अगम  
तिगम सो अगम निति निति आषे धनि गुर देव  
निज आप हो माप अर तो ल मे हो राम  
प्रेम कर जो

Handwritten text in a highly stylized, possibly medieval or early modern script, likely a religious or legal document. The characters are dense and closely packed.

Main body of handwritten text, consisting of approximately 12 lines of dense, stylized script. The text is written in a dark ink on a light background, with some visible wear and tear at the edges of the page.

A small, isolated handwritten mark or signature at the bottom left corner of the page.



Handwritten text in a highly stylized, possibly Indic or Southeast Asian script, arranged in approximately 15 horizontal lines. The characters are bold and black, with some lines featuring decorative elements like vertical bars or dots. The text is contained within a rectangular border.



Handwritten text in a highly stylized, possibly cursive or shorthand script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are dense and difficult to decipher, but appear to be organized into a structured format, possibly a list or a series of entries. The text is written in black ink on a light background.





Handwritten text in a highly stylized, cursive script, likely a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines, filling most of the page. The characters are dense and interconnected, with some larger, more prominent characters that may serve as markers or initials. The overall appearance is that of a handwritten document or a page from a manuscript.

यौदिवसजिसबिरीयांतनत्याज्यो॥गुरषद  
मैंगलतांनमनतौहरिपदलाज्यो॥गुरमु  
रलीप्रतापसंप्रमधामप्रायतिलया॥अ  
बगतिकेअवतारजनरामचरणप्रगट  
नया॥३९॥३६॥मुरलीराममादासजि  
॥हेमोरोप्रताप॥राइपुरतीरथसही॥जा  
बिसजेआया॥४०॥किबती॥प्रमधामके  
हिरामरटिजाइसमाया॥अलयतिपु  
अवतारधारिहरिअपरआया॥बौहो  
पधारेधामजिसबिरीयांअधिकउठा  
॥होलदमांमांवाकीयाफेरितौहरिजसगा







आवे स्वात्म॥ कहत न आवे स्वात्म बात रे  
न एत्र कारी॥ हिरदैव देजु से उगुर विष्ठ  
उति उष नारी॥ राम ये म की बीन ती गुरु  
बने क्रिया ल॥ ता बीराम तिकरि गया सत  
गुर दीन दया ल॥ ५०॥ हम बिलष तयां ही र  
हे तुम का हा की यो मा दाराज॥ सरणा गत  
तु म राषी यो गुरु गरी बन वाज॥ गुरु गरी  
बन वाज साज ए मेरो सुधरे॥ क हन इत उ  
त जा इजा इ लौ का ज ही विगरे॥ अब सर  
णा की प्रतिपाल करि रषी यो मेरी साज॥  
हम बिलष तयां ही र हे तुम का हा की यो

Handwritten text in a highly stylized, cursive script, likely a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines, sloping downwards from left to right. The characters are dense and interconnected, with some larger, more prominent characters that may serve as markers or initials. The overall appearance is that of a handwritten document or a page from a manuscript.

जुं व्यापी कहै ॥ रद्यास कलुषरथूर ॥ ५३ ॥  
करणी तनकाइ मरदो ॥ छामो न्नां नस  
रीर ॥ कारिज तोथरतानही ॥ कारणासद  
सथीर ॥ ५४ ॥ गुरकी पदत बिलासकौ ॥  
वारपारनही छेह ॥ दास बिलासजकार  
णै ॥ महमां जाषी एह ॥ ५५ ॥ गुरमहमा  
कही न्नित्रिगम ॥ प्रतिनंदपावतया  
रासेसमुषां जाषे सहसा ॥ नंदन्नावतनि  
रधार ॥ ५६ ॥ गुरप्रतापमहमान्त्रिगम ॥ जा  
रा ॥ कही न्नित्रिभिकतेजे क  
॥ ५७ ॥ रमहमां तो ॥



Handwritten text in a highly stylized, possibly ancient script, arranged in approximately 10 horizontal lines. The characters are bold and black, set against a white background. The script is dense and appears to be a form of cuneiform or a similar ancient writing system. The text is contained within a rectangular border.

प्रचूअसीवणाइवे॥घंडीपलकनहीरुहतातु  
मबिनिकरवतआछीबाइवे॥टेका॥बालक  
जूनतलातास्वामी॥जबसुषअतरपाइवेअबवे  
सुषतौचीतांअवे॥सहरिसहरिजीवजाइवे॥शं  
बालकसंतुममोटोकीन्हों॥नीन्होंचरणामा  
हीवेसीतप्रसादीदेदेपास्यो॥सोसुषतौअबजा  
हीवेसाआछीकीन्होअसीबिचारी॥सतगुरधाम  
सिधाइवे॥मोराअंतरनीतरिछीजे॥घुणजंप्रअं  
त्रषाइवे॥उहोस्वामीतुमकांइकीन्हो॥मोमनमे  
नहीजाइवे॥रातिदिवसमेचरणारदतौ॥सोअबन  
हीमुहाइवे॥भजाइजेइअबछातीकबकेहीए  
ककतमाइवे॥गुरदेवजदासीकरीजदासी॥सोइ

Handwritten text in a highly stylized, possibly Indic script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are dense and appear to be a form of shorthand or a specific dialect. The text is contained within a double-line border.









कुसकिसीविधिपूरीए॥हीयोहणेहणजांदिः  
११॥किसोरतुमारेदरसकी॥करवतबहगीन्त्रेन  
॥ओकारसाफिरिमिलतासही॥तोकहतैहितके  
बेन॥१२॥मनकीमनमेंरहेगई॥तनकीतन  
हीमांदि॥किसोरतुमारेमिलणाकी॥बाहरिका  
हाजणदि॥१३॥बाहरिकरुंतौलजमरु॥कज  
त्रबन्नावेकेन॥तुमतौहरिनजिहरिरुवा॥जे  
सैजलमेंलेन॥१४॥लूणमिल्याजलपदमही॥तु  
मब्रह्मपदहीजांणि॥गुरमुरलीरामप्रतापसं॥पाए  
पदनिरवांण॥१५॥गुरमिलीयामोटासही॥टोटा  
जांनेतरतरामलगनकेनुरिवसौ॥किसोरतुमा  
रीसुरता॥१६॥एहप्ररतमेरेमनबसौ॥स्तरतसदान



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ह्यमादित्रोतयौतचौ तिजगदारी॥ नजैरांमतजै  
 कामकांममांमपारी॥ २॥ संतसूरनूरमुषिदुषरु  
 षजारी॥ रटैरांमहटैकांमतज्यांबामपारी॥ ३॥ जी  
 वकाजिवण्णजिहाजलाजराषिमारी॥ चलैयारि  
 चलैतारिलारिलज्योथारी॥ ४॥ बभेसंतलीयांतंत  
 जतसतधारी॥ तजिवंसनयादंसजसजगसारी॥  
 ५॥ साहाराजिउदासीरांमतुजिचरणवारी॥ रांमल  
 गनलगनमगनत्रायकोबलिहारी॥ ६॥ पद॥ २॥ न्ना  
 रेल॥ न्रहोउदासीराजकाजममकीजीयो॥ सरण  
 ईसाधारसरणिसुषदीजीयो॥ मेरैमसतगत्राय  
 तयोगुरदेवजी॥ पारहांरांमलगनकीत्ररजवि  
 सनिजनेवजी॥ ३॥ सतगुरग्यांनगंतीरपीरम  
 श्रे॥ सिधजिसान्प्रथाहाथाहानहीकोद्रे॥

Handwritten text in a highly stylized, possibly Indic or Southeast Asian script, arranged in approximately 15 horizontal lines. The characters are dense and uniform in style, with some vertical lines separating the text into columns. The script is difficult to decipher due to its unique form and lack of standard characters.

हीरूप है ॥ परिहारां मलगन वैसंत सदा न्न न्य है  
॥ किस विधम ह मां क रू उदासी रं म की ॥ मो कं  
बिक सी मो ज रं म के नां म की ॥ प ल य ल मे री सी स  
क रू तु जि वार णे ॥ परिहां ल ग नौ पा यौ सु म तु मा  
रे वार णे ॥ स त गुर दी न द या ल द या नि ध दे व जी  
॥ तु म च र ण स र ण के मां हि ली यो दे ने व जी ॥ सु णे  
उ दा सी रं म रं म मा हा रा जि हो ॥ परि हा रं म ल ग न  
की फ्रा टि र षो म म ल ज हो ॥ १० ॥ ल ज तु मा रे हा थ  
उ दा सी रं म जी ॥ र षो तु मा रे च र ण द हो म न का म  
जी ॥ तु म च र ण की रे क नि ज्ञा ज्यो बा प जी ॥ परि हा  
रं म ल ग न की अ र ज मे टी यो ता प जी ॥ ११ ॥ ता य मि टा  
इ तुर त नि वा जो रं म जी ॥ म ह रि क री मा हा रा  
क सि हरि नां म जी ॥ सु णे गु णां की

Handwritten text in a highly stylized, possibly cursive or shorthand script, arranged in approximately 15 horizontal lines. The characters are dense and difficult to decipher, but appear to be organized into distinct groups or words. The text is written in black ink on a light-colored background.

प्रजो ह्यारुह रजो का के प्रातः पुरः गुर  
 रनव दिव इच्छि सतः सुनी भाषित्पूंगो क्रु  
 मेंता जा सुनि मोह प्रो ह न ही व्यापे दो इ नि  
 बधरांम के शोये ॥ क हों जु प्रम पुरां न की  
 साषी ॥ जो श्री पति नारद सूच्योषी ॥ जै कुं ट लो  
 क सब सुष को धां भा तां हां विस न विरा जै पु  
 रां वन को म ॥ २ ॥ ति ह धां म ग ऐ ब्रह्मा स्नि का  
 दि क ॥ रु ड र षी सु र ड ड हू आ दि क ते ती स को  
 दि दे व ता त हां ॥ गंगा आ दि ती र ष्य सब ज हां  
 ॥ सर ब सु र स ती त हां सार दा आ ई ॥ त हां च  
 ल त पर सं ग ग्ग न अ धि का ई ॥ सर  
 से न्यो ली ना ता क्ष मे आ ऐ



रनिरदाइ॥ श्रीमलत्रयजठिमदमठरतावह  
शैसैहैमैरै निजजगता॥ सोबिनदेधैमिष्या  
जमतवैमोतेचतत्रतजहीदारता॥ सोजगति  
विमुषतेफिरैऊषमारत॥ वैषमसंतहेसैवो  
पामउमकोसदाकरतदुध्याना॥ जोममसाध  
सुदोहकराइ॥ ताकेदुषबोहोतदुलाइ॥ २०  
डरबासाजोदोहकरायो॥ लोजरतफिलोकोहा  
सुषपायो॥ जबफिरसाधकेसरनेगयो॥ तबजा  
इजएततेसीतलजयो॥ २१॥ मैएहदादकांजनि  
रस्यघबिपूधास्यो॥ गजफदकाटिगवजज  
रतपरीठतउबास्यो॥ जाहीजाहीजनकेसक  
टहोइताहीताहांहंपगटतहूसोइरैमोहिरु









होई बराबरि कोइ सुखग मावे। या जग को अं  
सो बौ हारा॥ तासुं न सह करे हित कार॥ ४५ ते  
बचन सुने दास के जब ही। नारद कहै च लु नही  
अब ही॥ तब दास जब लै गइ तां हाऊ। रा जीव  
गइता जो हां ऊं ५५॥ राजा न वा ख॥ दासी सुखो लीत  
वरी नी॥ ऐती अवार कां ह॥ तं आं नी॥ सो बौ रो मी  
कंस मजाई॥ अ॥ मेरी आस क्या जाई॥ ५६॥ ता  
सी उवाच॥ तब दासी ने बौ रो सुनायो ऐक सा  
पुरुष को दरसन पायो॥ उन क ही रा जाग्रह सो ग  
॥ हम क ही सहजं वै सं जाग॥ ५७॥ तिन सह म ब  
हूँ बीन ती करइ॥ पाव धारो प्र नू त्रि प दर तन  
पाई॥ वै आ ऐ न ही रां मर स पागी॥ इती अवार कां



कौचिरजीयो। सुरनंर असुरयसंकीटपतंगा  
थावर आदिसकलवटनगा। द्वि। रदेवांमणे  
कसतिसोई। अरु त्रिगुनरचानां रदेनकोई।  
ज्मं नामेकुम्हारघरेबहुताई। अवधिआयेते  
सबबिनसाई। ६४। साधुहरषसोगतेन्यांयोजि  
नकेएकईब्रह्म। विचारो। ज्मं बनभैजीबुभयजे  
बिनसावो। तिनकोबनहरषसोगनहील्यावे।।  
६५। योसतसतीरहेजागजेद्या। तिनकेहबूबसे  
गनहीदेवा। हरषसोगजोत्वंमनलावता। तोहूज  
तीसतीनकहावता६६। सोगकरतेनोरेपांनतेन  
हीपावैपदनिरवांन। एहसंजोगहोतज्मंआई। सो  
सवबोरोकहसंमजाई। ६९।



मेरी अग्या पावतां हो धरे तव पंचनिहा रू न्ये ह  
क ही पति को वचन करे सो सुज न ह ॥ १ ॥  
गुणों में निकरुं वो हो रू न्ये ह तव न्ये ह ॥ २ ॥  
देवा तव कार्यो वि कृते करे रू न्ये ह ॥ ३ ॥  
हि विवाह विप्रले जाये न्ये ह ॥ ४ ॥  
धरमबंधो अग्या न हो तरे ॥ ५ ॥  
तां हां पग धारो प्रथम पुनरे रू न्ये ह ॥ ६ ॥  
ही ता सुते विप्रव न ले गये तव न्ये ह ॥ ७ ॥  
पालक मे ल च ल्यो व न नां हो ॥ ८ ॥  
ता को कु नां हो ॥ ९ ॥  
चा रा सु नि ह वि प्र ह क वा त न्ये ह ॥ १० ॥









नए श्रेयो॥ तू को हे यांदा ब्यां लत दे कैला बव  
क ऊं तरव हद यो॥ हूँ हे ज रा वि द हे बंधु मिः  
॥ ऐश॥ तुम बांधो पो ट सुख ट ह र  
र रु रे मन मां हां॥ अति नै ना न ह ह  
हवा ल अै से करे॥ ऐश॥ मुं जि  
कर म व सि सब विस व न र मा तां क र क अ ट आ  
गे पो सब अं ग॥ कं ठ क ब धां न र क र ग ॥ क  
र म ब्र ह्मा कु ला ल किर त क न वे क ह ॥ क न ॥ ह ड  
न ही जा वौ॥ कर म रु द नि जा टि के र ॥ क र म वि स न  
पु न सं क ट आ डी॥ ऐश॥ क र ह ॥ मु द क अ त न ॥ सो  
॥ किं म वि सा सां व त ॥ ल ष्ये ॥ क र प नि स न के  
ये व सां आ डी॥ क र म रु द ने नि द न वा डी ॥ अ व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

१०७॥ तव निरप कविर चिः  
मया तिसो चरन प्रहारे ॥ व. न. ॥  
॥ कहे अब निरप हं पावन नये ॥  
करि बैठे जब ही ॥ दिषव ॥  
ही ॥ काठे मुषते ॥ ऐसे बैन ॥  
न. १११ ॥  
॥ एह सोग अंस नो दी सत हे सा ॥  
रमांही ताकं कछे सुहावे नां ॥  
टब ही जुगमांही ॥ तुम क दौन क ॥  
अपनी देहते पुत्र पाया ॥ तु ॥  
११३ पुत्र सोग सूदाषन ॥ पुत्र ॥  
॥ पुत्र विना को पिऊ न रावे ॥ ॥







मन्त्रिके कदीमा १२५॥ अथ कहे विमरत  
दिने नरसोकी म्पि नादि ॥ यो जग नरसो  
अथान ॥ ये निरदेष को क पु न १२६ ॥ नममन  
षमव को ६ ॥ ते ज नम विष वे न को ६ ॥ जो को यो  
उ नम बास ॥ नमवदी को ६ ॥ विनाम १२७ ॥ अथ  
दक जे पठिना ६ ॥ ते नम क निम क व ६ ॥ जो म  
मदि न ये ज र सो न ॥ नि न न र ६ ॥ वा दि टी को न १२८  
जे क वे न ज क सो सो नि ॥ नम की अ व दी न हे नि  
हे न म ज ६ ॥ म न न ॥ वे न न व ६ ॥ न र सो  
१२९ ॥ अथ म न व ६ ॥ सो म न ॥ न को ६ ॥ व ६ ॥ न  
न को ६ ॥ न को ६ ॥ न को ६ ॥ न को ६ ॥ न को ६ ॥ न को ६ ॥

॥ से स स नंग त्रै सो ज ग सा चो ॥ रही सर प ह रे अ ग पां  
 नी ॥ सु वा न र मि न ल नी उ र मा नी ॥ १३१ ॥ यो अब ध  
 सं सार वं धो हे मा या ॥ अ प नी जां डि आ पु रु श या ॥ ज ड  
 स री र अ प नो क रि जां ने ॥ सु चेत न कं न ही उ ल टि पि  
 ठां ने ॥ १३२ ॥ ज म रं जा ऐ क से र सु म सो यो ॥ सु प ने र  
 क के व हु ते रो यो ॥ जा गे ते व ह सब ड ध ना सी ॥ अ  
 यं न बि नां ड ष क ठे न पां सी ॥ १३३ ॥ को का हं ज्यो हं  
 ग न सा धी ॥ ऊं गै पु त्र क लि त्र प लं अ धी ॥ ज्यो ज्वि त रं  
 ग बु द बु दा हो डि ॥ तुं जु ग उ पं जि त बि न स त सो डि ॥  
 ॥ १३४ ॥ ज्यो जा ती लो ग ए कं त्र हो डि आ डि ॥ कुं नि अ प  
 ने अ प ने मा र ग जां डि ॥ त्रै सों मि ल्यो क टं व सं जो गा ॥  
 ॥ परे बि बो ह सब नि हि लो गा ॥ १३५ ॥ ज्युं त रं श त प वि







तातसंपीतकरैअतिसोडि॥अवअतीतनेवपा  
नविचास्यो॥कासीअसजकंचितधारयो॥१४४  
तबवालकसगकंचयोडदासी॥तवराजाआयासु  
तपासा॥क्योसुतदुमअवबिकतहोडि॥अरेपुअअ  
रनहीकोडि॥१४५॥तबवास्यककहोदुनोदोपाडत  
मरोकोतोहंप्रांगतजादीअवसजासअजोमनवा  
ही॥योहरदवेकंदीसेनाहो॥१४६॥अनासासचव  
हृदिघरायो॥ब्राह्मककेमजोएकजआया॥ब्राह्म  
ककीअरवीनहीजाडि॥जीवेगोदोफरमित्यदि  
॥१४७॥रामरजास्वदेजेसी॥मिटेजहीदोदगीत  
सा॥तबअपनेलकुटीलसेदोरनराडि॥अ  
ककेकरपकराडि॥१४८॥अहतुसकेअर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥  
अथ कृष्ण उवाच ॥ अहो भवति धर्मो जगत्सु ॥  
कुरुक्षेत्रे संभवति नारायणस्य वीर्यवान् ॥  
अहो भवति धर्मो जगत्सु ॥ कुरुक्षेत्रे संभवति ॥  
नारायणस्य वीर्यवान् ॥ अहो भवति धर्मो जगत्सु ॥  
कुरुक्षेत्रे संभवति नारायणस्य वीर्यवान् ॥  
अहो भवति धर्मो जगत्सु ॥ कुरुक्षेत्रे संभवति ॥  
नारायणस्य वीर्यवान् ॥ अहो भवति धर्मो जगत्सु ॥  
कुरुक्षेत्रे संभवति नारायणस्य वीर्यवान् ॥  
अहो भवति धर्मो जगत्सु ॥ कुरुक्षेत्रे संभवति ॥  
नारायणस्य वीर्यवान् ॥ अहो भवति धर्मो जगत्सु ॥  
कुरुक्षेत्रे संभवति नारायणस्य वीर्यवान् ॥

सेरवैनीकसिआयो ॥ १५५ ॥ तव निरपसुतमितक  
समिकेगयो ॥ पीठे विचारकरितेतननयो ॥ वी  
हककहेसुणे ॥ संतअबमैकीयो ॥ श्रीसोमंता ॥ १५६ ॥  
अबमैकासीकरवतलेऊ ॥ अपनोदखजालिन  
हीदेऊ ॥ हुंवाकेजाइपुत्रअवतसें ॥ जिहेंलिहेंहा  
इवाकंडुषकरो ॥ १५७ ॥ तुमस्वामीदखगीरनहोइ  
॥ वाबनीयांइवारपधारीसोइ ॥ स्वामीअलिबनी  
यांकेगयो ॥ निरपकेसुतजाइकरवतलीयो ॥ १  
५८ ॥ तवअतीतवनीयांसकही ॥ तेहेपुत्रहोइगो  
सही ॥ तववनीयानेअतिप्रीतिलगाइ ॥ तुमसद  
रहोहमसेवकराइ ॥ १५९ ॥ तवपुत्रनयोबनीया  
केसोइधरीमहरथवाढेसोइ ॥ तवअतीतसाह





मके उवार पधारे ॥ तब षे मने उठिकाना मनुहार ॥  
१६॥ निरपक्रिया करि मेरे तुम आगे ॥ तुम हं सी हा  
सा रूप गणे ॥ तुम पूरबले पुनि पूरबत जोई ॥ तो जा  
गे कोठी पै कहे सब सोई ॥ १७॥ तब राजा कोठी गिह  
आगे ॥ कोठी घाट बैघो घर पाए ॥ तब कोठी कहे आ  
राई ॥ षे मघाती हम दीजे जिताई ॥ १७१ ॥ तुम पूरब पु  
निकी पूरबत जोई ॥ सो सुनौ जे दूर बरन सोई ॥ हम  
तुम सा रूप मचरुनाई ॥ बिचिल करी अ करी उ  
दर अराई ॥ १७२ ॥ एक दिना परी सी मलीदा करी यो  
गोरे सोले हम कं दीयो ॥ हम तुम कहत जए तब  
असौ ॥ अब हम रुषां दि करे अब ते सें ॥ १७३ ॥ त  
हम रुबना हम मलीदा कसो ॥ बांदि रचा हूं न अ

Handwritten text in a highly stylized, possibly cursive or shorthand script, arranged in approximately 12 horizontal lines. The characters are dense and difficult to decipher, but appear to be a form of early printed or manuscript text. The text is contained within a simple rectangular border.

ॐ इह नैपवेसकी यौ तव गां ॐ ॥ १८ ॥ ऐकस्वानगा  
यो विष्वेके दुवारा तां हार सोऽपि पाऽपि त्यागा जब अथा  
नैका जवो वरी मै गयो तव स्नान आऽकर रोटी लये  
॥ १८ ॥ वां रुनि स्नान घात आऽलीयो तव ता बो ल्यो  
न ही जल ति हे पी यो ॥ स्नान त्रि प्रति न योग यो तां हार  
सोऽपि जां हारिकं नो बंध्यो जु दोऽपि ॥ १९ ॥ ६ जौ स्ना  
नं बनी या गृह पे ग्यो तां हार बनी यां हो घर मै बै ग्यो ॥  
तव पै रत स्नान हि दी यो कि वारा बनी यां ले कुत का  
रु की नी मारा ॥ १९ ॥ स्नान मारि अधमू लो रु रि फा रे  
॥ तव पूछ पाऽगा ह धी सनिका र्यो ॥ तव रु म क स ट  
करि प हूं च्यो तां हार ॥ ६ जौ स्नान बै ग्यो जां हार ॥ १९ ॥ तव  
सं गी पूछै क्युरे नाऽपि तं दुष सौं कै सें आऽपि तव क हि



प्रकारकी मारु है सो ६॥ दीऐ बिना जमि लै संग को ॥  
६॥ एक प्रसंग कथा और कहूँ ॥ सुनिरिष जो हको सा  
सौ दह ॥ १०॥ एक कुम्हारता के सुत सो ६॥ ६॥ ६॥  
दाइ नप जौ जो ६॥ आगुं जां मजरा वेषंत ॥ कुं वनं छां  
कै लागे नूत ॥ १०॥ कंधा ते जतरै नही सो ६॥ काल  
६॥ तसो लागे जो ६॥ कुम्हार वासन जावत हो जब ही  
॥ एक जोगीने बालक कंधा देषी ॥ तब जोगीने पार  
षाले ॥ तब सिससौ आइ ससै निज कहौ ॥ अब या  
कंत कौ लंद है ॥ ११॥ तब बालक कर जो बिसरना  
६॥ या ता तहि नेदन देहू वता ६॥ तब कुम्हार सैनस  
मजा ६॥ या बालक की कछु आइ  
कुम्हार आइ सके पाइ नपरी यो ॥



नां कं लगेन काशि॥ यूमो हं मै लसा धून लंगादि॥ सा  
षी न्तसंत जंन सोदि॥ अका सवत रि वसि स लूं जो॥  
दि॥ रणे॥ ज्यो वा जी गरवा जी करे॥ और न कै जि य  
नां तो परे॥ कर म क ला संत सं मं जा दि॥ अन ल अ क  
ज्मू न ल टो जा दि॥ २३०॥ जे रां जानै कथा वषां नी॥ ते  
सब नारद कै मन मां नी॥ नारद फिर प्रसन की यो॥  
न ही को दि॥ तष उ वि ग ऐ तां हां जां हां न र प सु ल ज॥  
वती सो दि॥ २३१॥ जब जि हि नारद को दरसन पायो  
॥ करिं रु व त च र न न सिर ना यो॥ ति हि म नु हा र क  
री न लै आ ऐ दे वा॥ अब ह म करै तु मां री सेवा॥ २३२॥  
त ब रि ष बो दै अे सी वां नी॥ यह हां मो हो र ह्ये  
सां नी॥ सो ग सं ता प दी स त हे मो ही ला ८





२३८॥ ताकौ कहुं सकल बिरदंत ॥ जे दत्त जइ संगायो  
 मंत ॥ जा मत सुनि मन बंकत होई ॥ इंद्रि सुषनें त्या  
 जे सोई ॥ २३९ ॥ नल नील मधुमी नयतंग ॥ ऐबं धे ऐक  
 ऐक के संग ॥ नल जु तुचा सपरस के साथ ॥ नील स  
 रवन सबद के हाथ ॥ २४० ॥ जूरना सागंध सो सोई  
 मीन सुजि मारस संजोई ॥ यतंगनेत्र रूप नै जइ ॥  
 यंपांच ऐक ऐक नै मारै ॥ २४१ ॥ जे पांच इंद्रि निकेर स  
 रचै ॥ तेको हो काल पै कै सै बचै ॥ जूतै स्वाद लाग्यो  
 जगंध ॥ ताकौ कूं थिर रहे जु कंधा ॥ २४२ ॥ प्रायो वि  
 स . . . . . राग्यो ॥ देह सुषन सै बजलै

जन साथ ॥ २४३ ॥ ७४



ऐध॥ रिषमंत्रदिष्टिसोआर्यो॥ राजादे॥  
पायो॥ आजिगुसांइइतनीकीजे॥ सबैस  
जे॥ ऐ॥ बमौसथांनएकसोकहीऐ॥ वे  
दरसणालहीऐ॥ रिषअण्णालेतीनं॥ आ  
योबौहोतसुषपाऐ॥ ऐ॥ चरणपडि  
इ॥ आजियोससौनलाउगाइ॥ नितिने  
पावे॥ जाकीमहमांकहतनआवे॥ ऐ॥  
आजिहमपाया॥ मनषजनमकाअव  
प्रमारथबंधनमतिमानौ॥ साधसेवई  
१००॥ हरिहरिजनएकहीगाइ॥ धूवप्रह  
इ॥ तबैइप्रवरदेनजुआयो॥ जबनार  
यो॥ १०१॥ इततेउतरिचलेदेंआगें॥ तां

पुरुषहोश्काहाकीयो॥पुत्रनारिवेचनचित्तदीयो॥  
श्रेयोपुत्रदेषिहीजीजे॥ताकेसटेकाहाधनलीजे॥१  
१३॥राजाजवाच॥सुतश्ररनारिसतकेहीजे॥सत  
छामिराषिकाहाकीजे॥नकटीरामजाइक्यूनांही॥  
राजादेषिकह्योमनिमांही॥११४॥बिंदरएकसहर  
मेंहोई॥छटोरहैधनीनहीकोई॥गिनकानाकतो  
डिलगयो॥सबकाहूकेरुएनयो॥११५॥श्रेयी  
विधितांहांकोगतिहोई॥देषिअचैनाकरैसबकोई  
नारिपुरुषसबअचरजजयो॥राजाकह्योसोहीहोई  
गयो॥११६॥उहा॥सतसंतोषआवैजांहां॥बचनस  
दजसधिहोई॥ध्यानदासअहंकारयहू॥मूलनमानो  
कोई॥११७॥सोरठा॥धरमपुष्टकरिजांनि॥धिजिराजा

हरिचंद्रकह्यौ ॥ ध्यानइहैउरिआनि ॥ ऐहवाइ  
मुषनीकस्यो ॥ ११८ ॥ इतीश्रीहरिचंद्रसुतप्रथमो  
ध्याइध्यानदासकृत ॥ ७४ ॥ धरमरह्योतोस  
धरमगणैसबजाइ ॥ धरमरह्येजाकोपिते ॥ सोको  
पेपदपाइ ॥ १ ॥ चौपई ॥ इहइतीयाससुनोतुमना  
इ ॥ इतनीगोरकोपसुधिसाइ ॥ सीलघटेकोनगति  
छुमावै ॥ इहबीचअंतराइकरावै ॥ १ ॥ सनकादिक  
बैकुण्ठधारे ॥ धारपालतबबचननुचारे ॥ नगन  
काहाआवतहोमांही ॥ आमीछडीजानदेनांही ॥  
ऐदरसनकोअतिनुकलाने ॥ पहेगाइजातज्जु  
ने ॥ रुकीगकुज्जुसीसहलावै ॥ मनमैवांहांजानु  
हीपावै ॥ ३ ॥ दरसनबीचिअंतराइकरायौ ॥ कह्यौ



वषावै॥ अगनि ताव दे घाटन पावै॥ येह सुनि बचन  
रंजा ताहां ध्यांइ॥ रि॥ सथां न ताहां चलि आइ॥ १०  
पग नूपर बहू बिधि ऊन कारा॥ सकल संगार बि  
न्यौ अंग सारा॥ घटा मां हि बिजु सो होवै॥ तन सिंग  
र असी बिधिसोवै॥ ११॥ कांम के वैन बौ होत बिधि  
बोवै॥ मुनि नरु गौनेत्र न ही षो लै॥ तवरंजा एहने  
षवना यौ बै लिचटी अरतन पलटा यो॥ १२॥ नेत्र  
तीनसिसली लाटा॥ सीस जटा अंसो करि घाटा॥ क  
रित्र सुख मां नू सिव सो हो॥ बां नी जोगता समन मो  
हो॥ १३॥ लागी सुरति तं टि ताहां आइ॥ जोग बचन  
मुनतै रुचि पाइ॥ तापी छै त्रीया बिदन की नो॥ सदि  
तसिगार नो ऊं रस नी नो॥ १४॥ छू टि समाधि गइ



मुनिकेशी॥ नारिसरीरकीयौजनफेरी॥ जंगी कांष  
ना वचनबषान्यो॥ जे तिसरापवग्यो मुनि जांन्यो  
॥१५॥ मुनि उवाच॥ हूं धी ज्यौ औरहिनुनीहासी॥ पह  
ली बातनु लषी तुमारी॥ कलह कारनी एह काहा  
कीयो॥ स्यो सरुपरिहं गि लीयो॥ १६॥ एना उवाच॥  
हूं वी सरापनारियो जांन्यो॥ सी सचने धरि वचनब  
षान्यो॥ तुमारो वचन अटरनहीं टरे॥ मोहि उधा रि  
कितिसंमऊ नपरौ॥ १७॥ मुनि उवाच॥ देसकनौ ज  
राई है सोई॥ ताके जाइकं न्यातं होई॥ प्रथी राजजा  
तिनुहांना तो कं आनि वरेगे जांन॥ १७॥ सां वतसं  
रमरेगे नारी॥ कलह कारनी वचन उचारी॥ आगे  
कथानही विस्तारी॥ न उचारी॥ १८॥

आंगे मुनि फिरि ध्यां नहि लागे ॥ नयो संतोष को  
पमन नागो ॥ नगति का जप्रसंग एहू लायो ॥ रंन  
फिरि सुरगा पुर पायो ॥ १९ ॥ जब उहिक ह्यो नुधा  
रबिता वौ ॥ तब हिक ह्यो नुगति ऐजा वौ ॥ तंदरि  
चद दोष मति मानै ॥ धरम टरत को पनति जानै  
॥ २० ॥ सि तवाम न उवाच ॥ विप्रषी जैरा जासू नारी  
॥ गुदरि गइ दोष हैरी सारी ॥ मोलिले न तोइ कोइ न  
आवै ॥ कलि जी न्यो कहै करिब तलावै ॥ २१ ॥ नक  
टी कलाना कबिनि कीनी ॥ गिन का चली नारि न  
लीनी ॥ मोच मोलिले को धर घाले ॥ को कुबि कहै  
नही उरि सावै ॥ २२ ॥ ऐकुबि कहै सोही हो जाई ॥ क  
जी न्यो धरि नाहिन लाई ॥ वां न्हा कहै बचन सुनि



प्रवातसंजासंजाषी॥ यऊनाव ईराजायूदाषी॥ क  
हेरिषीसुरसुनिदोत्रया॥ सीसजारकाहितमलत्या॥  
३०॥ देणकह्योपणिदांनदीयो॥ बिसवाभंत्रवेचण  
कीयो॥ सकलराजवसुधावितधांम॥ असुहायीअ  
रऊंटतमांम॥ ३१॥ तीनलाषतापीवें॥ और॥ संकल्प  
कीयोदेणनहीवैर॥ औरकांदांकुछिसुऊतनाही॥  
मांनसबेचदेऊंऊंऊंमांही॥ ३२॥ रांनीकवरनिकासे  
आरे॥ सीसघासबेचनकंलाए॥ गयोद्वोसपणको  
ईनमुलावै॥ ढिगमेरीवांनणडषयावै॥ ३३॥ हमतो  
डषीकरमकेमारै॥ परिहमिसंजिवांनणनणैडषार  
॥ कंनमोलिलेहमअपरधी॥ अनिमांनोहरिअगति  
नसाधी॥ ३४॥ अगनिसुसरमांउवाच॥ अगनिसु



प्रवातरंजासूत्राधी ॥ य ऊ ना व ई रा जा यू दा षी ॥  
हेरिषी सुरसुनिदोजया ॥ सी स नार का हितु म ल  
३० ॥ देण क ह्यो प णि दा न न दी यो ॥ वि स वा मंत्र वे च णे  
की यो ॥ सक ल रा ज व सु धा वि त धां म ॥ अ सु हा षी अ  
र ऊं ट त मां म ॥ ३१ ॥ ती न ला ष ता षी वें और ॥ सं क ल प  
की यो दे ण न ही वौर ॥ और का हां कु छि सु ऊ त नां ही  
॥ मां न स वे च दे ऊं रुं रु मां ही ॥ ३२ ॥ रां नी क व र नि का से  
आ णे ॥ सी स घा स वे च न कं ला णे ॥ ग यो द्यो स प णा को  
ई न मु ला वै ॥ डि ग मे री वां न ण ड ष या वै ॥ ३३ ॥ ह म तो  
ड षी क र म के मा रे ॥ परि ह मि सं गि वां न ण न णे ड षा र  
॥ कं न मो लि ले ह म अ प रा धी ॥ अ नि मां नी हरि न ग ति  
न सा धी ॥ ३४ ॥ अ ग नि सु सर मां उ वा च ॥ अ ग नि सु

सरमां कहे विचारी ॥ हं लूं मोलितो रसुत नरी ॥ सुख  
मां गै सो तो हि ॥ वां ऊं ॥ दो इ लि वा इ आ प्र घु रि लां ऊं ॥ ३  
५ ॥ मां न स मो लि क रै जौ को ई ॥ ता कें पा प वे दो त म्बे वि  
हो शे न र दे ही कूं मे लि बि का वै नो त न वारि सु कानि  
प द पा वै ॥ ३६ ॥ उ जा उ ज च ॥ त न ध रि न गानि करे न  
ही को ई ॥ ता को त न त एणं स मि सो ॥ च ॥ उ म्बे च दि नो नो  
हि क र वै ॥ मि न षा दे ह ध रिसो ही दि का वै ॥ ३७ ॥ उ न  
रि सं गि जा वौ ल वा ई ॥ मो म ला ष दे यो दि त्त क रं ॥ उ न ग  
नि सु सर मां ना षे ऐ हा ॥ इ त ने का ॥ उ न ॥ उ न क रं ॥ उ न  
३८ ॥ मि न ष दे षि का दा ध न का नि ॥ नो म वि या ॥ उ न ॥ उ न  
॥ तु म स व ही बी त नो गि रि प रं ॥ मे रं ॥ उ न ॥ उ न ॥ उ न ॥ उ न  
ई ॥ ३९ ॥ सा टि म ल ता ली क र ही नो ॥ वि न ॥ उ न ॥ उ न ॥ उ न ॥

विप्र कहै ए आ ए मो पै मोठ लाष लै कुं गो  
नली नांति रा जा कही प्यारे सुत बिनिता  
पधारि बिबरत बिह न यो तन नरी पी ब वि  
रुं नारी ७१ सुतरु ही ता स पे मं अ क ला  
ता या हां कुं ए ट ह ल क रा वै सेवा करण कं  
कोई मोठ लाष दे णां स्पारि सो ही ७२ कर म  
का है कं जा यो बुरै निष तर न र द हं आयो  
व वि र ष के ए द ग ति ले षी पि ता बि प ति अ प  
दि वि दे षी ७३ कं छं न र प ति की ट है ल न  
अ ब क र ता अै सी ग ति दी नां दे ह स्प सु पु  
षि अ ध का री ग लै बां हां ध रि रो वै नारी ७४  
ही यो सु बि बो ल नं आवै सुतरु हि ता स न र प सं





काहा कां प्रकरि जांने । वा रिषमोति  
 टहल कंलीनी । गां विधो लिमाया गिनि दीनी । यां च व  
 रष को बालक मांने सो सुत काहा टहल क रिजांने । ५१।  
 देव देव करि की थो बिहो हो । रां नी कवर नरपति संमो  
 हो । विप्र जाइ अणु ने घरि राषे । उरव चन क दे न ही ना  
 षे । ५२ जो जीव सरे जो टहल करावे । मि न ष स्वां त गी  
 कं उष पावे । विप्र संग जो मि न ष रा हावे । सो मि न ष  
 स द ग ति ही पावे । ५३ विप्र व मो ब्रह्म श्रो तारी । ता के  
 सब द सि धि हे सारी । ला ष को ड की कं न च लावे । वा के  
 सब द मे र घ रि आवे । ५४ जै को ई क हे दी यो कूं नां ही न  
 र प ति स ती ले त हे नां ही । छ तो र ज दे इ कै आया । सो क  
 ले इ ष रा ई माया । ५५ वि स वा मं न का हा बि त ली यो ।



कहेवीनतीमिरी शक्ति कलांभसरा हंतेरी ॥६१॥  
अरुजकरीसादिवरु निपाई ऊफडौमूंमनीकस्यो  
आई कंकवएहसंगहैसाण लालेविसतरदेह  
उनिहार ६२ बाणीविकलसकलमुषकार ॥आ  
गेदंतबुराऊणीदारा राजादेविमूंमयोकहीया ॥  
रुयाकलेऊंगोचईया ६३ बोलसुनतजारीमर  
लागे ऊनोआइराधकैआगे सगलोसाथएकउ  
निहारी बिसुधाआइदेहजमधारी ६४ कंकरस  
हतिउतसोआइ हरिचंदकाजदेतहैसाई तवही  
मूंपरिषवेनसुनावै ऐहमोहिव्योलेतुमचावै ६५  
याकोमोलबोहोतरिषजाषे परिमोहिव्योमोडहील  
षे नरमगरमकहैऊफडौकीजे शुषमांज्योमोलका



उपाई ॥ ऐ ३ ॥ करै गल्यां नसति ज्यो होई ॥ होत बहो ३ ॥  
मिटै नकोई ॥ चलि रोही तास अष्टौ फेरी ॥ गुलां म  
सुज नयो कि सकेरी ॥ ऐ ४ ॥ घर कौ धाणी करै सोई बा  
जे ॥ तुमै घरि जां हि फिरूं नही आजे ॥ बोदौ काहा मो  
लि कौ लीयो ॥ धनी का जम सतग नही दीयो ॥ ऐ ५ ॥  
तब सारा मनि ॥ ऐसी आई ॥ दम रुदिता सले रिदे  
शे गये जां हां बनमै अंध्यारै ॥ पोप फल कंबु च  
सारे ॥ ऐ ६ ॥ चढौ रूष रुदिता स अके लो ॥ होतौ  
पो हो पहाय तां हां मै ल्यो ॥ सरप एक तरवर परि हो  
रु स्यो हाथि पड्यो धर सोई ॥ ऐ ७ ॥ सरप मस्यो धर  
स्यो ॥ छटौ हाथ मारतै गिस्यो ॥ सग ले बाल मिले  
ई ॥ कहै रुदिता सक न गति याई ॥ ऐ ८ ॥ कंतै सी



गियरीयो तुम श्त्तनी साहिवहति  
षहोतवऐरुवौ सुतरुहितास  
काले अथमाहें लाई होत  
गनिसुसरमां विप्रवमैरी  
१०६ मोहिमरनको सोचन  
षहोई मोविनिमातकदे  
रुंवाती १०६ पितामेशौ  
निसनी रनरावेकरुं का  
वेअवेअैमाविधिहोई  
योह  
योअब  
हीतासउचार

कहीरें



सत्यवैसवहंवा॥ घडी चार जांनोंसबमंत्रा॥ १०९॥  
तबै रांमंरुहि तासउ चारै॥ जीवाण नही मवाण मनध  
रोसबलडुकन जबसुरतिसंनारी॥ बौदोरिलगोक  
रणमनहीरी॥ ११०॥ तुमबिनिहमंकेसैघरिजांही॥ यू  
रोहितासवनतदेनांही॥ कहैरुहिताससुनोरैनाई  
॥ याहारोहमतिरांमदुवाही॥ १११॥ लडुंकाजवाचा।ने  
तरिनरिअैसीकहैलीनी॥ तबसबहीपुक्रमांदीनी॥  
करपराणामरुगरिगरिचा।लो।दे।षो।दई।को।ण।घर।घाले  
॥ ११२॥ इनकीमाइबूकिजबआवै।कही।ऐ।काहा।सो।च  
तो।जा।बौ।बिनिमणि।अप।च।ले।ऐ।सारे।रां।नी।उ।नी।पं।थनि  
हारै॥ ११३॥ रां।नी।उ।बा।चै॥ सबे।बालक।दे।ष्या।ऊ।नां।ही  
रां।नी।सो।च।की।यो।मन।मां।ही। सबे।चौ।पै।करहै।दि।ति।आ

जो बिचनउ चारे सो हम कहेसं मऊ ल्यो सारे ॥ कुं विचली  
माता बनवोरी ॥ चली चली पोहूंची ती तोरी ॥ ४ ॥ सुतरोही  
सपस्यो तां हांपायो ली यो गोदिमें बो लबुलायो ॥ बो लोपु  
त्रकाहा नयो तो ही ॥ तं अब च ल्यो रो नही मो ही ॥ ५ ॥ त  
वसुं षग यो परे बदि आइ दी न अनाथ च ल्यो तजिमा  
इ परे गोदिमें सी सनि वा यो ॥ माता तबै करूं ल्या यो  
रहित सउ ना च ॥ तवरुहिता सवात यू नाषी माताई  
अके ली राषी मै पापी क ठू ट हलन की नी ॥ अब करता  
अैसी गति दी न्ही ॥ ७ ॥ च ल्यो और क ठू कहन नपायो  
कहे तहि च की सं जि धां यो ॥ मरत न यो माता बिल ली  
इ को इ सं जि न ही नाइ ॥ बनि अब लाम्र तग सुत पासे  
रिषि कहे सी दो कुं ग या ना से ॥ सो चा एक यु नि मनि ऐ ह

वै॥ सुतजो वागमोर कर पावै॥ ए॥ अ॥ च॥ नदी नदी दोन  
दर कीयो॥ होऊ हां पजारि गलि लीयो॥ पक्षपा नो दोन,  
होत है नारी॥ बौ हो दुष न सो चली ले नारी॥ पा॥ दे॥ घ॥ न  
करि मंड हट अयो॥ ऐ ह दुष रा क ल न री दे नारी॥ नो॥ दे॥ १३  
बि योग क है को ता को॥ अ॥ सो॥ क॥ गोर॥ ही॥ थो॥ दे॥ का॥ को॥ ॥ १  
मड हट ध सो तां हां इंधन नां ही॥ वि॥ सां॥ दर॥ न॥ दि॥ नि॥ य॥ दा॥ री॥  
॥ बर॥ षे॥ मै॥ घ॥ मा॥ हां॥ दु॥ ष॥ पा॥ वी॥ अ॥ सो॥ क॥ ॥ १३  
वै॥ १३॥ चु॥ नी॥ कु॥ ट॥ क॥ ली॥ मड॥ हट॥ के॥ री॥ य॥ ॥ १३  
ही है री ती  
इनां ही १३ फं॥ स॥ वा॥ लि॥ जे॥  
होत दुष ही यो  
रि॥ उ॥ परे॥ तां॥ न॥ १४ या॥

सतरतनत्रपरिसोही ॥ बहैवांहांलेजाइबुहाइ ॥ औसी  
जांतिदिनगयोबिलाइ ॥ १५ ॥ ध्रुवौदेषिराजामनिआंने  
योजांणौबालतहैछांने ॥ लजौंमालनैकौंनाडौंन  
इ ॥ पढ़ंच्योआइतांहांसोराइ ॥ १६ ॥ तबदेघोरोहितासह  
मूंवौ ॥ राजाकह्योकाहाएहूंवौ ॥ रांनीरोइबिकलयूंन  
षी ॥ ज्यौं ज्यौंनइत्पूंत्पूंहांदाषी ॥ १७ ॥ सुरजवंसकोनास  
हीआयो ॥ अतनीकहीराजादुषपायौ ॥ मायामोहोणि  
नौसतिकोइ ॥ धरमसोचपुरषनकोहोइ ॥ १८ ॥ नगत  
रतसोचोहआवै ॥ सोहीसोचनगतनरिपावै ॥ जेको  
इकहसाधकौंमूंवा ॥ कारजननिकारुनैहूंवा ॥ १९ ॥ का  
नसाधमूंवाकौंनाही ॥ कारजदेहजूंरहैतांही ॥ देहधसंमु  
कतिपदपावै ॥ स्तगयांनरकसोआवै ॥ २० ॥ तातैसोचवै

होत ही होई। सुतिरुहितास नगति दे सोई। नैनाडौ म  
ज्यो त ही वारा। रांनी कसो देषि बौ दारा। ७२५ ॥ वसत  
एक दुसरी मांही। बां न ए बाज दे तत वषां ही। स्यां म  
धरम की कथा सुनांई। नैनाडा विनिदाग नपाई स  
बिसतर एक देह जो जांऊं। विषि आगे मुष का हा वि  
षांऊं। आंधी चीर फाडि दे सोही। तो सुत जां लागे दो  
गौ तो ही। ७३। फाडि बीचते आंधी दीयो। पी छे दापु  
त्रतन कीयो। अगनि दे दूगंगा में मार्यो। ऐह होत  
बंदो न्यं मन धार्यो। ७४। नैनाडौ लेरा जा जाई। त  
रांनी विष मरद आई। त बरष कसो बिलम कां हा  
होई। रांनी पादु परी अररोई। रांनी न बा ली।  
सुतरुहितास मरन ही कीयो। लागी वारदाग में ही।

यौं॥ बालक बात कही छी जोई ते सब कही ब्यपद  
षहोई ॥५॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमः ॥ सेवगव  
मोहंतो सुत तेरो॥ कारंजस कल करत हो मेरो॥ धर  
मदादिसांधन सुषि होई॥ स्वार्थ एस्म जेमतिको  
ईरहै॥ रांनी तपे बिहलै लीनां॥ करम कसोटी आइ  
जदीनां॥ कांसी नूपहूतो ए कओरा षत्री बहो सत  
नखि वौरा ॥१॥ रांनी न्हाइ कहुं हार धरीयो॥ नरुत  
ची लदहि सो आयो॥ खे करि हारि नुकि वां हां जांई  
॥ वां उत नीरन कं ध्याइ ॥ रां तन सुध नही हारग  
ल मे ल्यो॥ काहुं देष तदीयो हे ल्यो॥ स्वां कोडि कोर  
रई लीयो॥ बांधि गुंत्वां ममां रिदष दीयो॥ राणे॥ दे वि  
नहारे कसो उति जाइ सनामां कि बेवो जां हाराइ

काहलीयोमारिहंसोशिरांजाकह्योनेददेमोही॥३१॥  
बांदीलीयोविप्रकीहारा॥तनकैकाजिवोरतुममारा  
॥छरीदारतंबराइषदाणे॥देव्योहारमारतेल्याए॥३२॥  
प्रिनुजावांधितसलीन्ही॥रिषदेषतकछआरुन  
दीन्ही॥दादिचोरकीदेतजकोशिरांकेसंगिचोरसो  
होशिरा॥३३॥जाइराइपेषडीरहाइ॥हारमुस्योसोहीअब  
आशियाकैकाजिऔरहममारा॥न्हरीरानुमुस्योक  
हारा॥३४॥राजाऊबाचा॥सुवतिपाकअसोतनपा  
यो॥काहिमनचोरीमेंलाये॥संगतिसाधलगीनहीक  
इरिषआश्रमतैटहलकराई॥३५॥तनसूसधूसेक  
कराई॥मनदीयोचोरीकेसांही॥केसंयाकंसंगति  
लागे॥विपनीडैचितपाछोभागे॥३६॥दांणीबुवाच॥

मित्र औ तारुमारा ॥ ५ ॥ फडैरुं मज्जरा ५ निहारा ॥ ५ ॥ ३  
गानिसुसरमां अ जतनली यौ ॥ सूंकररूपसुरपतिकी ॥  
यौ ॥ व्यास अती तधारतन आया सो लेते राचाणं बटा  
या ॥ कासी रा ५ नारि दुषदी यौ ॥ सब देवां मिलिसोतन  
की यौ ॥ गिनकारूपसक्रिष्ण आ ५ ॥ सोरत आगे व  
लीषसा ५ ॥ ६० ॥ जतने कहुं दरसतौ पाए ॥ देवसुरहुं  
निखाए जनम अरु सरन अवय के तूं म्हा रे ॥ देह अ  
५ क बहू नहीं धारै ॥ ६१ ॥ चढि विवाण देव ता आए ॥  
ते जो म ५ सरीर खाए पोहयि वर सि जै जै अरु हो ५ ॥  
धुं निये दंत ह लो कमें सो ५ ॥ ५ ॥ सपति को टिते की ए  
क ल्यां नै तौ संजित रे त ह म जा नै ॥ गा गाम धि रु हि ता ॥  
स बु हा यौ ॥ ज ल ये तर त द टि सो आ यौ ॥ ६२ ॥ रा जा प गि



परनामकराई॥ मातासिलीसीतलता आदि॥ अगनि  
दहैतेकंचनकाद्ये॥ सुतरुहितासंसरुपतनबादे  
॥ ६४ ॥ धूपदीपआरतीसंजोई॥ सुरपतिहृतिकरतहे  
सोई॥ बक्रीसतीसारेजुगमांही॥ तोउपरांतिदूसरो  
नांही॥ ६५ ॥ मांगिमांगिबोलेसुरसारा॥ तैरेकाजिअं  
नितनधारा॥ तबहरंचकहैविधिअैसा॥ मांगनेव  
रवासनांकैसी॥ ६६ ॥ राजीजोगी॥ सतवादीमांगे  
नहीकोई॥ मांगपासतरहेनहीसोई॥ मांगेरूमचोव  
अरजागो॥ सतवादीमांगेनहीतागो॥ ६७ ॥ तबसुरु  
कहैकहुंतोलीजे॥ पीछेदोसदमेंनहीदीजे॥ तबह  
रिबदकहैबराहंकीजे॥ अैसोकसटकाहंजनि  
दीजे॥ ६८ ॥ कलिजुगपापकरैसबकोई॥ राजापिर

गदुषीसवहोइ कष्टिदीयांनगतिकु  
नांवलाजैसामरे दए देवसिधिसुनी  
बसाकहैहोइबरअसा तिहूंलोक  
पुरनागमधिमैजोइ १० आपनसहसा  
अंतरलोककोरिचदीया हरिसूएआ  
सिधनोनाथमित्येहैआइ ११ माधेहा  
दीयो आपजसोवोहकरिलीयो तां  
हीकाइ पतिवरताउभासिमगाइ १२  
ताससमोनहीकोइतीनलोकफिरिदेवो  
नोसिधिलिएवरपाया नगतिदानमै  
या १३ तामसनगतिहोइनहीआवै स्वाति  
संनगतिकुंसावै नगतिकरैफल

ॐ श्रीदेवै बटकाई १४॥ मैं मेरी करितुंति  
फंल बासनांवी चिन आने ॥ नगवत  
कंही जाणौ ॥ हरिनप देस करम सोही गं  
दित कंसोटी दुषनांही ॥ पीछै नगति होइ  
हो ॥ उपजैये मनै मसबत्तागो ॥ नगति आ  
गति जागो ॥ १६ ॥ गहै गहाइये मजुरि नावे  
मांच जलनेत्र आवै ॥ कल्पणतपहली ऊड  
गाहा बसंतरति पी ॥ छै आइ ॥ १७ ॥ पहल क  
रिचंददीनी ॥ पीछै आइ तासगतिकी न्ही ॥ सा  
टी सरिपरिली जे ॥ माथो अरपि नगतिके  
ट ॥ १८ ॥ सिगति दुहेली रामकी ॥ वामाकी  
सिरकै साटे मिलतहो ॥ तो सुहो गी जाणित

ही को शिष्टे ॥ काहे नषन ही मनि आंवे सो राजा  
रिचंद करि माने ॥ नेषधर्या कुहि नगत न होई  
मै नगत जाणवै सो ही ॥ ऐ० ॥ जिनि अंग न को दे  
ह धराई ॥ सब को अंगण लेतां जाई ॥ श्री मुषि  
न बोला या आनी ॥ अंगण त जै सो ई रे पाणी ॥ ऐ  
तौ मेरी को दो कं न चली वै ॥ घाटि वाधिक छे वै  
न आवै ॥ जे को ई कहै न जानै सो ई ॥ तौ कं न  
कहन की होई ॥ ऐ० ॥ मे एक हूं सुनो तुम आनी स  
सकौ बचन तौ तली बानी ॥ पूरो अंगण ना ही आने  
करौ मरस को दो कं हा जानै ॥ ऐ० ॥ बचन बचन मे  
अंगन आनी ॥ स का सबद ऊठ करि माने ॥ घटे घटे  
न ही नर दे जाई ॥ जिती सुनी समजी सो गाई ॥ ऐ० ॥

विधिसोमेरीमति जानौ॥ उनको औगणमतिको  
इसांनौं उनकी गतिगुदपै जानौं॥ मनिषतु छिम  
तिकूपहठानै॥ ऐपे॥ उदधदोत करिली जीते॥ दे  
षणनरअगर ध्यानदासवसुधाविषै॥ नगवत  
नगतअपार॥ ऐद्व॥ लप्रवकाजिसुरसतिलगै स  
वपिकतकलिमाहि॥ रोमस्मानिनत्यसके॥ हरि  
चरचामतिनाहि॥ १॥ जोनुचैयाग्रंथक सोजे  
मुनेचतलाई॥ ध्यानलहेसोप्रमपद॥ पापतापत्री  
जाई॥ १॥ हरिचंदसतकसुनिकोई॥ औसीदे  
कसाई॥ ध्यानलहेसोप्रमपद॥ जामेससैनाहि॥  
१॥ ध्याइतीनयाग्रंथकी॥ धरमकथाविसतार॥  
हरिचंदसतहरदैधरै॥ सोजनउतरैपार॥ इती श्रीहरि

चंद्रस्य तपं यज्जनां नंदमु कतिपदध्वां नदा  
बवरे नननाम नती यो ध्याइसंप्रण ॥ ६॥ ॥  
दोरवा ॥ २॥ ॥ ६॥ ॥ चोपक्ष ॥ ३२० ॥ सर्वा ॥ ३६  
इयं प्रकी संघासंप्रण ॥ तीका श्लोक ॥ ६॥ ॥  
तीरुअपिरांके लेये ह वावै ॥ अथ साध श्री वा  
दिका दास जी कारे ध ना लिष्प ते ॥ प्रथम क  
निमो सरवंग अर अ व व्यापी कनु अ व आ धारि  
एरहततैरे अ व मै नूर अ रि पू रि प मा त मा अ व  
साधी सदा नां हि नैरे वारक हू पार म धि नां हि जा  
न्यो अ रै र ह त र सि ऐ क अ लेष जोई धारिका दा  
स श्री धू त वंदन करे नमो निरवा ए व द रं म स  
इ ॥ १ ॥ गुर धार प्र ॥ ग्यां नदा तार सो ही गुर सार है ॥



म अरत्वो न पाषं कं पे लि है षे लि है अगम  
रि स है ज जो डी ॥ जहां जगदी स की जोति जगसग  
जल म लै नूर प्र का स नारी ॥ चारिका दा स म न  
अर पि ऐ आपा स त गुर रां म मे सरा ए धारी ॥ ३  
गुर म ह मां को अग ॥ स त गुर गं नी र म म पी र है  
रा म ही च र ण जी व ल रू पा ॥ ता स की ह रि से  
ह रि ष टी स बे बो हो रि आ वे न दी गृ न कं पा ॥  
गृ न की ता प सू आप मो हि रा षी यो दा षी यो  
न बे रा ग नी को ॥ रां म ही न ग ति नि ज न ज न म  
कं दी यो ज ग त जं जाल सु ष न यो फी को ॥ ध नि  
गुर दे व ह मां तु मे अग म है नि ग म सो च्चारि  
ति नि ति ना षे चारिका दा स व सरा ए



रामहे चरणकं सीसिराधे ४ राममाहारा  
जिकरतारत्तरकरणांमईही नदयालडुष  
छाकि संसोर नोपारपलहेकमे  
रामरदिरैणदिनपी वषपीया पीवषके  
पीवतां उरसबहीऊड्राकेहरिकादिष्टि  
दिसनोदिआवे कारिकादासप्रकासगु  
रग्यांनतैरामकानजनसैरामघावे ५  
सतगुरदेवजी नेवमोकंदीयोमनषाजन  
मकौलाननारी तनअरमनकासुषतुष्टि  
जाणीयाजगतकीरीतिसबलगीषारी सी  
लअरसाचसुषसाधलडिप्रापनीजाप  
तिऊलोकपतिकोबतायो जनमअरम

राणमै वो होत बिरीयां फस्यो अब कै नी विसं  
 रा मपायो पाइ विसं म आ राम सुषधाममै रा  
 समाहारा जि का दर स की या कारिका दास  
 गुर देव प्रताप सूराम जी आप के सरणि ली  
 या द्वा बी नती कै रा म मा हारा जि मे सरणि  
 हं रा व ली मह रि कर णां म ड क्यु न की जे अ  
 थ ग सं सार मे अनंत दुष पू रि हे दू रि आप  
 कर दी दार दी जे पति त पा व न करे कु ट ल ता  
 सब हरो बि डु द सं हा ति हो रा म ते रा कारि  
 का दा स कर जो डि बी न ती करे मै टि हो जी  
 व का गु न फे रा ७ बी न ती बा प जी ऐ क तु म  
 सो न लो और न हो आ स रो मो हि दी से ती न

ही लोक ब्रह्म मरु नौषंरु में काल करि जोर सब  
गोरपीसै ॥ एक न्ह काल निज सरणि है आघ की  
सोही करि महरि अब मोहि दी जौ ॥ चारिका दा  
सकं काठि नौ सिंधितें राम जी आसरे आपली  
जौ ॥ आप के आसिरे आनंद है आपके आसि  
रे बंध ॥ छुटे ॥ आपके आसिरे मुकति पद पा  
इ है अमका सकल जंजीर टंटे ॥ आपके आसि  
रे आस पूजे सबे आघ के आसिरे ग्यान पवो ॥ का  
रिका दा सक है आपके आसिरे राम ही राम स  
ध्यान ल्यावो ॥ ॥ लुमरा ॥ राम रमती तनिति  
प्रीतस सुमरी ॥ सुमरी एकाम अरु क्रोध लो ना  
मोह मद मान सब स्वादक परहरो ग्यान बे रा

कौमूलनांजे ब्रह्मिकादासनिजनांवपरतापसंसं  
तजनकालकैसीसिगाजे १४ रामप्रतापतैधिस  
सबपीसीयादीसीयादलमैसाचनारी रामप्रताप  
तैसुबधिसुषप्रगद्यारामप्रतापतैकुबधितारी रा  
मप्रतापतैगोत्रप्रकासीयानासीयाकामन्नरके  
धसारा ब्रह्मिकादासन्नब्रह्मरामप्रतापतैनरेसंसा  
रसंसहजपोरा १५ रामकेरटिजन  
रामप्रदपाइहैंजाइजगदीसजांहांआपराजे राम  
केरटिजनरामकेपरसिहैंबरसिहैंनरतांहांगि  
गतिगाजे प्रेमप्रभावप्रबुद्धसंप्रतिनितिचित  
चरणरबंधलीनकुंवा ब्रह्मिकादासगुरदेवप्र  
तापसंआपसंआपतिलिनांहिजुवा १६ सब

दसै सुरतिमिलिसंगि चाली सही चमजं जाल स  
वनसकी या शंमही रांमरकार की धुनि सु सुनि का  
मूलकं सहज लीया ॥ सुरति अर सब द दो गुणि ग  
निमै मगन है संघनं बंद जाहां नीरवर से ॥ धारिका  
दास बिलास ऐ ह अगम घरि पै ध्यान की जु गति बि  
नि नाहि दर से ॥ १७ ॥ सब द की घोर से चोर सब ना  
जी या गा जा या गि गनि चटिसंत सरा ॥ अगम जु ए क  
र अने द मई हो इ र ही बजे बो होरी ति अने ह द तरा  
अत मां जा इ पर मात मां पर सी या बर सी या पि वष  
जा हो प्रेम पाणी तास  
बिचिरां प्र प्रताप की  
एका

धारकादास सरबंगशकरंमजी नीर-श्ररत्  
दबुदानांदिजूवाशे। गरकरे गरकगुरण  
नमे गरक है फरक संसार सरह तजोगी। क  
नक श्ररका मणी दोहू को त्याग है प्रगति वैराग  
रस ब्रह्म नोगी। ब्रह्म रस पूरिष्या लापीया प्री  
तिसंजी तिगुण ग्राम विश्राम याया। पाश्वि  
शरंम निरडुद निरनै प्रया जांहां नही पऊति  
है कं म काया। काया कै पार कर तारन  
जी क है ६ संरो दिष्टि में नांदि श्रावै। धारिक  
दास प्रकास गुरग म तैरो महीरो म मं गं गवे।

प्रादिक... जीनीर... दुदुदा  
... रांमपद पाइसमाइतामैरह्यावो  
... दिषीयान् रिजांहांतंरत्र

धुरैनादबोहोरतिकारागगावै॥ सुएतमनम  
सघनसुषबिलसैहैदेह कानेहसबछाकि  
कादासचटिसुनिकासिषरपरिपूरण

॥ हे... की... ॥

वालि...  
नगनसो... नावले... सवतज्योम  
नमहकबनिजपीवपांयां॥ पावप्रमात्रमांप्रम  
बहैसेवसाचीजांहांनहीमायां॥ मांयांत्ररम

ह गावै॥ सदन तै अगम वौ नि  
सको चेद कोइ नाहि पावै॥ मन  
र जाँ ऐ न ही चित की चित वनि ना  
दास गुर देव की मह रि सु तो पंत  
से वै॥ वैराग की रीति कोइ  
नि है मानि है सा च करि म ज ब ही  
काम ना लो न न ही जा स कै सो न गुन  
ब ही॥ स्वाति सं तोष अर सा ल सु मर  
की या म न मां न सोर ह त हरि  
का दा स जु दा स सं सार स ए क ध ति पाइ  
दि न र मै॥ वैराग का व्याव



ताजुगुतिबिनिजिह्विहोइ बागञ्ज  
लकीकंदरारूषसमसांनजोरहत  
बिचारञ्जरजनप्रबलकोसीसप  
नितिराषे। धारिकादासवाकेकछ  
ञ्जरसंतसबलोगनाषे। २३। आ  
गेवैरागकेधारीएमारीएमनकेवेजि  
। मारेतवैतनपरिहोइहेतनकेपरिनहं  
। स्वादसंगारसुषष्ठीमीएजीवका। श्री  
। नधरिग्यानपोवे। २५गुमाइ

के

क

तद्देसुषिमन्त्ररथलकोफलफलप  
मूलकंसाहिमनगाइगुरसबदकं  
बदबिनिन्नोरमारो रामकोनावगुर  
नित्तसंतसुषदेवन्नरूवेदगावै धा  
चारिबोहोरीतिसंरामहीरामसूध्या  
रामहीरामकोध्यानजनधरतद्देसेससु  
सारे वेदसोसाधिश्कनांवकीनाधिहै  
सबन्नमकारे न्नमन्त्ररक्रममेंजग  
जीयासुलजीयासाधसोरामगावै  
सनिवासचयोजासकबोहोरि  
न्नावै ३० रामकोनावनिजपी  
न्नोरसबस्वादजगजहररूपा

श्रुतिकी रीति से जन्म करि के सबके कोस के  
न सब ओइस रौ। क्रोध कर कह रि की लद के  
रे करि म हरि दिल पा क करि होइ सु रौ। सब का  
प परि नर प्रति जल हलै स्या म सिर ज मरे  
है लै। धारिका दासनर देह के लो जे ह न न  
परणि होइ जग मषे लै। इधे राम से बलि मरु  
वके पर हरौ देषि दो जिग को मूल से हो। जे जे  
ज मै इन संगि परत है धरत न ही धर न नर  
मुग पाता ल नर लोक के जीव सब पाव को  
कोई न धरै। धारिका दास गुर मफ न प्रक म  
श्रधे ससार सब ठ बक मार। इधे जन्म कर नर  
को पार पावे न ही जगति के लो।



शक्ति की रीति से जन्म करिये म को काम को म  
सब बोधरो क्रोध अरु कहरि की लहरि लहरि  
करि म ह रि दिल पा क क रि हो इ सु रो ॥ सु र का मु  
परि न र अ ति न ल ह ले स्या म सि र ऊ प रै हा थ  
॥ चारिका दा स न र दे ह को ल ज ए ह स त गुर  
रणि हो इ अ ग म षे ले ॥ इ थ ॥ रा म सं षे लि म न पा  
के पर ह रो दे षि दो जि ग को म ल ए ही ॥ जी व ज ज  
मै ज न सं गि पर त है ध र त न ही धी र न र म र ल के ही  
ग प ताल न र लो क के जी व सब पी व को ध्या न  
इ न ध रै ॥ चारिका दा स गुर ग्या न प्र कां स वि नि  
ध सं सार सब ठ बं क मारे ॥ इ ॥ ज न म अ र म र ए  
पा र पा व न ही न ग ति के छो मि जे नु म ल

मैं नम बो होरी त कौ द न है जो ति जग दी स विनि  
फिरत जागा प्रंध कं पं प की सु जि कु छि ना प  
हैं करत मद मत ज्ञ आप न ल्यो वारिका श  
स प्रजा स न ही ग पां न को रां म प द छं मि के नि के  
ऊ ल्या २७ देषि रं देषि सं सार सुष षार है स  
इ या में कु ड् नां ह नाई देषि द स कं ध नु ज बी स  
को मा दा त क न न कै के रु न न स मं द प्रा शी ल क  
स ग ट को र जन र कां ए ते जा ए तं ह म से कं न जा  
मैं अं न र रां म प्र ता प जा ण न ही मारि रु घ त  
द दी यो का ल फ ग में ज ग ल सुष श्र व र ण री  
म थ्यां क द्य अंत वे रां न जो ही री त की यो वारि  
क दा स चित्त र कार कह त है रां न वि नि प्रि गर

धृगिजीयो ॥ ३० ॥ श्रिगिरे धृगिनर रामबिनिज  
तमै धनन्नरधांम कामानकोचा देषिलंकेसके  
रीतित्रैसी नरे अंतकी वार सब नया पाछो  
कनककीलं कठिनिकमें पारकी पूत न्याती जते  
काल पाया ॥ आपकं प्रति कुठिक फन नीनामि  
ह्यो निस्तत्रैसा कीयो देषिमाया ॥ रामबिनिजीव  
कंगहि कोई आसरो कैर वां जाद वां देषिसारा वा  
रिकादा संप्रत्याग करि जगत सुषरामकं सुमरिन  
र होइ पारा ॥ ३१ ॥ हे वरां ही सकल कार अतिकं ज  
रां बिबधि बिधिनादनी सां एबा जै पीति मातं गकी  
आपन्नसण कीयां बो होत सै न्यापती संगिरा जै लो  
कमें थो कं तै जो

हं जारी मंत्र नमराव नर शब्दोक्त पाइक प्र  
किक मंत्रे चाह जो हाइसारी नारिनो जो वन  
अप्रग्य मही प्राम नर ज्ञात दध घृत प्रावे प्र  
रिका दास इक राम की जगति विनिहोइ बेशं नर  
प्रक रिजाव ३९ जगत के सांहे जं जाल बो हो  
रां न का जीव फलतां हां हरि नां व न्त्यो ऐह धन  
प्र. म न्नर नारि सुत संवंध्यो मुठ न्नपण इ मा हो  
उप्रऊ त्यों सुषक सरकन हं सुपन में पाइ है  
र निसबा सगति पासिले वै नारिका दास उदा  
स होइ जगत सं जगत करि सं प्रपद क्यं न से वै  
४० छानि हे छानि मन प्र ल क क न्न स की जा स  
की प्रीति सुत्रा के जावै ज्ञान न्नर ध्यं न वै रा ग वै



जगहाइ क संसार संहेत ल्यावै ॥ सांच अरसी  
लसंतोष नीजात है षात है काल नर बुवार होइ ॥  
घारिका दास उदासता तैरै हो रंगमको जजन करिब  
धषोइ ॥ ४१ ॥ काल देता ॥ क्रम अर काल की जाल  
असरा ल है होइ ब कल संसार षाया तीन ही लो  
क आधीन ऐह काल के सकल बुझां म सो देषि जा  
या ॥ सुषिम अर थल अ स थल छो म न ही घर है  
बुचि से देव देषो ॥ घारिका दासर दिगंम निरवाण  
पद बचत बरीयां मको इ संत एको ॥ ४२ ॥ सर  
॥ काल बल बांन कं पे लि चो गां न मै होइ सु  
न मुषिनि जनां वलै वै ॥ क्रम अर क्रम सब छा मी ऐ जी  
व का पाव कै हे तित न मन दे वै ॥ सर सा चै म तै षेत मै  
रूपिर ह्या जे ग जां म जां हां त ग बा जे ॥ ४३ ॥



